Bk. II.

Rāmāyaṇa. – Ayodhyākāṇḍa.

Ajodhia Kand

रामायण वाल्मीकीयभाषा

رامائن بالمیکی

अयोध्या काण्ड



जिसको

सकल हरिभक्त व महात्माओं के रामचरित श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवल किशोर अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशालाके तृतीयाध्यापक श्री पण्डित महेश दत्त जी से संस्कृत वाल्मीकीय रामायण से भाषा में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापीगई

सितम्बर सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् सितम्बर सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अलेह-	रामायण रामविलास	रामायण गीतावली स-
महाभारत	दा भी हैं	रामायण तुलसी कृत	विनयपत्रिका बा॰ मो॰
१-पहिले हिस्सा में	१- आदि पर्व्व	रामायण सटीक मयमा-	विनयपत्रिका बा॰ शि-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२- सभा पर्व्व	नस दीपिका कोष आदि	विष्णु पुराण भाषा
बनपर्व्व	३- बन पर्व्व	रामायण तु॰ टी॰ सुखदेव	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४- विराट पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	वाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	शुक्र नीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व ग-	८- कर्ण पर्व्व	सातों काण्ड	रसदृष्टि व रस चंद्रोदय
दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व ऐ-	९- शल्य पर्व्व व	१-बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
षिक पर्व्व विशोक पर्व्व	गदा पर्व्व सौप्तिक मय	२-अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में	ऐषिक व विशोक व	३-आरण्य काण्ड	श्री अनुराग रस
राज धर्म आपद् धर्म	स्त्री पर्व्व	४-किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
मोक्ष धर्म	१०-शान्ति पर्व्व राज	५-सुन्दर काण्ड	रास लीला
४-चौथे हिस्सा में	धर्म मो[illegible] धर्म व दान	६-लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म अ-	धर्म	७-उत्तर काण्ड	**नाटक**
श्वमेध आश्रम बासिक	११-अश्वमेध आश्रम	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोध चन्द्रोदय
पर्व्व व मौशल पर्व्व व म-	बासिक मुशल पर्व्व म-	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
हाप्रस्थान स्वर्गारोहण	हाप्रस्थान स्वर्गारोहण	रामायण मानस दीपिका	आनंद रघुनंदन
पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२-हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	भ्रमजाल

इश्तहार

बड़े परिश्रम के साथ श्री पोथी बाल्मीकि रामायण का उल्था भाषा में श्री पण्डित महेशदत्त जी से कराया गया है - जिन्हों ने पहिले इस से पोथी श्री विष्णु पुराण व श्री देवी पुराण अर्थात् देवी भागवत संस्कृत का उल्था भाषा में किया था उन्हों ने ही इसको भी किया है -

अभी केवल दो काण्ड का उल्था छप गया है वह प्रचलित किया गया - आगे जैसा जैसा कि उल्था होकर मतबे में आयेगा - प्रचलित किया जायगा -

यदि खरीदार लोग आगे के काण्डों के लेने से इत्तिलाअ देंगे तो उनकी एक फ़ेहरिस्त कुतुबखाने के दफ्तर में रक्खी जायगी और जब कोई काण्ड तैयार होगा तो भेजा जायगा -

नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ

श्रीरामभद्रोभद्रमातनोतु

रामायणवाल्मीकीयभाषा॥

अयोध्याकाण्ड॥

सो॰ भरत चरण शिरनाय रचत अयोध्याकाण्ड वर॥
गणपति होहु सहाय हरहु विघ्न बाढ़ै सुयश १

जब भरतजी अपने मामा के गृह को गये तो पापहीन व नित्यही
…रादि शत्रुओं के मारनेवाले शत्रुघ्नजी को भी बड़ी प्रीति के साथ ले
…१ वहां यद्यपि उनके मामा युधाजित्जी भोजनाच्छादन भूषणादि
…त्रवत् स्नेहकर पालन लालन करते कराते रहे तथापि येदोनों भाई
…स में सब सत्कार सहित आनन्दित रहते केवल मामा के दुलारही
प्रसन्न नहीं रहते थे २ तहां जब निवास किये थे सबप्रकार से तृप्त
होतेथे पर महापराक्रमी दोनों भाई अति वृद्ध राजा दशरथजी का
…ण करते जाते थे ३ व महातेजस्वी राजादशरथजी भी अपने विदेशी
भरत शत्रुघ्नको इन्द्र वरुण के समान स्मरण करते रहे ४ महाराज
…रथजी को सब चारों पुत्र अपने अपने शीलादि गुणोंसे अति प्रियथे
कि अपने शरीर से निकले हुये चारो भुजा प्रियहों ५ तथापि तिन
…में भी महातेजस्वी श्रीरामचन्द्र जी अपने पिता को अतिप्रिय थे
…कि वे ब्रह्माके समान सब प्राणियों में सबगुण होनेके कारण विशेष
… इसके सिवाय रामचन्द्रजी साक्षात् सनातन श्रीविष्णु आपही अति
… रावण के मारे पीड़ित देवों की प्रार्थना से रावण के मारनेहीं के
अवतरे थे क्यों न ऐसेहों ७ ऐसे अमित तेजस्वी पुत्र श्रीरामचन्द्र जी
…य कौशल्याजी अतीव शोभित हुईं जैसे कि इन्द्रजीकी प्रार्थना से
…मनावतार हुआ था तो अदिति जी शोभित हुईथी ८ क्योंन होंये
…मचन्द्र अति रूपवान् महावीर्य्यवान् निन्दा रहित इस भूतल में

उपमाहीन थे गुणोंमें महाराज दशरथही के समान हुये ९ व नित्यही प्रशान्तचित्त रहते सदा कोमलताही के साथ वार्त्तालाप करते चाहेकोई कड़े बोलसे भी उन्हें पुकारें पर आप कभी न कड़े वचन कहें १० फिर चाहे किसीभी रीतिसे एकभी उपकार उनके साथ करो उसीमें संतुष्ट होजाते व चाहें सैकरों अपकार कियेहो पर वे उनका कभी न स्मरण करते ११ व सदा अस्त्र शस्त्रके योग्य अवकाशों मेंभी जो लोग स्वभाव में अवस्थामें व ज्ञानमेंवृद्धथे उन्हीं सज्जनोंसे अपना प्रयोजन कहते१२ आप बड़े बुद्धिमान् मधुर भाषी प्रियवक्ता जो कोई वार्त्ता करनेआता उससे प्रथम आपही बोलते कुछ गर्व नहीं करते बड़े पराक्रमी थे पर अपने बड़े भारी पराक्रम का घमण्ड कुछ नहीं रखते १३ झूठी मूठी कथा कभी नहीं कहते महाविद्वान् वृद्धोंकी सेवा करनेवाले नीच ऊंच सब प्रजाओंके ऊपर कृपादृष्टि रखनेवाले सदा प्रजापालन करनेमें निपुण १४ दुःखी लोगों के ऊपर दया करते क्रोधको जीते रहते ब्राह्मणों की सदा पूजा करते दीनजनों के ऊपर सदा दयारखते सब धर्म्म जानते दुष्टोंको सदा दण्ड देते आप सदैव पवित्र रहते १५ जोजो दया दाक्षिण्य शरणागत पालकतादि इक्ष्वाकुवंशियों के गुणहैं सबमें निपुण व अपने क्षत्रिय के धर्म्मको बहुत माननेवाले व क्षत्रिय धर्म्मसे जो प्रजापालन उससे उठीहुई कीर्त्तिसे स्वर्ग्गप्राप्त होना इसीको फल समझते १६ अकल्याणवाली वस्तु में कभी प्रीति नहीं रखते धर्म्म विरुद्ध कथा में कभी प्रीति नहीं करते वाद विवाद में अपने पक्षके प्रतिपालन करने में मानों दूसरे वृहस्पति थे १७ कभी उनको कोई रोग नहीं होता तरुण अवस्था को जानो प्राप्तही थे महाप्रशस्त वाक्य बोलनेवाले अति मनोहर शरीरधारी देशकालके जाननेवाले लोकमें पुरुषोंका सारांश जानने वाले अति साधु प्रकृति १८ इन्हें आदि जितने श्रेष्ठ गुणहैं सब उनमें विद्यमान इसीसे मानों राजादशरथजीके प्राणहीहैं बाहरनिकले घूमरहेहैं इसीसे महाराज दशरथजी को सबपुत्रों से अधिक प्रिय हुये १९ जितनी अच्छी२ विद्याहैं उनसबोंके पारगन्ता षडङ्गसहित वेदजाननेवाले और धनुर्व्विद्यामें तो अपने पितासेभी अधिक २० सब कल्याणोंकी जन्मभूमि परमसाधु दुःखहीन सत्यवादी सीधे स्वभाव वृद्धलोगों से भलीभांति

शिक्षा पायेहुये धर्म्म अर्थके देखने वाले ब्राह्मणोंसेभी उत्तम उत्तम शिक्षा पाये २१ धर्म्म काम अर्थ इनके निश्चय के जाननेवाले सब बातों के स्मरण करने में निपुण महाज्ञानी लौकिक कार्य्य में बड़ेदक्ष सकल शुभ धर्म्म करने में अति निपुण २२ अति नम्र स्वभाव परम गूढ़ाभिप्राय जब तक कार्य्य की सिद्धि न हो उस कार्य्य को किसी से न कहनेवाले अत्युत्तमअत्युत्तम मन्त्रियों से सम्मत लेनेवाले जिस किसीके ऊपर क्रोध वा हर्ष करते वृथा नहीं होता सत्पात्रादिकों को पाय दान करने व न्याय से द्रव्य बटोरने में चतुर २३ जो लोग उनके आश्रित रहते उनमें सत्य स्नेह रखते वसिष्ठ दशरथादि श्रेष्ठजनों की सदा भक्ति करते जो बात उनको करने को होती कभी नहीं भूलते असत्पदार्थ के ग्रहण में निपुण नहीं ऐसे वचन कभी नहीं बोलते जिनके सुनने से किसी का चित्त व्याकुल होजाय बड़े निरालस्य किसीकार्य्य में प्रमत्त नहीं अपने व पराये दोष जानने वाले २४ सकल शास्त्र जानने हारे जो कोई थोड़ा भी उपकार उनके साथ करे तो उसको बहुत मानते अन्य पुरुषों के अन्तःकरण की बात के जानने वाले सब को अपना मानते फिर निरन्तर प्रीति रखते २५ सज्जनों के अङ्गीकार करने व उनके पालन करने में निपुण फिर दुष्टों को दण्डदेने व सज्जनों के पालने में परम चतुर द्रव्य बटोरने के सब उपाय जाननेवाले जैसा कुछ शास्त्र में खर्च करना लिखा है वैसाही करते जैसा कि २६ ॥

चौ० ॥ जितनी प्राप्ति होइ जनकाहीं। आधा खर्च करै शक नाहीं ।
वाचौथाईव्यय करि देई । तीसर भाग करै बरु लेई ॥ १ ॥

षट् शास्त्र व उनके जो अङ्ग हैं सबमें निपुण अन्य संस्कृत नाटक भाषादि के जानने में भी परम चतुर ऐसेही सुखकी सेवा करते जिसमें कि अर्थ धर्म्म दोनों बनेरहें जो कार्य्य करना होता उसमें थोड़ा भी आलस्य नहीं करते २७ विहार करने के लिये जितनी विद्या चित्रसारी गाना बजाना आदि है सबके ज्ञाता द्रव्य खर्च करने की जो रीति लिखा है कि जितना धन हो उसमें पांच भाग कर एकधर्म्ममें एक यशमें एक खजानेमें एक अपने अर्थ एक अपने भाई बन्धुओं को दे उस को भली भांति जानते हाथी व घोड़ों की सवारी व उनको प्रसन्न रखनेमें तत्पर २८

धनुर्व्विद्या जानने वालोंमें श्रेष्ठ लोक में सब अतिरथों से पूजनीय शत्रुओं के ऊपर चढ़ जाने व उनसे लड़ने में निपुण सेना चलाने की रीति में निपुण २६ सङ्ग्राम में सुर असुरचाहें कोई क्रोध करके भी लड़ने को मन करें तो कुछ भी इनको न करसकें सदा अनिन्द्य रहते क्रोध के वशीभूत नहीं होते अहङ्कार कभी नहीं करते परारी सम्पति देख के कभी व्यखुराते नहीं ३० किसी प्राणीका अपमान नहीं करते समय के वशीभूत नहीं होते इसप्रकार के श्रेष्ठ गुणयुक्त महाराज दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जी हुये ३१ पृथिवी के समान क्षमा होने के कारण सब लोकलोकप उनकी पूजा करते बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य वीर्य्यमें इन्द्र के समान ३२ तिसीप्रकार प्रजाओं को प्रिय व पिता के प्रीति बढ़ानेवाले गुणों से श्री रामचन्द्र शोभित हुये जैसे कि किरणों से सूर्य्य शोभित होते हैं ३३ ऐसे श्रीरामचन्द्र जीको पृथिवी व प्रजासब चाहने लगीं कि ये हमारे स्वामी हों ३४ इसी समय में ऐसे अनुपम गुण युक्त श्रीरामचन्द्र अपने पुत्र को देख राजा दशरथ जी अपने मनमें चिन्ता करनेलगे ३५ कि अब हम को बहुत दिन राज्य करते हुये वृद्धता भी आय गई हमारे जीतेही जीते रामचन्द्र कैसे राजा हों ३६ इस प्रकार की प्रीति राजा दशरथ जीके सदा रहनेलगी कि राज्य सिंहासन पै बैठे हुये श्री रामभद्र अपने पुत्र को कबदेखेंगे ३७ क्योंकि लोक की बढ़ती होनेकी कामना से सब प्राणियों के ऊपर दया करते हमसे अधिक लोक में सब को वर्षते हुये बादर के समान प्रियहैं ३८ वीर्य्य में यम-राज व इन्द्र के समान बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य धारणा में पर्व्वत के समान हमसे भी गुणवान् ३९ इससे हम चाहते हैं कि इस सम्पूर्ण पृथिवी के राजा हुये अपने पुत्र को इस अवस्था में देखके अब स्वर्ग्ग-वासी होते तो अच्छा था ४० इस रीति से रामचन्द्र को छोड़ अन्य राजाओं को दुर्ल्लभ असंख्यगुण युक्त रामचन्द्र को कि जिनमें सब लोकोत्तर गुण हैं देख ४१ राजा दशरथ जीने मन्त्रियों से भी पूछ पांछ श्रीरामचन्द्र को युवराज पदवी देन का विचार किया ४२ इसी समय में राजाने देखा कि स्वर्ग्ग अन्तरिक्ष व पृथिवी में नानाप्रकार के उत्पात भी देखाई देते हैं इसलिये मन्त्रियों से रामचन्द्र के अभिषेक की

तयारी व सब उत्पात अपने देहमें वृद्धापन आना सब कुछ कहा ४३ इसमें पूर्णचन्द्र समान मुख श्री रामचन्द्र जीका व अपना शोक नाश भी समझा व यहभी कि रामचन्द्रजी को भी यह राज्याभिषेक प्रिय होगा यह भी कहा ४४ इसमें अपना व अपनी प्रजाको भी कल्याण समझा इसलिये धर्म्मात्मा राजा दशरथजी ने रामाभिषेक की तयारी में बड़ी शीघ्रताकी ४५ यहांतक कि झटपट नाना नगर निवासी नानाप्रकार के देशोंमें रहने वाले राजा अन्य मनुष्यों को बुलाया ४६ जब सब लोग नानाप्रकार के देशोंसे आये राजाने सबका बड़ा आगत स्वागत किया कराया व सबको देखा जैसे दक्षप्रजापति अपनी प्रजा को देखते हैं ४७ महाराज दशरथजीने औरतो सबको बुलाया परन्तु मारे शीघ्रता के केकय देशके राजा व जनक पुरी के राजा जनक को नहीं बुलाया पर वेलोगभी पीछेसे रामाभिषेक सुनेंगे ४८ जो जो राजा प्रजादि बुलाये गये सबके सब आये व सभामें ४९ राजा की आज्ञा से दिये हुये आसनोंपै सब बैठे सबके सब राजाही की ओर मुखकर बैठे ५०॥

हरिगीतिका ॥

सब नृपति विनय समेत जन पद वासि मनुजन सों मिले ।
इमि भयहु शोभित नृपति दशरथ जिमिबनी तरुगण खिले ॥
सबभांति शोभित महिप मणिजिमि देवगण लहि श्री हरी ।
इमिबैठि सबयथ योग्य हि लिमिलि करतप्रेम घरीघरी॥ ५१ ॥

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेप्रथमस्सर्गः ॥ १ ॥

तिसके पीछे महाराज दशरथजी सब पुरवासी व राज्य नगरनिवासियों को अपने सामने बैठाकर सब राज्यवालों को परम हित व हर्ष बढ़ाने वाला अति प्रसिद्ध वचन सबसे एकता कर बोले १ बोलने के समय राजा का बोल परम उच्चस्वर के साथ था मानों देवताओं के नगारे बजाय मेघ गरजा ऐसा विदित हुआ २ जैसा कुछ राजों को बोलना चाहिये वैसाही अति शोभायमान उपमाही न वचन रसयुक्त से सब राजों से महाराज दशरथजी बोले ३ कि हे राजा लोगो आप लोगों ने जाना जैसा हमारा उत्तम राज्य है व हमारे प्रथम के राजालोगों नेपुत्र-

वत् सब राज्यका पालन किया है ४ सो हम सब इक्ष्वाकु वंशियों का पालाहुआ राज्य परम कल्याण से योजित करेंगे क्योंकि जिसमें सब संसार सुखी हो ५ हमने भी जहांतक होसका जैसे सब इक्ष्वाकु वंशी इस राज्यका पालन करते चलेआये हैं वैसाही पालन किया है ६ अब यह हमारा शरीर सबलोक की रक्षा करतेहुये राजकीय छत्रके नीचेनीचे रहकर बुड्ढा हुआ ७ क्योंकि अब साठ हजार वर्ष के हम हुये बनाय हमारा शरीर जीर्ण होगया चाहते हैं कि अब कुछ कार्य्य बूत न करें केवल बैठेबैठेविश्राम करें ८ क्योंकि राजप्रभाव सेवित अजितेन्द्रिय पुरुषों से बड़े दुःख से चलनेवाला लोक का भार लादने से हम थकउठेहैं ९ इससे अब पुत्रको प्रजापालन के लिये राजा बनादेवें व सब ब्राह्मणों के प्रणाम करतेहुये विश्राम करें १० यह कार्य्य भली विधि से हो सकता है हमारे ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामभद्र सब गुणों से हमारे समानहीं बरन हमसे अच्छा काम करसकते हैं क्योंकि पराक्रम में इन्द्रकेही समान शत्रुओं के नाश करनेवाले हैं ११ तिन रामचन्द्र धर्म्मात्माको युवराज पदवी पै स्थापित करेंगे क्योंकि वे पुरुषों मेंश्रेष्ठ हैं १२ इसलिये तुमलोगों के योग्य स्वामी होनेवाले हैं बरन उनके स्वामी होने से तीनों लोक उत्तम स्वामीको पावेंगे फिर आप लोगोंको क्या कहना है १३ इससे अब हम इस कल्याण से युक्त इस पृथिवी को कर व अपने पुत्रको सौंप क्लेश रहित होंगे १४ जो यहबात हमारे लिये अच्छीहो व हमने अच्छा विचारांश कियाहोतो आप लोग भीइसको प्रमाण करें यदि इसके विपरीत और कुछबात मनमें आई होतो वह भी कहिये क्याकरें १५ यद्यपि हमकोरामचन्द्रको अभिषेककरनाअति प्रियहै परन्तु यदि और कोई हितकीबात होतो शोचिये क्योंकि जो बात प्रथम विचारो फिर पूर्वा परके गुणदोषविचारने पै जो ठहरतीहै वह विलक्षण होतीहै १६ राजाके ऐसे वचनसुन सब राजालोगोंने अपनी बड़ीप्रसन्नता प्रकट की जैसे कि बरसतेहुये बादरको देखमोर अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हैं १७ जितने राजा मुनिगण पुरवासी देशवासी एकत्रहुये थे मारे हर्षके सबोंने अति मधुरवाणी से वाह वाह बहुत अच्छा ऐसाकहा उस शब्दसे मानों राजाका मन्दिर पूर्णहोकर काँपनेलगा १८ तिस धर्म्मार्थ

जाननेवाले राजा दशरथजी का ऐसा भाव सब प्रकार से जान ब्राह्मण लोग व सेनाधिकारी अयोध्यानिवासी अन्य देशवासी १९ सब एकत्रहो भलीभांति विचार कर एकचित्तहो राजा दशरथजीको वृद्ध जान व रामचन्द्रजीको सब कार्य्य करनेमें कुशल समझ सबके सब राजासे बोले २० हे राजन् आपको पृथिवी पालते पालते कई हज़ार वर्ष बीतगये व अब बनाय वृद्ध हुये इससे अब यही उचितहीहै कि अपने सामने रामचन्द्रजीको युवराज पदवी देहीदीजिये २१ क्योंकि हम लोग अब यही इच्छा करतेहैं कि महावलवान् आजानुवाहु श्रीरामचन्द्रजी बड़े हाथीपै सवारहो राज छत्र शिर पै लगाये चलें व हम लोग देखें २२ महाराज दशरथजी ऐसे तिन लोगोंके वचन सुन व तिनके मनकी प्रिय बात जान जैसे कोई अजान मनुष्य पूंछे उसी भांति जाननेकी इच्छासे यह बोले कि २३ हे राजा लोगो हमारे वचन सुनके जो रामचन्द्र को तुम अपना पति बनाना चाहतेहो इस विषय में हमको संशयहै सो निश्चय कर कहो २४ कि हम धर्म्मके साथ पृथिवीकापालन करीरहे हैं फिर हमारे जीतेहीजीते हमारे पुत्रको कैसे तुम लोग राजा होना चाहतेहौ २५ यह सुनसब राजा मन्त्री पुरवासीआदि राजासे बोले हेराजन् तुम्हारे केवल धर्म्मसे प्रजा पालना यहीगुणहै व तुम्हारे पुत्रके असंख्य कल्याण युक्त गुणहैं २६ सो अब वुद्धिमान् देव समान् परम गुणवान सबके प्रियानन्द देनेवाले श्रीरामचन्द्रके सब गुण कहते हैं सुनिये २७ सत्य पराक्रम श्रीरामचन्द्रजी अपने सब दिव्य गुणोंसे इन्द्रके समानहैं व जितने राजा इक्ष्वाकुसे ले आज तक हुयेहैं सब बातोंमें सबसे विशेषता रखते हैं २८ रामचन्द्रजी लोकमें सत्पुरुषहैं व सत्य धर्म्म परायण हैं इन्हीं रामचन्द्र ही से शोभायमान धर्म्म प्रतिष्ठा को पहुंचाहै २९ प्रजाओं के सुख देने में चन्द्रमाके समानहैं जैसे चन्द्रमा अपनी अमृतश्रावी किरणों से सब अन्नफल फूलादि परिपक्ककर प्रजाको पुष्ट करते ऐसेही ये रामभद्र क्षमा करने में पृथिवीके समान वुद्धि में वृहस्पति के तुल्य वीर्य्य में साक्षात् इन्द्रहीके समान ३० सकल धर्म्म जाननेवाले सत्यसन्ध परम सुशील निन्दारहित सहन शील अन्यलोगोंको समझाने वाले कोमल मधुर वचन भाषी उपकार मानने वाले जितेन्द्रिय ३१ कोमल स्वभाव स्थिर

चित्त सदा कल्याणरूप निन्दारहित सब प्राणियोंसे प्रिय बोलनेवाले सत्यवादी जो लोग बहुत बातें सुने जानेहैं व वृद्धहैं उनके व सब ब्राह्मणों के उपासकहैं ३२ तिसीसे इनरामचन्द्रजीकी अतुलकीर्त्ति यश तेज सब बढ़ता जाता है देवता असुर मनुष्यादिकोंमें सबसे अधिकसब शास्त्र में चतुरहैं ३३ जितनी अच्छी विद्याहैं उनकेनियमोंके पारगन्ताजैसा चाहिये साङ्गोपाङ्गसब वेदके वेत्ता गान विद्यामें पृथिवी भरमें सबसे श्रेष्ठ ३४ सकलकल्याणोंके स्थान साधुप्रकृतिसदा प्रसन्न चित्तमहाबुद्धिमान् श्रेष्ठ धर्म्मार्थमें निपुण ब्राह्मणोंसे शिक्षा पाये हुये राम हैं ३५ फिर जब कभी ग्राम वा नगर वा देश लेने के लिये संग्राममें लक्ष्मणजी के साथ जाते हैं तो बिना जीते नहीं लौटते ३६ फिर जब २ हाथी वा रथपै चढ़के कभी युद्ध करने जाते व करके लौटते तो पुरवासियोंसे स्वजनोंके समान कुशल पूंछते ३७ सो भी क्रम पूर्व्वक प्रथम पुत्रोंकी कुशल फिर अग्निकी फिर स्त्रियोंकी फिर नौकर चाकरों की तदनु शिष्यों की पूंछते जैसेकि पिता अपने और सपुत्रके समाचार प्रेम पूर्व्वक पूंछता है ३८ यह बात हम लोगों से बार बारपूंछतेहैं कि तुम्हारे शिष्य धर्म्म पूर्व्वक तुम्हारी सेवा करते हैं वानहीं ३९ फिर जब किसी मनुष्य को कभी कुछ दुःख पड़ताहै तो उसे देखकर आप दुःखित होते जब किसीके कोई उत्सवकी बात होती तो आप पिता के समान सन्तुष्ट होते ४० सदा सत्यवादी बड़े धनुष बाण चलानेवाले वृद्धों के सेवक जितेन्द्रिय चाहे उदासीनभीहों पर कुछ हँसकर बात करनेवाले सब प्रकारसे धर्म्म करने हारे ४१ कल्याणके जितने कार्य्य उनको अच्छी तरहसे करने वाले दुष्ट कथामें कभी न चित्त लगानेवाले प्रत्येक बातके उत्तर देनेमें मानों वृहस्पतिहीहैं ४२ सुन्दर भौंहबड़ेबड़ेताम्रवत् नेत्र साक्षात् श्रीविष्णु के अवतार सब शौर्य्य वीर्य्य पराक्रम से ये रामचन्द्रजी लोक के अभिराम देनेवाले ४३ सदा प्रजापालनमें तत्पर परन्तु जो राजाओंके नाना प्रकार के भोग विलासादि राग होतेहैं उनके वशीभूत नहीं फिर क्योंन हों ये तो तीनों लोक का राज्य भोग कर सक्तेहैं इतनी पृथिवी के राज्यमें क्याहै ४४ फिर इनका क्रोध और प्रसाद कुछभी नहीं निरर्थक होसक्ता जिसके ऊपर क्रोध करें वहभी जाने किसीने कियाहै और जिसके ऊपर

प्रसन्नहों वहभी जाने कि कोई प्रसन्न हुआहै यही राजाओंको चाहिये भी फिर जो लोग वध करनेहीके योग्यहैं उनको नियमसे वध करते जो अवध्य हैं उनके ऊपर स्वप्नमें भी नहीं कोप करते जिसके ऊपर प्रसन्न होतेहैं उसको सब पदार्थ देतेहैं किसी बातकी चाहना उसको नहीं रहती ४६ अपने मनके दमन करने व प्रजाओं की कामना पूरण करने-वाले कामोंसे कि जिनसे मनुष्यों को प्रीति उत्पन्न हो ऐसे गुणोंसे राम-चन्द्र ऐसे शोभित होते जैसे किरणों से सूर्य्य शोभित होतेहैं ४७ इन सब गुणों से भरे पुरे सत्य पराक्रम लोकपालों के समान श्रीरामचन्द्र जीको अपना स्वामी बनाना पृथिवी मण्डलके सबजन चाहतेहैं फिरहम लोग क्यों न चाहैं ४८ बड़े भाग्यकी बातहै कि ऐसे कल्याणमूर्त्ति राम-भद्र तुम्हारे पुत्र हुये जैसे कि मरीचि केपुत्र कश्यपजी हुयेहैं ४९ इन तुम्हारे पुत्र रामचन्द्रके बल आरोग्य व आयुष देवता असुर मनुष्य गन्धर्व्वनागसबसे अधिकहै ५० इसीसे राज्य ग्रामपुर सब कहींके रहने-वाले लोग रामचन्द्रजीकीप्रशंसा करतेहैं व बाहर भीतरके सब देश पुर राज्यनिवासी प्रशंसा करतेहैं ५१ कहांतककहें सब बूढ़ी ज्वानीस्त्रियांसा-यम्प्रातःकाल रामचन्द्रही के लिये देवताओंके नमस्कार करती हैं ५२ ॥

चौ० ॥ चाहत प्रजा राम अभिषेकू । सो सब होइ आज सविवेकू ॥
ह्वै प्रसन्न कीजै सब काजा । जासों होहिं राम अब राजा ॥ १ । ५३
इन्दीवर सम श्याम बिशाला । सकल शत्रुसूदन जन पाला ॥ रामहिं
लपन चहत हम लोगा । नृपह्वै सब कहँ करहिं विशोगा ॥ २ । ५४

दो० देवदेव सम निज तनय सकल लोक हितकारि ॥
हमन हेतु युवराज करि दीजै नृपति विचारि ३ । ५५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्वितीयस्सर्गः ॥ २ ॥

तिनलोगोंके ऐसे वचन सुन व उनको हाथजोरेहुये देख तिनके हाथ पकड़ प्यारे व हित वचन राजाबोले १ हे राजालोग व सब प्रजालोगो हम बहुत प्रसन्न हुये व हमारा प्रभाव अतोलहै जिससे कि हमारे ज्येष्ठ पुत्रको तुमलोग युवराज पदवीपै विराजमान देखा चाहतेहो २ इतनी तिन लोगोंकी बड़ाई कर वसिष्ठ वामदेवादि ब्राह्मणों से राजालोगों के

सुनतेही सुनते बोले ३ हे महाराजो देखो चारोंओर से बन फुला रहेहैं यह परम शोभायमान चैत्रमास है इसमें रामचन्द्र के अभिषेक के लिये सब सामग्री एकत्र करो ४ राजा तो इतना कह चुपा रहे सब लोगों में मारे हर्ष के बड़ा हल्ला हुआ ५ महाराज दशरथजी ने धीरे धीरे सब हल्ला शांतकर वसिष्ठ व वामदेवसे कहा ६ कि रामचन्द्र के अभिषेक के लिये जोजो कर्म्म व जोजो सामग्री चाहिये सबके लिये अभी आज्ञा दीजिये ७ राजा के ऐसे वचन सुन वसिष्ठजी व वामदेवजी आगे खड़े हुये मन्त्रियों से बोले ८ कि सुवर्ण आदि रत्न व पूजा की सामग्री सब औषधें उजले फूलोंकी माला धानके लावा नाना प्रकारकी मिठाई घृत नयेनये वस्त्र रथ सब आयुध ९ चतुरङ्गिनीसेना सुन्दर सजेसजाये हाथी चमरीकी पूंछके बेना ध्वजा पताका उजली छतुरी १० सुवर्ण के १०० कुम्भ इनके विशेष सुन्दर सुन्दर और धातुओं के सहस्रों कुम्भ सोनेसे सींग मढ़ा कर एक बैल नख खुर कान आदि सहित बाघका चर्म्म ११ ये सब पदार्थ प्रातःकाल होतेही राजा की अग्निशाला में एकट्ठा करो इसके सिवाय और जोजो वस्तु यज्ञ के योग्य हों सब एकत्र करो १२ जनाने के सब द्वार और अयोध्या भरके भीतर बाहर के जितने द्वार हैं सबों पै चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं का छिरकाव व लेपहो सब पै फूलों की माला टांगी जावें सुन्दर सुन्दर धूप किये जावें १३ सब प्रकार के सुन्दर मीठे आरोगकारी अन्न दही दूध खीर आदि भोजनके पदार्त्थ तैयार हों जिससे सैकरों हजारों ब्राह्मण भोजन पायपाय तृप्त हों यह भोजन ब्राह्मणोंको सत्कार पूर्व्वक बड़े प्रातःकालही दियाजाय १४ घृत दधि लावा आदि भी दिया जायँ दक्षिणा ऐसी दीजाय जिसमें पानेवालेको भी फिरकहीं कुछ मांगनेकी आवश्यकता न रहै प्रातःकाल होतेहीं स्वस्त्ययनादि पुण्याहवाचनादि के साथ यज्ञका आरम्भ होगा १५ ब्राह्मणों का निमन्त्रण इसी समय देदिया जाय व उनके लिये आसन बनाये जायं ठौर ठौर पताका बांधी जायं सब सड़कें चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं से मिले हुये जल से सींची जायं १६ सब नाचने गाने बजानेवाले लोग सहित वेश्यावोंके नाना वस्त्र भूषणों से भूषित कराय राजमन्दिर की दूसरी पाउठ में टिकाये बैठाये जायं १७ जितने

देवताओं के मन्दिर अयोध्या में हैं सब में सब प्रकार के खाने पीने के पदार्थ सहित दक्षिणा भेजेजायँ पुष्पमालादि पूजनकी सब सामग्री भी वहां पहुंचाई जाय वहां भी ब्राह्मण लोग बुलाय २ देवताओं के प्रसन्न होने के लिये भोजन कराये जायँ १८ सब योधा लोग बड़ेखड्ग बांधेहुये अच्छीतरह से तैयार सुन्दर २ वस्त्र धारण किये महाराज के अँगना में प्रवेश करें १९ इसभांति वसिष्ठ वामदेव दोनों ब्राह्मणों ने मन्त्री व सेवकों को आज्ञादे जो कुछ कर्म्म बाकी थे करनेलगे इस सब की खबर महाराजको भी करदी २० कि महाराज जो कुछ कहना सुनना करना धरना था सबकुछ करने कराने का प्रारम्भ कर दिया गया २१ यह सुन महाराज दशरथजी सुमन्त्र नाम अपने बड़े मन्त्री से बोले कि बहुतही शीघ्र रामचन्द्र को हमारे निकट लाइये २२ राजाके वचन सुन सुमन्त्रजी अति वेगजाय सुन्दर रथपै सवार कराय रामचन्द्रजी को महाराज के निकट लाये २३ उस समय महाराज के निकट पूर्व्व उत्तर पश्चिम दक्षिण दिशाओं के सब राजालोग बैठेथे २४ म्लेच्छ आर्य्यादि वनपर्व्वतवासी अन्य लोग भी राजा की उपासना कर रहेथे जैसेसब देवता लोग इन्द्रजी की सेवा करते हैं २५ तिनसबों के मध्यमें दशरथ जी जैसेदेवों के बीच में इन्द्र शोभित होते हैं विराजमान थे कि रथपै चढ़ेहुये रामचन्द्र को आतेहुये देखा २६ जोकि गन्धर्व्वराजके समान सुन्दर लोकमें विख्यात पौरुष दीर्घबाहु महा भारीडील मत्तहाथी के समान चलने वाले २७ चन्द्रसम मुखारविन्द अतीव प्रिय दर्शन रूप उदारतादि गुणों से पुरुषों के चित्तको चोराते हुयेथे २८ जैसेघाम से व्याकुल प्रजा को जलवृष्टि से आनन्दित करतेहुये बादर को देख लोग तृप्तनहीं होते श्रीरामभद्र को आतेदेख ऐसेही महाराज दशरथ जी अति आनन्दित हुये २९ सुमन्त्र जी रामचन्द्रजी को रथसे उतार पिता के निकट आते हाथजोरे चलेजाते रामके पीछे पीछे चले ३० रामचन्द्रजी भी मन्त्री के साथ कैलास समान ऊंचे धवरहरपै बैठेहुये महाराज दश-रथजी के पास पहुंचे ३१ व हाथजोर प्रणामकर पिता के निकट अपना नामकह चरणारविन्दों में जाय प्रणाम किया ३२ महाराज ने हाथ-जोरे हुये बगल में खड़ेहुये रामचन्द्रजी का हाथ पकड़ छातीसे लगाय

अच्छी तरह से भेंटा ३३ महाराज ने श्रीरामभद्रजी को अपने सामने मणिकाञ्चन भूषित आसन बैठनेके लिये बताया ३४ तिस आसनपै बैठे हुयेरामचन्द्रजी भी ऐसे शोभित हुये हैं जैसेसुमेरु पर्व्वत पैरविशोभित होतेहैं ३५ तिन देदीप्यमान रामचन्द्रजी के बैठनेसे सभाकी सभाशोभित हुई जैसे कि विमल तारा ग्रहों के साथ शरद ऋतुका आकाश चन्द्रमा से शोभित होताहै ३६ तिनपरमप्रिय पुत्रको देख राजा अतीव सन्तुष्ट हुये जैसेसब अच्छे २ भूषणवस्त्र पहिने अपनादेह दर्पण में देख सन्तुष्ट होते ३७ सब पुत्रवानों में श्रेष्ठ महाराज दशरथजी हँसकर पुत्रसे बोले जैसेइन्द्र से कश्यपजी कभी प्रसन्न होकर बोलते हैं ३८ हे राम तुम हमारी ज्येष्ठपत्नी कौशल्यामें जोकि सबतरहसे हमारे योग्यहैं उत्पन्नहो व तुममेंसब श्रेष्ठ श्रेष्ठ गुण विद्यमान हैं इसीसेपरम प्रियभी हो ३९ व जिससे तुमने अपने गुणोंसे सबप्रजाओं को आनन्दित कियाहै तिससे इस पुष्य नक्षत्र में युवराज पदवीपै बैठो ४० यद्यपि तुमअपने स्वभाव ही से अति सुशिक्षित नम्र व गुणवान् हो तथापि हे पुत्रमारे स्नेह के फिरभी तुम्हें हितकरनेवाले गुण तुमसे बताते हैं ४१ बार बार तुमको चाहिये कि विनय को धारणकर सदा जितेन्द्रिय रहो व काम क्रोध से उठेहुये जो दुर्व्यसन लोगोंको होजाया करतेहैं उन्हें सदात्यागे रहिये ४२ राज्यके वृत्तसदा दूतोंके मुखसे जानबूझ व वादी प्रतिवादियों को कचहरी में बुलाय अपने सामने सबका न्याय करना जितने नौकर चाकर मन्त्री दीवान् आदिहैं सबका अनुरंजन यथाविधि करते रहना ४३ कोठियों में अन्नादिक संग्रह सदा रखना अस्त्र शस्त्रादि कों के गृहभी सदारक्षित रखना ४४ क्योंकि जो कोई राज्य वा राज्यसम्बन्धी लोगों की प्रसन्नता के साथ पृथिवी का पालन करताहै तिसके मित्रवढ़ती को प्राप्तहोते हैं जैसे कि अमृत पायके देवगण बढ़ती को प्राप्तहोते हैं तिससे हे पुत्रतुम इन सब बातों का नियमकर अपना राज काज करो ४५ ॥

चौ० ॥ यहसुनि राम सुहृद प्रियकारी । त्वरित गये अन्तःपुरझारी ॥ कौशल्या सों खबरि जनावा । सोसुनि जननी अति सुख पावा ॥ १ । ४६ पुनि हाटक मणि गो बहु भांती । दीन सँदेशिन नहिंकहि जाती ॥ किमि न देहि इमि रघुवर माता । दान सँदेशिन्ह अति विख्याता ॥ २ । ४७

करि प्रणाम नृपके श्रीरामा । रथ चढ़ि चल्यहु लोक अभिरामा ॥ परम रम्य निज भवनहिं आये । जनन्हकीन्ह पूजा हरषाये ॥ ३ । ४८ ॥ नृपति वचन सुनि सब पुरवासी । परम लाभ पायहु सुखरासी ॥ महिप जुहारि गयहु निज गेहा । पूजत देव राम के नेहा ॥ ४ । ४९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेतृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

जब सब मन्त्री लोग व पुरवासी सम्मत करके चलेगये तो महाराज दशरथजी निश्चय के जाननेवाले तो थेही कार्य्य की निश्चय उन्होंने करली १ कि प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र होगा इसलिये हमारे पुत्र रामचन्द्र का प्रातही अभिषेक होगा व युवराज पदवी उनको मिलेगी २ इसके पीछे राजा महल में पधारे व सूत को बुलाया कि रामचन्द्र को फिर यहां बुलाय लावो ३ राजाके वचन सुन रामचन्द्रजी के आननेके लिये रामचन्द्र के मन्दिर को सूत गये ४ व द्वारपालों की द्वारा आनेके लिये रामचन्द्रजी को जनाया जब रामचन्द्रजी ने सुना कि राजा की आज्ञा से सुमन्त्र नाम सूत फिर बुलाने आये हैं यह शोच बड़ी शङ्का में परे ५ व द्वारपालों की द्वारा सुमन्त्रको बुलवाकर रामचद्रजी बोले आप जिस हेतु आये हो सम्पूर्ण वृत्तान्त कहिये ६ यह सुन सुमन्त्रजी बोले कि राजासाहब आपको देखा चाहते हैं वहां चल जो बातहो उसका प्रमाण जान लीजिये ७ सुमन्त्रजी के ऐसे वचन सुन श्रीरामचन्द्रजी अति वेग राजा के देखने के लिये राजमन्दिर को आये ८ रामचन्द्र को आयेहुये सुन राजादशरथजी ने परमप्रिय पुत्रसे कुछ बोलनेका विचार किया ९ रामचन्द्रजीने भी राजमन्दिर में प्रवेश करतेही अपने पिताको देख हाथ जोड़ प्रणाम किया १० प्रणाम करते हुये पुत्र को देख राजा ने उठाय छातीसे लगाय बैठने के लिये अति विशाल आसन दिया व कहा ११ हे राम अब हम वृद्ध हुये बहुत दिन राज्य करके भोग विलासादि भी अपने मन माने किये बहुत बहुत अन्न युक्त बहुत बहुत दक्षिणा देदे सैकरों यज्ञ कियेकराये १२ ईश्वरानुग्रह से उपमाहीन तुम ऐसे पुत्र भी हुये जो जो इष्ट था सब हुआ शास्त्रोंमें भी हमने अभ्यास करलिया १३ हे वीर अब कोई सुख बाकी नहींरहा जो हमने न किया हो

देवता ऋषि पितर ब्राह्मण व अपने ऋणसे भी छूटगये क्योंकि जब तक मनुष्य यज्ञ अध्ययन पुत्रोत्पादन दान उत्तम उत्तम पदार्थों का भोग नहीं करता क्रम से देवता ऋषि पितर ब्राह्मण व अपने शरीर के ऋण से तबतक नहीं छूटता सो ये सब बातें हम करचुके १४ अब तुम्हारे अभिषेक को छोड़ और कुछ भी हमको करना नहींरहा इससे जो हम तुमसे कहें वह करो १५ अब सब मन्त्री व प्रजालोग चाहते हैं कि तुम राजा होवो इससे तुमको हम युवराज पदवी पै स्थापित किया चाहते हैं १६ किन्तु इस विषय में कुछ विघ्न भी हमको विदित होताहै देखो दो एक दिनसे जितने स्वप्न देखते हैं सब अशुभ ही अशुभ हैं स्वर्ग से उल्कापात सहित वज्रपतित होते अकस्मात् अति भयङ्कर शब्द हो उठता है १७ हमारे जन्म नक्षत्र पै आजकल सब दारुण ग्रह आयगये हैंज्योतिर्व्वित् लोग कहते हैं कि सूर्य्य मङ्गल राहु तीनग्रह तुम्हारे जन्म के नक्षत्र पै आयेहैं ये अच्छे नहीं हैं १८ बहुधा ऐसेकारणों के होने से कि तो राजाही मृतक होजाता है वा औरही कोई कठिन विपत्ति आन पड़ती है १६ तिससे जबतक हमारा चित्त तुम्हारे अभिषेक की ओरसे विमुख न हो तभी तक तुम राजगद्दी पर बैठ जाव क्योंकि प्राणियों की मति चल होती है सदा एक प्रकार की नहीं रहती २० आज पुनर्व्वसु नक्षत्र है प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र होगा ज्योतिषीलोग बताते हैं कि राज्याभिषेक के लिये यह नक्षत्र सर्व्वोपरि है २१ तिससे पुष्पमें अवश्य तुम राजगद्दीपै बैठो इस विषयमें हमारे चित्तमें बड़ी शीघ्रता है प्रातःकाल हम अवश्य तुमको युवराज पदवी पै बैठावेंगे २२ तिससे अब इस समय भोजनादि न करना सहित अपनी स्त्रीके नियमसे रहना व पत्थर पै आज शयन करना २३ तुम्हारे मित्रलोग भी बड़ी सावधानी से आज तुम्हारी रखवारी चारोंओर से करते रहें क्योंकि ऐसेकार्य्योंमें बहुत तरह के विघ्न हुआकरतेहैं २४ हम यहभी चाहते हैं कि भरत अपने ननिऔरे को गये हैं जब तक वे आया चाहें उसके प्रथमही तुम्हारा अभिषेक होजाय क्योंकि जब केकयी का बिवाह हुआ है तो उनके पिताने कौलकर लिया है कि राजा हमारीही कन्या का पुत्र होगा २५ यद्यपि भरत को इस विषय में कुछ विषाद न होगा न उनको राज्य लेनेकी इच्छा है

क्योंकि वे सज्जनों के वृत्तान्त में टिके हैं ज्येष्ठ भ्राता के अनुयायी धर्म्मात्मा दयावान् व जितेन्द्रियहैं २६ तथापि हमारा यह सम्मतहै कि मनुष्योंका चित्त चञ्चल होता है यद्यपि सब मनुष्यों के समान सज्जनों का चित्त चञ्चल नहींहोता तथापि धर्म्म निरत सज्जनोंका भी चित्तजब कोई भेदी मनुष्य मिलके भेद डारदेता है तो चञ्चल होजाता है इसलिये जो अभी बिना भरतही के तुम्हारा अभिषेक होजावे तो पीछे से सुनकर भरत भी प्रसन्न होंगे यदि उनके आनेपर को रक्खें तो कौन जाने किसीके कहने सुननेसे उनको भी राज्यलेने की इच्छा न हो२७ राजाने कहा इसलिये प्रातःकाल तुम्हारा अभिषेकहोगा अब अपनेमन्दिर को जाव ऐसी पिताकी आज्ञापाय प्रणामकर श्रीरामचन्द्र अपने मन्दिरको गये २८ वहां पहुंचे व चाहा कि जानकीजीसे भी सब नियम जो जो आज कर्त्तव्यहैंकहें पर वहां सीताजी न थीं इसलिये तुरन्त वहांसे अपनी माता के मन्दिरको चलेगये २९ वहाँ पहुंचकर देखा तो कौशल्या जी रेशमी कपड़े पहिने देवमन्दिर में बैठीहुई मौनव्रत धारण किये श्रीरामचन्द्र के अभिषेककी राजश्री मांगरहीहैं ३० व रामचन्द्रजी का अभिषेक सुनकर सुमित्राजी व लक्ष्मणजी भी प्रथमहींवहां आयचुकेथे कौशल्याजीने सीता जीकोभी यहहाल सुनकर बुलायाथा वे भी वहींथीं ३१ कौशल्याजी तो जानौ तिस समय नारायण पुराण पुरुष का ध्यानही नयन मूंदे कररही थीं व सुमित्रा लक्ष्मण जानकीजी सबउनकी उपासना कररही थीं ३२ क्योंकि लोगोंकी जबानीसुन चुकीथीं कि कल पुष्य नक्षत्रमें हमारे पुत्रका राज्य अभिषेक होगा इसलिये प्राणायाम किये हुई जनार्द्दन भगवान् का ध्यानकरती थीं ३३ उसी समय में श्रीरामचन्द्रजी जाय प्रणाम कर माता को हर्षाते हुये यह बोले कि ३४ हे मातः पिताजीने हमको प्रजापालन करने के लिये आज्ञादी है इसलिये प्रातःकाल यौवराज्याभिषेक पिताजी की आज्ञा से हमारा होगा ३५ तुम्हारी बधू सीताको भी चाहिये कि इस रात्रि में हमारे संग उपवासकरे क्योंकि वसिष्ठादि ऋषियों की सम्मति से पिताजी ने यही कहा है ३६ सो प्रातःकाल अभिषेक होने के विषय में जो जो मङ्गल स्नानादि कर्मयोग्य हों जनकनन्दनी के साथ हमको कराइये ३७ बहुत दिनोंसे रामचन्द्र के

अभिषेक की अभिलाषा थी उसे सुन कौशल्याजीमारेहर्षके घबड़ायहुये वचन श्रीराम से बोलीं ३८ हे वत्स हे राम बहुत दिनतक जिओ व जितने दुष्ट हैं सबको मारो हमारे व सुमित्रा के बन्धुओं को अपनी राज्य पदवी से लक्ष्मी सहित करो ३९ बड़े हर्षकी बात है कि ऐसे कल्याणयुक्त नक्षत्र में तुम हमारे उत्पन्न हुयेहो जिसके कारण अपनेशुभ गुणों से दशरथ अपने पिताको तुमने प्रसन्न किया ४० ॥

चौ० ॥ पुरुषपुराण जलज समलोचन । नारायण आरतभयमोचन ॥ तालगि जोव्रत कियेसफल सब । जासों पुत्रहोत राजा अब १ । ४१ इमि सुनि मातु वचन रघुनन्दन । प्रणत देखि लखनहिं गत फन्दन ॥ बोल्यहुहँसत कहत मृदुबाता । जोसुनि मुदित भयहु लघुभ्राता २।४२ ममसँग लषन महीसब पालहु । सकल बैरि कुलके उर शालहु ॥ तुम मम प्राण समान अहेहू । जासों राज्यलक्ष्मि यहलेहू ३ । ४३ इष्ट भोग भोगहु नित भाई । सकल राज्य फल लहहु अघाई ॥ हमनिजप्राण राज्यतवहेतू । राखत सहज न कहत सचेतू ४ । ४४ इमि कहि लषनहिं मातन बन्धहु । रघुनन्दन बहुभांति अनन्धहु ॥ आज्ञा लै जननिन सों रामा । सीता सङ्गगये निज धामा ५ । ४५ ॥

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ॥ ४ ॥

महाराज दशरथजी रामचन्द्रजीसे यह कह कि प्रातःकालअभिषेक होगा जाव अपनी बधूसहित नियम से रहो अपने पुरोहित वसिष्ठजी को बुलाय यहबोले १ हेतपोधन जाइये राज्यलाभ रूपकल्याण के लिये जितेन्द्रियता के साथ रामचन्द्र व सीताको आजकी रात्रिमें उपवास कराइये २ यहसुन बहुत अच्छा ऐसा राजासे कह वेद वादियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ भगवान् रामचन्द्रजी के मन्दिर को गये ३ क्योंकि मंत्रशास्त्र में परम पंडित रामचन्द्रजीको उसदिन उपवास कराना था इसलिये ब्राह्मणों के योग्य रथपै सवारहो सब निश्चय कर कराय चले ४ जाय उजले बादर के समान दीप्तिमान् श्रीरामचन्द्रजी के भवनमें वसिष्ठजी पहुंचे तीन फाटकों तक रथपै चढ़ेही चढ़े चलेगये ५ श्रीरामचन्द्रजी ने जाना कि गुरूजी आतेहैं बड़े हर्ष के साथ अति शीघ्रतासे मानवे योग्य

मुनिराजका मान करतेहुये अपने मन्दिरसे निकले ६ यद्यपिबड़ी शीघ्र-ताके साथ मुनिराज का रथ आताथा तथापि रामचन्द्रजी झटपट जाय मिले व अपने हाथोंसे पकर रथसे मुनिराजको उतारा ७ मुनिराज रामचन्द्रजीको बहुत नम्र देख अच्छीतरह पूंछ पांछ प्रसन्न कर श्रीर-घुनन्दनजीसे बोले ८ हे रामचन्द्र तुम्हारे पिताजी तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं युवराज पदवी तुम पावोगे आज सहित सीता आप उपवास करें ६ क्योंकि प्रातःकाल यौवराज्यपै तुम्हारे पिता तुमको स्थापित करैंगे क्योंकि दशरथजी बहुतही प्रसन्नहैं जैसे प्रसन्न होकर राजा नहुष ने राजा ययाति को राज्य दिया तैसेही तुमको राजा दशरथजी देंगे १० यह कह सब मन्त्रवेत्ता मुनिराजने नियत व्रत श्रीरामचन्द्रजीको सहित सीता उसरात्रिको उपवास कराया ११ फिर रामचन्द्रजी ने वसिष्ठजी राजगुरू की पूजा भली भांतिकी उसे अङ्गीकार कर अच्छी तरह कुशल प्रश्न कर राम मन्दिरसे मुनिराज निकले १२ यहां रामचन्द्रजीभी प्रिय सत्यवादी मित्रों के सङ्ग कुछ घरी बैठे बैठाये रहे फिर सब इष्ट मित्रों की सम्मतिसे अपने मन्दिर में निवसे १३ उस समय परम हर्षित स्त्री पुरुषोंके बैठने उठने से राममन्दिर अति शोभित होताथा जैसे कि मत-वाले हाथी सहित कमल फूला हुआ तडाग शोभित होताहै १४ वसिष्ठ जीने राजमन्दिर के तुल्य रामसदनसे निकल देखातो सब सड़कें जनोंसे भरीपुरीहैं १५ अयोध्यामें झुण्डकेझुण्ड मनुष्य इधरउधरसे सड़कोंपै चल रहेहैं कहीं आने जानेका अवकाश नहीं मिलता ये सब लोग श्रीरामा-भिषेक देखनेके अभिलाषीहो अपने २ घरोंसेमारे हर्षके घबड़ायघबड़ाय निकल खड़े हुयेथे ऐसी भीर थी किकहीं वारापार नहीं मिलता १६ जनों के जो झुण्ड के झुण्ड मारे हर्ष के शब्द करते हुये सड़कों पै चले जातेथे मानों वेही लोग लहरेंहैं सो उन सड़कों परके लोगोंका शब्द समुद्रके समान होरहाथा १७ उस समय अयोध्यापुरी चौकमें सुगन्धित जलसे छिरकाव होने व केला सुपारी आदिके वृक्षोंके ठौर ठौर लगने से व ऊंचे ऊंचे ध्वजा पताकादिकोंके बंधनेसे अतीव शोभित होतीथीं१८ तिस समय सब अयोध्यावासी स्त्री पुरुष बाल वृद्ध रामचन्द्रजी के अभिषेक के देखनेकी इच्छासे सूर्य्यके उदय होनेकी इच्छा करतेथे कि

कब सूर्य्योदयहो कब रामाभिषेकहो कि हम सब नयन पसार देखें १९ प्रजाओं के भूषण करनेवाला व जनोंके आनन्द बढ़ानेवाला रामाभिषेक का महोत्सव देखनेकेलियेसब अयोध्यावासी अभिलाषा करतेथे२० इस प्रकार से जनों के झुण्ड झुण्ड से भरेहुये राजमार्ग्ग को देखतेहुये वसिष्ठजी राजमन्दिर में आये २१ हिमगिरि के समान ऊंचे व उजले धवरहर पर चढ़ राजा दशरथजी के पास पहुंचे जैसे कि इन्द्र के पास बृहस्पतिजी पहुंचतेहैं २२ वसिष्ठजीको आते हुयेदेख महाराज दशरथ जी राजसिंहासन पर से उतर प्रणामकर जिसलिये मुनिराज को वहां भेजाथा पूंछाकि हमारा मत रघुनन्दन को अङ्गीकारहै वा नहीं मुनिराजने कहा हां सब आपकी आज्ञाके अनुकूलहीउन्होंने किया२३ राजाकेराज सिंहासन पर से उठतेही जितने सभासदथे सबकेसब उठ उठ मुनिराज की पूजा करने लगे २४ ॥

दो० गुरु अनुशासन पायनृप जनन छोड़ि त्यहि ठाम ॥
जिमि केसरि गिरिगुह विशत तिमि गमने निजधाम १ । २५
अति भूषण भूषित युवति गण मण्डित महिपाल ॥
इन्द्र भवन सम सदन महँ प्रविश्यहु करत निहाल २
जिमि विधु तारागण सहित नभमहँ करत प्रवेश ॥
तिमि अन्तःपुर महिपमणि दशरथकीन निवेश ३ । २६

इत्यार्षे रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे पञ्चमस्सर्गः ॥ ५ ॥

जब कुल गुरु पुरोहित वसिष्ठजी चलेगये तो जानकीजी सहित रामचन्द्रजी मनको जीत स्नानकर श्रीनारायण भगवान् की उपासना करनेलगे १ प्रथम खीरके पात्र के नमस्कारकर विधिपूर्व्वक महादेव नारायण के लिये प्रज्वलित अग्नि में आहुति देनेलगे २ देते देते जब थोड़ी सी खीर रहगई तो उसे भोजन कर व अपना हित जो रावणका मारनाथा उसे मनमें धर श्रीनारायण देवको ध्यान करतेहुये कुशासन पै३ मौन व्रत धारण कियेहुये श्री मिथिलेशकिशोरी जी के साथ नियत मानस ह्वै श्रीविष्णुके सुन्दर मन्दिरमें श्रीदशरथ राजकुमार रामचन्द्र जी शयन कर रहे ४ जब पहरभर रात्रि बाकी रही तो जागकर अपने म-

न्दिरको खूब झंराया बहराया लिपाया पोताया ५ इतने में सूत लोग आये पुरानायश कहनेलगे मागध लोग वंशकी प्रशंसा करने व वन्दीगण स्तुति करनेलगे आप प्रातःकालकी सन्ध्या करनेलगे सूर्य्यांजलि करके फिर गायत्री जपनेलगे ६ जपनेके पीछे मस्तक नवाय सूर्य्यमण्डल में टिके हुये नारायण भगवान्की स्तुति करने व विमल रेशमी कपड़ पहिन ब्राह्मणोंको बुलाय स्वस्ति पुण्याह वाचनादि करानेलगे ७ तिन ब्राह्मणों के पुण्याहवाचन का अति गम्भीर मधुर शब्द नगारों की घमघमाहट के साथ अयोध्या में पूर्ण होगया ८ सब अयोध्यावासी जानकी रघुनन्दन को अभिषेक होनेके नियमकेलिये उपवासादि नियम कियेहुये सुन परमानन्दित हुये ९ जब बनाय प्रातःकाल होगया तो सब पुरवासी श्री रामचन्द्रजी का अभिषेक सुन ठौरठौर नगरकी शोभा करने केलिये कदली स्तम्भादि गाड़ने लगे १० अयोध्याजीमें प्रथम जितने देव मन्दिर बड़े ऊंचेऊंचे हिमिगिरि के शिखरोंके समानथे व जितने चौरहा चौक हाट बाट छहर दीवारी के ऊपरके उच्चस्थानथे ११ व नानाप्रकार की वस्तुओं से भरेपुरे जितने उद्यमियों के मकानथे व जितने मन्दिर बड़े बड़े परिवार वाले महाजनोंके थे १२ व सब सभाओंमें व जितने ऊंचे २ वृक्षथे इन सब स्थानोंपै ऊंची २ ध्वजा पताका बांधी गईं १३ सब लोग चारों ओर से नट व नाचने गानेवाले लोगों का गाना बजाना मन व कानोंके सुख देनेवाला सुननेलगे १४ अब हाट बाट घर द्वार भीतर बाहर जहां देखो लोग रामचन्द्रजी के अभिषेकही की वार्ता कर रहेथे १५ कहांतक कहें अपने २ द्वारपै खेलतेहुये बालक भी सब ओर से रामचन्द्र जी के अभिषेकहीकी कथा परस्पर करतेथे १६ श्रीरामचन्द्रके अभिषेकमें जितने राजमार्ग्ग थे सब पै पुष्पमाला बिथराई गईं नानाप्रकार की सुगन्धित वस्तुओंके धुआं से पूरण कियेगये इस कार्य्य में यह नहींथा कि सब कहीं राजसेवकही सब काम करने जायँ नहीं अपने अपने गृहद्वार पै सब अयोध्यावासियों ने मङ्गलाचरण किये थे जान पड़ताथा कि सबके घरमें रामाभिषेकहै १७ जिसमें कि दिनके समान रात्रिको भी उजियारी रहै बरन रात्रिका होना विदितही नहो इसलिये सब सड़कोंपै सहस्त्रों लक्षों करोड़ों दियाधरनेके लिये खम्भा गाड़े गये १८ इसरीतिसे अयोध्या

नगरीको सब तरहसे भूषितकर सब पुरवासी रामचन्द्रजीके यौवराज्या-भिषेककी आकांक्षा करनेलगे कि कब होगा १९ झुण्डके झुण्ड लोग ठौर २ हाट बाटों में व सभाओं में बैठे हुये रामाभिषेकही की वार्त्ता क-रते व महाराज दशरथजीकी प्रशंसा करते२० किबड़े हर्षकीबातहै ये इ-क्ष्वाकुके कुलके बढ़ानेवाले महाराज दशरथ बड़े महात्माहैं जो कि अपना को वृद्ध जान अब रामचन्द्रजीको युवराज पदवी देतेहैं २१ हम सब लोगों के ऊपर बड़ी दया हुईजो कि हम लोगोंके रामचन्द्र राजा होतेहैं ईश्वर बहुत दिनोंतक लोकोंके आद्यन्त जाननेवाले रामचन्द्रको हम लोगों का रक्षक रक्खे २२ क्योंकि ये रामचन्द्र जी सरलस्वभाव परमविज्ञ धर्म्मात्मा व भाइयों के ऊपर सदा कृपा करनेवाले हैं फिर जैसे अपने भाइयोंके ऊपर सदा सरलस्वभावसे स्नेह रखतेहैं वैसेही हम लोगोंके ऊपरभी रखतेहैं २३ पापरहित धर्म्मात्मा राजा दशरथ चिरंजीवीहों जिनके प्रसादसे रामचन्द्रको यौवराज्य पदवी पै अभिषेक किये हुये हम लोग देखेंगे २४ पुरवासियों के ऐसे वचन दूर दूर से जो लोगनि-मन्त्रणामें वा ऐसेही आये थे उन्होंने सुना २५ ये लोग रामचन्द्रजी का अभिषेक देखनेके लिये सब दिशाओंसे नाना प्रकारके देशोंसे पुरीमें आये थे आय २ रामचन्द्रजी की पुरी पूर्ण करदी २६ सब लोग इधर उधर घूमते हुये बड़ा भारी शब्द सुनते थे जैसे कि पूर्णमासी के दिन बढ़ेहुये अतिवेग समुद्रका शब्द सुन पड़ताहै २७॥

हरिगीतिका ॥

पुरुहूत सदन समान अवध विराज निस्स्वन सोसही।
सब देश देशनके सकल जन देखने आये कही॥
जिमि जलधि नक्रतिमिङ्गलादिक जलज जन्तुन पायकै।
भलि भांति शोभित होत तिमिपुर चलत सब जन धायकै १। २८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषष्ठस्सर्गः ॥ ६ ॥

अबकौशल्या सुमित्रा दोनों रानियोंनेसकलपुरवासियोंने जिसप्रकार श्रीरामाभिषेक सुनके हर्ष किया वह तो कहा अब कैकेयी के वृत्तान्त कहतेहैं कैकेयीके माता पिताकेयहांसे एकमन्थरा नामदासी आईथी वह

जहां कैकेयी रहतीथी वहीं रहाकरतीथीं अकस्मात् उसी रात्रिमें जिस में कि रामाभिषेककी तयारी सर्व्वत्र होरहीथी चन्द्रमाके सदृश उजले धवरहरपर चढ़ी १ देखातो सब अयोध्यापुरीकी सड़कोंपै छिरकाव हो चुकाथा ठौरठौर कमलादि पुष्पोंकी माला टँगी व विथराईथीं २ बड़ेबड़े मोलकी ध्वजा पताका सब ऊंचे ऊंचे स्थानोंपै बँधीथीं कहीं खाली ऊंची भूमि न थी सब कहीं पाटपूट सुधारिकै समान की गईथी जिसमें बहुत लोगोंके आने जानेमें सङ्कीर्णता नहो इसलिये जहांतहां छहर दिवारी आदि गिराय दीगईथी सबओरसे सब लोगोंके आने जानेके लिये मार्ग्ग बन गयेथे ३ चन्दनादि सुगन्धित वस्तु मिश्रितजलसे सब पुरी सींची गईथी सब लोग मङ्गलके लिये स्नानादि कियेहुये घूमरहेथे श्रीराम-चन्द्रजीको नजर देनेके लिये माला लड्डू आदि शुभवस्तु लिये श्रेष्ठ श्रेष्ठ ब्राह्मण घूमरहेथे जितने देवताओंके मन्दिरथे सबके द्वार चूना आदिउज-लो वस्तुओंसे पोतेगयेथे जहां देखो बाजे बाजरहेथे ४ जितने जन इधर उधर घूमरहेथे सब परमहर्षको प्राप्तथे चारोंओर वेदध्वनि होरहीथी अतिहर्षित बड़ेबड़े अच्छेअच्छे हाथी घोड़े आदि शब्द कर रहेथे ठौरठौर बैलडकर रहेथे ५ अति हर्षित पुरवासी घूमरहेथे बड़ीबड़ी ऊंची पताका बँधी हुईथी नाना प्रकारके पुष्पोंकी माला ठौरठौर टँगीथीं ऐसी अयोध्या पुरी देख मन्थरा बड़े विस्मयको प्राप्तहुई ६ देखातो थोड़ीही दूरपै मा-रे हर्षके प्रफुल्लित नयन उजले रेशमी कपड़े धारण किये रामचन्द्रजी को जो लड़कपनमें खेलातीथी वह धाईखड़ीथी उससे मन्थरा पूंछनेलगी ७ किअरी आज उत्तम २ वस्त्रादि पहिने ओढ़े मारे हर्षसे हर्षित मानों बहुत धनपाये हुई क्यों घूमतीहै क्या आज रामचन्द्रकी मातालोगों को बहुत धन बांटतीहैं ८ फिरये सबलोग अतीव हर्षित क्यों हैं हमसे बतावो राजाभी बहुत हर्षितहो आज क्याकराया चाहतेहैं ९ जब इस भांतिम-न्थराने उसधाईसे पूंछा तो उसने मारेहर्षके विधिपूर्व्वक रामचन्द्रजी की बड़ीभारी राजश्री उस कुबरी मन्थरासे बताई १० किप्रातःकाल होते-ही पुष्य नक्षत्रमें जितक्रोध श्रीरामचन्द्रको राजा दशरथ युवराज पद्वी पै स्थापित करेंगे ११ धाईके ऐसे वचन सुन मन्थरा न सहसकी कैलास के शिखरके समान ऊंचे व धवले धवँरहरसे झटपट उतरी १२ व मारे

कोपके जरतीहुई पापदर्शिनी मन्थरा सोतीहुई कैकेयी अपनी स्वामिनी के निकट जाय जगाय ऐसे वचन बोली १३ हेमूढ़े उठ क्यासोतीहै तेरेऊ-पर बड़ाभारी भय आयगयाहै मारे दुःखसे पीडित अपनाको क्यानहीं जानतीहै १४ हेसुभग आकारवाली महा अमङ्गलमूर्त्ति तूअपने सौभाग्य के मारे नाहक अपनाको बहुत मानतीहै मेरे विचारसे अब तुम्हारा सौ-भाग्य कैसा चलायमानहै जैसेकि ग्रीष्मकालमें नदीका सोत चलायमान होताहै १५ जब उस पापदर्शिनी रुखाई मारेहुई मन्थराने कैकेयीसे ऐसे वचन कहेतो इनबातोंसे अपनामें राजाकी कम प्रीतिजान कैकेयी बड़े विषादकोपहुंची १६ व मन्थरासे बोली हेमन्थरे क्या कल्याण नहीं है क्योंकि हमतुझे बहुत उदास व दुःखित देखतीहैं १७ कैकेयीके मधुर वचन सुन मन्थरा मारे क्रोधके मूर्च्छितहो बड़ी चतुरताके साथ बोली १८ बोलनेके समय बहुतही उदासीन होगई क्योंकि अपना को इनइन बातोंसे कैकेयीके प्रिय हित चाहनेवाली जनाया चाहती थी वहकैकेयीको विषाद कराती हुई व रामचन्द्रमें भेद डराती हुई बोली१६ कहा हे देवि तुम्हारा बड़ा भारी विनाश आन पहुंचा है क्योंकि राजा दशरथ तुम्हारी सौत के पुत्र रामचन्द्र को युवराज पदवी पै अभिषेक किया चाहते हैं २० इसीसे मैं अथाह भयमें डूबती हूं बड़ाही भारी दुःख व शोक मुझको है सो मानों अग्नि से जली हुई मैं तुम्हारे हितके लिये यहां आई हौं २१ क्योंकि हे कैकेयि तुम्हारे थोडे भी दुःख से मुझको बड़ा दुःख होता है व तुम्हारी थोड़ी भी बढ़ती में मुझ को बढ़ती होती है इसमें कुछ सन्देह नहीं है यह आप भी जानती हैं २२ देखो तुम राजों के राजा केकयराज के कुलमें तो जन्मी व महाप्रतापी राजादशरथ की पट्टरानी हुई फिर राजधर्म्मों की क्रूरता को क्यों नहीं जानती २३ तुम्हारे पति केवल वचनमात्रही से धर्म्मवादी बने हैं व मीठी मीठी बातें बनाय बनाय कहा करते हैं अन्त में महानिन्द्य स्व-भाव हैं इसीसे अतिदारुण प्रकृति हैं पर तुम्हारा तो शुद्धस्वभाव है तुम जानती हौ हमारीही नाई राजा काभी स्वभाव है इसीसे तुम उनके धोखेमें परी हौ कुछ जानतीही नहीं २४ यह झूंठ मूठ का समझाना बु-झाना जो राजा किया करते हैं वह अनर्थ का मूल है सो तुम्हारे आगे

ही धरा है क्योंकि राजा उनके पुत्रको राज्य देकर कौशल्याही को अपना सर्व्वस दिया चाहते हैं २५ देखो राजाकी दुष्टता तो प्रत्यक्ष है कि उस दुष्टात्मा ने भरतजी कोतो तुम्हारे माता पिताके यहां बगदाय कर भेज दिया है और कण्टकरहित राज्यसिंहासनपै प्रातःकालही रामचन्द्र को अभिषेक किया चाहते हैं २६ तुमने पति के आदर से अपना शत्रु कोरा में बैठा रक्खा है जैसे सर्प्प खेलानेवाली कोई स्त्री उसके भीतर के विष को न जाने माताके समान पालन करतीही जाय व वह उसको समय पाय काटही खाय ऐसेही तुमने अपना परमप्रिय पतिजान राजा को सब कुछ समझा पर उन्होंने तुम्हारी सौत के पुत्र को राज्यदे तुम्हारे प्राणलिये २७ जैसा कुछसर्प्प व शत्रुपालन करनेवालेही केसंग करता है सहित पुत्र तुम्हारे साथ राजा दशरथ ने २८ किया इन महापापी झूठ मूठ समझानेवाले राजाने सुख के योग्य राजसिंहासन पै प्रातही रामचन्द्र को बैठाय पुत्रमित्रादि सहित तुम को मारा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं २९ अब जो इस समय में तुम्हारा हित हो वह शीग्घ्र ही करो अपना व अपने पुत्र व हमको बचाओ नहीं तो सब जातेहैं ३० मन्थराके ऐसे वचन सुन मुसकाती हुई कैकेयी शयन से उठीं उस समय हर्ष के मारे ऐसी सम्पूर्ण थीं जैसे कि शरदऋतु में चन्द्रमा की उजियारी साफ होनेसे हँसती हुई जान परती है ३१ उठतेही अतीव सन्तुष्ट व हर्षित हो व परमविस्मित हो कि हाँ सत्य सत्य रामाभिषेक होगा यह कह अपना एक बड़ा मोल का गहना निकाल मन्थरा को इनाम दिया ३२ अपना गहना दे कैकेयी फिर मन्थरा से बोलीं ३३ हे मन्थरा यह तो तू हमसे परमप्रिय वचन कहती है इस परम प्यारे सन्देश के बदले में और क्या तेरे लिये करें सो तो बतलावे ३४ ॥

दो० रामचन्द्र अरु भरत महँ तनिक न लषत विशेष ॥
तासों प्रमुदित देहिँ नृप रामहिँ राज्य अशेष १ । ३५
मोहिँ न परम प्रिय कछु अवर कह्यो वचन तुम जौन ॥
पर पुनि अब कछु और कहु मांगु जो भावै तौन २
देहहुं सब कछु तोहिँ सुनु प्रिय न आन कछु मोहिँ ॥
मांगत जनि सँकोचकरु नहिँअदेय कछु तोहिँ ३ । ३६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तमस्सर्ग्गः ॥ ७ ॥

कैकेयीके ऐसेवचनसुन बड़ीनिन्दाके साथ कैकेयीका दियाहुआगहना फेंक मन्थरा बड़े कोप व दुःख के साथ बोली१हे मूर्खे कुठौरमें हर्ष क्यों किया अपनाको शोकसागर के मध्यमें डूबी हुईनहीं समझती यह हर्ष का कौन समय है २ जिससे कि शोच के समय में भी तुम हर्षित होती हो इससे हम मारे दुःख के तुमको मनसे हँसती हैं ३ व तुम्हारी कुबुद्धि को शोचती हैं कि कौनसी मति तुम को हर्षित करातीहै अरे सौतिके पुत्र परमशत्रु को बढ़ती आई हुई मौत के समानहै तुमतिसेही चाहती हो ४ यद्यपि भरत के पास साधारणही राज्यहै कुछ विशेषनहीं तथापि रामचन्द्र को भरतसेही भयहै यही शोचकर हम उदास हैं क्योंकि जो जिससे डरताहै उसीसे उसको भयहोती है बस रामचन्द्र भरत से डराकरते हैं इसलिये रामही से भरत को भयहोगी इसमें कुछ सन्देह नहीं ५ जो कहो कि लक्ष्मण व शत्रुघ्नसे राम व भरत को क्यों नहीं भयहोती सोतोनहीं होसक्ती क्योंकि लक्ष्मण तो सब प्रकार से रामचन्द्र के अनुगामी हैं व शत्रुघ्न भरत के फिर इनदोनों की ओरसे उनदोनों को कभी भयनहीं होसक्ती केवल भरत व रामही में राज्य साधारण झगड़ा है ६ व उत्पत्ति के क्रमसे भी रामचन्द्र व भरत इन्हीं दोनों मेंसे एकको राज्य होना चाहिये क्योंकि ये दोनों बड़ेहैं और लक्ष्मण शत्रुघ्न का तो किसी प्रकार राज्यमें दावा नहीं होसक्ता क्योंकि वे दोनों छोटेहैं ७ भाई हमतो राजनीति जाननेवाले व परमचतुर रामचन्द्र से बारबार कांपती हैं कि जैसे राजधर्म्म की ओर दृष्टिकरेंगे तुम्हारे पुत्रको अवश्य निकाल देंगे क्योंकि बेचारे भरत कुछराज्य के छल छिद्र नहीं जानते ८ चाहेजो हो हमतो यहबात ठीकठीक जानती हैं कि कौशल्या सुभगा हैं जिसके पुत्र रामचन्द्र का युवराज पदवीपै प्रातःकाल पुष्यनक्षत्रमें ब्राह्मण लोग अभिषेक करावेंगे ९ व कौशल्या के आगेतुम हाथजोड़ दासीकी नाईं खड़ीरहोगी क्योंकि उनके पुत्रको राज्य मिलेगा उसकी प्रसन्नता होगी तुमलोग जो उनकी शत्रुहो सो हत हो जावोगी १० इसरीति से हम लोगों के साथ तुम कौशल्या की दासी होगी व तुम्हारे पुत्र भरत रामचन्द्र के दासहोंगे ११ व रामचन्द्रकी स्त्री तथा उनकी सखियाँ परमा

न्दितहोंगी और भरत के न राज्य मिलने से तुम्हारी पतोहै दुःखित होंगी १२ मन्थरा को बड़ी प्रसन्नता से ऐसे वचन कहती देख कैकेयी रामचन्द्रही के गुणोंकी प्रशंसा करने लगी १३ कि रामचन्द्र अति धर्म्मज्ञ गुरुओं से सुन्दर शिक्षापाये हुये बड़े कृतज्ञ सत्यवादी परम पवित्रता से रहने वाले व राजाके जेष्ठ पुत्रहैं सब प्रकार से वही राज्यपाने के योग्यहैं १४ ईश्वर इनको चिरंजीवी रक्खें कि ये अपने भाई वन्धुओं को व मन्त्री आदि नौकर चाकरों को पिताके समान पालेंगे सो ऐसे रामचन्द्र का अभिषेक सुन हे मन्थरा तू कैसेजरी जातीहै रामचन्द्र ने तेरा क्या बिगारा है १५ रहायह कि भरत को फिर कबराज्य मिलेगा सो रामचन्द्र के राज्यके पीछे भरतही को राज्य मिलेगा तब येभी अपने पितृ पितामहों का राज्य पावेंगे कुछ अभी जल्दीनहीं मारीजाती १६ भला तू ऐसे उत्सव के समय में जिसमें सब प्रकार के कल्याणही होंगे कैसे जरी जातीहै मन्थरा १७ जैसे हमको भरत प्रियहैं वैसेही रामचन्द्र बरन उससे अधिक रामचन्द्र क्योंकि वे कौशल्यासे अधिक हमारीसेवा करतेहैं १८ इसके सिवाय जो राज्य रामचन्द्र का है तो भरत का भीहै क्योंकि रामचन्द्र जैसे अपना को मानते हैं वैसेही अपने भाइयों को भी मानते हैं १९ कैकेयी के ऐसेवचन सुन मन्थरा बहुत दुःखित हो बहुत देरतक ऊंची व गरमी श्वासें ले कैकेयी से यहबोली २० कि कैकेयी तुम अनर्थही को अपना अर्थ समझती हौ मारे मूर्खता के महादुःख सागर में बूड़ती हुई अपना को नहीं मानती २१ तुमयह बिचारती हौ कि रामचन्द्र के पीछे भरत राजा होंगे यहकैसे होसक्ता है जब रामचन्द्र राजाहोंगे तो उनके पीछे उनका पुत्र राजाहोगा वा भाई हे कैकेयि येतो फिर राजा के वंशके बाजेंगे पर राजा न होंगे २२ जोकहो कि ऐसा न सही तो राम भरत सब संगही राजा रहेंगे सो भी नहीं होसक्ता क्योंकि राजाके सब पुत्र नहीं राजा होसक्ते यदि सबके सब राजा किये जायँ तो महा अन्याय होजाय २३ तिससे राजालोग जितने हाथी घोड़े आदि राज्य के पदार्त्थ हैं सब जेष्ठ पुत्रही को देते व उसी को राजा बनाते हैं यदि जेष्ठपुत्र गुणहीन हुआ और कोई छोटाही गुणवान् हुआ तो उसेभी देतेहैं पर एकहीको न कि कई जनोंको २४ सो यदि रा न्हां राजा

हुये तो ये तुम्हारे पुत्र भरतजी सब प्रकार से सब सुख व राजवंशसे हीन होजायँगे जैसे कि कोई अनाथ दुःखी रहता है २५ सो हमतो तुम्हारे पुत्र के राज्य के लिये बतलाने आई हैं व तुमजानतीही नहीं हाय तुम जानतीही होती तो सौतिकी बढ़ती सुनके हमको गहना इनाम देती बड़े भूलकी बात है २६ हम यह निश्चय कर कहती हैं कि जब रामचन्द्र अकण्टक राज्य पावेंगे तो कितो भरत को देशान्तरही को निकालदेंगे कितो लोकान्तर ही को पठवेंगे २७ इससे भरतको तो यह बदाही है रामचन्द्र तो जब निकालेंगे तब निकालहींगे पर तुमने तो बाल्यावस्थाही में उनको ननिऔरे को पठवा दिया अब स्नेह कहां रहा देखो सन्निकट रहनेही से वृक्षोंके ऊपर भी लोग स्नेह करते हैं सो तुमने पुत्रही को दूर करदिया २८ फिर भरत के साथही के कारण शत्रुघ्न भी वहीं चलेगये क्योंकि जैसे लक्ष्मण रामचन्द्रके अनुयायी हैं तैसेही शत्रुघ्न भरतके २९ यहबातसुनीजाती है कि एक वृक्ष कांटा आदि होनेके कारण काटने के योग्यभी था पर जिन व्याधों के सन्निकट वह था उन लोगोंने नज़दीक जान नहीं काटा पर तुमने अपना पुत्र दूर करदिया तुमसे बनवासी व्याधा भी अच्छे ३० देखो लक्ष्मण रामचन्द्र की रक्षा करेंगे व रामचन्द्र लक्ष्मण की इन दोनों का भाइपन अश्विनीकुमार के समान लोक में प्रसिद्ध होगा ३१ तिससे राम लक्ष्मण के साथ कुछ भी पाप नहीं करेंगे पर भरत के सङ्ग अवश्य करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं ३२ तिससे राजमन्दिर से रामचन्द्र तो बन को जायं यह बात हमको भावती है व इसी में तुम्हारा हितभी है ३३ इसी में केवल तुम्हारा ही कल्याण नहीं बरन सब जातिवर्ग का कल्याण होगा जो भरत धर्म्म से अपने पिता का राज्य पावें ३४ भरत केवल तुम्हारेही सुखके लिये बालकहैं पर रामचन्द्र के सहजही वैरीहैं फिर जब उनके शत्रु रामचन्द्र की बढ़ती होगी तो भरत उनके वश में परके कैसे जिएंगे ३५ इसलिये बन में सिंह से भयभीत हाथी के झुण्ड के समान रामचन्द्र से भयभीत भरत की रक्षा कीजिये ३६ सो यह नहीं कि रामचन्द्रके राजा होने से भरतही को दुःख होगा नहीं तुमने अपने सौभाग्य के घमण्ड से पूर्व्वही जो जो वैर अपनी सौति कौशल्याके सङ्ग कर रक्खे हैं क्या जब उनका

पुत्र राजा होगा तो वे अपना दावँ तुमसे न लेंगी ज़रूर लेंगी ३७

दो० जलधि शैल पत्तन सहित महि जब पैहैं राम ॥
भरत सहित तब तुम अशुभ लहिहहु दुर्गति वाम १ । ३८
जबहि राम पैहैं मही होइहि भरत विनाश ॥
यासों भरतहि राज्य दै देहु राम वनवास २ । ३९

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टमस्सर्ग्गः ॥ ८ ॥

जब मन्थरा ने कैकेयी से ऐसा कहा तो मारे क्रोध के कैकेयी का मुख लाल होगया व बड़ी देर तक गरमी सांसें ले मन्थरा से बोली १ कि आजही अति शीघ्र यहांसे रामचन्द्रको बन पठाती हैं व बहुतही शीघ्र भरत को यौबराज्य पै स्थापित कराती हैं २ पर मन्थरा इस समय यह तो विचार कि किस उपाय से भरत राज्य पावें व रामचन्द्र किसी भी उपाय से न पावें ३ जब कैकेयी ने ऐसा कहा तो पापदर्शिनी मन्थरा रामचन्द्रजी के विषय में संहार करती हुई कैकेयी से फिर बोली ४ हे कैकेयी जिस उपाय से तुम्हारे पुत्र भरतही केवल राज्य पावें रामचन्द्र न पावें वह उपाय बतातीहैं सुनो व सुनके तुमभी बनाय विचारो ५ भला जो तुम अपने हित की बात हमीं से सुना चाहती हौ तो क्या तुमको अपने हित का स्मरण नहीं व जानके बहँकातीहौ ६ जो हमारेही मुख से सुनने की इच्छाहै तो सुनो कहती हैं पर सुनके तुमभी विचार लेना ७ मन्थरा के ऐसे वचन सुन कैकेयी अपने बिस्तरा पर से कुछ उठके बोली ८ कि मन्थरा जिस उपाय से भरत राज्य पावें व रामचन्द्र किसी युक्ति से न पावें वह उपाय हमसे कहौ ९ जब कैकेयी ने ऐसा कहा तो महापाप देखनेवाली मन्थरा रामचन्द्रके लिये नाश करती हुई बोली १० कि एक समय जब तुम्हारे पति देवासुर संग्राम में सब राजर्षियों के सङ्ग इन्द्र की सहायता करने गयेथे तो तुमको भी अपने संग लेते गयेथे ११ इस समर के लिये दक्षिण दिशा में जो दण्डकवन है व वहीं शम्बरासुर का एक वैजयन्त नाम पुरहै वहांको यात्रा हुईथी १२ यह शम्बरासुर सैकरों माया जानता था इसी कारण उसने इन्द्र को संग्राम दियाथा उसमें देवता हारे दैत्य जीते १३ ऐसा भारी संग्राम हुआ

था कि सोते हुये पुरुषों को राक्षस लोग घायल कर जातेथे व घायलों को मारजातेथे १४ उसयुद्धमें महाराज दशरथजीने जाय महायुद्धकिया असुरों ने शस्त्रों से राजा के सब अङ्ग छेद डारे १५ जब राजा के मूर्च्छा आयगई व सार थिभीमारागया तो तुम मूर्च्छितराजाको संग्राम से अलग लिवायलाई हो एकतो यहरक्षा राजाकी तुमने की फिर एक समय राजाकिसी लडाई में शस्त्रास्त्रों से घायल हुये उसपर फिर अति जाड़ेके मारे व्याकुल हुये थे तबभी तुमने उनके प्राण बचाये १६ इन दोनों कार्य्योंसे संतुष्टहो राजाने तुम्हें दो शुभ वरदान दिये कि जोचाहो मांगो १७ तुमने कहा अच्छा जब प्रयोजन होगा लेलेंगी तब तक आपको थाती सौंपती हैं इस बातकोहम नहीं जानती थीं जब तुम वहां से लौटी हो तो तुम्हींने हमसे बताया है १८ तुम्हारे स्नेहके कारण यह कथा हम अपने हृदय में धरे हैं भुलाया नहीं अब अपना एक वर माँगके रामचन्द्र का अभिषेक रोंको १९ व दूसरा माँग भरतकोराज्या-भिषेक दिलाओ व रामचन्द्रको चौदहवर्षके लिये वनको भेजो २० इस चौदहवर्षमें जबतक राम बनवास करेंगे तबतक सब प्रजाकाचित्त तुम्हारे पुत्रके स्नेहमें स्थिर होजायगा २१ वर मांगने के लिये अभीजाव कोप-भवनमें क्रोध सँय्युक्तहो निवास करो व बिनाकुछ बिस्तरा बिछायेही मैले कपड़े पहिन पृथिवीमें सोयरहो २२ जबराजा रात्रिको तुम्हारेपास आवें तो न तुम उनकी ओर निहारना न उनसे कुछ बोलना केवल उन कोदेख मारेशोकके रोतीहुई पृथिवी में लोटतीही रहना २३ इसमें तो कुछ सन्देहही नहीं अपने पतिको तुम बहुतही प्यारीहौ तुम्हारे लिये महाराजको जोकोई कहैतो अग्निमेंभी कूदपरैं २४ तुमको नतोकभीक्रो-धही करासक्तेहैं न क्रोध सहित देखही सक्ते हैं बरन तुम्हारे लिये राजा अपने प्राणभी त्यागदेंगे परतुमको कुछनकहेंगे २५ व तुम्हारे वचनोंका उल्लङ्घनतो राजा कभी करहीनहीं सक्ते परतुमतो मन्दस्वभावहो काहे कोविचारोगी भला अपने सौभाग्यका बल समझो तो २६ जब तुम वर मांगोगी तोराजा दशरथ तुमको नानाप्रकारके मणि रत्न सुवर्ण और नानाभांति के रत्न देंगे पर तुम उनमें मन न चलाना २७ किन्तु जो दो वर राजा दशरथजीने देवासुरसंग्राममें तुमको दियेथे तुम उन्हींको स्मरण

कराना जिसमें वह प्रयोजन न जाता रहै २८ जब अपने बूते राजा तुमको भूमिसे उठाय वरदान देने लगें तो तुम बनाय सौगन्द खवाके राजा से यहवर मांगना कि २६ रामचन्द्र को चौदह वर्ष के लिये वन को भेजो व भरत को पृथिवी का राजाकरो ३० जब चौदहवर्षतक राम वनमें रहेंगे तो बनाय पुष्ट राजा भरत होजायंगे फिर वनके आनेपर भी रामचन्द्र राजा न होंगे क्योंकि इतने दिनोंमें बनाय दृढ़तापूर्व्वक राज्य होजायगा जब तक जीवेंगे भरतही राजा बने रहेंगे ३१ रामचन्द्र का वनवास होना अवश्यही मांगना क्योंकि बिना उसके तुम्हारे पुत्र के कोई भी कार्य्य सिद्ध न होंगे ३२ जब राम चौदहवर्ष वनमें रहेंगे तोसब प्रकार से प्रजाको अप्रिय होजायँगे व भरतजी शत्रुरहितराजा होंगे३३ जितने काल में रामचन्द्र वनसे लौटेंगे तितने कालमें तुम्हारे पुत्रभरतजी दृढ़तापूर्व्वक राजा होजायँगे ३४ क्योंकि जब मनुष्य बहुत दिनों तक अपने इष्ट मित्रों के संग में रहताहै तो बनाय दृढ़ता के साथ काम करने लगता है कोई उसे हटाय नहीं सक्ता ३५ इससे जैसेही राजा तुम्हारे निकट आवें उनको युक्तिसे अपने अधीन करके निर्भय हो रामका अभिषेक रोंकना अब यही रोंकनेका समय है फिर कुछभी न होगा ३६ इसप्रकार सब अनर्थ की बातें अर्त्थरूप बनायबनाय देखाय कैकेयीको मन्थराने खूब दृढ़किया कि वह महाहर्ष युक्त हो अतिविश्वास में आय मन्थरासे बोली ३७ कैकेयी मन्थराके वचन से उससमय ऐसी होगई जैसेघोड़ी अपने बच्चाके लिये जब दौरती है लोहके दण्डों से भी पीटी जाती है नहींमानती इसलिये बोलनेके समय बड़ीविस्मय को पहुंची ३८ हे मन्थरा इतने समयतक हमने तुमको न जाना कि तुम अति श्रेष्ठ व परमश्रेष्ठ बोलने वाली हो अब हमने जाना कि बुद्धिकी निश्चय में पृथिवी में जितनी दासी हैं सबमें उत्तम तुम्हींहो ३६ व तुम्हीं हमारे सब कामों में लगी हुई हमारा हित चाहती हो देखो हमने राजाका विचार नहीं जानाथा ४० संसार में जितनी कुवरीहैं अपने अङ्गों के टेढ़े होने से सब दुष्ट स्वभाव व पापिनीहोती हैं परन्तु तुममें उन बातोंका लेश नहीं क्योंकि जैसे सहज सुन्दर कमलपत्रपवन लगनेसे इधरउधर झुक टेढ़ा होजाताहै पर उसकी निन्दा कोई नहीं करता वैसेही तुम्हारे

अङ्गतो टेढ़ेहैं पर प्रिय वचन बोलने व सुन्दर स्वरूप होनेसे निन्दा करने के योग्य नहीं ४१ क्योंकि तुम्हारी छाती पेटसे कन्धों तक बहुत ऊंचीहै व नीचे पेट बहुतही पतलाहै मानों छातीकी उंचाई देख लजाता है इसीसे पतला होगयाहै ४२ जांघें बहुत मोटी चढ़ा उतार बनी हैं कुच बड़े मोटे व कठोर विमलचन्द्र समान मुख इनकारणों से ऐसी सुन्दरी लगतीहो क्याकहें ४३ फिर क्षुद्रघण्टिकाके कारण तुम्हारा पेडूशब्दायमान होरहाहै जांघें बहुतही उत्तम भारी होनेसे मानो एकमें मिलीहीं जातीहैं चरण लम्बायमान ४४ हे मन्थरा तुम विस्तृत फीलियों से जब हमारे आगे रेशमी कपड़े पहिन कर चलतीहो तो राजहंसीके समान शोभित होतीहो ४५ व असुराधिप शम्बरासुरके पास जितनी सहस्रों मायाथीं वे सब तुममेंहैं उन के सिवाय औरभी सहस्रों माया तुममें टिकीहैं ४६ औरतो सब शरीर तुम्हारा अति मनोहरहीहै केवल यह जो छाती बहुत ऊंचीहै व पीछे कूबर निकलाहै यही कुढंगताहै सो मानों पहियाके नाहके समानहै इस कुढंगे अङ्गसे भी बड़ेलाभहैं क्योंकि जितनी राजनीति आदिकी बुद्धियां हैं व जितनी मायाहैं सबकी सब तुम्हारे इसी अङ्गमें बसतीहैं ४७ यदि भरतको राज्याभिषेक हुआ व रामचन्द्रको वनवास तो हम ऐसी सोनेकी माला तुमको पहिरावेंगी जो इस कूबर व छाती पै झूला करै ४८ जब अच्छी तरहसे हमारा काम होजायगा व उसका विश्वास हमें होजायगा तो पक्के सोनेको अच्छी तरह अग्निमें तपाय कि जिसमें मैल न रहजाय उसके पत्रसे तुम्हारी पीठ व छाती मिढ़ा देंगी ४९ इसके सिवाय माथे पै पक्के सोनेका तिलक भी बनवाय पहिरावेंगी व सब गहने सुवर्णही के बनवादेंगी सब गहना व सुन्दर सुन्दर कपड़े पहिरओढ़ देवता के समान जहां चाहोगी घूमोगी ५० व चन्द्रमाको निन्दित करातेहुये मुखके कारण तुम्हारे समान भूतलमें कोई नहीं तुम अपनी सुन्दरी चालसे बैरियों की निन्दा करोगी ५१ तुम कुबरीकी भी सेवा सब भूषण वसन धारण किये सुन्दरी स्त्रियां किया करेंगी जैसे कि सदा तुम हमारीसेवा करती हो ५२ इस प्रकार जब मन्थरा की बड़ाई हुई तो अग्निकी शिखाके समान शय्यापै पहुड़ी हुई कैकेई से बोली ५३ हे कल्याणि कैकेयी जब पानी

बरस गया तो फिर पुल बांधनेसे क्या फल होगा उठो अपना कल्याण करो राजाको ये सब बातें दर्शावो जब रामचन्द्र का अभिषेक होही जायगा तोफिर क्याकरोगी ५४ जब इसतरहसे हुलकारी पचकारी व सिखाई गई तो मन्थरा के साथ अपने सौभाग्य के मद से घमण्ड किये कोपभवन को गई ५५ वहां पहुंचतेही सहस्रों गहना जो धारण किये हुईथीसबके सब निकालनिकाल भूमिमें फेंक दिये५६ तिस समय सुवर्ण के रङ्गके समान रङ्गवाली कैकेयी मन्थराके वचनोंके वशीभूत हो बिना बिस्तरा बिछाये भूमिमें लेटकर मन्थरासे बोली ५७ हे कुवरी अबतो हम इस कोपभवन में परीहैं यदि हमारा कार्य्य सिद्ध न हुआ तो कितो राजासे हमको मरीहीं बतलावोगी कितो रामचन्द्र बनको जायंहींगे व भरत राजाहोहींगे ५८ न तो हमारा प्रयोजन सुवर्णसेहै न रत्नोंसे न नीके मीठे भोजनोंसे किन्तु हमारे प्राणान्त होनेका उपाय यहीहै जो रामचन्द्रका अभिषेक हुआ ५६ ॥

हरिगीतिका ॥

अत्यर्त्थ वल युत वचन केकय नन्दिनी के मन्थरा ।
सुनि फेरि मन गुनि भरत माता सों कही करि अन्तरा ॥
तेवचन रामहि अति अहितगुनि भरत हितकर जानिकै ।
बहुभांति वैरबढ़ाय अति कुटिलाय निज हित मानिकै ॥ १।६०
यदि राज्य यह रघुनाथ पैहैं सुत सहित दुख पाइहौ ।
यासों करहु कल्याण सोइ उपाय ज्यहि सुख दाइहौ ॥
तव तनय भरत स्वराज्य पावहिं राम बन पावें सही ।
यह बात हमहिं पोसात है यहि हेतुरी तुमसों कही ॥ २।६१

दो० कुवरि वचन सरहत नृपति बधू हृदय कर मारि ।
विस्मित ह्वै पुनिपुनि करत कुवरि प्रशंसा झारि ॥ ३।६२
कितो मन्थरा नृपति सों मृतक बतैहौ मोहिं ।
कितो राम बन जाइहैं राज्य भरत कहं होहिं ॥ ४।६३
वसनमाल चन्दन अशन अंजन पान सिँगार ॥
कछुन चहत हम रामजो बननहिँ जाहिँ सकार ५।६४
इमि कहि दारुण वचन सब भूषण निकरनिकारि ॥

स्तरणरहित महिशयनकिय जिमिक्षिति किन्नरनारि ६ । ६५
क्रोध विवश तमयुत विगत उत्तम भूषण रानि ॥
अति उदास जिमि नभसतम तारा रहित बखानि ७ । ६६
इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे नवमस्सर्ग्गः ॥ ९ ॥

जब इसप्रकार पापिनी मन्थराने बारबारकैकेयी कोअनर्त्थही सिखाया तो वे भूमिमें सोने लगीं जैसे विषारी बाणके लगने से किन्नरी भूतल में अचेत परतीहै १ जो जो कैकेयी को करना अभीष्ट था सब अपने मनमें निश्चयकर धीरे धीरे मन्थरा से कहने लगीं २ व जाना कि जो बात मन्थरा कहतीहै सब ठीक है क्योंकि वे उसके वचन से मोहित थीं यह शोच देवकन्या के समान बड़ी बेर तक विचार ऊधी व गरमी सांसें लेने लगीं फिर यह भी शोचा कि मन्थरा की बताईहुई गलीके सिवाय और कोई सुखदाई मार्ग्ग नहीं ३ मन्थरा अपना को कैकेयी का मित्र समझती थी व भरतके राज्यमें कुछ अधिक द्रब्य पानेकीभी इच्छा करतीथी इसलिये जब जाना कि कैकेयी अब हमारे वचनानुसार ही काम निश्चय निश्चय करेंगी तो कार्य्यकी सिद्धि जानि अति प्रसन्नचित्त हुई ४ व कैकेयी भी सब बातों की बनाय निश्चय कर भौंहें टेढ़ी मेढ़ी बनाय भूमिमें सोने लगी ५ अब जितने चित्र विचित्र मणिजटित सुवर्णके हार व पुष्प मालादि व दिव्य आभरण थे सबके सब कैकेयी के फेंके हुये पृथिवी में जाय परे ६ व सब भूमि में ऐसे शोभित होनेलगे जैसे आकाशमें तारागण शोभित होतेहैं ७ अब मैले वस्त्र पहिने ओढ़े कोपभवन में परी हुई कैकेयी कैसी अशोभित होतीहै जैसेएक जगहसब बार बांधेहुई स्वर्ग्गलोक से गिरी हुई किन्नरी अशोभित होतीहै ८ यहां महाराजाधिराज राजा दशरथजी रामचन्द्रजी के अभिषेक के लिये सबको आज्ञा दे दिवाय मन्त्री पुरोहितादिकों की अनुमति ले आप शयन करनेके लिये गृह को गये९ शोचा किआज रामचन्द्र का अभिषेक होगा अब अपनी परमप्यारी रानियोंसे भी कहें इसलिये सीधे रनिवासमें चलेगये१०वहां सब से प्रथम सर्व्वोत्तम कैकेयीजी के मन्दिरमें पधारे जैसे कि राहुयुक्त उजले आकाश में चन्द्रमा प्रवेश करै ११ उस समय कैकेयीका मन्दिर शुकमोर संय्युक्त क्रौंच हंस कबूतर आदि पक्षियोंकी बोली से शब्दायमान नाना-

प्रकार के बाजनों के बाजने से शब्दायमान व नानाप्रकार की कुबरी वामनी टेढ़ीमेढ़ी कुरूप स्त्रियोंसे सँय्युक्तथा क्योंकि रानीलोग सुरूपवती स्त्रियों को दासी नहीं बनाती थीं जिससे कि वैसी रूप यौवन सम्पन्न स्त्रियों के भीतर रहने से कभी न कभी सौति बन बैठने का भय रहता है १२ फिर उस मन्दिरके भीतर जहांतहां लता मन्दिर व अन्य चित्रविचित्र चम्पा अशोकादिके वृक्ष लगेथे जिनसे परम शोभा थी हाथीदांत चांदी सोने आदि से भीतर की सब वेदियां बनी थीं १३ जिन वृक्षों में नित्यही फूल फल लगे रहते हैं वे ठौरठौर लगेथे बीशों बावलियां बनीथीं तिनके किनारे किनारे व अन्यत्र भी हाथी दांत चांदी सोनेकी कुरसियां बैठने उठने के लिये धरीथीं १४ विविध प्रकार के अन्न पान भक्ष्य भोज्य लेह्यादि के भेद से भरे हुये थे बड़े बड़े मोल के भूषण सब कहीं धरे थे मानों दूसरा इन्द्रही का मन्दिर है १५ ऐसे अपने भरे पुरे जनाने मन्दिर में राजा पहुंचे उत्तम शयन पै लेटी बैठी हुई अपनी प्राणप्रिया कैकेयी को महाराज ने न देखा १६ महाराज उस समय काम के बलमें फँसे थे रति करने की इच्छा कियेथे जब परमप्यारी रानीको न देखा तो बैठगये व सेवकियों से पूंछनेलगे १७ क्यों न पूंछें उसदिन से प्रथम कैकेयी उस समय कभी नहीं कहीं गई थीं कि राजा के भोग के समय में अन्तर परता न कभी महाराज भी कैकेयी हीन मन्दिर में आयेथे यह नई बात हुई १८ तहां पहुंच जैसे पूर्वही सब वृत्तांत कैकेयीकी सखियों से पूंछ फिर निकट जातेथे पूंछा परन्तु यह न जाना कि वे आज भरत का अभिषेक चाहतीहैं व उनको आगे पीछे की कुछ सुध नहींहै १९ महाराज के वचन सुन जो दासी पहरे पर थी हाथ जोर अति भयभीत हो काँपती हुई बोली हे महाराज आज नहीं जानती किस कारण बड़ा क्रोध कियेहुई महारानीजी कोपभवनमें परीहैं २० उस दासीके वचनसुन राजा बहुतही व्याकुल होगये व उसी स्थान पै बैठगये फिर बनाय सबइन्द्रियां उनकी चलायमानहोगईं कि अतीव व्याकुलहोगये २१ वहांसेउठ उसीमन्दिरके भीतरजो एक कोपमन्दिरबना था जाय देखातो कैकेयी भूमि में परी हैं जहाँ परने के योग्य किसीप्रकार न थीं राजा देखकर मारे दुःख के सन्तप्तहोगये २२ क्यों न सन्तप्त हों महाराज आप तो वृद्धावस्था

को प्राप्त थे व कैकेयी रानी सब से पिछले विवाह की थीं इसकारण अति तरुण अवस्था को प्राप्त थीं इसीसे प्राणसे भी अधिक प्यारी थीं राजा तो छल छिद्र कुछ जानतेही न थे इससे पापहीन थे पर उस दुष्टा के मनमें तो रामचन्द्र को वनवास देना पापही बसाथा देखा तो पृथिवी में परी थी २३ देखने से ऐसा जान परता कि मानों काटी हुई लता है वा स्वर्ग्गलोक से पतित देवता है वा पुण्यक्षीण होने के पीछे स्वर्ग्गसे पतित किन्नरीहै वा स्वर्ग्गही से चुईहुई अप्सरा है २४ मानों औरों को मोहित करने के लिये माया है वा जालमें फँसीहुई हरिणी है वा बिष लगेहुये तीरसे व्याधा की मारी हुई हथिनीहै २५ ऐसी हथिनी को देख राजा मानों महाहाथी हैं मारे स्नेह के जानों बनमें उठा रहेहैं जाय हाथसे सर्व्वाङ्ग सुहराया उस समय राजा मारे डरके नेत्रों से जल निकाले जातेथे २६ किन्चकामी तो थेही कमलनयनी अपनी परमप्यारी स्त्रीसे विनय पूर्व्वक बोले कि हमनहीं जानते कि हम में कौन तुम्हारे क्रोध का कारण टिकाहै २७ हे कल्याणि हम नहीं जानते कि किसने तुम्हारा निरादर किया वा किसने अपमान किया है जिससे तुम हमारे दुःखके लिये धूलिमेंपरी सोती हो २८ हम निरपराधी बनेही हैं तो तुम भूमि में भूतप्रेत लगेहुये मनुष्य के समान क्यों सोतीहो कि जिससे हमारे चित्त को मथेडारती हो २९ यदि तुम्हारे कोई रोगहुआ हो जिसके मारे यह दशाहुई हो तो रोग बतावो हमारे यहां बड़े कुशल वैद्यहैं जो कि तुरंत व्याधि को नाशकरदेतेहैं क्योंकि अन्नधनादि हमसे पायपाय सदा सन्तुष्ट रहते हैं तुमको सुखित करदेंगे ३० वा तुम किसको कुछ प्रियकिया चाहती हो सो किया जावे वा किसको विप्रिय किया चाहती हो सो भी कियाजावे आज कौन प्रियपावे कौन अप्रिय शीघ्र कहो ३१ हे देवि रोदन न करो व मुखन सूखाकरो बतावो ३२॥

चौ० ॥ को दरिद्र धनवान कहावै। धनी कौन कहु रङ्क लषावै॥ हम अरु सकल हमारे लोगा। तव अधीन किमि भइहु सशोगा १।३३ नहिं तव तनिक अभीष्ट विघाती। प्रिया अहहुं निततोर सँघाती॥ चहहु प्राण मम जाहिंन तोरे। वांछित हतिहौं करत निहोरे २। ३४ जानत प्रेम मोर ज्यहिभाँती। तुम महँ रहत प्रिया दिन राती॥ जनिशङ्का

करु निज हितमाहीं । करहुं प्रीति तब संशय नाहीं ॥ जोकुछसुकृत कीन अबताईं । सो सबजाय जो करहुं झुंठाईं । करिहों तोर कहा सब भांती । कहसि प्रिया जो तोहिं पोसाती ४। ३५ जहं लग सूर्य्यचक्र फिर आवत । दिनहीं दिनसब जनन लषावत ॥ तहंतक महिमह धीननशङ्का । सिन्धु सुवीर सुराष्ट्ररु वङ्का ५ । ३६ बङ्ग अङ्ग मागध अरु काशी । कौशल मत्स्य सकल धनराशी ॥ तहं बहुद्रव्य धान्य धन पशुगन । जो चाहहु सो लेहु प्रिया धन ६ । ३७नहिं कछु दुर्ल्लभ जो कछु मांगहु।निज अभिलषित प्रिया अनुरागहु ॥ किमि इमि कीन प्रयास बहूला । उठहु उठहु मन करि मजबूता ७ । ३८ जासों भयहु तोहिं भय भामिनि । देहु बताय मोहिं जगस्वामिनि ॥ सोसब नाशहुं तुरतहि प्यारी । जिमि तम नाशत सदातमारी ८ । ३९ जब इमि नृपति बधूनृप वानी । सुनीतवहिँ अप्रिय अनुमानी ॥ केकय सुता वचन अति दारुण । नृपसों कहन लगी ह्वैसारुण ९ । ४० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे दशमस्सर्ग्गः ॥ १० ॥

जब राजाके ऐसे वचन सुने तो कामवाणसे पीडित व कामवेग के वशीभूत राजा दशरथसे कैकेयी दारुण वचन बोली १ हे महाराज न तो किसी ने हमारा निरादर कियाहै न किसीने अपमान किन्तु एक कोई और ही हमारा अभिप्रायहै उसे आपसे कराया चाहतीहैं २ सोजो आप उसको कियाचाहें तो जो उसके पूर्णके करनेके लिये कुछप्रतिज्ञा करें तो हम अपना प्रयोजन कहेंगी जोकि मांगाचाहती हैं ३ राजाधिराज कामी तोथेही भूमिमें पड़ीहुई कैकेयीको अपने हाथोंसे उठाय मूड़केबार पोंछ पांछ मन्द मुसुकाय रानीसे बोले ४ कि तुम मारे सौभाग्यके घमण्डसे नहींजानती कि मनुष्यश्रेष्ठ प्राणप्रेष्ठ रामचन्द्रको छोड़ और कोई मनुष्य हम को तुमसे प्रियतर नहींहै ५ सो तिन तुमसेभी अधिक प्यारे परमदुलारे शत्रुओंसे कभी न हारनेवाले अतिश्रेष्ठ महात्मा रामचन्द्र कि जिन्हें बिन हम क्षणमात्रभी नहीं जीसक्ते तिनकी सौगन्द खाते हैं जो तुम मनसे चाहतीहो कहो ६ हम सत्यही कहतेहैं कि बिना जिन रामचन्द्रके एक घड़ीभी हमनहीं जीसक्ते तिन्हींकी सौगन्द खातेहैं कि जो तुम्हारा प्रयो-

जनहैं पूराकरेंगे ७ जिन रामचन्द्रको अपना शरीर देने व अन्य तीनों पुत्रों के देने व अन्य संसार भर देडारनेसेभी हम रक्खाचाहतेहैं तुम्हारे वचन पूरेकरनेके लिये तिनकी शपथ खातेहैं ८ हेकल्याणि हमारा हृदयभी तुम्हारे अभीष्ट करनेमें लगाहै व जब तक नहीं करसक्ता अकुलाताहैसो इसकाभी उद्धारकरो इस विषयको अच्छीतरह शोचविचार जो अच्छा मानतीहौ ९ कहो हमारा बल अपने विषयमें देखतीहौ कि तुम्हारे रूपके वशीभूतहैं फिर अपना कार्य्य होनेमें न शङ्का करो हम अपनी पुण्यकी सौगन्द खाते हैं किजिसमें तुम्हारी प्रसन्नता होगी करेंगे १० यह सुन अपने सङ्कल्पित कार्य्यमें मन लगाय जो अभिप्राय मनमेंथा उसको बिना मध्यस्थहीके अति हर्षितहो जो वचन कि शत्रुभी नहींकहसक्ता वहकहनेलगी ११ राजाके वचनसे बहुत हर्षितहो अपना अभिप्राय अतिकठोर यमराजके समान दारुण बोली १२ कि राजन् रामचन्द्र व अपने सुकृत आदिकी सौगन्द यथाक्रम खातेहौ व हमको बरभी देतेहौ तो इन्द्रादि ३३ देवता इस तुम्हारी बातको सुनें व साक्षी रहैं १३ व चन्द्र सूर्य्य आकाश सब अन्य ग्रह रात्रि दिन जगत् गंधर्व्व राक्षस सहित यह पृथिवी १४ निशामें चरनेवाले जितने भूत प्रेत पिशाच डाकिनी साकिनी आदि व जो सब ग्रहके देवताहैं जोऔर प्राणीहैं सब तुम्हारे इस कहने को जानें १५ हेसब देवताओ सत्यसन्ध महातेजस्वी धर्म्मज्ञ अपने होश हवाश में दुरुस्त राजा हमको वरदेते हैं सब तुम सुनो १६ इस भांति कैकेयी महादानी राजाको अपने वशमेंकर व उनकी प्रशंसाकर काममोहित राजासे बोली १७ हेराजन् आगेके इस वृत्तान्तको स्मरणकरो जो कि तुम देवासुर संग्राममें गयेथे वशत्रुने ऐसामारा कितुम्हारे मूर्च्छा आयगई थी १८ तबहम जागती रहीं व बारबार तुम्हारी रक्षा करती रहीं जब हम को आपने जाना किइन्होंनेही हमारी रक्षाकीहै तो तुमने हमको दो वर दियेथे १९ सो कुछ अब नया वर तुमसे नहींमाँगती वरन अपनी धरोहर मांगतीहैं वह धरोहर तुम्हारेही पास धरीहै हे सत्यसन्ध कुछ बड़ी बात नहींहै २० कदाचित् देनेको कहकर अब हमारे वर न दोगे तो तुम्हारे इस अपमानके ऊपर अभी अपने प्राण दूंगी २१ देखो राजाने केवल वचनहीसे कहडाराथा कि तुमको वरदेंगे उसी कहनेके कारण कैकेयीके

वशीभूत होगये कि जिससे अपनाको विनाशने केलिये फाँसी पहिरली जैसे केवल व्याधाका गान सुनकर उसके वशीभूतहो मृगजालमें फँसताहै २२ इसकेपीछे वरदानी व काममोहित राजासे कैकेयी बोली हेमहीपाल जोदो वर आपने हमको दियेथे २३ सो दोनोंवर हम अभी कहती हैं सुनो यह जो रामचन्द्रके अभिषेककी सामग्री आपने एकट्ठा कराईहै २४ उसीसे हमारे पुत्र भरत को राजतिलक करिये व जो दूसरा वर प्रसन्न होकर आपने हम को दियाथा २५ देवासुर संग्राम में उसका यह समय आगया है कि १४ वर्ष तक रामचन्द्र दण्डकारण्य में बसें २६ जबतक वहांरहैं राम चीर व मृगचर्म्म धारण किये तपस्याही करते रहैं तबतक भरत अकण्टक युवराज पद भोग करें २७ यही हमारा परम कामहै कुछ तुमसे नया नहीं माँगती बरन पहिलेही का दिया हुआ मांगती हैं सो यह नहीं कि दश पांच दिनमें राम वन को जायँ नहीं हम चाहती हैं कि अभी राघव वन को चलें व हमदेखें २८ ॥

दो० सत्य वचन अबहोहु नृप राखहु कुल जनु शील ॥
स्वर्ग्ग लोकमहँ मुनि कहहिं सत्य वचन शुभ डील १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकादशस्सर्गः॥ ११॥

जब महाराजाधिराज ने कैकेयीके ऐसे दारुण वचन सुने तो बड़ीही चिन्ता को प्राप्तहुये व दोघड़ी तक कँपते रहे १ उसके पीछे शोचने लगे कि क्या हमने यह दिनमें स्वप्न तो नहीं देखा वा हमारे चित्त को कुछ मोह तो नहीं होगया वा सभासे उठने के पीछे कोई भूत प्रेतादि ग्रह तो हम को नहीं लग गया जो ऐसा समझ पड़ताहै वा कोई मानस उपद्रव तो नहीं है २ ऐसी बहुतबातें शोचते हुये राजा सुखी न हुये कैकेयी के वचन से ताडित तो होही गयेथे फिर मूर्च्छा जागी तो ३ फिर कैकेयी को देख व्यथित व व्याकुल होगये जैसे कि व्याघ्री को देख मृग व्याकुल होताहै राजा भी बिना बिस्तरा की भूमिपर उसी स्थानपै बैठे ऊंचीसांसें लेनेलगे ४ व कहा धिक्कार है ऐसेमुझ कामी को जो इसदुष्टा के ऐसे वचन सुनता हूं पर फिरभी धर्म्म फाँसी में बँधने के कारण कुछ बोल न सके जैसे कि महा बिषधर सर्प्प मन्त्रों से रूंधा हुआ किसी

नियतमण्डल के बाहर नहीं जाय सक्ता ५ महाराजको फिर मूर्च्छा आ-
यगई व मारे शोकके सब इन्द्रियांहत होगईं बहुत देरके पीछे फिरमूर्च्छा
जागी तो फिर दुःखित होगये ६ व मारे क्रोधके मानो कैकेयी को भ-
स्महीं करते हुये बोले कि हे क्रूरस्वभाववाली हे दुष्ट चरित्रवाली इस
कुलके नाशकरनेवाली तेरा कौन सा पाप रामचन्द्र ने किया व हमनें
कौन पापकिया जो तू ऐसा चाहती है ७ अरे रामचन्द्र सदा अपनी
माताकेतुल्य तेरी सेवा करतेहैं तिस रामचन्द्र के अनर्थलिये क्यों तू
तैयार हुईहै ८ अरेतुझे हम अपना विनाश करने के लिये अपने घरमें
लायेहैं हमतो राजा की कन्या जान लायेथे पर तू तीक्ष्ण विषभरी स-
र्प्पिणीही ठहरी कि पालनेवालेही को काटती है ९ भला जब सब
जीवधारी रामचन्द्र के गुणों की स्तुति करते हैं तो हम कौन अपराध
लगाय ऐसे पुत्र को छोड़ें १० यदि तू कहै तो कौशल्या वा सुमित्रा वा
राज्य हम छोड़दें बरन अपने प्राणभी छोड़दें परन्तु पिताके भक्त राम-
चन्द्र को तो नहीं छोड़ सक्ते ११ ज्येष्ठ पुत्र रामको देख हमकी परम
प्रीति होतीहै फिर उनके न देखनेसे हमारेप्राण ज़रूर जाते रहेंगे १२
चाहे कुछ कालतक बिना सूर्य्यके उदय भी लोक बनारहे व बिना पानी
बरसेही चाहे अन्न रह सके परन्तु बिना रामचन्द्र के क्षणभर भी हमारे
प्राण देहमें नहीं रहसक्ते १३ तिससे हे पापनिश्चये इस कामका हठ
छोड़दे हम तेरे चरण भी अपने शिर से छूते हैं रामको वनको जाने को
न कह हमारे ऊपर कृपाकर १४ हे पापिनि तूने परम दारुण यहक्या
विचारा है १५ अथवा तुम यह परखती हो कि भरत राजाको प्यारे हैं
वा नहीं सो इसबात की परीक्षा ले इसमें कुछ रामचन्द्र की प्रीति कम
नहीं होसक्ती चाहे भरतही राजाहों कुछ राजा न होनेसे रामचन्द्र में
हमारा स्नेह कमनहीं होसक्ता १६ अच्छा भरत को राजाकरें और श्री-
मान् ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र धम्महीं के ज्येष्ठ बनेरहें कुछ राजकाज न
करें तू उनको अपनी व हमारी सेवा करनेही के लिये घरमें रहने दे कुछ
राज्यसे उन्हें काम नहीं १७ जिस रामचन्द्र के राज्याभिषेक को सुन
मारे शोकके तुम सन्तपितहो हमको सन्तापित करातीहो जान पड़ता है
कि तुम वरके वशीभूतनहीं हो उसीके ओढ़रसे कोई भूत प्रेत पिशाच ब्रह्म-

राक्षसादि तुमकोलगाहै १८क्योंकि नहींतो इक्ष्वाकुवंशियोंके घरकीरानी होकर इस अन्याय के ऊपर तुम्हारी दृष्टि न पड़ती कि सबसे ज्येष्ठ व प्रिय व गुणवान् पुत्र रामचन्द्र को राज्याभिषेक न हो क्योंकि यह वंश सदासे नैयायकही चलाआताहै तुम्हारीमतिमें नहींतो ऐसाविकार न आता १६ यदि तुमको भूत प्रेतादि कोई ग्रह न लगा होता तो ऐसा कभी न कहती क्योंकि इसके प्रथम कभी तुमने अयोग्य व अप्रिय वचन हमसे नहीं कहे इससे हमको नहीं विश्वास आता कि तुमको भूतादि ग्रह नहींलगाहै २० फिर भी तुम बहुधा वार्त्ताआने पर जब राम व भरत बालक थे तब कहा करती थी कि महात्मा भरतहीके तुल्य हमको रामचन्द्र प्रिय हैं कभी उनके विषयमें भेद दृष्टि नहीं पाईगई इससेअवश्य कोईभूतादि बाधा तुमको है २१ तिन भरत के तुल्य धर्म्मात्मा व यशस्वी रामचन्द्र का वनवास १४ वर्षतक तुमको कैसे रुचा २२ फिर धर्म्मात्मा व अत्यन्त सुकुमार तिन रामचन्द्रका अतिदारुण वनमें वास कैसे तुमको रुचता है कुछ कारण तो जानें २३ फिर लोकाभिराम रामचन्द्रका वनवास जोकि सदा तुम्हारीही सेवा किया करते हैं कैसे नीक लगताहै २४ हमतो जानते हैं कि रामचन्द्र भरत से बहुत तुम्हारी सदा सेवा करते हैं कुछ भरत व राम में तुम्हारी ओर से विशेषता नहीं पाई जाती२५ सो बिना रामचन्द्र के तुम्हारी बड़ी शुश्रूषा व गौरव व प्रमाण व तुम्हारे वचन का प्रतिपाल कौन करेगा हम जानते हैं कि भरत कभी रामके समान तुम्हारी सेवादि नहींकरसक्ते२६ फिर बहुधा जिनलोगों के बहुत स्त्रियां होतीं व बहुत मतलबी लोग जिनके पास सदा रहते उन लोगों की बातका कुछ ठीक नहीं रहता क्योंकि ये लोगबहकाया करते हैं सोभी रामचन्द्र के न बहुत स्त्रियां हैं न बहुत उनके निकट मतलबी लोग रहते हैं कि तुम्हारे विषय में कभी प्रतिकूल करादें २७ फिर श्रीराम शुद्ध मनसे व प्रियवाणी से सदा अपने देशके रहने वालों को समझाते बुझाते हुये अपनी वशमें रखते हैं २८ फिरसत्य बोलने से तो सब लोकों को जीतते दीनोंको दान से जीतते गुरुमाता पिताआदि जो बड़े लोग हैं उनको सेवासे जीतते हैं व संग्राममें अपनी वीरता से शत्रुओं को जीतते २६ सत्य बोलना दानदेना तपकरना सा-

मान्य दान देना सबसे मित्रता रखना सदा पवित्र रहना कोमलता के साथ बोलना सब विद्या पढ़ना गुरुजनों की शुश्रूषा करना ये सबबातें निश्चयनिश्चय रामचन्द्र में हैं३०सो ऐसे कोमल स्वभाव देवसमरूप महर्षियों के समान तेजस्वी रामचन्द्रमें हे कैकेयि कैसे तुम पाप बुद्धिकरती हो ३१ फिर लोकके प्रियवादी रामचन्द्र का अप्रिय वचन तो हम कभी स्मरण भी नहीं करसक्के तो तुम्हारे लिये वनको जाव यह अप्रिय वचन प्राणप्रिय रामसे कैसे कहेंगे ३२ फिर जिन राममें क्षमा इन्द्रियों को अपने वशमें रखना दानदेना सत्य धर्म्म उपकार मानना सब प्राणियों को न मारना इन्हें आदि अनेक गुण हैं तिन्हें बिना हमारी कौन दशा होगी ३३ हे कैकेयि अब मैं बहुतदिन न जीऊंगा क्योंकि बनाय वृद्ध होचुका व सब प्रकार शोचनीय अवस्था को प्राप्त हूं व तुम्हारे सामने दीनवाणी बोलताहूं मेरे ऊपर दयाकर रामचन्द्र को वनजाने को न कह ३४ सागर पर्य्यंत सब पृथिवी हमारे वशमें है इसमें जितने पदार्त्थ हैं सब तुझे देंगे पर तू मृत्युके वशीभूत न हो अर्थात् हम को न मार ३५ हे कैकेयि हम तेरेहाथ जोड़ते हैं व तेरे चरण छूते हैं रामचन्द्र को घरमें राख जिसमें हमको अधर्म्म न लगे कि राजाने स्त्री के वशमें आय राम ऐसे पुत्रको वनवास दिया ३६ इसभांति महादुःख से सन्तप्त रोदन करते हुये मूर्च्छा को प्राप्त मारे शोकके शरीर घूमते हुये महाराज से ३७ जोकि शोक समुद्र के पार जाने के लिये बारबार प्रार्त्थना कररहेथे महादुष्टा कैकेयी अति दुष्ट वचन बोली ३८ हे राजन् जो वरदान देकर फिर पछिताते हो तो अब पृथिवी में अपना को धार्म्मिक कैसे सबके सामने बतावोगे ३९ भला जब सहस्त्रों राजा एकत्र होंगे व हमारे वरदान के विषय में तुमसे पूंछेंगे कि क्या हुआ तो हे धर्म्मज्ञ तुमकौन उत्तर दोगे ४० क्या यही कहोगे कि जिस कैकेयी ने संग्राम से रथलौटाकर हमको जियाया व जिसने पङ्खा आदि चलाय पवन कर पालन किया तिसकी प्रतिज्ञा हमने मिथ्या करदी वाहवाह ४१ हम जानती हैं कि तुमतो पापी होहूगे बरन सब इक्ष्वाकुवंशी राजों को पापी करोगे जोकि वर देकर फिर अबनहीं दिया चाहते ४२ देखिये तुम्हारे वंशके महाराज शैव्यजीने कबूतर की रक्षा की उसके

बदले में बाज को अपने देह का मांस दिया व महाराज अलर्क ने एक अन्धे ब्राह्मण को अपने नेत्रदेडाले आप अन्धेहोगये ऐसा करने से राजा शैब्य व राजा अलर्क दोनों उत्तमगति कोपहुंचे ४३ समुद्रने देवताओं से यह प्रतिज्ञा कीथी किहम अब अपने किनारे से अधिक जल न बढ़ावेंगे इसीसे वह नहीं जल बढ़ाता इससे पूर्व्वकाल के ऐसे ऐसे वृत्तान्तों को स्मरणकर आप प्रतिज्ञा न मिथ्या करें ४४ हे दुष्टमति राजन् तुम अब धर्म्मको छोड़ रामको राज्य पर बैठाय कौशल्या के साथ नित्यही विहार किया चाहतेहो वहतो न होगा ४५ जो हमने रामको वनवास व भरतको राज्य विचाराहै इसमें चाहे अधर्म्महो वा धर्म्म चाहे सत्य तुमने हमको वरदियाहो चाहे झूंठ परजो तुमने वरदेनेको कहाहै हम अपने लेहीलेंगी उसकी उलटा पलटी तो नहीं होसक्की चाहेकोटि बहाने करो ४६ जो न मानोगे जबरदस्ती राम को राज्य देहीदोगे तो अभी तुम्हारेही आगे तुम्हारेही देखते देखते बहुतसाबिष पीकर हम मरजायंगी ४७ क्योंकि जो एक दिन भी कौशल्या को हमने राम के अभिषेक के कारण प्रसन्नचित्तहो आप का हाथ पकड़े देखा तोहमारा मरण होहीजायगा फिर हम मरण को क्यों डरें ४८ राजन् हम तुम्हारे आगे भरत की व अपनी सौगन्द खाती हैं कि हम रामचन्द्रके वनवास को छोड़ और अन्नधनादि से नहीं प्रसन्नहोसक्की ४९ रोदन करते हुये राजासे ऐसे वचन कह कैकेयी चुपहोरही फिर कुछ भी न बोली ५० महाराज दशरथ भी कैकेयी के वचन सुने कि अब सत्य सत्य इसे रामचन्द्र का वनवास व भरत का राज्यही प्रियहै ५१ इससे दो घरीतक सब इन्द्रियों से व्याकुल हो कुछ भी न बोले परमप्रियास्त्री की जो कि अप्रियही कहती चलीगईथी एकटकदेखतेही रहे ५२ उस बज्रसमान कठोर कैकेयी की वाणी को सुन जिसके सुनतेही दुःख व शोक हुआ था राजा न सुखीहुये ५३ बरन यह जान कि अब इस दुष्टाने भरत व अपनी सौगन्द भी खाई रामको अवश्य वनवास कराया चाहतीहै हे राम ऐसा कह व ऊंधीसासेंले काटे वृक्ष के समान पृथिवी में गिरपड़े ५४ जैसे कि मतवाला मनुष्य नष्टचित्तहो गिरता जैसे सन्निपातादि रोगवाला एकाएकी गिरता जैसे मन्त्र के मारे तेजजानेपर सर्प्प गिरता वही दशा राजा की हुई ५५ यद्यपि बनाय

राजा अचेत होगये पर कुछ ढाढस बांध बहुत दीन व आतुरवाणी से कैकेयी से बोले कि हे दुष्टे यह अनर्थ तुझ को किसने सिखाया जिसको तू सार्थकमानती है ५६ भला जैसे किसी को प्रेतलगाहो वह जो चाहता बकता चलाजाता किसी की लज्जा नहीं मानता वैसेही तू हमारे आगे ऐसी बात कहने में नहीं लजाती हम अगाड़ी कभी से तेरा ऐसा स्वभाव नहीं जानतेथे कि तू ऐसी हठीलीहै ५७ यह हमको अभी विदित हुआ कि जैसा सदा से जानते चले आये हैं तेरा स्वभाव उसके विपरीत है तुझे किससे भय आई जो कि तू ऐसा वरमांगती है ५८ कि भरत राजा होकर राज्य करें व रामचन्द्र वन में निवास करें अच्छाहोगा अभी कुछ सन्देह नहीं इस काम के करने से अब चुपारह हमजानते हैं कि तूने झुंठाई की है ५९ यदि अब हमारा व लोकभर का व भरत का भी प्रियकार्य्य किया चाहतीहै तो हे निर्ल्लज्ज हे पापिनि हे शूद्रप्रकृति इस दुष्टवाणी को छोड़ ६० भला तूने हममें और राम में कौन दुःखद अपराध देखा जो ऐसा कहती है ६१ व जो तू भरत के लिये राज्य चाहती है सो भी तो नहीं होसका क्योंकि राम को छोड़ भरत भी तो राज्य न करेंगे क्योंकि हम राम से भी अधिक धर्म्मात्मा भरत को जानतेहैं फिर ज्येष्ठ भ्राता के सामने वे कैसे राज्य लेंगे ६२ भला जब हम रामचन्द्र को कहेंगे कि तुम वन को जाव तो उनका मुख उदासीन होजायगा फिर हम कैसे देख सकेंगे जैसे कि ग्रहण लगेहुये चन्द्रमा को कोई नहीं निहारसक्ता ६३ भला जो पुण्य की वुद्धि रामचन्द्र के अभिषेक के लिये हमने अपने मित्रों के साथ बैठकर सबके सम्मतसेकी है जब उसके विपरीत होजायगी तो उस अपुण्य वुद्धिको कैसे देखसकेंगे जैसे कि शत्रुओं से मारीहुई सेना देखने के योग्य नहीं रहती ६४ भला ये देश देश से जो राजा लोग यहां आये हैं व आवेंगे वे हमको क्या कहेंगे कि ये इक्ष्वाकुवंशी राजा दशरथ बहुत दिन राज्य करने से बालवुद्धि होगये हैं जो स्त्री के कहनेसे ऐसे महात्मा पुत्र को वनवास देतेहैं ६५ भला जब बड़े बड़े गुणी बहुत पुरानी बातें सुनेहुये बहुत वृद्ध लोग हमसे पूछेंगे कि रामचन्द्र कहां गये तो हम क्या बतावेंगे कि६६ कैकेयी ने हम को बड़ा क्लेश दिया इससे हमने राम को घरसे निकाल

दिया यदि हम यह सत्य भी कहेंगे तौभी हमारे वचन असत्यही समझे जायँगे कि ऐसा नहीं होसक्ता कि स्त्रीके कहने से कोई ऐसे प्रिय पुत्र को घरसे निकाल दे ६७ भला जब हम ऐसा काम करेंगे कि राम को वन भेजेंगे तो कौशल्या हम से क्या कहेंगी व हम उनसे क्या कहेंगे ६८ देखो जब जब अपने अपने समय पर कौशल्या सेवा के समय दासीके समान हँसौआ में सखी के समान धर्म्म करने में भार्य्या के समान हित वाणी बोलने में बहिन के समान नीके मीठ भोजन कराने में माता के समान हमारे निकट पहुंचती थीं ६९ व सदा प्रिय ही वचन बोलतीं सदा तनमन से हमारा प्रियही चाहती थीं व उनका पुत्र भी सब पुत्रों से अधिक प्रियथा व वे प्रिय वचन के सिवाय अप्रिय बोलनाही नहीं जानतीथीं इससे सदा सत्कार ही करने के योग्यथीं तथापि तुम्हारे लिये हमने कभी उनका सत्कार नहीं किया कि तुम अप्रसन्न न होजाव ७० सो यह सुकृत जो तुम्हारे साथ हमने किया वह अब इस समय हमको जराये देताहै जैसे कि जो वस्तु बीमारको न भोजन करनी चाहिये और उसी वस्तु के साथ बनाया हुआ भोजन रोगी को जराता है ७१ फिर जब हम सर्व्व लोक के हितकारी रामचन्द्र को वनवास देंगे तो सुमित्रा भी अपने पुत्रों के विषय में हमारा विश्वास कभी न करेंगी क्योंकि यही समझेंगी कि जब लोकाभिराम रामचन्द्रही को राजा ने छोड़ा तो हमारे पुत्रों को कौन कहै ७२ श्रीजनकनन्दनी जो अति दीन स्वभाव है वह एकाएकी दो अप्रिय सुनेगी एक तो हमारा मरण दूसरे रामचन्द्र को वनवास हाय बड़े शोच की बात है ७३ जानकी हमारे प्राणों को शोच-तीही हुई अपना काल महादुःख से बितावेगी जैसे हिमवान्पर्व्वत के नीचे अपने पति से बिछुड़ी हुई किन्नरी शोच करती हुई समय बितावे ७४ व हम भी रामचन्द्र को महावन को जातेहुये और मैथिली को रोती हुई देख बहुत घरी का जीना नहीं चाहते बरन बहुत ही शीघ्र मरेंगे ७५ सो हमने निश्चय जान लिया कि जैसे ही रामचन्द्र को वनवास हुआ तैसेही हम प्राण त्याग करेंगे व तुम विधवा होकर सहित पुत्र राज्य करावोगी ७६ यद्यपि तुम आज तक हमारे वचनोंके न उल्लङ्घन करनेसे सतीथीं तथापि अब हम को मारेही डारती हो इससे अत्यन्त असती

तुम्हें हम विचारते हैं कैसे कि जैसे अति रूपिणी विषयुक्त मदिरा को कोई पान करे तो उसका मरण होजाता है लोग उस मदिरा की निन्दा ही करते हैं ७७ बड़े खेद की बात है कि तुम झूठी बातें कह कह हमको समझाती हो जिससे कि जानाजाता है कि ये समझातीही हैं झुठाई नहीं करती जैसे कि गीत शब्द से मोहित कर व्याधा मृग को मार डारता है ७८ हाय अब श्रेष्ठ लोग हम को गली गली अनारी कहके नीदेंगे कि राजाने स्त्री के हाथ अपना पुत्र बेंचडारा जैसे कि मदिरा पान कियेहुये ब्राह्मण की सब निन्दा करते हैं ७६ हाय बड़े कष्ट व दुःख की बात है जोकि हम तुम्हारे ऐसे वचन सहतेहैं क्या करें हमको जानो पूर्व्वकाल का किया हुआ अशुभ कर्म्म है प्राप्त हुआ है ८० यह निश्चय है कि मुझ पापी ने तुझ पापिनी को बहुत दिनों से अपने मारने के लिये रक्षा कर रक्खा है जैसे कोई अपने गले में रस्सी बाँध रक्खे व कहीं धक्का लगजाने से गला कस जावे कि वह मरजाय ८१ हा तुम्हारे साथ विहार करतेही रहे हमने तुमको न जाना कि तुम्हीं हमारी मौत हो जैसे कि बालक कहीं एकान्त में खेलने के लिये कालासर्प्प उठाले ८२ अच्छी बात है मुझ दुष्टात्मा की निन्दा जो सब संसार करे तो अनुचित नहीं क्योंकि मैं अपने जीते ही जीते अपने महात्मा पुत्र को बिना पिता का किये देताहूं ८३ सो अच्छा लोग यही कहकह मेरी निन्दा करेंगे कि यह राजा दशरथ बड़ाकामी व अनारीहै जोस्त्रीके कहनेसे ऐसे प्रिय पुत्रको वनको भेजेगा ८४ किजिससे रामचन्द्र वनमें कन्दमूल फलाशन करतेहुये जटा वल्कलादि धारण करनेसे अति दुर्व्वल होजायँगे जो कि उनके भोग विलास करनेका समय होगा उसमें वे महाकष्टपावेंगे ८५ हाय पुत्रभी हमारा ऐसा ठहरा किजब हम कहेंगे कि पुत्र वनको जाव तो वह सिवाय इसके कि बहुतअच्छा जातेहैं और दूसरी बातही न कहेगा ८६ अबतो इसमें अच्छा होता किजो हम कहते कि पुत्र वनको जाव व रामचन्द्र इसके प्रतिकूल करते अर्त्थात् वनको न जाते तो हमारा अति प्रियकरते परन्तु वे हमारे प्राणप्यारे ऐसा करहींगेनहीं क्योंकि रामचन्द्र तो अपने शुद्ध भावहीसे रहतेहैं फिर इस हमारे भावको काहेको जानेंगे किपिताजी मुखहीसे वन जानेको कहतेहैं हृदयसे नहीं ८७ सोयह

कुछनहीं रामचन्द्र वनको जायहींगे हमारी सबलोकमें निन्दाहोहीगी कि जिसे हम सहीन सकेंगे बसमृत्यु यमपुर को हमें लेहीजायगी ८८ जब हम मरजायंगे व मनुष्यों में श्रेष्ठ रामचन्द्र बनको चले जायंगे बाकी कौशल्यादि इष्टजन रह जायंगे तोफिर कैकेयी तूकौन पाप करेगी ८९ सोकाहेको जब हम व राम दोनोंनरहेंगे तोकौशल्याभी तोहमारेही पीछे मरजायंगी क्योंकि तेरे दियेहुये दुःख नसहेंगी वसुमित्राभी मरही जायगी क्योंकि रामके लक्ष्मण सदा अनुयायी ठहरे फिर जब रामवनको जायंगे तोलक्ष्मण अवश्यही उनकेसङ्ग जायंगे रहे शत्रुघ्न सोभरथकेअनुगामी ठहरे सुमित्राकी रक्षा कौन करेगा ९० इससे हेकैकेयि कौशल्या को वसुमित्राको वतीनों पुत्रोंके साथ हमको दुःखमें ढकेलकर तुमसुखित होवो ९१ अब हम व राम इस इक्ष्वाकु के कुलको छोड़े देतेहैं जो कुल कि सदासे नानाप्रकार के गुणों से सत्कार किया गया था इससे कभी चलायमान नहींहुआथा अब अवश्य चलायमान होगा तो तुम अब इसकी पालना करना ९२ कदाचित् रामचन्द्रका वनबास भरतकोभी प्रिय होतो हमारे मरनेपै भरत हमारी प्रेतक्रिया न करे हम रोंकेदेतेहैं ९३ वतू हमारी वैरिणी दुष्टासकामहो ९४ जबहम मृतक होजायंगे व मनुष्यों में श्रेष्ठ रामचन्द्रबनको चलेजायंगे तोतू विधवाहोकर सहित पुत्रराज्य करना ९५ तू केवल कथन मात्र को राजपुत्री होकर हमारे गृहमें बसी है वास्तवमेंनहीं जानते किसवंशकी है क्योंकि यदिवस्तुतः राजपुत्री होती तोतेरे कारण हमारी अकीर्त्ति व सज्जन समाजमें अनादर न होता न सब प्राणियोंके आगे पाप करनेवाले मनुष्योंके समान अपयशही होता ९६ हाय जोराम बार२ रथ घोड़े हाथी आदि बाहनों परचढ़के राजमार्गमें घूमतेथे वे कैसे महाबनमें पैदर विचरेंगे ९७ जिस रामचन्द्र के भोजन समयमें कुण्डलादि भूषण धारण कियेहुये रसोंई बरदार कहाकरतेथे कि हम पहिले अच्छा भोजन पानबनातेहैं हमबनातेहैं ९८ वेरामचन्द्र तीत करू कसैले आदि बनके भोजन करते हुये कैसे बनमें जीवेंगे ९९ जो रामचन्द्र बड़ेबड़े मोलके वस्त्र धारणकर नानाप्रकार के सुख भोगतेथे वेगेरूके रँगेहुये वस्त्र पहिरे बनमें भूमिपर कैसे बसेंगे १०० नहींजानते किस दुष्टने ऐसे दारुण वचन इस दुष्टाको सिखलाये कि रामचन्द्र को

बनबासहो व भरतको राजगद्दीमिले १०१ जितनीसंसारमें स्त्रियांहैं जो कि स्वभावहीसेशठ व अपना मतलबही जानतीहैं सबको धिक्कारहै नहीं सब कौशल्यादि अन्य स्त्रियोंको नहीं कहसक्ते केवल भरतकी माता कैकेयीकोही धिक्कारहै १०२ ॥

दो० अनरथ महँ स्वारथ चहत गतलज्जान सँदेह ॥
करत मोहिँ अनुतापबश सकल भाव नहिं नेह १
कौन अप्रिय कारण लषत मोमहँ कहुकिन बाम ॥
सकल लोक प्रिय राममहँ लषत अशुभका काम २ । १०३
पिता तजहिँ सुत दुष्टसुन पतिनतजहिँ सबनारि ॥
कोपकरै सब जगत तब उपर राम बनचारि ३ । १०४

हरिगीतिका ॥

देवसुत समरूपनिज सुतबनहिं जात लषौंजबै ।
मुदित ह्वैहों देखिकै अरु युवाह्वैहों मैंतबै ॥
जानतीहैं बातयह तूकौन तेरि हरीमती ।
नाहिँजानत हाय तेरी अन्तहोइहि कागती ॥ ४ । १०५
बिनसूर्य्यवरुदिनहोइसबजगकरहिंनिजनिजकामरी॥
अरु बिना बरसे इन्द्र के वरुलोक सुखयुत सामरी ॥
पर अवधसों बनजात रामहिं देखिकोइ नहिंजीवहीं ।
यहकहतहौं निजचित्तसों कछुबातनहिँ गुनिसीवहीं ॥ ५ । १०६

हमने अपने मारने के लिये हाय परम बैरिणी मृत्युरूप तुझकोरक्खा जैसे कि कोई बहुत दिनों से अपने गोदमें सांपिनि लिये रहै व उसीसे माराजाय हमारी वहीदशाहुई १०७ अच्छा हमारे व रामके व लक्ष्मणके बिनातेरे साथ अयोध्या की व सबराज्यकी रक्षा भरतकरें व तू पतिपुत्रादि बान्धवों कोमार हमारे शत्रुओंसे अच्छीतरह वार्त्तालाप करें १०८ हे निर्लज्ज महाबिपत्ति देनेवाली जो तू मारेहठके बारबार ऐसे बचन कहती है नहींजानते किसहेतु तेरेमुखसे नीचेगिरके तेरे दांत टुकड़े टुकड़े नहीं होजाते १०९ न तो कभीरामचन्द्रने तुझसे कुछअप्रिय बचन कहा क्योंकि वे कठोर बात कहनाही नहीं जानते फिर सदामधुर प्रियभाषी सकल गुण सम्पन्न रामचन्द्रमें तू दोष कैसे कहती है ११०

चाहे तू बहुत उदास हो वा अग्निमें गिरके भस्महो वा विषखाय प्राणछोंड़े वा कुठारि आदिसे अपने अङ्ग रत्ती रत्ती काटडारै वा पृथिवी में समायजा पर हे केकयराज दूषनेवाली दुष्ट कैकेयी अपने अप्रिय तेरे वचन हम न करेंगे १११ क्योंकि क्षूराकी धारके समान नित्यही असत्प्रिय वचन बोलने वाली महादुष्ट स्वभाव अपने कुलके नाशने वाली हमारे हृदयके जारने हारी तेरा जीना हमनहीं प्रसन्न करते ११२ हे कैकेयि बिना परम प्रिय रामचन्द्र पुत्रके हमारे प्राणहीं नहीं रहसक्ते फिर सुख कहांसे होगा इससे हमारा अहित न कर हमतेरे पैरोंपर परते हैं हमारे ऊपर दयाकर ११३ इसरीतिसे जब मर्य्यादा को लांघकर कैकेयी ने महाराजको ग्रसित किया तो राजा अनाथों के समान रोदन करते हुये कैकेयी के चरणों पर गिरपड़े जैसे मरणोन्मुख मनुष्य कुछ कहना चाहे पर मूर्च्छा आयजाय कुछ कहने न पावे व्याकुल होजाय वहीदशा राजा की हुई ११४ ॥

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेद्वादशस्सर्गः ॥ १२ ॥

जबराजा कैकेयी के चरणों पर गिरपड़े कि जिसके योग्यवे न थे तब कैसे बिदित होतेथे जैसे पुण्यनाश होनेके पीछे राजा ययाति सत्य लोक से गिरेथे १ पापरूप कैकेयी का प्रयोजन जब न सिद्ध हुआ तो निडर हो राजा को भय देखाती हुई वही वरदान फिर मांगने लगी २ हे महाराज तुमतो बकते थे कि हम सत्यवादी व बड़े प्रतिज्ञ हैं फिर हमको जो वर दियाथा उसे अबकैसे देना नहीं चाहते ३ जब कैकेयी ने ऐसा कहा तो महाराज दशरथ जी एक मुहूर्त भर व्याकुल हो फिर बोले ४ हेदुष्टे अच्छा अब हमारे मरजाने पर व पुरुष श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के बन जाने पर सुखितहो सब अपनी कामना पूरीकर ५ भलायहां तोजो दुर्यश होगा सो होहीगा परतूने ऐसा किया कि जबहम मरने के पीछे स्वर्ग्ग को जायँगे तो देवता लोग रामचन्द्र की कुशल वार्ता पूछेंगे कि हे स्त्रीजित तुमने राम ऐसे पुत्रको बनवास दिया तो हम इस वचन को कैसे सहेंगे व क्या उत्तर देंगे ६ जो कहो कि यह उत्तर देंगे कि कैकेयी का प्रिय करने के लिये बर दिया जिससे राम को बन को निकाल दिया

यद्यपि यह सत्यही है तथापि देवता लोग असत्यही मानेंगे क्योंकि इस बातपर कौन विश्वास करेगा कि राजाने स्त्री के कहने से ऐसे पुत्र को वनवास दिया होगा ७ हाय हमारे पुत्र न था तो बड़े भारी परिश्रमसे महात्मा रामचन्द्र को पुत्रपाया सो तिनको हमकैसे छोड़दें ८ फिर यह भी नहीं कि जानों बड़े परिश्रम से पाया तो क्याहुआ कोई गुणहीं राम में न हो नहीं शूरता वीरता सकल विद्या पढ़ना क्रोध जीतना सब पर क्षमा करना आदि गुण कमलदल नयन रामचन्द्र में विद्यमानहैं ऐसेपुत्र को कैसे कहें कि वनको जाव ९ हायश्याम कमलके समान श्याम स्वरूप प्रलम्बवाहुमहाबली परमसुन्दर रामको कैसे कहेंगे कि वनकोजाव १० अनेक सुखों के योग्य दुःखोंके अयोग्य वुद्धिमान् रामचन्द्र को दुःखकैसे हम देख सकेंगे ११ जोबिना दुःखही किये हम स्वर्ग को चलेजाते तो सुख भोग करने के योग्य रामचन्द्र को सुख मिलता १२ हे निर्ल्लज्ज पापिनि कैकेयी रामचन्द्र का बैरकर हमसे प्रीति जोरा चाहती है १३ अरे हमारी लोकमें बड़ी अकीर्त्ति होगी कि राजा स्त्रीजित् होगये व अनादर भी बड़ाहोगा इसरीति से राजाको बिलाप करते करते सूर्य्य अस्त हुये रात्रि आयगई १४ यद्यपि वह रात्रि चन्द्रवती थी तथापि राजाके रोदन करने के कारण न शोभित हुई १५ क्योंकि वृद्ध महाराज दशरथ ऊपर कोटकटका लगाये महादुःखियों के समान रोदन करते थे १६ व यह कहते थे कि हे नक्षत्र भूषित रजनी हम तुम्हारा प्रातःकाल होना नहीं चाहते तुमसे हाथजोर कहते हैं कि हमारे ऊपर दयाकरो १७ अथवा बहुतही शीघ्र बीतजावो हम इस दयाहीन निर्ल्लज्ज कैकेयीका मुख नहींदेखा चाहते क्योंकि इसकेलिये हमेंमहादुःख परा है १८ इतना कह राजा फिर कैकेयी को बहुत समझाने व मनाने लगे पर उसने कुछ न माना तब ऐसा कहनेलगे कि १९ हम बड़े दुःखी हैं व साधु प्रकृति हैं तुम्हें कुछ कहते सुनते भी नहीं व तुम्हारेही बशीभूत हैं क्योंकि सत्यसे पलटना अङ्गीकारनहीं फिर अब थोड़ेही दिन जीवेंगे क्योंकि वृद्धहुये हैं ऐसाकह फिर कैकेयी को मनाते हुये बोले २० हेप्रिये यह रामचन्द्रका अभिषेक हमने वहां नहीं कहा जहां कोई मनुष्य न हो बरन राजसभा में सबके सामने कहा है अब

कैसे कहें कि अभिषेक न करेंगे उसके पलटे बनबास देंगे हमारे ऊपर दयाकरो क्योंकि तुम्हारा स्वभाव तो बड़ा दयालु है २१ तिससे अब प्रसन्न होकर कहदीजिये कि रामचन्द्र को राजगद्दी दीजिये जानों तुम्हारेही देनेसे राम राज्य पावें व तुम परम यश पावो २२ अयेप्यारी यहबात हमको रामको सब संसार को सब बड़े लोगों को व भरत को भी प्रियहै कि रामचन्द्रही राजा हों इससे कृपापूर्व्वक कही दीजिये२३ ऐसा कहते हुये नेत्रलाल किये शुद्ध स्वभाव राजा रोदन कर बार बार कहते थे पर उस दुष्ट स्वभाव कैकेयी ने न माना क्योंकि वह तो महा निर्ल्लज्ज थी पतिके करुणापूर्व्वक रोदन को काहेको मानै २४ जब महाराजनेजाना कि रानी हमारे वचन के प्रतिकूलही वचन कहती है कुछभी सन्तुष्ट नहीं हुई तो फिर मूर्च्छित हो महीतल में गिर परे क्योंकिजान लियाकि इसेरामचन्द्रको बनबास देनाहीं अङ्गीकार है२५॥

दो० इमि भूपहिं बिलपत सकल निशाबीतिभा प्रात ॥
मङ्गल गायक बाग्रक्रम रोकेहु कछुन पोसात १ । २६

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेत्रयोदशस्सर्ग्गः ॥ १३ ॥

जब मारे पुत्रके शोकसे पीड़ित राजाकी मूर्च्छाजागी जिसके मारे भूतल में परेथे तब फिर पापिनी कैकेयी बोली कि १ हमको बरदान देने की प्रतिज्ञा कर अब नहीं दिया चाहते यह पापकर पृथिवी मेंलोट रहे हो इसका कौन प्रयोजन है जो बड़े खिन्न होगये हो आपअपनी उसी सत्य प्रतिज्ञापर टिकिये अन्याय न कीजिये २ क्योंकि धर्म्म जानने वाले लोग सत्यको परम धर्म कहते हैं इसीसे तुम्हारी सत्यता की परीक्षाही लेनेके लिये हमने यह बात तुमसे कही है कि आप अपनी प्रतिज्ञा सत्य करें कि धर्म्महो ३ देखिये राजा शिवने कबूतर के बदले बाजको अपनी देहका मांस देदिया जिसके कारण राजा उत्तम गतिको पहुंचे ४ फिर राजा अलर्कजीने एक वेद पाठी अन्धे ब्राह्मण को मांगने से अपने नेत्र बड़ी प्रसन्नताके साथ देदिये ५ समुद्रने अपने गुरु अगस्त्यजी से प्रतिज्ञा कीहै उसी के सत्यपालन के लिये पूर्णमासी के दिन भी अपनी मर्य्यादासे अधिक नहीं बढ़ता ६ देखिये ओङ्कार रूप एक सत्यरूप पद

ब्रह्मको बताताहै वसत्यहीमें धर्म्म टिकताहै वेदभी यही कहतेहैं कि सत्य के समान कोई धर्म्म नहीं इसीसे सत्यहीसे परमेश्वर मिलताहै ७ इस से जोधर्म्ममें तुम्हारी मतिहो तोसत्यका प्रतिपालन कीजिये किवह कर जो देनेको कहाहै सफलहो क्योंकि आप तो बड़े दानी प्रसिद्ध हैं ८ सो धर्म्मके पालनके लिये व हमारे कहनेसे रामचन्द्रको बनवास दीजिये यह तुमसे तीनबार कहतीहैं ९ जोआप हमारे इन मनोरथ को न पूरा करोगे तोतुम्हारे आगेही हम प्राण अवश्य छोंड़देंगी १० निश्शङ्क कैकेयीके ऐसे वचन सुन राजा ऐसे धर्म्म पाशमें बँधे किजिस फांसीको फिर छोड़ायही न सके जैसे कि बावन जी की फांसी से राजाबलि न छूटे तीन पैग भूमि देतेही बना ११ व जैसे धुरिया बैल जुआ और पहिया के बीच से चलतीहुई गाड़ीमें शिर नहीं निकालसक्ता तैसेही राजाभी बहुत व्याकुल होगये न अब बरदेतेही बनता न नदेतेही १२ राजा के नेत्र बनाय विह्वल होगये बोलनेकी सामर्थ्य नथी परक्याकरैं मारेधर्म्मके क्लेशसे धैर्य्यको धारणकर फिर कैकेयीसे बोले कि १३ जोहमने विवाहमें मन्त्र के साथ तेरा पाणिग्रहण कियाथा उसको छोड़ते हैं व तुझमें जो हमसे पुत्र हुआहै उसेभी १४ हेकैकेयि यह रात्रिबीती सूर्य्योदयहुये वसिष्ठादि गुरुजन अब हमको रामाभिषेक कराने के लिये शीघ्रता करावेंगे १५ सोरामाभिषेक काहेको होगा हम जानतेहैं जोसामग्री अभिषेकके लिये एकट्ठाहै उससे रामचन्द्रहमारे मरने पर प्रेतकर्म्म करेंगे १६ हां हमयह कह देतेहैं कि तुम व तुम्हारा पुत्र कोई हमारे प्रेतकर्म्म जल पिण्डादि दान नकरैं क्योंकि तुमने रामचन्द्रका अभिषेक नहीं होनेदिया १७ हम अब जो लोग कि रामाभिषेकको सुनकर प्रसन्न मुख हुयेथे उनको देख अब रामाभिषेक न होनेसे उनका हर्ष जातारहैगा ऐसेलोगोंका मुखनहीं देखसक्ते १८ इसरीतिसे महात्मा राजादशरथजी उसदुष्टा रानीकैकेयी से रोयरोय कहतेहीथे कि प्रातःकाल हुआ रात्रि जातीरही १९ व महापापिनी कैकेयी जोकिबातचीत करनेमें बड़ीचतुरथी मारेक्रोधके मूर्च्छित हो राजा से फिर बोली २० हे राजन् बिष खायेहुये लोगों के वचन के समान यह क्याकहतेहो राम अपने पुत्रको यहांबुलावो २१ हमारे पुत्र भरत को राजगद्दी देव रामचन्द्र को बनवास व हमको सौतिहीन कर

कृतार्थ होजावगे क्यों रोते धोते हौ २२ जब राजा चाबुक मारे हुये उत्तम जाति के घोड़के समान बारबार कैकेयी से इस भांति प्रेरित हुये तो फिर बोले २३ कि हमतो अब धर्म्मके बन्धन में बँधे हैं हमारी चैतन्यता जाती रही है अच्छा अब जो तुझे भावै वही करै महा धार्म्मिक परम प्रिय जेष्ठ पुत्र राम को बुलवाव देख तो लें २४ इतने में बनाय प्रातःकाल हुआ सूर्य्योदय होआये पुण्यदायक नक्षत्र योगलग्न सब प्राप्त हुये २५ कि सकल गुणसम्पन्न वसिष्ठजी अपने शिष्यों समेत बहुतसी यज्ञ सामग्री लिये लेवाये निज कुटी पर आनपहुँचे २६ देखा तो अयोध्यापुरी में सब गली कूचोंमें सुगन्धित जल से छिरकाव होरहा है सब कहीं देव मन्दिरों में पताका बांधी हैं जहां देखो सब मनुष्य प्रसन्न चित्त घूम रहे हैं बाज़ारों में सब पदार्थ धरे हैं सबकी दूकानें खुलीहैं २७ रामचन्द्र के लिये और भी नानाप्रकार के महोत्सव होरहे हैं सब ओर से चन्दन गूगुर आदि सुगन्धित बस्तुओं का धुआँ आय रहाहै २८ ऐसी इन्द्रपुरी के समान अयोध्या पुरी को देखत हुये वसिष्ठ जी आते आते राजमन्दिर में आये जहां कि हज़ारों ब्राह्मण लोग आगये थे अपना अपना काम करते थे २९ इनके सिवाय और पुरबासी देशवासी लोग ठौर ठौर घूम रहे थे यज्ञ जानने वाले ब्राह्मण सब बैठथे सभासद लोगभी बैठ घूमरहे थे ३० ऐसे राजमन्दिर के भीतरआय वसिष्ठजी सब लोगोंको देख भाल सब महर्षियों के साथ बड़ी प्रसन्नता को प्राप्तहुये ३१ देखा तो जनाने के भीतर के दरवाजे से राजाके परम प्रिय व परम शोभन मूर्त्ति सुमन्त्र मन्त्री चले आते हैं ३२ तिन सुमन्त्रजीसे महातेजस्वी वसिष्ठ जी बोले हे सुमन्त्र राजासे जायकहो कि वसिष्ठ जी आये हैं ३३ और ये सुवर्णके घड़े गङ्गाजल से भरे लिवा लायेहैं ३४ गूलर का पीढ़ा यज्ञ में राजकुमार के बैठने के लिये व सबप्रकार के बीज सुगन्धित पदार्थ नानाप्रकार के रत्न ३५ मधु दधि घृत लावा कुश फूल दूध आठ कुमारिका मतवाला एक श्वेत हाथी ३६ चार घोड़े नहा रथ उत्तम खड्ग सुन्दर धनुष पीनस चन्द्र समान उज्ज्वल छत्र ३७ श्वेत दो मुरछल घतूर के पुष्प के आकार एक सुवर्ण का पात्र जिसे भृङ्गारक कहते हैं सोनेसे शृंग आदि मढ़ाया हुआ श्वेत बैल ३८ चार चौह का

सिंह महा बलवान् तुरङ्ग सुन्दर सिंहासन व्याघ्र चर्म्म यज्ञ करने के लिये ईंधन अग्नि ३९ सब बाजे नाना प्रकार के वस्त्र भूषण धारण किये वेश्या लोग सब आचार्य्य अन्य ब्राह्मण सहस्रों धेनु तोता मैना कबूतर आदि पक्षी व वनके पालतू जीव ४० नगर और देश निवासी बनियां आदि उद्यमी लोग अपनी २ समाज के साथ इन्हें आदि और बहुत प्रसन्न चित्त लोगराजों केसङ्ग प्रिय वचन बोलते हुये आये ४१ इस-लिये महाराज दशरथ जी को शीघ्रता कराओ जिसमें पुष्य नक्षत्र में कि अति शुभदायक योगहै रामचन्द्र राज्य पावें ४२ महात्मा वसिष्ठ जीके ऐसे वचन सुन सुमन्त्रजी महाराज की स्तुति करतेहुये राज-मन्दिर में पैठे ४३ द्वारपालकों ने सुमन्त्रजी को राजमहल में जाते देख नहीं रोंका क्योंकि उनके लिये प्रथमहीं से सब काल में राजाज्ञा बिना रोंक टोंक राज भवन में आनेकी थी ४४ सुमन्त्रजी राजा के समीप पहुंचे महाराज की ऐसी दशा देख परम पवित्र बाणी से स्तुति करने लगे ४५ जैसी स्तुति प्रभात समय राजों की की जातीहै वैसी सुमन्त्र जी करने लगे ४६ हे महाराज जैसे सूर्य्योदय होनेपर समुद्र स्नान करनेवाले लोगों को आनन्दित करता है तैसेही अब प्रातःकाल उठके हम लोगों को आनन्दित कीजिये ४७ इस बेला में मातलि नाम सारथि इन्द्रकी स्तुति करताहै तो वे असुरों को जीतते हैं तैसेही हम आपको जगाते हैं ४८ जैसे सहित अङ्ग चारो वेद चौदहो विद्या छत्रो शास्त्र ब्रह्माजी को जगाते हैं तैसेही हम आपको जगाते हैं ४९ जैसे सूर्य्य चन्द्रमा अपने उदयास्त से सब प्राणियों के धारण करने वाली इस पृथिवी को जगाते हैं तैसे हम आपको जगाते हैं ५० हे महाराज मङ्गलाचार पूर्व्वक उठिये व जैसे सुमेरु पर्व्वत पै सूर्य्य बिराजमान होतेहैं तैसे बिराजिये ५१ सूर्य्य चन्द्र शिव कुबेर वरुण अग्नि व इन्द्र ये सब आपका मङ्गल करें ५२ हे महाराज रात्रि बीतगई कल्याण दायक दिनहुआ अब जागिये जिस जिस कामके लिये आज्ञा हुईथी सब एकत्र हैं ५३ अब सब देश नगर पुरवासी वा बनियां महाजनों के साथ रामचंद्रजीका अभिषेक कराइये ५४ ये भगवान् वसिष्ठ जी हैं सब ब्राह्मणों के साथ खड़े हैं इससे रामचंद्र के अभिषेक के लिये

शीघ्रही आज्ञा दीजिये ५५ क्योंकि जैसे बिना चरवाहे के पशु जैसे बिना मालिक कीफौज जैसे बिनाचंद्रमारात्रि जैसे बिनाबैलकीगाय५६ ऐसेही जिस राज्यमें राजानहींहोता वहराज्य होजाता है राजा ऐसे समझाते हुये सुमन्त्र के वचनसुन ५७ फिर महाशोकमें डूबगये कुछ सँभारकर रामचन्द्र के शोकमेंपर५८ महाधार्म्मिक महाराज मारेशोक के लालेनेत्र कर बोलेकि सुमन्त्रतुम और अपने वचनोंसे हमारे मर्म्मस्थानको काटते हो५९ राजाके ऐसे कारुणिक वचन सुन सुमन्त्रजी कुछडरकर वहां से थोड़ीदूर हटगये ६० व राजा मारेदुखके सुमन्त्र से कुछ न बोलसके तो बड़ी चतुर कैकेयी सुमन्त्रसे बोली ६१ हेसुमन्त्रआजकी रात्रि रामचन्द्र के अभिषेकके हर्षमें पड़ेहुयेराजा जगेहैंइससे मारे परिश्रमके थक उठे हैं अब औंघानेहैं ६२ तिससे बहुतहीशीघ्र चलेजाइये महायशस्वी राजकुमाररामचंद्र को यहांलाइये इसविषयमें कुछ विचारांश न कीजिये ६३ यहसुनसुमंत्रजीबोले हेकैकेयिबिनाराजाकेवचनसुने हमकैसेजायँ यहसुन राजा मन्त्रीसे बोले ६४ हे सुमन्त्र रामचन्द्र को शीघ्रही यहां लाइये हमदेखाचाहतेहैं सुमन्त्रअच्छासमझबहुतहर्षितहुये ६५ जबराजाकी भी आज्ञाहुई तोअतिप्रसन्नहो सुमन्त्रजी रामचंद्रजीकोबुलानेचलेमार्ग्गमेंशोचनेलगे कि क्या कारण जो कैकेयीने कहाशीघ्रही रामचंद्रकोलावो ६६ हमजानतेहैं कि रामचन्द्र के अभिषेक केलिये राजा कुछ बहुतसा प्रयत्न कियाचाहतेहैं इसीसे रामचन्द्र कोबुलातेहैं यह विचारसुमन्त्र अतीवहर्षितहुये ६७ अबसमुद्र के कुण्डके समान राजमहलसेसुमन्त्र रामचंन्द्र के देखने कीइच्छासे बहिराने ६८ देखतेहैं तोचारोंओर से पुरदेशनगरवासीराजद्वारपै आयरहेहैं व महाराजके द्वारपै ठौरठौरबैठतेजातेहैं ६९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुर्दशस्सर्गः ॥ १४ ॥

वेवेदपारगामी ब्राह्मणलोग जबरात्रिबीतगई तो वसिष्ठजी केसाथ सन्ध्या वन्दनादि क्रिया करनेलगे १ व जो राजसेवक सेनापति बजार के निवासियोंमें मुख्यथे रामचन्द्रके अभिषेकके लिये प्रसन्न चित्तहो एक दूसरेसे बतलानेलगे २ तबतक विमल सूर्य्यउदयहुये पुष्यनक्षत्र आया कर्कलग्न पहुंचीकि जिसमें रामचंद्रजीका जन्महुआथा ३ ब्राह्मणोत्तमोंने

रामचंद्रजीकेअभिषेक केलिये सुवर्णके कुम्भजलभरेहुये व बैठने के लिये भद्रपीठ एकत्रकिया ४ सब सजासजाया रथ देदीप्यमान व्याघ्रचर्म्म से लपेटाहुआ गङ्गा यमुनाके सङ्गमसे जल आया ५ इसके सिवाय जो और पुण्यरूपनदी कुण्ड कुआँ ताल आदिपूर्व बहनेवाले ऊपर बहने-वालेतिरछाबहनेवाले आदि हैं ६ तिनसे जललाये व समुद्रोंसे लाये व मधुदधिघृत लावा कुश पुष्प दूध ७ सर्व्वभूषण पहिरे आठकन्या मत-वालाहाथी दुधारेवृक्षोंके पल्लवों सहित सहित जल सोने चांदी के कुम्भकमलपुष्प सँय्युक्त सुन्दरजलसे पूरित शोभायमान हो रहे हैं ८ व चन्द्रमा की किरणों के समान उज्ज्वल सोनेकी डाँड़ी लगी रत्नजटित चमर रामचन्द्र के अभिषेक के लिये तैयार हैं ९ व चन्द्रमण्डलही के समान श्वेत छतुरी अति देदीप्यमान अभिषेक के लिये विद्यमान है १० व श्वेत एक बैल श्वेत घोड़ा मद चूताहुआ हाथी ये सब अभिषेक के लिये प्राप्त हैं ११ आठ कन्या मङ्गल के लिये सब भूषण पहिरे सबप्रकार के बाजे भाटलोग वंशकी प्रशंसा करने के लिये इनके विशेष और सूतमा-गधादि लोग आये १२ जिसप्रकार इक्ष्वाकुवंशियों के अभिषेक के लिये सामग्री एकत्र होतीथी वैसीही श्री राजकुमार रामचन्द्र के लिये एकत्र हुई १३ ये सब आयेहुये राजाकी आज्ञासे एकत्र हुयेथे जब राजाको नहीं देखा तो आपस में कहनेलगे कि देखें राजा हम लोगों को क्या आज्ञा देतेहैं १४ व यह भी कहतेथे कि देखो सूर्य्य उदयहुये रामचन्द्र के अभि-षेक की सब सामग्री होरही है पर राजाको नहीं देखते कि कहांगये १५ इस रीतिसे सब कहतेहीथे कि बड़े बड़े महाराज जो आयेथे उनसे सुमन्त्र जी बोले १६ कि महाराजाधिराज की आज्ञासे हम रामचन्द्र को बुलाने गयेथे आपलोग सुखपूर्व्वक बैठिये राजा व रामचन्द्र दोनों जन आय तुम लोगोंका सत्कार करेंगे १७ व राजासाहब जागेहैं पर बाहर नहीं निकले इसका कारण भी आप लोगोंकी ओर से पूंछेंगे कि क्यों बाहर नहीं निकलते १८ ऐसा कह बहुत दिनों की पुरानी बातें जाननेवाले सुमन्त्र जी जहां महाराज दशरथ कैकेयी के निकट थे कि जहां जानेकी सुमन्त्र को कभी रोंक न थी उस मन्दिर को गये १९ व राजमन्दिर में जाय राजा के वंशकी स्तुति करनेलगे जैसा कि सदा शयन के समय

करतेथे २० प्रथम राजमन्दिर में पहुंचतेही पहुंचते स्तुति करने लगेथे अब जहां परदा पड़ाथा उसके बनाय निकट ठाढ़ेहो आशीर्व्वाद देदे महाराजकी स्तुति करने लगे ॥ २१ ॥

चौ० ॥ सोम सूर्य्य शिव वरुण कुवेरा । इन्द्र अग्नि जय देहिं न देरा ॥ सकल देव तव विजय करेहीं । उठहु भूप रवि उदय भयेहीं १ । २२ जिमि षडङ्गयुत चारिउ वेदा । विधिहि जगावहिं सदा अखेदा ॥ पुरुष सिंह तिमि तुम्हहिं जगावत । जागिय धीर लोक यश गावत २ । २३ गई भगवती निशा बीति अब । शिवद दिवस भा जग्यहु लोक सब ॥ उठिय भूप करिये सब काजू । रामहि देइय अब युवराजू ३ । २४ विप्र सैन्य मुखिया धनवाना । सकल भूप आये बलवाना ॥ तव दर्शन सब चहत महीशा । जागिय नाथ उठाइय शीशा ४ । २५ ॥

सलाह देनेमें परम चतुर सुमन्त्र जीने जब राजाकी ऐसी स्तुति की तो राजा जाग ऐसा वचन बोले २६ कि हे सुमन्त्र कैकेयी ने जो कहाथा कि रामचन्द्र को लावो क्या कारण नहीं लाये हमारी आज्ञा को क्यों भङ्गकिया कैकेयी की आज्ञा हमारीही आज्ञाहै २७ हम सोते नहीं हैं बहुत ही शीघ्र रामचन्द्र को यहां लावो राजा दशरथ ने ऐसे वचन सुमन्त्र से कहे २८ राजाके ऐसेवचन सुन माथ नवाय बड़ीबड़ाई कर सुमन्त्रजी राजमन्दिरसे चलेव मनमें जानाकि कुछ कोई बहुत अच्छी बात होनेवाली है २९ इस समय राजाके मनकीबात मन्त्री सुमन्त्रजीके मनमें नहीं आई इसलिये परमानन्दितहो अति प्रसन्नचित्त राज मार्ग्ग देखतेहुये राममन्दिरको चले ३० मार्ग्गमें प्रत्येक मनुष्यके मुखसे रामचन्द्र के विषयकी वार्त्ता जिसमें सब रघुनन्दनके राज्याभिषेककी बतकही भरीहुई थी सुनते जातेथे ३१ जातेजात राम मन्दिरके निकट पहुंचे जोकि अति मनोहर कैलास पर्व्वतके समान ऊंचा व उजला इन्द्रके मन्दिरके समान सब सामग्रीसे भरापुरा ३२ बड़ेबड़े किवांरोंसे शोभित सुवर्णकी सैकरों वेदियां जिसमें बनीहुई सुवर्णहीकी सैकरों प्रतिमा जिसमें धरी धराई मणियोंके पल्लव लगे वन्दनवार लगे ३३ शरद ऋतुके आकाशके वादरके समान निर्म्मल सुमेरु पर्व्वतकी कन्दराके तुल्य चमक दार अच्छी अच्छी मालाओंके मणियोंसे शोभायमान ३४ मोती व मणियोंसे शोभित

चन्दन व अगरके मिलाये हुये जलसे छिरका छिरकाया चन्दनके पर्व्वत के समान विविध भांतिके सुगन्धोंसे सुगन्धित ३५ कबूतर व मयूर आदि पक्षियोंके शब्दसे शोभित सुवर्णादिके व्याग्घ्र सिंहादिकोंसे शोभित थवई बढ़ई आदिकी चित्रकारियोंसे चित्रविचित्र ३६ जिसकी सूक्ष्मचित्र-कारी देख प्राणियों के मन व नेत्रोंकी गति नहींपहुंचती बरन मारेतेज के चकचोंधी लगती चन्द्रमा सूर्य्यकी दीप्तिके समान कुवेर मन्दिरके तु-ल्य ३७ इन्द्रके मन्दिरके समान नानाप्रकारके पक्षियोंसे शोभित सुमेरु पर्व्वत के शृङ्गके समान राममन्दिर सुमन्त्रजीने देखा ३८ तोसब देश नगर निवासी नजर भेंटेलिये हाथजोड़े ठौरठौर खड़ेहैं ३६ सबलोग रामचन्द्रके अभिषेकके लिये तैयारहैं व चाहतेहैं कि कब जल्दी अभिषेक होगा मन्दिर महामेघके समान शोभित अतिरमणीय नानाप्रकारके मणि-योंसे शोभायमान दासी दासोंसे भराहुआ ४० ऐसे मन्दिरके देखने के लिये घोड़े नहेहुये रथपै चढ़ मनुष्योंसे भरेहुये राजाओंके झुण्डके झुण्ड देखते दिखाते सबलोगोंके मन हर्षित कराते हुये सुमन्त्रजी ४१ प्रथम फाटकके ऊपर पहुंचे जहां नानाभांतिका धन ठौरठौर धरा है व वनके जीव मोर शुकमैना आदि ठौरठौर विराजमानहैं मानों पुरन्दरका भवन है उसेदेख मन्त्री सुमन्त्र बहुतही हर्षित हुये ४२ व इन्द्र पुरीहीके समान कैलासाकार फाटक विराजमान देख रामचन्द्रके मतपै टिकेहुये लोगों को गलीसे कुछ अलग करते कराते क्योंकि रथपै चढ़ेथे जाय जनानेके निकट पहुंचे ४३ वहां पहुंच सुनातो सब लोग रामचन्द्रके अभिषेकके मङ्गलार्त्थही वार्त्ता कररहेहैं उस वार्त्ता को सुन मन्त्री बहुत प्रसन्नचित्त हुये ४४ जनानेमेंभी खास रामचन्द्रके रहनेवाला मन्दिर देखातो वहभी इन्द्रके विहारस्थानही के समान बरन उससेभी शोभायमान पायागया व नानाभांतिके मृगपक्षी जिसमें आयेहैं ऐसा शोभायमान मन्दिरहै मानोंसु-मेरु पर्व्वतहीहै ४५ व वहांभी करोड़ों रुपयोंकी सामग्री भेंटके लिये लिये सहस्त्रों पुरदेशनिवासी खड़ेहैं ऐसा द्वारमार्ग्ग देखा ४६ वहांसेआ-गे चल देखातो महा मेघ समान पर्व्वताकार अंकुशके न सहनेवाला आ-गेका धर ऊपर उठाये रामचन्द्रकी सवारी शत्रुंजय नाम अति शोभाय-मान हाथी खड़ाहै ४७ उसके थोड़ीही दूरआगे बढ़देखातो बहुतसे हथि-

वाल साईस व रथवान लोग अपने अपने हाथी घोड़े रथ आदि सवारें सजाये तैयार खड़ेहैं उनसबको गलीसे अलग कर सब पदार्त्थोंसे भरे पुरे जनाने मकानमें सुमन्त्रजीने उनलोगोंको साथले प्रवेश किया ४८ उसमें पर्व्वतके कँगूरोंके व मेघोंके समान ऊंचे सैकड़ों विमानोंसे शोभित सैकड़ों मन्दिरहैं तहां बिन रोंक टोंक सुमन्त्रजी पैठे जैसे कि सकल रत्न सहित समुद्र में मकरपैठे ४६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चदशस्सर्ग्गः ॥१५॥

जनाने के उस दरवाजे को नाँघ कि जिसपर हृष्ट पुष्ट सहस्रों मनुष्य खड़े थे सुमन्त्रजी दूसरे फाटक में पैठे १ देखातो उस फाटकपै जितने द्वारपाल थे सबके सब धनुषबाण धारणकिये व सबके सब युवावस्था को प्राप्त सुन्दर सुवर्ण के मणि जड़ित कुण्डल पहिने सबके सब शुद्धचित्त सब एकाग्रचित्त व सब स्वामी के कार्य्य में तत्पर थे २ इन लोगों से थोड़ीही दूर आगे गेरू आदिके रँगे हुये वस्त्र ओढ़े पहिने हाथों में बेंत लिये हुये सब भूषण पहिने वृद्ध लोगों को देखा ये लोग सब स्त्रियोंकी रक्षाके अधिकारी थे ३ उन लोगों ने देखा कि महाराज के मन्त्री सुमन्त्रजी प्रसन्नचित्त चले आतेहैं रामचन्द्रजी के प्रियाभिलाषी तो थेही एकाएकी अपने अपने आसनों से उठ खड़े हुये ४ तिन प्रसन्नचित्तहो सुमन्त्रजी ने तिन लोगों से कहा कि रामचन्द्रजी से तुम लोग जाय कहो कि द्वारपै सुमन्त्र खड़ेहैं ५ यहसुन उन लोगों ने बहुत जल्दी के साथ जाय सस्त्रीक श्रीरामचन्द्रजी से कहा कि महाराज के पठाये हुये सुमन्त्रजी आयेहैं द्वारपै खड़ेहैं क्या आज्ञा होतीहै ६ यह सुन श्रीरामचन्द्र ने जाना कि पिता जीके पठाये हुये सुमन्त्र आतेहैं इसलिये दूतों की द्वारा प्रियकरने की इच्छा से बुलवाया ७ सुमन्त्रजी ने आय देखा तो कुबेर के समान विराजमान सर्व्व भूषण भूषित नानाप्रकार के बिछौने बिछाये हुये सुवर्ण के पलँगपै श्रीरामभद्र बैठेहैं ८ उस समय बराह के रुधिर के समान अति अरुण चन्दन परम सुगन्धित अतिश्रेष्ठ रामजी मस्तक में लगाये थे ६ व उन्हीं की बगल में चमर लिये जानकी जी खड़ी थीं जैसे कि चित्रा नक्षत्र के साथ चन्द्रमा की शोभा

होतीहैं वैसेही रामचन्द्रजी की शोभा जानकी के कारण थी १० वमारे तेजके मानो सूर्य्यनारायण तपरहे हैं ऐसे रामचन्द्र को देख सुमन्त्र विनय पूर्व्वक हाथजोड़ प्रणाम करनेलगे ११ प्रणामानन्तर देखा कि रामचन्द्र बहुत प्रसन्न हैं व विहार के शय्यापै विराजमान होरहे हैं राजा के सत्कारित सुमन्त्र श्रीराम से बोले १२ हे राम कौशल्याजी अब सुप्रजा हुईं कैकेयीरानी सहित आपके पिता आपको देखा चाहते हैं इससे बिलम्ब न कीजिये चलिये १३ जब इस भांति सुमन्त्रजी ने कहा तो अति प्रसन्न हो श्रीराम जानकीजी से बोले १४ हे देवि पिता व माता एक स्थानपै बैठ निश्चयहै कि कुछ हमारे अभिषेकही के विषय में सम्मति कररहे हैं १५ सो हम जानते हैं कि राजाके अभिप्राय को विचार हमारे ऊपर प्रसन्नतो रहतीही हैं इससे प्रिय करने के लिये राजा को प्रेरित करती हैं १६ इसमें कुछ सन्देह न जानो कैकेयीजी बहुतही हर्षित होंगी क्योंकि वे सदा हमारा प्रियही किया चाहती हैं फिर अपने शील व बोली वाणीसे महाराज को भी सदा प्रसन्न रखती हैं हमारे अभिषेक के लिये अवश्य कहती होंगी व इसी के लिये बुलवाया है १७ बड़े भाग्यकी बातहै कि अपनी परमप्रिया रानीके साथ बैठे हुये महाराज ने हमारे अर्थ काम करनेवाले सुमन्त्रजी को यहां भेजा १८ क्योंकि जिस प्रकारकी समाज राजाके निकट हमारा प्यार करने वाली थी वैसाही दूतभी आया जोसदा हमारा प्रियही चाहताहै इससे निश्चय है कि महाराज हमको युवराजा बनावेंगे १९ इसलिये हमतो अब बहुत शीघ्र राजा के निकट जातेहैं तुम अपनी सखियों के साथ सुख पूर्व्वक यहां बिराजो २० जब इस रीतिसे रामचन्द्रजी ने सीता जीका आदर किया तो जानकीजी माङ्गलिक पदार्थ हाथ में ले द्वार परतक रामचन्द्रके पीछे पीछे चली आईं २१ व कहनेलगीं कि वसिष्ठादि ऋषियों से सेवित राज्य अभी राजा युवराज पदवी के आदर से आपको दिया चाहते हैं फिर राजसूयाभिषेक करेंगे अर्थात् पूरे राज्य का अधिकारी बनावेंगे जैसे कि इन्द्र को ब्रह्माजी ने किया है २२ अहोभाग्य है कि हम आप को युवराज पदवी पाने के लिये व्रत में टिके मृगचर्म्म धारण किये परम पवित्र मूर्त्ति मृगशृङ्ग हाथ मेंलिये देखेंगी व सेवाकरेंगी २३

चौ० ॥ पूर्व्व दिशा महँतुम्हहिंपुरन्दर । यम दक्षिण दिशि पालहिं सुन्दर ॥ पश्चिमबरुणरु उतरकुबेरू । पालनकरतकरहिंजनिदेरू २४ सीतहिसुवचन कहिसमुझाई ॥ करिमङ्गलाचारु रघुराई । सहित सुमन्त्र चलेनृपपाहीं ॥ निज मन्दिर तजिदै चित ताहीं २ । २५ ॥

जैसे पर्व्वत की कन्दरामें सोताहुआ सिंह निकल इधर उधर देखता निर्भ्भय चलता उसीतरह श्रीराजकुमार परमोदार रामचंद्र निज मन्दिर से निकले देखा तो हाथजोड़े उनके छोटे भाई लक्ष्मणजी खड़े हैं २६ इसके पीछे जब बीचवाले फाटक पै पहुंचे तो वहां सबयाचक लोगखड़े हैं इनके सिवाय अन्य लक्षों मनुष्य रामाभिषेक के दर्शनाभिलाषी खड़े हैं उन सबकी ओरनिहार सबको प्रसन्नकिया २७ उसीस्थानपै व्याघ्रचर्म्म का ओहार पड़ाहुआ चांदी का रथ घोड़े नहा खड़ाथा उसपै श्री रघुनन्दन सवारहुये २८ उस रथका मेघके गर्ज्जने के समान तो शब्द था व कहीं कोई उसे रोंकनहीं सकता था नानाप्रकार के मणि व सुवर्ण से सब कहीं जड़ा जड़ाया था व मानो अपने तेज के सूर्य्य के समान सब की आखें मूंदे देताथा २९ जो घोड़े उसमें जुते थे वे हथिनी के बच्चेसे कुछेकही कम थे ऐसे रथपै रामचंद्र जी सवार हुये जैसे कि घोड़े नहेहुयेसुन्दर रथपै इन्द्रजी चढ़तेहैं उन की शोभा होतीहै ३० रामचंद्रजी रथारूढ़ हो मारे शोभा के देदीप्यमान हो अति वेगचले जैसे किआकाश में शब्दायमान मेघचलै वैसेही रथका शब्द होता जाताथा ३१ जिस समय उस मन्दिर से श्रीराजकुमार रामचंद्र चले थे वैसी शोभा हुई थी जैसी कि बादरके बीचसे निकलने पर चंद्रमा की होतीहै व उन्हींके पीछे उसीरथपै चित्र विचित्र चमर हाथ में लिये उन के भाई लक्ष्मणजी खड़ेहुये चले जाते थे व अपने भाई की रक्षा करते जातेथे ३२ श्रीरामभद्र की यात्रा के समय जो सबलोग देखने आये थे मारे आनन्दके उनकाबड़ा भारी कोलाहल शब्दहुआ ३३ जो घोड़े रघुनन्दन के रथ में जुतेथे उनको छोड़ और सहस्त्रों लक्षों घोड़ेहाथी पर्व्वताकार सजेसजाये रामचंद्र जीके पीछेचले ३४ व बहुतसे शूरवीरमनुष्य ढालतरवार धनुर्बाण लिये सबतरह से तैयार रामचन्द्र का यश कहते हुये चन्दन अगर आदि सुगन्धित वस्तु अङ्गोंमें लगायेहुये चले ३५ जब ऐसीहीधूमधामकी सवारी श्रीरामकुमारकी

चली तो चारोंओर से बाजाबजते जाते वन्दीगण पुकार स्तुति करतेजाते शूरवीर लोग सिंह के समान नादकरते जाते सकल सवारी सुन सुन मार्ग्ग में प्रसन्न होतीं जातीथीं ३६ व अपने अपने धवरहरों और कोठोंके झरोखों से झाँकती हुई सब उत्तम उत्तम वस्त्र भूषण धारण की हुई स्त्रियाँ पुष्पों की वर्षा श्रीरामचंद्रजी के ऊपर करती जातीथीं ३७ व सब सहस्त्रोंस्त्रियाँ कि जिनके सर्व्वाङ्ग सुन्दरहीथे कोई कोई कोठोंपै चढ़ी कोई कोई अपने अपने दरवाजों से झांकती हुई रामचंद्र की प्रसन्नता केलिये अतिमनोहर वचनों से स्तुति करती थीं ३८ व यहकहती थीं कि हे अपनीमाता के आनन्द देनेहारे रघुनन्दन अपने पिता के दिये हुये राजसिंहासन पै बैठेहुये तुमको देख निश्चयहै कितुम्हारी माता कौशल्याजी परमानन्दित होंगी ३९ व उससमय रामचंद्र को देख सब सुभगा स्त्रियों से रामचंद्र की प्राणप्रिया जानकी महारानी को सकल स्त्रियां श्रेष्ठ मानती थीं ४० व परस्पर कहतीथीं कि देखो पूर्व्व जन्म में श्री सीतादेवीने बड़ी भारी तपस्या की है जैसे रोहिणी ने चंद्रमा को पतिपाया वैसे ये रामचन्द्र के सँय्योग को प्राप्तहुई ४१ धवरहर व कोठों पर चढ़ी हुई स्त्रियों के ऐसे वचन सुनते हुये श्री रामभद्र राजमार्ग्ग में प्रसन्न होते हुये चलेजाते थे ४२ स्त्रियों कसिवाय ठौरठौर राजमार्ग्गमें सवारी देखने केलिये जो पुरुषलोग आयेथे उनकी भी कथा व प्यारी वाणी अपने अधिकारके विषय में सुनते हुलसतेहुये जातेथे ४३ व यहभी सबलोग कहतेथे कि निश्चय बात है ये रामचंद्र अपने पिताकी दीहुई बड़ी भारी राजलक्ष्मी आजपावेंगे और परमानन्दित हो अपने मन्दिर कोआवेंगे व हम सब लोगों के सबकाम बढ़ती को पहुचेंगे क्योंकि जिसके ऐसे राजा होंगे ४४ ॥

हरिगीतिका ॥

अतिबेग यह सब राज्यपैहहिँ राम नाहिँ संदेहहै ।
सब लाभ होइहि लोककर इन राज्यमें सुसनेहहै ॥
नहिँतनिकदुखदारिद्र ब्यापिहि काहुपूरुषकोसुनो ।
यहकहत बातविचारि सबजनतुमहुँ अपने जीगुनो १ । ४५
अति शब्द कारक तुरगनागरु सूतमागध आदिहू ।
यशवंशगावत चलत आगे चलत शुभगति वादिहू ॥

रघुराज सहित समाज राजत धनपसम जाहींचले ।
यह देखिसब नरनारि प्रमुदित होतयुतमुदही भले २ । ४६
वरदन्ति दन्तिनि रथ तुरङ्ग समूह पूरित है सही ।
जन निकर पूरित सकल चत्वर रत्न राशिहु तैसही॥
बहुपुण्य सञ्चय सहित रघुवर विमल महपथ देख्यऊ ।
अतिमुदित सहित समाजजातहिराजमारग पेख्यऊ ॥३।७४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषोडशस्सर्गः ॥ १६ ॥

अपने सुहृद्जनों के साथ प्रसन्न चित्त रथ पै सवार परमोदार राज-कुमार श्रीराम चारो ओरसे गुग्गुलकी धूपसे धूपित ध्वजा पताकादि से शोभित १ नानाप्रकार के जनों से भरापुरा आकाश के समान मन्दिरों से शोभायमान ठौर ठौर धनकी राशियों से पूर्ण नगर देखते हुये गुग्गु-लादि सुगन्धित वस्तुओं के धूंपसे धूपित राजमार्ग्ग में चले २ जिस राजमार्ग्ग के किनारे किनारे चन्दन अगर तगर गुग्गुलादि सुगन्धित वस्तुओं के ढेर लगे थे रेशमी ऊनी आदि उत्तम उत्तम वस्त्रों के समूह दूकानों पै धरे थे ३ बिनाबेधी मोतियों के व स्फटिक मणिके ढेर के ढेरों से शोभायमान राजमार्ग्ग ४ कि जिस के दोनों ओर दूकानों पै नानाप्रकार के फल फूल मूल दलादि भोजन की वस्तु धरी थीं ऐसे राजपथ को देखा मानो स्वर्ग्ग में देवमार्ग्ग है ५ जो राजमार्ग्ग दधि अक्षत खीर धान के लावा अगर तगर चन्दनादि की धूपसे धूपित नाना प्रकार के माङ्गलिक पदार्त्थों से सदा भरा पुरा था ६ ऐसे मार्ग्ग में इष्ट मित्र व वृद्धजनों के नानाप्रकार के आशीर्व्वाद सुनते हुये यथा योग्य उन आशीर्व्वाद देनेवाले लोगों से बोलते बतलाते उनके कुशल प्रश्न करते कराते चले जाते ७ तहां कोई वृद्धलोग ऐसाकह आशीर्व्वाद देते थे कि हे राम जैसे तुम्हारे पिता पितामह प्रपितामहादिकों ने आचरण कर हमलोगों का पालन कियाहै वैसेही आज अपने पिता के हाथ से राज्य पाय सबका पालन करो तो इस मार्ग्ग में चलने की शोभाहै ८ इन वृद्धों की ऐसी वाणी सुन और लोग बोले कि इस में कुछ सन्देह नहीं कि जैसे हमलोग इनके पिता पितामहादिकों के राज्य में पालेगये

हैं उससे अधिक सुख रामचन्द्र के राज्य में पावेंगे ६ भाई हमलोगों को नाना प्रकार के भोग विलास करने व अन्तावस्था में मोक्षपद को पहुँचने से कुछ भी सुख नहीं जैसे कि आज राज्य पायेहुये रामचन्द्रजीको राजमार्ग्ग में जातेहुये देखनेसे होगा १० क्योंकि रामचन्द्रजी कोराज्याभिषेक होनेसे प्रियतर हमलोगोंको कोईभी संसार के वा परलोकके पदार्त्थ नहींहैं ११ इन्हें आदि बहुतसी अपने विषय की सुहृदों की कही हुई कथा सुनते हुये श्रीराम राजमार्ग्ग में चले जाते कुछ उनको सुनकर प्रसन्नचित्त नहीं होते क्योंकि अपनी स्तुति सुनके प्रसन्न होना सज्जनों का काम नहीं इसलिये न प्रसन्नहीं होते न अप्रसन्नही किन्तु उदासीनता को प्राप्त चले जाते १२ जिनलोगों से दूरभी रामचन्द्र निकल जाते वे भी अपनेमन और नयनरामचन्द्रकी ओरसे खींच लेनेको समर्त्थ नहीं होते यह पुरुषों की दशाथी फिर स्त्रियों की दशा को कौन कहै उनके चित्त तो श्रीराजकुमार परमोदार रामभद्रही के सङ्ग चले जाते १३ क्योंन चलेजायँ जिसने संसार में आय रमणीय मूर्त्ति कमल दलाकार करुणा पूर्व्वक नयन किरीट कुण्डल केयूर कटकादि भूषित अपार सुशीलता सौन्दर्य्य माधुर्य्य गाम्भीर्य्यौदार्य्य भक्तवत्सल जलनिधि अशरणशरण श्रीरघुराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी को नहीं देखा व नहीं देखता व जिसको अपने देशमें कभी रामचन्द्रजी ने नहीं देखा वह सर्व्वलोक में निन्दित है व उसका आत्मा भी उसकी निन्दा करता है क्योंकि जो श्रीराम सबके प्रेरकहो मशकादि ब्रह्मा पर्य्यन्त सकलजीवों में अन्तर्य्यामी हो बसे हैं उनको नहीं देखता व अन्तर्य्यामी होकर भी जिसको राम अपना कर नहीं ग्रहण करते वह सकल लोक में निन्द्य है व उसका आत्मा भी उसकी निन्दा करता है इसलिये संसार में आय सुन्दर नरतनु पाय अति हर्षाय राम गुण गाय व उनमें ध्यान लगाय सबको भवसागर उतरना चाहिये १४ क्योंकि उनके अवतार के समय में भी उनकी प्रीति सब वर्णों के मनुष्यों में थी न कि केवल ब्राह्मण वा क्षत्रियोंहीं में हो क्योंकि वे धर्म्मात्मा समदर्शी थे इसीसे उनके सङ्ग सब वर्णोंके लड़के खेलतेथे व उनके अनुयायी रहते इससे वर्ण विवेककी कुछभी आवश्यकता नहीं जिस किसीका जन्म संसार में है उसे

अवश्य श्रीराम स्मरण करना चाहिये क्योंकि इसके बिना जन्महीं मिथ्या है १५ मार्ग्ग मेंजाते समय जहांजहां चौरहा देवालय अच्छे अच्छे वृक्ष सभाआदिके स्थान मिलतेथे उनसबको दहिनीओर छोड़तेहुये श्रीराज-कुमार जातेथे १६ जाते जाते कैलाश शिखर समान मेघाकार धवरहर युक्त पिता दशरथजीके मन्दिर में पहुँचे १७ जहां कि देव विमानाकार सहस्रों वर्द्धमानगृह बनेहैं जिनमें हीरा आदि रत्नोंकी झालरें लगीहैं १८ मानों पृथिवीमें दूसरा इन्द्रका मन्दिरहै ऐसेभवनमें अपनी शोभासेदीपित राजकुमार श्रीराम पहुँचे १९ तहां तीन फाटकोंतक तोरथपर सवारही च-लेगये जब चौथे फाटक पै पहुँचे तो रथ से उतर पैदल चले २० इस भांति दो फाटक औरनांघे वहां सब लोगोंको खड़ेकर आप अकेले जहां महाराज कैकेयी के निकटथे वहांगये २१ जब रामचन्द्र पिताके मन्दिर में पहुँच गये तो सब लोग परमानन्दित हुये और यही ठौरठौर परखने लगे कि कब राजकुमार श्रीराम वहांसे लौटतेहैं जैसेकि चन्द्रमा के उदय को समुद्र चाहाकरता है २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे सप्तदशस्सर्ग्गः ॥ १७ ॥

वहां पहुँच श्रीरामचन्द्रजीने देखातो अत्युत्तम आसनपै कैकेयीके सङ्ग महाराज दशरथ अति व्याकुलचित्त मुख सुखाये बैठेहैं १ जातेही अति नम्रहो प्रथम पिताजीके चरणोंमें प्रणामकिया तदनन्तर बड़ी सावधानी के साथ कैकेयीके चरणोंमें प्रणाम किया २ महाराज दशरथकी बाणी ऐसी रामचन्द्रको देख गदगदाआई कि केवल इतनातो कहा कि रामबस और कुछ न कहिसके न रामचन्द्रकी ओर देखहीसके ३ राजा का ऐसा अपूर्व्व भयानक रूप देख रामचन्द्रभी बहुत भयभीत हुये क्योंकि राजा के न बोलने व अच्छी तरह बिनादेखनेसे जाना कि कुछ हमारेही लिये राजा उदासीनहैं इसलिये यद्यपि रामचन्द्र महादुःखमेंभी कभी व्याकुल नहीं होतेथे यह उनकी स्वाभाविकी प्रकृति थी तथापि जैसे कोई सर्प्प के ऊपर पैर रखदेनेपर पीछे डरताहै वैसेही अपने हेतु व्याकुलता समझ भयभीत हुये ४ व बारबार राजा को निहारने लगे तो कोईभी इन्द्रिय उनकी प्रसन्न नथी मारेशोकके सन्तापसे सब शरीर दुर्व्वल होगयाथा

राजा ऊर्ध्व श्वास लेरहेथे मारेव्यथाके चित्त व्याकुल होरहाथा ५ जैसे बड़ीबड़ी लहरोंसेभी समुद्र क्षुभित नहीं होता परबिनाचन्द्रमाके क्षुभित होता है जैसे ग्रहण लगने पै सूर्य्य कम्पने लगते हैं जैसे झूंठ कहने से ऋषिलोग कांपने लगते हैं वैसेही राजा कांपते थे ६ पिता की यह दशा देख श्रीरामचन्द्र विचारने लगे कियेतो कभी ऐसे व्याकुल नहीं होते थे इनके शोकका क्याकारणहै यह विचारते विचारते रामचन्द्रभीपूर्णमासी समुद्रकेसमान संक्षुभित हुये ७ बिचारते विचारते रामचन्द्रजीने विचारा कि ऐसातो कभीनहीं होताथा आजही हमको आनन्दित नहींकरते सदा तो करतेथे ८ और कभीतो जोपिताजी कोपभी कियेहोतेथे तोहमको देख प्रसन्न चित्तहोजातेथे सोवही हमबनेहैं आजहमको देखनहीं जानते क्या बातहै बोलतेही नहीं ९ ऐसी चिन्तना अपन मनमें कर बहुत दुःखी हो बनाय मुख नीचेकर रामचन्द्रजी कैकेयीसे बोले १० कि कदाचित् बिना जाने हमसे कोई अपराधही होगयाहो जिससे हमारे पिताजी नहींबो-लते तोतुम हमारी ओरसे पिताजीको प्रसन्नकरो वहमको बतावो कियह अपराध तुमसे हुआ है क्योंकि हमने तो अपनी जानबूझ में कभी कोई अपराध नहींकिया ११ क्योंकि पिताजी जब कभी किसी कामके लिये अप्रसन्न चित्तभी रहतेथे तोभी हमारे ऊपर प्रसन्नहीं रहतेथे सोआज ऐसे उदासीन मुख अतिदुःखी होगयेहैं किप्रसन्न होनेको कौनकहै कुछ हमसे बोलतेही नहीं १२ देखोमनुष्यको सदासुखही रहना यह बातदु-र्लभहै पर पिताजीको नकभी शारीरकही कोई सन्ताप हुआ न मानसि-कही पर आज नहीं जानते क्याहै १३ क्या कोई अशुभ बार्त्ता तो परम प्रिय दर्शन भरत कुमारमें वा महापराक्रमी शत्रुघ्नजीमे वा तुमलोग हमारी मातोंमें नहींदेखा वा तुमनेतो कुछनहीं विचारा १४ जो कुछहो बहुतही शीघ्र हमसे बतावो क्योंकि हम बिना महाराजको सन्तुष्टकिये वा बिना पिताके वचन किये राजाके कोप करनेपर दोघड़ीभी अपना जीना नहीं चाहते १५ क्योंकि जिनपिता मातासे अपनी उत्पत्ति होतीहै मनुष्य उनप्रत्यक्ष देवताओंकी आज्ञाको कैसे न मानै १६ भला तुमने तो मारे अभिमानके कोई कठोर बात कोपसे नहींकही जिससेहमारे पिताका मर्म क्षुभित होगयाहै १७ सोयहबात हमतुमसे ठीकठीक पूंछते हैं हमसे कहो

किसकारण यह अपूर्व्व बिकार राजा में हुआ है १८ जब रामचन्द्र जीने कैकेयीसे ऐसाकहा तोवह महानिर्ल्लज्ज अपनेमन माना ढीठ वचन बोली १६ हेराम राजा कुछ भी कोप नहीं किये हैं मइनको कोई कष्ट है किन्तु इनके मनमें कोईबात आईहै वहतुम्हारे डरसे नहीं कहते २० क्योंकि तुमइनको परमप्रियहौ फिर तुमको इनसे अप्रिय नहींकहाजाता परन्तु जो इनसे हमने सुनाहै वह तुमको अवश्य करना चाहिये २१ इन तुम्हारे पिता राजाने पूर्व्वही हमारे ऊपर प्रसन्नहोकर वरदान दिया था सो अब पीछेकै ऐसा पछिताते हैं जैसे कोई प्राकृती मनुष्य पछिताताहै २२ देखिये बनाय अच्छीतरह से इन्होंने कहाथा कि तुमको वर देंगे पर अब जैसे कोई पानी बहजानेपर पुल निरर्त्थक बाँधता है उसी भांति येभी बाँधा चाहते हैं २३ देखो इस संसार की जड़ धर्म्महीहै सब पण्डित लोग जानते हैं तिससे राजाको चाहिये कि तुम्हारे लिये कोप कर सत्य न छोड़ें क्योंकि इसके समान कोई पापनहीं २४ यदि राजा तुमसे शुभ अशुभ चाहे जो कहें व तुम उसको करसको तो हम तुमसे कहैं जोकि राजा कहना चाहते हैं २५ यदि राजा का कहना तुममें वृथा न होजाय तो हम कहैं ये तो तुमसे न कहेंगे २६ जब कैकेयी ने ऐसा रामचन्द्र जीसे कहा तो श्रीरघुनन्दन बहुत दुःखित हो उससे बोले २७ हे देवि ऐसे धिक्कार के वचन हमसे तुम कहने के योग्य नहीं हौ हम राजा के वचन से और कामको कौनकहै अग्निमें भी गिरसक्ते हैं २८ व अति कराल हलाहल विषखाय सक्ते हैं समुद्र में डूबसक्ते हैं जब कि हमारे गुरूजी वा पिताजी की आज्ञा हो उसमें भी पिताकी आज्ञा से तो विशेषकर ऐसाही करें चाहै जो हो २६ तिससे जो राजाको अभीष्ट है वह वचन हमसे कहौ हम करेंगे क्योंकि जिस बातकी हम प्रतिज्ञा करतेहैं फिर उससे पलटते नहीं चाहें जो हो ३० जब जाना कि सत्यवादी रामचन्द्र अति कोमल वचन बोलरहेहैं तो उनमें अति दारुण वचन कैकेयी बोली ३१ हे राम बहुत दिनोंकी बातहै जब देवासुर संग्राम था तो तुम्हारे पिताके घाव लगेथे हमने उनकी रक्षा की थी तो उन्होंने हमें दो वर दियेथे ३२ उनमें से एक वरसे तो हमने भरत को राजतिलक माँगा व दूसरे से इसीसमय तुमको दण्डकनाम वनमें चलेजाना ३३ सो हे पुरुष-

श्रेष्ठ जो तुम अपने पिता को व अपना को भी सत्यप्रतिज्ञ किया चाहते होतो हमारे वचन सुनो ३४ अपने पिताकी आज्ञा का प्रतिपालनकरो जैसा उन्होंने तुम्हारेलिये विचारा है उसको पूराकरो चौदह वर्षतक जाय अभीसे वनबास करो ३५ व जो तुम्हारे अभिषेक के निमित्त यह सब सामग्री एकट्ठा हुई है उससे भरत का राज्याभिषेक कियाजाय ३६ तुम इस अभिषेक को छोड़ चौदह वर्ष तक दण्डकारण्य जाय वासकरो वहां जटा व चीर आदि जो तपस्वियों को धारण करना चाहिये धारण किये रहना ३७ व भरतजी सहित घोड़ा हाथी रथ सेना खजाना आदि अ-योध्यापुरी का राज्य करें ३८ बस इसी हेतु से मारे करुणा के तुम्हारे पिता तुम से ऐसे वचन नहीं कह सक्ते न मारे शोक के तुम्हारे सामने देखही सक्ते हैं ३९ हे रघुनन्दन यह राजा का वचन पूरा करो व महा सत्यवचन से उनको तारो ४० ॥

हरिगीतिका ॥

इमि अति कठोर कराल बाणी कहत त्यहि सुनि रामही ।
नहि तनिक ब्याप्यहु शोक नहिं मनब्यथित भो गुण धामही ॥
पर नृपति सुनिकै तनय दुखसों अति दुखित भे शोचहीं ।
निज चित्तसों कैकयसुता की समुझि मति अति पोचहीं ॥ १ । ४१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टादशस्सर्गः ॥ १८ ॥

कैकेयीके ऐसे महा कठोर वचन सुन श्रीरामचन्द्रजी ने कुछ भी शोच न किया क्योंकि वे महा पुराण पुरुष थे संसार के स्वामी हो इतने छोटे राज्य के न मिलने से कौन विषाद बस कुछनहीं कैकेयी से बोले १ कि बहुत अच्छा भरत राजाहों हम जटा चीर धारण किये यहां से राजाके वचन का प्रतिपालन करते हुये वनबास करने जाते हैं २ परन्तु यह बात जानने की इच्छा अब भी बनी है कि हमारे स्वभाव को पिता जी अच्छी तरह जानते भी हैं कि जो कहेंगे ये करेंगे फिर किसलिये जैसे पूर्व्वही आनन्द के साथ हमसे बोलते थे अब नहीं बोलते ३ हे देवि तुम इस बातकी कुछ भी न शङ्का करो वरन प्रसन्न होवो हम तुम्हारे आगे कहे देते हैं कि जटा चीर धारण किये वनको जायँगे ४ भला

परम हितकारी महाकृतज्ञ अपने पिता गुरू की आज्ञा पाय निश्शङ्क हो इतना प्रिय क्योंन करेंगे कौन बड़ी बात है ५ हाँ यह हमारे मन में एक दुःख अवश्यहै जो राजा ने अपने मुख से हम से न कहा कि हम भरत को राजा करेंगे इस में तो हमको भी बड़ी प्रसन्नता थी ६ क्योंकि यदि हमसे भरत कहते तो सीता राज्य परम प्रियप्राण सब धन बड़े हर्षके साथ उनको देदेते व अब कहे तो देदेयँ फिर इतने राज्य के लिये क्यों सङ्कोच किया ७ फिर जो भरतही के कहने से देनेको तैयार थे तो पिताजी के व माताजी तुम्हारे कहने से देदेने में कौन सी कठिनता है क्योंकि माता पिता की आज्ञा से तो ऐसा कोई संसार में काम नहीं जो पुत्र न करसकै ८ तिससे अति लज्जित नीचे मुख किये रोदन करतेहुये हमारे पिताजी को समझा दीजिये क्योंकि ऐसा करते हैं ९ इसी समय आज्ञा दे कि अति शीघ्र चलनेवाले घोड़ों पर सवार रहो दूत लोग भरत जी को ननिऔरे से बुलाने को जायँ १० व हम इसी समय पिता माताके वचन से चौदह वर्ष दण्डकारण्य में बसने के लिये जाते हैं कुछभी बिलम्ब नहीं ११ रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन कैकेयी अति हर्षित हुई जाना कि अवश्य राम वन को चले जायँगे इस में कुछ भी सन्देह नहीं इसलिये रामचन्द्र की यात्रा में शीघ्रता कराने लगी १२ व कहने कि बहुत अच्छा अति शीघ्र गामी तुरङ्गों पै सवार हो दूत लोग भरतको मामाके यहाँसे बुलाने को भेजे जातेहैं १३ पर हे राम तुम अब कह चुके कि हम वन को जाते हैं इससे बिलम्ब करना हम अच्छा नहीं समझती अतिही शीघ्र तुमको वन जाना योग्य है यहाँसे जाइ ये १४ क्योंकि राजा जो बहुत लज्जित हो नीचे को मुख किये हैं उसका यही हेतु है जो तुम जानेमें बिलम्ब करते हो और कुछ भी कारण नहीं है १५ जबतक तुम इस नगर से वन को नहीं जाते तबतक तुम्हारे पिता न स्नान करेंगे न भोजन करेंगे १६ कैकेयी ने जब ऐसे वचन रामचन्द्र जी से कहे महाराज दशरथ ने सुन कहा हाय धिक्कार है मुझको बड़े कष्टकी बातहै इतना कह शोक के समुद्र में डूब मूर्च्छित हो सुवर्ण से भूषित जो पलँग वहां शयन के लिये था उसी पै गिरपरे व ऊधी सासें लेनेलगे १७ तब रामचन्द्रजीने राजा

को उठाया उसी बीच में कैकेयी ने फिर कुछ कहा कि जैसे चाबुक लगने पै अच्छा घोड़ा तरफराय चलता उसी भांति वनको जाने केलिये अति शीघ्रता करने लगे १८ व उस दुष्टा कैकेयी के महा दारुण वचन सुन बड़ी प्रसन्नताके साथ उससेबोले १६ हेदेवि हमधनके लोभ से इस लोक में बसना नहीं चाहते हमकोतुम ऋषियों के समान समझो जोकि सदा धर्म्मही करने पै उतारू रहते हैं २० इतना कह राजा से बोले कि परम पूज्य आप का जो और कुछ प्रिय करना हो सो भी हम चाहे प्राण न रहें करसक्ते हैं कहिये क्या करें वनबास तो कुछकठिनही नहीं २१ क्योंकिसंसारमें इससे बढ़कर कोई धर्म्म नहींजैसा कि पिता की सेवा करना व उसके वचनों का प्रतिपालन करनाहै २२ यद्यपि आपने अपने मुखसे अभी कुछ नहीं कहा तथापि कैकेयी कहतीहैं इनके वचन से हम चौदह वर्ष तक वन में बसेंगे जैसे पिता के वचन वैसेही माता के २३ पिता से ऐसा कह माता से कहने लगे हे कैकेयी क्या तुम हमारा एक भी गुण नहीं जानती थी जो इतनी बात केलिये राजा से कहा हमतो तुम को माता पिता सब से अधिक समझते हैं तुम्हीं ने क्यों न कहा क्या तुम्हारा कहा हम नकरते २४ अब हमारे जाने में कुछ भी बिलम्ब नहीं हां जब तक माता कौशल्या जी से भी नहीं पूंछ लेते और सीता को नहीं समझा देते तभी तक बिलम्ब है नहीं तो तैयारही बैठे हैं २५ हां तुम भी ऐसी उपाय करना कि जिस में भरत राज्य करें व पिता की सेवा भी अच्छी तरह करते रहें क्योंकि यह सनातन धर्म्म है २६ रामचन्द्र के ऐसे वचन सुन राजा दशरथ महा दुःखित हो मारे शोक के आंशु न बन्द कर सके बड़े जोर से रोने लगे २७ रामचन्द्रजी उसी दशा में राजा के चरणारविन्दों में प्रणाम कर वैसी दुष्टाकैकेयी के भी प्रणाम कर वहां से बहिराने २८ प्रणाम करने के पीछे पिता व माता कैकेयी की प्रदक्षिणा भी कर बाहर आय अपने इष्ट मित्रों को देखा २६ रामचन्द्रजी के पीछे पीछे लक्ष्मणजी भी आँशुआते हुये महा क्रोध किये चले ३० आगे देखा तो जिस पात्र में अब अभिषेक की सामग्री धरी थी धरा है उसकी भी बिदाऊ प्रदक्षिणा की व वन जाने के लिये जल्दी के साथ

चले पर उस पात्र को बारू देखते जाते थे ३१ यद्यपि राज्यनाश होने से चाहिये था कि रामचन्द्रजी की शोभा कम होजाती तथापि वे तो सर्व्वलोक में सुन्दर व सदा प्रसन्नचित्त थे इसलिये कुछभी उनकी शोभा न्यून न हुई क्योंकि चित्तमें राज्य न पानेसे कुछ उदासीनता तोहुई ही न थी जैसेकि चन्द्रक्षय शोभा को नहीं खींचता ३२ राज्यलक्ष्मी को त्यागि वनको जाते हुये रामचन्द्रजीका चित कुछभी न उदासीन हुआ जैसे कि सम सुख दुःख माननेवाले ऋषि लोगोंका चित्त न सुखमें प्रसन्न ही हो न दुःखमें दुःखित ही हो ३३ राज्यतिलक होने पै जो चमरछत्र मिलनेवाले थे उन्हें परित्याग कर सब अपने लोगोंको विदा कर रथ पुरवासी आदि सबको छोड़ ३४ मनमें बहुत प्रसन्न चित्त कि अब वनमें जाय राक्षसों को मार ऋषियों व देवों की रक्षा करेंगे ऊपरी मनसे न बहुत प्रसन्न न दुःखित सब इन्द्रिय अपने वशमें किये वन जाते हैं यह अप्रिय वचन सुनाने के लिये अपनी माता के मन्दिर को गये ३५ यद्यपि रामचन्द्र अपनी जान सबसे विदाहोलिये तथापि अति श्रीमान् सत्यवादी रामचन्द्र के आकार से किसीने लक्षित न किया कि ये हम लोगोंसे विदाहो वनको जाते हैं ३६ रामचन्द्रजीका स्वभावही था कि सदा प्रसन्नचित्तही रहते थे इससे उन्होंने ऐसे दुःख में भी हर्ष को न छोड़ा जैसे कि शरद ऋतुका चन्द्रमा अपने किरणों को नहीं छोड़ता ३७ इसलिये गलीमें जो लोग खड़े थे अपनी मधुरवाणी से सब का यथोचित मानकरते हुये माताके समीप पहुँचे ३८ उन्हींके पीछेही पीछे उनके छोटेभाई लक्ष्मणजी भी जोकि गुणों से उन्हींके समान थे अपने हृदयमें अति दुःखित पहुँचे ३९ ॥

हरिगीतिका ॥

अभिषेक नाश विपत्तिहू लषि मुदित मन जननी ग्रहम् ।
रघुनाथ जाय अनाथ कीन्ह्यउ नहिं उदास भया वहम् ॥
मनमाहिं शोचत इमिरहे ज्यहि भांति नृप सब मातहू ।
ममशोक वशनहिं प्राणत्यागहिं करहुसो वन जातहू ॥ १ । ४०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकोनविंशस्सर्गः ॥ १९ ॥

जब रामचन्द्र हाथ जोड़े कौशल्याजी के मन्दिर को चले व सर्व्वत्र यह खबर होगई कि अब ये राज्यछोड़ वनको जाते हैं इस समाचार के सुनतेही व रामचन्द्रजीको देखतेही महलकी सब स्त्रियां जोकि दशरथ जीके बहुतसी थीं परम दुःखितहो परस्पर रोय रोय कहनेलगीं १ कि जो रामचन्द्र बिना पिताके कहनेपर भी अन्य सबलोगों व महल की सब मालिकिनी व सेवकियों के अभिलाष यथोचित पूर्णकिया करते थे वे आज वनको जायँगे २ फिर देखो जो वर्त्ताव अपनी माता कौशल्या के साथ वर्त्तते थे वही हमलोगोंके साथ जन्म सेले आजतक वर्त्तते रहे ३ फिरजो रामचन्द्र अन्य किसीकी दुरुक्ति सुनकेभी क्रोधनहीं करतेथेव आप ऐसे कर्म्महीं नहीं करते जिससे कोई क्रोधकरै बरन जो कोई कभी किसी कारण क्रोधभी करता तो उसको समझाय बुझाय प्रसन्न करते थे हाय ऐसे रामचन्द्र वनको जायंगे ४ अरे राजा बड़े निर्बुद्धि हैं जोकि सब प्राणियोंके उपकारी व परमहित रामचन्द्रको त्यागते हैंइसमें लोकभरेका नाश करते हैं ५ ऐसी ऐसी बातें कह कैकेयी को छोड़ अन्य सब रानियां बिना बछड़े की गायके समान रोय रोय राजाकी निन्दा करने लगीं ६ यह जो चारों ओर से जनाने में रोवा पीटी हुई राजाने भी सुनी सुनतेही और पुत्रके शोक से सन्तपित हो आसन पै गिरपड़े मानों उसीमें लीनहीं होगये ७ व रामचन्द्र भी सब लोगोंको अपनेलिये दुःखितजान कुछऊधी श्वास लेतेहुये अपने भाई लक्ष्मण के साथ अपनी माता के मन्दिर को गये ८ जाते जाते पहिले फाटक पै एक अति वृद्ध द्वारपाल को देखा उसके सिवाय और भी बहुत रक्षक वहां थे ९ रामचन्द्र जीको देखतेही सबके सबउठ खड़ेहुये व कहनेलगे कि रामचन्द्रजी जयहोजयहोबढ़ती हो १० इस रीति से पहिले फाटक को नांघ जब दूसरे पै पहुँचे तो वहां अति वृद्ध राजा के सत्कार कियेहुये ब्राह्मण लोग बैठेथे ११ उन सबके प्रणाम कर आगे बढ़ तीसरे फाटक पै देखा तो बहुतसी स्त्रियां बालक व वृद्ध पुरुष द्वारकी रक्षा कर रहेथे १२ उन स्त्रियोंने भी रामचन्द्रकी बढ़ती मनाय हर्षितहो तुरन्त जाय रामचन्द्रकी मातासे अति प्रिय रामचन्द्रका आगमन सुनाया १३ कौशल्याजी भी रात्रिको नियम से रहीथीं प्रभात होतेही पुत्रके हितके लिये श्रीविष्णु भगवान् की पूजा कर रहीथीं १४

व सब रेशमी वस्त्र धारण किये परमानन्दित नित्य के ब्रत में लगीहुई मन्त्र पढ़ पढ़ अग्निमें आहुति देरहीथीं १५ वहां पैठतेही महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजीने माताको होम कराती हुई देखा १६ व यह भी देखाकि देवताओं के काम के लिये दधि घृत अक्षत लड्डू खीर आदि पदार्थ धरेहैं १७ व धानके लावा माला जाउरिखिँचरी ईंधन जलसे भरेकलश भी धरे हैं १८ जितने वस्त्र उससमय माता को पहिने देखा सब श्वेत रेशम के थे बहुत दिनों से रामचन्द्रजी के लिये ब्रत कर रहीथीं इसलिये कुछदुर्व्वल होगईथींजलसे उससमय देवताओंका तर्प्पणभीकरतीथीं १६ कौशल्या जीने भी बहुत देर के पीछे पुत्रको देखा देखतेही अति प्रसन्नहो जल्दी के साथ सामने चलीं जैसे बछड़े को देख घोड़ी हिनहिनाय प्रेम से दौड़ती है २० पहुँचतेही रामचन्द्र को दोनों हाथों पकड़ माता ने हृदय में लगाय शिर सूंघ लिया २१ व परम प्रिय पुत्र से अपनी पुत्र वत्सलता से परम हित व प्रिय वचन बोलीं २२ हे पुत्र ईश्वर करै परम धर्म्म शील महात्मा वृद्धराजर्षियों के समान आयुष कीर्त्ति धर्म्म इस कुलके उचित पावो २३ वहे राघव सत्यप्रतिज्ञ अपनेपिता राजा कोदेखो वे धर्म्मात्मा आज तुमको युवराज पदवी देंगे २४ यहकह माताने आसन दिया व कहा कि कुछ भोजन करो रामचन्द्र जी तो वन जाने के लिये विदाहोने आयेथे २५ उनको भोजन करनेका अवकाश कहांथा पर एकतो स्वभावही से नम्रथे दूसरे वन जाने के लिये पूंछना था इस गौरव से और भी नम्रहो हाथजोड़ मातासे बोले २६ हे मातः तुमनहीं जानतीहौ एक बड़ी भय प्राप्त हुईहै जिससे तुमको व जानकी को व लक्ष्मण को बड़ा दुःख होगा २७ वह यह है कि हम दण्डकारण्य को जायँगे इस आसनसे क्याहै हमारातो अब कुशासनहींपर बैठनेका समय आयाहै २८ क्योंकि यहांके रसोईं वरदारों के बनाये हुये नानाप्रकार के व्यंजन व मांसादि सुन्दर भोजन छोड़ मधुकन्द मूल फलाहारादि करतेहुये चौदह वर्षतक निर्ज्जन वनमें रहना पड़ेगा २६ महाराज भरत को राजगद्दी देंगे व हमको तपस्वी का वेष बनाय वनवास देते हैं ३० इसलिये वनके कन्द मूल फलादि भोजन करतेहुयेचौदहवर्ष निर्ज्जन वनमें बसेंगे ३१ रामचन्द्रके ऐसे वचन सुन वनमें कुल्हारीसे काटीहुई साँखू की लाठीकेसमान

माता एकाएकी भूमि में गिरपड़ी मानों स्वर्ग से पुण्यावसानमें गिरीहुई किन्नरीहैं ३२ रामचन्द्रजी ने केरा के खम्भा के समान भूमिमें पड़ी इतने दुःखके सहने के अयोग्य माता को देख जानाकि मूर्च्छित होगई हैं उठाय बैठाया ३३ व जैसे रथादि में नहीहुई घोड़ी छोरने पर थकामिटानेके लिये लोटपेट उठती है उसीके समान देहमें धूर लगगईथी अपने हाथों से पोंछा ३४ इतने में जब मूर्च्छा जागी रामचन्द्र को अपने पास बैठे देख सकल सुखके योग्य असुखकेअयोग्य कौशल्याजी लक्ष्मणके सुनतेसुनते बोलीं ३५ अय राघव पुत्रयदितुम हमको दुःख देनेके लियेउत्पन्नन होते हम बिना पुत्रहीकी रहतीतो ऐसा दुखःकभीहमेंन होता३६ क्योंकि बाँझ स्त्रीको केवल एकयही शोकहोताहै कि हमारे सन्तान नहींहै अन्यकुछ भी शोक नहीं होता ३७ हे राम हमने सुभगा स्त्रियोंको जोकि पतिको परम प्रियहैं उन्हें जो विशेष भूषण वस्त्रादि पाने आदि के सुख हैं वेभी कैकेयी के कारण नहींभोगे क्योंकि राजा उन्हींके वशमेंथे यही शोचा था कि कदाचित् पुत्रहोगा तो उसके होनेही का सुखदेखेंगी इसीसे जीती रहीं नहींतो तुम्हारे होनेके प्रथमहीं प्राणत्याग करतीं ३८ सो हमनेसब रानियों में बड़ी होकर भी अपना से छोटी सौतियोंके करू नानाप्रकार के टेढ़े मेढ़े वचन सुने जिनसे छाती फटीजाती थी ३९ स्त्रियों को सौतिया डाह के समान और कोईदुःख नहींहोता उसमेंभी हमने जैसासहा जिसका पारही नहीं था ऐसा विलाप कौनसहैगी ४० सोतुम्हारे होने पर भी आज तक हमारा वैसाही निरादर तुम्हारे सामने होता रहा अयेप्यारे जो तुम वनको चले जावोगे तो निश्चय हमारा मरणहीं होजायगा कुछभी अन्तर न पड़ेगा ४१ क्योंकि मैं पतिकी दृष्टिमें अत्यन्त ओछीहूं इसीसे कैकेयी मुझे अपनी दासीके समान वा उससे भी नीची समझती है ४२ देखो अब तुम्हारे यहां होनेपर भी जो कोई इष्टमित्र हमारी सेवा करता है वा हमसे बोलता बतलाता है वह जिस समय कैकेयी के पुत्र को देखता है बिनाउसको देख बुलकार लिये कैकेयी के डरसे हमसे नहीं बोलता इससे हे पुत्र भला नित्यही क्रोधकेसाथ अति कठोर वचन बोलनेवाला कैकेयीका मुख हमऐसी दुर्गति को प्राप्तकैसे देख सकेंगी ४४ देखो तुम्हारे यज्ञोपवीत के समय से भीसत्रहवर्षबीते

नहीं तो जन्मसे तो पच्चीस वर्ष बीतचुके हैं हमयही शोचती थीं कि जब हमारे पुत्रको युवराज पदवी मिलेगी तबतौ हमारे सबदुःख मिटेंगे सो पुत्र तुम वनको चले हमको फिरवही कैकेयीके दारुण वचन सहने परें-गे ४५ सो अबतक तो तुम्हारे रहने से प्रसन्नचित्त रहती थीं शरीर में बलभी था सौतियोंके वचन सहभी लेतीथीं अब तुम्हारे जानेपै अति दुर्व्वल शरीर होजानेके हेतु न सहाजायगा मरण परैगा ४६ सोपूर्ण चन्द्र समान मुखारविन्द तुम्हारा बिनादेखे हम बेचारी कैसे ऐसीदीनों के समान जीवेंगी ४७ हाय हमने नाना प्रकार के उपवास व योगोंसे तुमको ब्यर्त्थही उत्पन्न किया जो तुमहम दुःखिनीको छोड़ वनको जा-तेहौ तुम्हारे बढ़ानेका हमने कुछभी फल न पाया ४८ हाय तुम्हाराभी वियोग सुनके जो हमारी छाती न फटी तोअपने हृदयको बहुतही पोढ़ा मानती हैं जैसेकि वर्ष कालमें बड़ीनदीका पेट नयेजलसे भरने परभी नहीं फटता ४९ हाय हमारीही मौतनहीं न हमींको यमपुरी में ठौरहै नहींतो यमराज जबरदस्ती मारडालते जैसे रोती हुई मृगीको सिंह ज-बरदस्ती मारताहै यदि ऐसाहोता तो इसविपत्तिको काहेको देखती५० निश्चय यह हमारी छाती लोहेकी है जो ऐसेदुःख में भी नहीं फटती हाय पृथिवी भी नहींफटती कि उसमें पैठजाती ऐसेभी जो दुःखमें देह बनीहै तो निश्चय होताहै कि बिना समय आये किसी का मरण नहीं होसक्ता नहींतो इससे अधिक और दुःख कब परैगा ५१ इस दुःखसेभी बड़ा दुःख यहहै जोकि हमारे कियेहुये व्रत दान सँय्यम नियम तपस्या सब निष्फल होगये जोकि पुत्रके लिये कियेगये थे जैसे कि ऊसर में वीजबोने पर नहींजमता ५२ जो कोई बड़ेदुःखके भारसे अकाल में मृत्युपाता होताातो बिना तुम्हारे मैं अभी यमपुरी को चलीजाती जैसे बिना बछड़ेके गाय रम्भाय रम्भाय मरजाती है ५३ फिर जो ऐसा-हीहै कि अकालमें मरणहोताही नहीं तो हे चन्द्रसमान मुख रघुनन्दन यहांरह वृथाजीनेसे क्याहै मैंभी तुम्हारे सङ्ग वनको चलीचलूंगी जैसे मारेस्नेहके गाय अपने बछड़े को पिछवाये जातीहै ५४ ॥

हरिगीतिका॥

अतिदुःखनहिँ सहिसकी मातासुलहिलषि वनजातही ।

मनमाहिँ समुझी धर्म्मफांसी बँध्यहु सुतपितु बातही ॥
बहुभांति करन विलाप लागी अति अभागी जानिकै ।
जिमि किन्नरी भुविआय रोवत पुण्यक्षय निजमानिकै ॥ १ । ५५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेविंशस्सर्गः ॥ २० ॥

रामचन्द्रकी माता कौशल्याजीको ऐसा विलाप करती देखअतिदुःखी हो लक्ष्मणजी तिस समयके योग्य वचनबोले १ हेमातः स्त्रीके वचनकेवशीभूतहृवै जोराज्यश्री छोड़ रामचन्द्र वनको जातेहैं हमेंभी नहीं नीकलगता फिर स्त्रीके वचनसे न सहीजानो राजाहीके वचन सेवनको जातेहों तोराजाहीको कौनठीक क्योंकि अतिवृद्ध होनेसे उनकी बुद्धिविपरीत होगईहै फिर अब इस वृद्धावस्था में विषय बासना में ऐसे फँसे हैं जिसका कुछ ठीक नहीं जब वे काम के वशीभूत ठहरे तो स्त्री के कहने से जोई न कहें सोई थोड़ा है वनजाना क्या चाहे जो कह बैठें ३ फिर जो कहैं कि रामही में कुछ दोष हैं जिससे राजा अपने राज्य से निकाले देतेहैं सो भी न इनका कोई अपराधही राज्य से बाहर होने लायक देखते हैं न कुछ दोषही देखते ४ प्रत्यक्ष में कौन कहै परोक्ष में भी ऐसा मनुष्य हम नहीं देखते चाहे वह इनका मित्र हो चाहे किसी कारण उसका अनादर भी इन्हों ने किया हो पर वह इन के दोष कहै कोई भी नहीं कहता ५ यदि ऐसी बात ठहरी तो देवता के समान चित्त अति सरल स्वभाव गुरु लोगों से सब अच्छी अच्छी बातें व शास्त्र सीखे शत्रुओं के ऊपर भी दया रखने वाले ऐसे पुत्र को जो धर्म्म जानता होगा बिना कारण कौन पुरुष त्यागैगा इससे साफ जाना जाताहै कि राजा की मति अब ठीक नहीं रही नहीं तो ऐसा काम न करते ६ तिससे फिर अब बाल्यावस्था को प्राप्त राजा के वचन कौन पुत्र हृदय में करैगा कोई नहीं क्योंकि काम के ऐसा वशीभूत होना बाल्यावस्था वाले लोगों काही काम है वृद्धों का नहीं तो लड़कों की बात का कौन ठीक ७ इतना कौशल्याजी से कह रामचन्द्रजीसे बोले भाई तिससे जब तक कि कोई इस बातको न जाने कि राजाने रामचन्द्र को वनवास दियाहै तिसके पहिलेही हमारे साथ इस राज्य को अपने अधीन करलीजिये ८ इसकी शङ्का न

कीजिये कि अब कैसे राज्य मिलसक्ता है क्योंकि जब हम धनुष बाण लिये तुम्हारे साथ खड़े रक्षा कर रहेहैं तो कौन पुरुष ऐसी सामर्थ्य रखता है जो इस में विघ्न करै जैसे यमराज के सामने कोई कुछ विपरीत नहीं करसक्ता वैसेही समझिये ९ एक दो मनुष्यों को कौन कहै जो इस विषय में सब अयोध्यानिवासी कुछ भी विघ्नकरैं तो अपने तीषे बाणों से मनुष्य हीन करदें इसमें कुछ भी सन्देह नहीं १० अथवा भरत के मामा आदि जो कोई उनका पक्षकरैं व हित चाहैं इसलिये इस विषय में विघ्नकरैं तो उन सबको भी हम मारडारेंगे आप इस विषय में अपनी कोमल प्रकृति को छोड़ें राज्य के विषय में कोमल प्रकृति वाले का सदाही निरादर होताहै ११ और को कौनकहैजो दुष्ट प्रकृतिहमारे पिता भी कैकेयी के बहँकाने से शत्रुता करें तो वे भी अवश्यही बिना विचार कियेही बन्दीखाने में डारदिये जायँ वा मारही डारेजायँ १२ इस विषय में धर्म्मशास्त्र की भी आज्ञा है कि राजा को चाहिये जो कार्य्य अकार्य्य न जानै कुमार्ग्ग में चलनेलगै कामादिमें फँस निन्द्य कर्म्म करने लगै तो गुरूको भी दण्डदेना १३ राजाने किसके बलपर वा किस हेतु से यह राज्य कैकेयी को देनाचाहा है ज्येष्ठ रानी के पुत्र फिर सब भाइयों में ज्येष्ठ आप विद्यमान हैं यह तुम्हारा राज्यहै फिर वे पराई वस्तु के देनेवाले कौन होतेहैं १४ आपसे व हमसे बैर करके राजा की क्या शक्ति जो भरत को राज्य देसकें किसी तरह नहीं देसक्ते १५ श्री रामचन्द्र से इतना कह माता से कहनेलगे हे देवि हम अपने अन्तष्करण से कहते हैं कि निश्चय भाईरामचन्द्रहीके अधीन हैं इस विषय में जो मिथ्या कहतेहों तो अपनी सत्यता धनुष जो कुछ आजतक दिया हो वा जो हमारा इष्ट हो व तुम्हारी सौगन्द करते हैं १६ बरती हुई आग वा वनमें जब कभी रामचन्द्र किसी कारण पैठना चाहेंगे तो हे देवि हमको तुम प्रथमही पैठे समझना १७ जैसे सूर्य्योदय होनेसे अन्धकार नहीं रहता वैसेही हम तुम्हारा दुःख मिटावेंगे आपभी हमारा पराक्रम देखें व रामचन्द्र जी भी कि हम क्या करतेहैं १८ कैकेयी के वशीभूत महावृद्ध कृपणचित्त काम के फन्द में फंदे वृद्धावस्था होने के कारण कुछ का कुछ करनेसे निन्दित पिता जी को भी हम मारडारेंगे १९ लक्ष्मण

जीके ऐसे वचन सुन मारे शोकके रोती हुई कौशल्या जी रामचन्द्र जीसे बोलीं २० हेपुत्र तुम्हारे भाई लक्ष्मण ने जो कहा सो वह तुमने सुना इसके पीछे तुमभी निश्चय करलो जो रुचै सो करो २१ जो कहते हो कि पिता के वचन कैसे न मानें तो ये तो पिता के वचन नहीं हैं किन्तु हमारी सौतीके वचन हैं सोभी उसने भी योग्य वचन नहीं कहे बरन छोटेको राज्य मिलना अधर्म्महीहै फिर ऐसे अधर्म्म के वचन सुन शोक में जरती हुई हमको छोड़ यहां से जाया चाहते हो २२ हेधर्म्मज्ञ जो धर्म्मिष्ठों का धर्म्म कियाचाहो सौतेली माताके भी वचन उल्लङ्घन करने में दोष समझो तो हमभी तो माताहैं उसकी आज्ञा से राज्य छोड़ देवो हमारी आज्ञासे वनको मजाव यहीं रहकर हमारी सेवाकरो इसमेंकुछभी अधर्म्म न होगा २३ क्योंकि धर्म्मशास्त्रमें यहभीतो लिखाहैकि जो पुत्र गृह में बस नियम से माता की सेवा करता है वह बड़ी तपस्या का फल पाय प्रजापतिके पदको प्हुँचताहै २४ फिर गौरवसे जैसे राजा तुमको पूज्यहैं तैसेही हमहैं क्योंकि जैसेमाता तैसेही पिता बस हम तुम को नहीं आज्ञा देतीं कि वनकोजाव २५ जो कहो कि जैसे बनैं चौदह वर्ष निबाहो तो तुम्हारे वियोग होने पर हम न जीना चाहती हैं न कुछ सुख हमको भी वनको लिये चलो तुम्हारे संग कंद मूल फल भोजन कर रहना तो क्या घास खाय के रहना हमैं अङ्गीकार है २६ नहीं लो जो हमको यहां हीं छोड़ वन को चले जावगे हमैं इस शोक सागर में हीं डार जावगे तो हमारे प्राण भी न निकलेंगे तोभी भोजन तो न करेंगी उपास करके मरजायँगी २७ हमारे मरने से तुम नरक को जावगे जैसे समुद्र ने अपनी माता का कहा नहीं माना था इसलिये पिप्पलाद मुनि के कारण ब्रह्महत्या का फल भोगना पड़ा था २८ इस रीति से दुःखित हो रोतीकौशल्या जी से धर्म्मात्मा रामचन्द्र धर्म्मशास्त्र के अनुकूल वचन बोले २९ हे मातः पिता के वचन न मानने की शक्ति हम में नहीं है इससे पैरों पै शिर झुकाय तुमको प्रसन्न कर वनको जाया चाहते हैं ३० देखिये कण्डु मुनि ब्रह्मचारी बड़े पण्डित थे अपने पिता के ही वचन मानते थे धर्म्म को भली भाँति समझतेथे पर गोबध उन्हों ने कर डारा पिता की सेवा के हेतु ब्रह्म गोहत्या उन को न लगी

३१ फिर देखो हमारेही कुल में अगाड़ी महाराज सगर की आज्ञा से उन के पुत्र घोड़ा ढूंढ़ने के लिये भूमि खोदते थे आपही मरगये आत्म-हत्या उन्हों ने की इससे यह जाना जाता है कि पिता की आज्ञा करै चाहै प्राण भी जाते रहैं ३२ फिर पिता की आज्ञा से परशुराम जी ने अपनी माता रेणुका का शिर अपने हाथों फरसा से काटा उन्हों ने तो माता को मार पिता की आज्ञाका प्रतिपालन किया हमारे चलेजाने से तो तुम्हें दुःख ही होगा कुछ तुम को हम मारे नहीं डालते हैं इसमें कौन दोष ३३ कहाँ तक गिनावें इन लोगों ने व और बहुत लोगों ने पिता के वचन किये हैं फिर वे कुछ ऐसे वैसे नहीं थे सब देवसमान थे हम किसी बात को नहीं डरते पिता के वचन ज़रूर करेंगे ३४ हे मातः केवल हमीं नहीं पिता के वचन करते जिन लोगों को हमने कहा है इन लोगों ने भी पिता के वचन किये हैं ३५ कुछ हमीं नहीं तुम्हारे प्र-तिकूल अपूर्व्व अधर्म्म करते बरन अगिले लोगोंकोभी अङ्गीकार था कि माता के वचन चाहे रहें वा न रहें पिता के वचन अवश्य माने जायँ फिर जिस बात को अगिले लोग करते चले आये हैं उसके करने में कौन दोष जिस मार्ग्ग में लोग चलते हैं उसमें उनके पीछे वाले चले ही जाते हैं ३६ सो हम तो पिता के वचन करते हैं जोकि पुत्र का धर्म्म है कुछ अधर्म्म नहीं करते और पिताके वचन करनेवाले का धर्म्म कभी कहीं नहीं जाता देखा सुना ३७ माता से ऐसा कह वाक्य जानने वालों में श्रेष्ठ लक्ष्मणजी से सब धनुर्द्धारियों में श्रेष्ठ रामचंद्र जी बोले ३८ हे लक्ष्मण हम जानते हैं कि तुम्हारा उत्तम स्नेह हममें है व यह भी जानतेहैं कि तुम में विक्रम पराक्रम व तेजभी अद्भुत हैं जो जो कहते हो सब करसक्ते हो ३९ परन्तु जो हमारी माता को महादुःख है सो तो वे सत्य शम दमादि नियमों के अभिप्राय को जानती नहीं हैं क्योंकि स्त्री हैं फिर तुम तो सब धर्म्माधर्म्म जानते बूझते ऐसा कैसे कहते हो ४० क्योंकि सब पुरुषार्थों में धर्म्म उत्तमहै धर्म्मंहीमें सत्य टिकाहै फिर पिता का वचन मानना यह तो उत्तम धर्म्म है ४१ पिता माता व ब्राह्मण के वचन सुन जो प्रतिज्ञा करै कि हम करेंगे तो जो धर्म्मात्मा पुरुष है उसको उचित नहीं कि फिर न करै ४२ जो कहिये

कि ये वचन तो कैकेयी के हैं पिताजीके नहींहैं सो नहीं पिताके कहनेही से कैकेयी ने हमसे कहा है इसलिये हम पिता के वचन उल्लङ्घन किसी प्रकार नहीं करसक्ते ४३ तिससे यहजो बुद्धि तुम्हारीहै कि पिता को भी मार के राज्य करें इस अशुभमति को छोड़ो यह महा निर्दयता व शठता का कर्म्म जो कोई कोई क्षत्रिय करते हैं वहतुम्हारे हमारे करनेके योग्य नहीं क्योंकि धर्म्मकी रक्षा करनेहीके लिये हमलोगोंका अवतार है इससे धर्म्महीमें टिको क्रूरता को न अंगीकार करो जैसी हमारी मतिहै कि पिताकेही वचन करने चाहिये वैसेही मति अंगीकार करो ४४ लक्ष्मणजी से ऐसे वचन कह श्रीरामचन्द्रजी हाथजोड़ माता के पैरोंपै शिरझुकाय फिर कौशल्याजी से बोले ४५ हे देवि हमें यहां से वन जानेके लिये आज्ञादीजिये अब इसमें कुछ रोंक टोंक न कीजिये हम अपने प्राणोंकी सौगन्द करातेहैं अब जानेकेही लिये मंगल स्वस्त्ययनादि कीजिये कराइये ४६ चौदह बर्ष पूरे होजाने पै फिर हम अयोध्यापुरीको आवेंगे जैसे कि राजा ययाति पहिले स्वर्ग्गसे भूमिमें गिरे फिर स्वर्ग्गको चलेगये ४७ हेमातः शोचको हृदय में धारण किये रहौ अब ऊपर से न प्रकटकरो हम पिता के वचन कर फिर यहाँ आवेंगे ४८ तुमको हमको जानकी को लक्ष्मण व सुमित्राजी सबको चाहिये कि महाराज दशरथके वचन मानें यही सनातन धर्म्महै ४९ अब अभिषेक के लिये जो सामग्री आईहै उसको रहने दीजिये दुःख अपने हृदय में धरिये जैसे हमारी मतिहै कि वनवास करने जायँ वैसेही तुमभी मति करो कि ये वनही को जायँ तभी ठीकहै ५० रामचन्द्रजीके ऐसे धर्म्मयुक्त धीरता के साथ बिना कदरई के वचनसुन जानो मरीहुई पड़ीथीं फिर मूर्च्छा जागी तो कौशल्याजी रामचन्द्रको देख बोलीं ५१ हेपुत्र धर्म्मसे व सुहृदई से जैसे तुम्हारे लिये पिताहै वैसेही हम कुछ पिता मातामें अन्तर नहीं होता हम कुछ तुम्हारे पितासे कम तुम्हारा स्नेह नहीं करतीं फिर कैसे बिना हमारी मरजी हमको दुःखितछोड़ वनको जातेहो ५२ जो तुमने कहा कि हमारे पिताके वचन तुमको भी मानना चाहिये सो अयप्यारे बिना तुम्हारे जीनेसे कौन प्रयोजन लोकके अन्य भाई बन्धुओं से क्या पतिसे क्याहै मरजाने पै पितरों के लोकमें जाय

स्वधा भोगनेसे क्या स्वर्गलोकमें जाय वहांके सुखभोगनेसे क्या और क्या कहें मोक्षसे क्या हमको मुहूर्त भरभी तुम्हारे सन्निकट रहने से सब लोकोंके टिकने व इसलोकके सब प्राणियों के सङ्ग रहनेसे अधिक कल्याण है ५३ माताका ऐसा करुणापूर्व्वक विलापसुन रामचन्द्रजी अधिक दुःखित हुये जैसे कि रात्रिमें कोई हाथी कहीं अँधियारे गढ़ामें गिर पड़े और लोग उसे लुकेठों से जारें उससे वह दुःखितहो ५४ माताको मूर्च्छा आनेही के तुल्य व लक्ष्मणजी को मारे कष्टके अति व्याकुलदेख धर्म्मात्मा रामचन्द्र धर्म्मसहित वचन कि जैसा उनको कहना उस समय योग्यथा बोले ५५ हे लक्ष्मण हम तुम्हारी अपना में नित्य भक्ति व तुम्हारा पराक्रम अच्छीतरह जानते हैं पर तुम हमारे अभिप्राय को नहीं विचारते हमारी माताके साथहवे हमको व्यथित करतेहौ तुमको ऐसा दुःख न देना चाहिये ५६ हेप्यारे हमने धर्म्म अर्थ काम इसलोक में धर्म्मही के फलमें विचारेहैं इसीसे धर्म्मही करना अङ्गीकार कियाहै क्योंकि धर्म्मही के करने में अर्थ कामादि भी होंगे जैसे कि पतिव्रतास्त्री के संगमें पुत्रादि होनेपै धर्म्मार्थ काम सब होजातेहैं ५७ जिस कर्म्ममें धर्म्म अर्थ काम तीनों न होते देख पड़ें वह कर्म्म न करना चाहिये और केवल अर्थही मिलनेका उपाय करताहै संसारमें सब उससे बैर करने लगते हैं व केवल कामके वशीभूत होना तो बनाय अयोग्य है हां धर्म सेवन करै उससे अर्थ कामभी होंगे उनका भी सेवन प्रसंगपाय होता जायगा तो कुछ दोषभी नहीं ५८ देखो संसार में गुरू राजा पिता व वृद्ध इनकी आज्ञा माननी चाहिये यह शास्त्रमें लिखाहै फिर एकतो महाराज गुरू ठहरे फिर राजा ठहरे फिर पिता उसमें भी वृद्ध ये क्रोध से वा हर्षसे वा कामसे चाहे जिस रीतिसे आज्ञा देयँ तो ऐसा कौन है जो क्रूर स्वभाव न हो और उनका कहा कार्य्य न करै हाँ हमभी क्रूर स्वभाव होते अपनी प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा का विचार न होता तो इनका कहा न करते ५९ इससे हम अपने पिताकी सब आज्ञा न करनेमें समर्थ नहींहैं कुछ हमींको उचितनहीं कि उनके वचन मानैं नहीं हमारे तुम्हारे दोनोंके गुरू हैं व इन माताजी के पतिहैं इसलिये इन्हींके निकट इनका रहना ठीकहै ६० क्योंकि ऐसे धर्म्मराज महाराज के जीतेही व अपने

राज्य काज करतेही में ये विधवा स्त्री के समान हमारे साथ वनको कैसे चलेंगी ६१ तिससे हे मातः हमको वन जानेकी आज्ञादीजिये व यात्राके लिये सब मङ्गल कीजिये जिसमेंचौदह वर्षके पीछेफिर कुशल सहित लौट आवें जैसे अपनी सत्यतासे फिर राजा ययाति अपने राज्यको पहुंचे ६२ इसलिये हम राज्य के लोभ से महा फलदायक यश न छोड़ेंगे क्योंकि इस संसार में थोड़ेही दिन रहना है इसमें अधर्म्म से पृथिवी का राज्य काहे को लेयँ ६३ इसभांति श्रीरामचन्द्र अपनी माताको प्रसन्न करतेहुये व अपने पराक्रम से वन जाने की इच्छा किये छोटे भाई लक्ष्मण जीको समझाय हृदयसे माताके प्रदक्षिणाकर चलनेका विचार करनेलगे ६४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकविंशस्सर्गः॥ २१ ॥

जब देखा कि लक्ष्मण हमारे वनवास होने के दुःखसे बहुत दुखी हैं व कैकेयी के ऊपर बहुत क्रोध किये हैं जैसे मारे रोषके हाथी श्वासले वैसेही श्वासले रहेहैं १ परमप्रिय भाई को ऐसापाय बड़ी धीरता के साथ रामचन्द्रजी बोले २ हे लक्ष्मण कैकेयी के ऊपर क्रोध मिटाय हमारे राज्य न मिलने का शोक छोड़ केवल धैर्य्य को धारणकर इस अपमान को दूरकर जो कि पिता ने वनवास दिया है पिता के वचन का प्रतिपालन होगा इससे उत्तम हर्षकर ३ जो जो वस्तु हमारे अभिषेक के लिये इकट्ठाहैं उनकी ओर ध्यान न दीजिये किन्तु वन जानेकी तैयारी कीजिये ४ व जोजो सामग्री हमारे अभिषेक के लिये है वह सब अभिषेक न होने के लिये होवे ५ व जिस हमारी माता कैकेयी का मन हमारे राज्याभिषेक होने के लिये जलता है उसका मन जिसमें सशङ्क नहो वही उपाय कीजिये ६ क्योंकि तिसका दुःख हममुहूर्त्त भरभी नहीं देखना चाहते ७ सो केवल कैकेयीही के वचनों का प्रतिपाल हमें अङ्गीकार नहीं किन्तु सब माताओं के व पिताजी के वचन का पालन ज्ञान से वा अज्ञान से भी कभी न करनेकी इच्छा नहीं ८ इससे हमको वही उपाय करना चाहिये जिसमें सदा सत्यवक्ता सत्यप्रतिज्ञ सत्य पराक्रम हमारे पिताजी जोकि परलोकके भयसे डरते हैं वे निर्भय हों ९ क्योंकि हमारे पिताका भी मन इस समय सन्तपित होता होगा कि

हमारे वचन सत्य होंगे रामचन्द्र वनको जायँगे वा नहीं यह उनके मनका सन्ताप हमें भी सन्तपित करेगा १० इसलिये अभिषेक विधान त्याग के इसी समय अयोध्या से वन को चलेजाना हम चाहते हैं ११ जिसमें हमारे चले जाने से कैकेयी प्रसन्न होवे व अपने पुत्र भरत को राज्यगद्दी दिलावे १२ क्योंकि जबहम चीर मृगचर्म्म धारण किये जटा बांधे वन को जायँगे तभी कैकेयी के मनको सुख होगा १३ इस के सिवाय जिस ईश्वर ने मन्थराकी द्वारा कैकेयी को यह मति दीहै उसको भी हम क्लेश नहीं दिया चाहते तुरन्त वनको चले जायँगे १४ इसबिषय में कैकेयीका कुछदोषभीनहीं राज्यपाने व न पानेमें सब भाग्य-ही कारण है १५ क्योंकि जो भाग्यका कियाहुआ कैकेयी का ऐसा स्व-भाव न होजाता तो सदासे वह हमारे ऊपर कृपाही करती रही इससमय हम को दुःखदेने के लिये न उतारू होती १६ क्योंकि तुमतोअच्छी तरह जानतेहो कि सब माताओंमें हमकुछ भेद नहीं समझतेथे व कैकेयी भी हममें और अपने पुत्र भरतमें कुछ अन्तर नहीं समझती थी बस यह सब भाग्यही का कारण है और कुछ नहींहै १७ इससे जो जो दुर्व्वचन अभिषेक न होनेके व वनवासहोनेके विषयमें उन्होंने कहाहै हम दैवहीकी आज्ञा मानते हैं और कुछभी नहींमानते १८ नहीं तो सबप्रकारके गुणों से पूर्ण राजकुमारी कैकेयी प्राकृती मनुष्योंकी स्त्रियोंके समान पतिसे हम को पीडा देनेकेलिये कैसे कहती १९ जोअचिन्त्यहो व ब्रह्मादि स्थावर पर्य्यन्त कोई जिसे मेट न सके उसीका भाग्यनामहै सो प्रसिद्धही है कौन जानताथा कि हमको राज्यछोड़ वनवास होगा व कैकेयीकी मति ऐसीहो जायगी २० इससे कोई ऐसापुरुष नहीं जोभाग्यसे लड़सकेक्योंकि उसके फलकोही सबकोई जानसक्ताहै उसके रूपको न कोई देखही सकता न जानही सकताहै २१ सुखदुःख भय क्रोध लाभ अलाभ उत्पत्तिनाशादि जोकुछहै सब दैवहीका किया होताहै २२ क्योंकि देखो ऋषिलोग भीबड़ी उग्रतपस्या करते परजब भाग्य नहींअच्छा कियाचाहती तो काम क्रोधादि ऐसे उपजतेहैं कि जिनसे कठिन नियमोंको छोड़ वेलोग भ्रष्ट हो-जातेहैं २३ जिसकामके करनेका कभी न विचारकरो अपनेआप एकाएकी होजाय व जिसका विचारकरो वह नहो उसीको दैवका कर्म्म कहतेहैं २४

इसीबातके निश्चयसे कि विना दैवके किये कुछभी नहीं होता हमारे अभिषेककी तय्यारी होकर बन्दभी होगई परहमको परिताप नहीं होता २५ तिससे तुमभी इसविषयमें परिताप को छोड़ अब इस अभिषेक सामग्री से हमको अलग रक्खो इसविषयमें कुछ हमें कष्ट न देवो २६ हेलक्ष्मण ये जो नानातीर्थोंके जलसे भरेहुये अभिषेकके लिये कलश धरेहैं इन्हींसे तपस्वी होनेपै हमारा स्नान होगा २७ अथवा इस राज्याभिषेकके जल से हमारा कुछभी प्रयोजन नहीं तपस्वी होनेपै हम अपने हाथसे भरे हुये जलसे स्नान करेंगे २८ हेलक्ष्मण राज्यलक्ष्मीके न मिलनेसे शोच न कीजिये क्योंकि राज्य मिलती तो प्रजापालन करते वनवास मिला तो वहां भी वनवासी ऋषिलोगों का पालन होगा इससे दोनों समान हैं वरन राज्यसे वनवास बहुत अच्छाहै क्योंकि एकतो पिता माताकी आज्ञाका पालन दूसरे प्रजापालनमें जो कर्त्तव्याकर्त्तव्यहैं उनके विचार से छुट्टी पाना तीसरे तपस्या करनेसे पवित्र चित्त रहना चौथे वहां दीनामनुष्यों की रक्षा २९ ॥

॥ हरिगीतिका ॥

लषन तुम जानत भलीविधि दैवजिमि बलवानहै ।
शुभअशुभ नितही करत वहकाहुनाहिं कछु मानहै ॥
ममराज्यमें जोविघ्न भयहु नकैकयी कछु कीनहै ।
जोसों भाग्य वश पुरुष शुभको अशुभ कहत मलीनहै ॥ १ ।३०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्वाविंशस्सर्गः ॥ २२ ॥

जबरामचन्द्रजीने ऐसाकहा तौलक्ष्मणजी नीचेशिर झुंकाय खड़ेरहे रामचन्द्रजीके धैर्य्यको देख कुछ हर्षित हुये वनवासजान दुःखित इससे समभावमें रहे न अति हर्षही किया न अति दुःखही १ परन्तु कुछबेरपीछे भौहैं टेढ़ीकर बिलमें बैठेहुये रिसाने सर्प्पके समान ऊधी श्वासें लेने लगे २ उससमय लक्ष्मणजीका मुख भौहैं टेढ़ीहोनेके कारण ऐसाभया- नक हो शोभित हुआ जैसे क्रोध कियेहुये सिंह का मुख शोभित होता है ३ फिर हाथ कँपाय शिर इधर उधर झुंकाय टेढ़ीदृष्टिसे भाईरामचन्द्र कोदेख बड़े क्रोधसे बोले ४ हेभाई जो आपने पिताके वचनोंको नमानना

अधर्म्म समझ लोकमें अपनी निन्दा समझीहै यह महाअयोग्य आपका विचारहै ५ क्योंकि जो अयोग्य विचार न होता तो आपके समान प्रबल क्षत्रिय श्रेष्ठ कातर मनुष्योंके समान भाग्यके भरोसे न रहते भाई भाग्य के भरोसे रहना जो कुछ हाथ पैर नहीं चला सकते उन्हीं निर्व्वल मनुष्यों का काम है नकि आपका ६ भाग्यका किया कुछभी नहींहोता उसकी क्यों बड़ाई करतेहो व जो महापापी अविचारी कैकेयी दशरथ के अपमान की शंका करते हो सोभी कुछ नहीं ७ क्योंकि ऐसे छली लोग बहुत संसारमें होतेहैं जो अपने प्रयोजन के लिये झूंठा मूठा धर्म्म जनाते हैं आपने यह न समझा कि ये अपने प्रयोजनही के लिये मारे शठताके तुमको वनवास दिया चाहते हैं इसमें कोई धर्म्मकी बातनहींहै ८ यदि यह वरदान की कथा सत्यहोती कि राजा क्याकरें भाई कैकेयी से हार चुकेथे उसने मांगलिया इससे भरतको गद्दी मिली रामचन्द्रको वनवास सो यह नहीं क्योंकि जो ऐसा होता तो पहिलेही से भरतको गद्दी होजाती व आपको वनवास यहतो आपके अभिषेक के मिटाने के लिये नई वरदानकी कथा बनाली गईहै ऐसी बातका ठीक नहीं होस-कता ९ इससे ज्येष्ठपुत्र आप विद्यमान छोटे पुत्रका अभिषेक होना इस अन्यायको हमनहीं सहसक्ते इस विषयमें ऐसे अविचारी पिताकी बात हम कुछभी न मानेंगे आप क्षमा कीजिये १० जिस पिता के वचन से प्रथम आप राज्य करने को तैयार थे अब वनको जातेहो इसको धर्म्म समझतेहो उस धर्म्मको हमतो धर्म्म नहीं समझते क्योंकि धोखादेनेही के लिये यह धर्म्म बनाया गयाहै आपने भ्रमसे इस अधर्म्म को धर्म्म समझाहै ११ आप कैसे असमर्थ मनुष्यों के समान कैकेयी के वशीभूत पिताके निन्दित अधर्म्मिष्ठ वचन करेंगे १२ जोकि आप जानतेभी हैं कि कपट से हमारा अभिषेक बन्द किया गया है उसको भी धर्म्मही मानतेहो इस विषयमें हमको बड़ा दुःखहै कि ऐसे धर्म्मज्ञहो आप अधर्म्म को धर्म्म मानतेहो ऐसे झूंठे धर्मकी निन्दाही होतीहै न कि प्रशंसा १३ जिसको आप धर्म्म समझते हैं लोक में इसकी बड़ी निन्दा है आपको छोड़ और कोई भी पुरुष ऐसे कामके वशीभूत नित्यही शत्रुरूप ऊपर से पिता माता बनेहुये परम अविचारी के वचनको धर्म्म न समझेगा १४

यद्यपि आपके मतसे माता पिताके वचन इस विषयमें दैवके कियेहुयेहैं तथापि हमको तो ऐसीबात नहीं रुचती क्योंकि ऐसे दैवको कौन भरोसा १५ क्योंकि जोलोग डरपोंक वीर्य्यहीन होतेहैं वहीदैवके भरोसे रहते हैं व जो शूरवीर कि जिनकी शूरता वीरता लोकमें बड़ाई करने के योग्य है वेतो भाग्यके भरोसे नहीं रहते १६ व जो पुरुष अपने पुरुषार्त्थ से दैवको हराने के लिये समर्त्थ रहता वह भाग्य उसका कुछभी नहीं करसक्ती १७ जो कहिये कि भाग्यको कोई नहीं रोंकसक्ता तो आज भाग्य का बल व पुरुषका भी बल लोग देखेंगे तब दैव और मनुष्य के बलका विवेक आप खुल जायगा कि दैवमें बड़ी शक्तिहै वा पुरुषमें १८ जिन लोगोंने दैवका हटाया हुआ आपका राज्याभिषेक देखाहै वे आजहमारे पौरुष से हटायेहुये दैव को देखेंगे १९ जैसे दौड़तेहुये मदान्ध हाथी को अंकुश नवाय देताहै वैसेही आज हम अपने पौरुष से दैवको हटाते हैं २० देखिये इन्द्र वरुण कुवेर यमराज अग्नि सूर्य्यादि लोकपाल भी आज तुम्हारे अभिषेक में विघ्न नहीं डारसक्ते फिर अकेले पिताकी क्या सामर्थ्य जो अभिषेक न होनेदेयँ २१ जिन लोगोंने आपसमें सम्मत कर तुम्हारेलिये वनवासविचाराहै वहीलोगचौदहवर्षतकवनमेंबसेंगे २२ हम दशरथकैकेयी दोनोंकी उस आशाको भस्म करदेंगे जोकिवेतुम्हारे अभिषेक के नाशके पीछे अपने पुत्र भरतका राज्यचाहते हैं २३ जैसा कि हमारे पौरुषसे जोलोग हमारे बलके वैरीहैं उनको दुःखहोगा वैसादैवके बल से हमको न दुःखहोगा २४ अभीतो क्या यहराज्य आपको छोड़ कभी कोई न पावेगा क्योंकि अभी तो कईहजार वर्षतक आपही राज्यभोगेंगे जब वृद्धावस्थामें राज्य छोड़ अपने बूते आप वनमें तपस्या करनेजायँगे तबभी आपके पुत्र राज्य भोगेंगे फिर उनके पुत्र नकि भरत वा भरत के लड़के आदि २५ क्योंकि पूर्व्वकाल के सब राजा लोग यही करते चले आयेहैं कि वृद्धावस्थामें प्रजाको पुत्रवत्पालन करनेके लिये पुत्रोंको सौंप आप वनमें तपस्या करनेकेलिये बसतेथे नकि आपकीसी युवावस्था में २६ यदि आप राजाका चित्त चञ्चलजान राज्यकोभी चञ्चल समझ राज्यलेना न अङ्गीकार करेंगे २७ तोभी हमआपके राज्यकी रक्षाकिये रहेंगे जैसे समुद्रकी प्रतिवेला समुद्रकी रक्षाकरती है यदि ऐसा न करेंतो

हमको वीर न जानिये २८ इससे आप सब मङ्गलाचार पूर्व्वक अपना अभिषेक कराय राज्यभोगिये हम अकेलेही अपने वलसे सब पृथ्वीम-ण्डलके राजोंको जीत रोंक सक्ते हैं फिर अकेले दशरथकी क्या गणना है २९ ये हमारी बाहें शोभाके लियेनहीं हैं किन्तु लड़नेहीं केलिये यह धनुष भूषण के लियेनहीं है किन्तु शत्रुओंके सामने झङ्कार देनेके लिये यह खड्ग केवल बांधनेही के लिये नहीं किन्तु शत्रुओंका मुण्ड खण्डन करने केलिये ये बाण केवल तरकस में भरेरहनेहीं के लिये नहीं किन्तु शत्रुओं के अङ्गच्छेदने के लिये ३० येचारो पदार्त्थ हमारे शत्रुओंके मथन करनेही के लियेहैं व जोहमारा शत्रु बनके रहना चाहताहो उसकोहम कुछभी नहीं समझते ३१ व जब बिजुली के समान चमकती हुई बड़ी तीखी तलवार हम खींचते हैं तो इन्द्रभी जो शत्रुबनके आवें तो हम कुछ नहीं समझते ३२ व हमारे खड्ग की धारसे कटेहुये शत्रुओंके हाथीघोड़े रथादिकोंके हाथ जांघ शिरादिकोंकें मारे पृथिवी वनके समान चलनेके योग्य न रहैगी ३३ आज हमारे खड्गकी धारसे मारे काटेहुये शत्रु रक्त चुचुआतेहुये पर्व्वतोंके समान सहित बिजुली मेघोंके तुल्यभूमिमें गिरेंगे ३४ जब हम टङ्कार देनेके लिये लोहकी मुंदरी अँगुलीमें पहिन धनुष बाणले समरमें खड़े होजायँगे तो ऐसाकौन मनुष्यहै जो पुरुषोंमें अपना को शूर मानेगा ३५ यह न समझिये कि अकेले तुम किससे किससे ल-ड़ोगे नहीं हम अकेलेही जब बाण चलाने लगेंगे तो हजारों शत्रुओं को मारडारेंगे व सहस्त्रों मनुष्य घोड़े हाथियों के सुकुमार स्थानों में बाण मारेंगे ३६ आज हमारे अस्त्रशस्त्रों का प्रभाव राजाकी प्रभुता मिटाने व आपकी प्रभुता कराने में प्रगट होजायगा ३७॥

चौ० ॥ चन्दन लिप्त आजमम बाहू । अंगद भूषित सहित उछाहू ॥ सदादान दायक सुखकारी। मित्र पालनाके अधिकारी १ । ३८ तब अ-भिषेक विघ्नकर लोगन । वारण करण देत तिनशोगन ॥ करिहैं सकल कामयेनीके । राम कहत तुमसन हमठीके २ । ३९ कहहुआज को अहित तुम्हारा । सुयश प्राणजनधनसों न्यारा ॥ कौनजाय अरुजिमि तबहा-था । आवैभूमि कहहु रघुनाथा ३ मैंकिङ्कर सबभांति तुम्हारा। आज्ञादेत न लाइय वारा ४० इमिसुनि रामलषण की वानी । पोंछ्यहु तासु आंशु

निज पानी ४ बहुविधि पुनि समुझाय बुझावा । कह पितु वचन करहु मन भावा ५ यहि समान नहिं सत पथ दूजा । जो पितु वचन सुनत करुपूजा ४१ हम न तजब पितु वच परिपालन । समझहु तात अहहु तुम वालन ॥ सुयश तिहूं पुर होइहि यामें । बिना किये दुर्य्यश बिन कामें ६ । ४२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रयोविंशस्सर्ग्गः ॥ २३ ॥

श्रीरामचन्द्रजी को पिताकी आज्ञा परिपालन करने में तत्पर देख जाना कि वनको ये अवश्य जायँगे इसलिये आंशू रोंक कौशल्याजी रघुनन्दन से बोलीं १ हे राम तुमने अभीतक कोई दुःख नहीं देखा सदा धर्म्म करनेही में प्रीति रखते रहे सब प्राणियों से प्रियही वचन बोलते थे हमसे इतने बड़े चक्रवर्त्ती राजादशरथसे उत्पन्न हुये सो वनमें जाय कन्द मूल फलाहारादि मुनियोंकी वृत्तिसे कैसे निबहोगे २ जिस तुम्हारे दास दासी भृत्यवर्ग्ग सदा नीके मीठे अन्न भोजन करते रहे सोतुम वनमें कैसे कन्द मूल फलादि भोजन करोगे ३ जबइस वार्त्ता को कोई सुनेगा कि महागुणी पिताके प्राणाधिक प्रिय राम वनको भेजेगये तो कौन विश्वास मानेगा फिर जब बनाय सुनहीलेगा कि जरूर ऐसा काम हुआ है तोमाता आदि अपने बड़ोंसे कौन न भयभीत होगा क्योंकि जबतुम ऐसेपुत्र को वनवास दियागया तो औरोंकी क्या गिनती है ४ इसलोक में हमभाग्य को बड़ा वलवान् मानती हैं क्योंकि वह सबको जबरदस्ती सुख दुःख देताहै उसीकी प्रवलतासे रामतुम वनमें बसोगे५ हेराम यह हमारेही मनसे उत्पन्न शोकाग्नि तुमको न देखेंगी उससेजो ऊधीश्वासें आवेंगी उसपवन से बढ़ाहुआ विलाप करने का दुःख सोई मानों ईंधन है तिसको पाय रोदन के आंशुओंकी आहुतिपाय ६ चिन्ता से उठीहुई वाफको धुआं बनाय जोकि बिना तुमको देखे चिन्ता होगी सोहमको बनाय निकट लाय दुबराय ७ जैसे ग्रीष्म ऋतुमें सूर्य्य सब घासादि को भस्म करते हैं वैसेही हमको भस्म करेगा ८ हेवत्स जबतुम चलोगे पीछे पीछे हमभी जरूर चलेंगी क्योंकि जिस गाय का बछड़ा कहीं जायहैतोवह कैसे न उसके पीछे जाय ९ जैसाकुछ माताने कहा श्रीरामचन्द्रजी सुन अति दुःखित मातासे बोले १० हेमातः जबहम वन

को चलेजायँगे तो कैकेयी के जालमें फँस हमारे वियोग के दुःखों को स्मरण करते हुये पिताजी न जीवेंगे जबकि तुमभी उनको छोड़ हमारे संग चलोगी यों तो जब जब राजा हमारे दुःख से दुःखित होंगे तब तब तुम समुझाती रहोगी ११ इसके सिवाय पतिको परित्याग करना स्त्रीको अति निन्दित है इसलिये मनसेभी अति निन्दित पतिका त्याग आप न करें १२ जबतक महाराजाधिराज हमारे पिताजी जीतेहैं तबतक आप उनकी सेवा करें यही आपके लिये सनातन धर्म्महै १३ रामचन्द्र जी के ऐसे वचनसुन कौशल्याजीने कहा सत्यबातहै हमें पतिसेवाकरनी ही चाहिये इतनाकह मूर्च्छितहो फिर गिरपड़ीं १४ तब धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ श्रीराम माताको अति दुःखित जान फिर बड़ी नम्रता व धीरता के साथ बोले १५ कि हम व आप दोनोंको चाहिये कि पिताजीके वचनकरें क्योंकि पिताजी एक तो राजा ठहरे दूसरे सबकेभरण पोषण करनेवाले तीसरे सबके गुरू चौथेसबमें श्रेष्ठ पांचवें सबके स्वामी छठें सब कुछ करने मेंसमर्त्थ प्रयोजन कि सबप्रकार उनकी आज्ञा हमको व आपको माननी चाहिये १६ जो कहती हो कि पिता के वचन तो मानते हो हमभी तो माता हैं हमारे क्यों नहीं मानते तो पिता ने पहिले आज्ञा दी है इस-लिये चौदह वर्ष पहिले वनवास कर आवें तो आप के वचन करेंगे १७ पुत्र को परमप्रिय समझनेवाली कौशल्याजी श्री रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन अति दुःखित हो रोदन करतीहुई बोलीं १८ हे राम जो तुम पिता के वचन मान वनको जायाही चाहते हो तो बहुत अच्छा पर हमको भी सङ्ग लेते चलो हम यहां सौतों के बीच नहीं रह सक्तीं १९ माता को ऐसी रोती जान रामचन्द्र जी फिर बोले २० कि जब तक स्त्री जीवे उसका देवता व स्वामी पतिही है इसलिये आप व हम व दोनों को वे दण्ड देसक्ते हैं जब कि उनकी आज्ञा के प्रतिकूल कुछ भी करें २१ कुछ हम तुम अनाथ नहीं हैं कि अपने मनमें जो आवे सो करें किन्तु महाराज के कारण सब सनाथ हैं इससे उनकी आज्ञाही के अनुसार काम करना चाहिये २२ कैकेयी कुछभी तुम्हारा न करसकेगी क्योंकि भरत बड़े धर्म्मात्मा व सब प्राणियों से प्रियही बोलने वाले हैं वे सदा तुम्हारी ही आज्ञा के अनुकूल काम करेंगे क्योंकि धर्म्म में

सदा तत्पर हैं २३ अब आप को वही काम करना चाहिये जिसमें हमारे चलेजाने पर पुत्र के शोक से राजा कष्ट न पावें २४ यह संसार बड़ा दारुण है जिसमें कोई हमारे जाने के पीछे राजा को दुरुक्ति न कहने पावै कि उसे सुन पिताजी प्राण त्याग करदेयँ क्योंकि वृद्धावस्था को तो पहुँचही चुकेहैं जब तकहैं चित्तलगाय उनकी सेवा करो २५ क्योंकि चाहै परमोत्तम स्त्री हो कुछ भी पाप न करती हो वरन नानाप्रकार के वृत उपवासादि नियम करती हो पर पति की आज्ञा न करै व उसकी सेवा न करै तो पापिनी होके नरकही में पड़ै २६ व जो स्त्री अपने पति की सेवा तनमन धन प्राणसे करतीहै चाहै और किसी बड़ेके नमस्कार भी न करै अन्य किसी देवता की पूजाभी न करै परन्तु उत्तमही गति को पाती है २७ इसलिये जो स्त्री अपना कल्याण चाहै निश्छल होके पतिकी सेवा करै यह धर्म्म वेद में सुना है व लोकमें समझा देखाहै २८ कुछ यह नहीं कहते कि और कुछ पूजापाठ करना नहीं जब अग्निहोत्र करने का समय आवे तो पुष्प अक्षतादिकों से देवताओं की पूजा हमारे लिये करती रहना व ब्राह्मणोंकी भी पूजा भोजनादि से यथाविधि करती रहना २९ इस प्रकार नियम यमसे पतिकी सेवा करती हुई जबतक हम न आवें समय बिताती रहो ३० जो राजा जीते बने रहेंगे तो जब हम वनसे आवेंगे सब कामना तुम्हारी पूरी होगी ३१ श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन पुत्र के शोक से बहुत दुःखित हो कौशल्या फिर रामचन्द्र से बोलीं ३२ हेपुत्र तुमने जो पिताकी आज्ञा से वनजाने का विचार किया है उसको हम अब मिटाया नहीं चाहतीं क्योंकि समय बड़ा बलवानहै इष्टोंका वियोग सँय्योग कियाही करता है ३३ पुत्र अब एकाग्रचित्त हो वन को जाव सदा तुम्हारा कल्याण होवै जब लौट आवोगे तो फिर सब क्लेश हमारे जाते रहेंगे ३४ जब तुम पिता से अनृण हो कृतार्थ होके बड़े भाग्यशाली सदाचार निष्ठ होआवोगे तो परम सुख हम पावेंगी ३५ हे पुत्र भाग्य की गति किसी कोनहीं समझ पड़ती अहो बड़ी प्रबल है कि देखो हमारे वचनों को काट तुमको वनजाने केलिये प्रेरणा करती है ३६ अच्छा अब इस समय वनको जाइये कल्याण सहित फिर आइये व हमको समझाय

बुझाय निर्म्मलचित्त से प्रसन्न कीजिये ३७ ईश्वर करैं वनसे लौटने का समय अभी आय जाय कि वनसे आयेहुये जटा वल्कल धारण कियेहुये तुमको देखें ३८ ॥

हरिगीतिका ॥

वनवास निश्चित रघुवरहिलखि परम चित्त सों मातहू ।
वर वचन बोलीं अधर खोलीं रुचिर मुख जलजातहू ॥
स्वस्त्ययन मंगल करन लागी प्रेमपागी आपहू ।
रघुनाथ नायहु माथ चरणन मातु के गुण जापहू ॥ १ । ३९॥

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुर्व्विंशस्सर्ग्गः ॥ २४ ॥

कौशल्याजी उस परमक्लेश को मिटाय पवित्र जलसे आचमन कर रामचन्द्र की यात्रा के लिये मङ्गल करने लगीं १ हे रामजब रोंकना मानतेही नहीं क्योंकि सर्व्वथा तुम्हें पिता के वचन पालना अङ्गीकार है तो अबजाइये ईश्वरकरैं शीघ्र लौटिये व सज्जनोंके मार्ग्गमें चलिये २ धारणा शक्ति व नियम से जिस धर्म्म की पालना तुम करते हो वही धर्म्म तुम्हारी रक्षा करै ३ मार्ग्ग में जिन जिन चौरहों व देवमन्दिरोंके तुम प्रणाम करोगे उनके देवगण सब महर्षियों के साथ तुम्हारी रक्षा करें ४ जोजो अस्त्र बुद्धिमान् विश्वामित्र जीने तुमको दिये हैं वे सब सद्गुण युक्त तुम्हारी रक्षाकरैं ५ हे पुत्र पिता व माता की शुश्रूषा से व सत्यता से रक्षित बहुतदिनों तक जीवो ६ ब्राह्मणों के होम कईंधन कुश वेदी व देवमन्दिरों के स्वामी देवगण सब पर्व्वतों के देव बड़े छोटे सब वृक्ष सब कुण्डों के देव तुम्हारी रक्षाकरैं ७ सब कीट पतङ्ग सर्प्प सिंह साध्य गण विश्वेदेव व उञ्चासो पवन सब ऋषियों के साथ तुम्हारा कल्याण करें ८ व धाता विधाता पूषा अर्य्यमा इन्द्रादि लोकपाल तुम्हारा कल्याण करैं ९ छः ऋतु बारहमास सबसँव्वत रात्रिदिन व सब मुहूर्त्त स्वस्तिकरैं १० हे पुत्र सब अश्विन्यादि नक्षत्रों की देवता सूर्य्यादि ग्रह सब देवता श्रुति स्मृति में कहा धर्म्म ये सब तुम्हारी रक्षा करैं ११ भगवान् षडानन देव चन्द्रमा इन्द्र वृहस्पति सप्तर्षि व नारद सब तुम्हारी रक्षाकरैं १२ सब दिशा व सब दिगीश्वरों की स्तुति हम करतीहैं कि वे वन में तुम्हारी सब ओरसे रक्षाकरैं १३ सब पर्व्वत सब समुद्र

कुवेर वरुणआकाश अन्तरिक्ष पृथिवी पवन आदि सबचर अचरजीव१४ दिन रात्रि सन्ध्या कला काष्ठा आदि सब वन में तुम्हारी रोज २ रक्षा करते रहैं व कल्याण देतेरहें १५ मुनि वेष धारण किये महा वनमें विचरते हुये तुमको देवता दैत्य सब सुखदायी होवें १६ राक्षस पिशाच दैत्यादि जितने क्रूर कर्म्म करनेवाले व मांस भक्षी हैं वन में इन किसी का भय पुत्र तुमको नहो १७ वानर बीछ डांश मशा सर्प्प कीड़ा मकोड़ा आदि वन में तुम्हें न दुःखदें १८ महा मदान्ध हाथी सिंह बाघ ऋक्ष अन्य भेड़िया आदि काटने वाले जीव जङ्गली भैंसा आदि सींग वाले अति कठोर जीव तुमको कष्ट न देसकें १९ इनको छोड़ औरजो दुष्ट जातेंमनुष्य मांस भोजन करनेवाले वन में रहते हैं उन सबकी मैं यहां पूजा करतीहूं कि तुमको वन में न मारैं २० जो जो शास्त्र तुमने पढ़े हैं सब तुमको कल्याणदायी हों पराक्रम सिद्ध हों तुम्हारी यह यात्रा सबके व तुम्हारे कल्याणहीके लिये होवे २१ पृथिवी अन्तरिक्षादिमें जितने दुष्ट देवता तुम्हारे मार्ग्गमें दुष्टता करनेवालेहैं उन सबसे तुम्हारा कल्याणहीहो २२ ॥

चौ० ॥ शुक्र सोम रवि धनद यमादिक। रक्षा करहिं तुम्हारि अनादिक ॥ राम दण्डकारण्य निवासी। तुमहिं देहिं येसब सुखरासी १। २३ अग्नि वायु अरु धूम पुनीता। ऋषिमुख च्युत सब मन्त्र विनीता ॥ तुमहिं आचमन करत सदाहीं। रक्षा करहिं रामवलि जाहीं २। २४ सर्व्व लोक प्रभु सब जगकारी। विधिऋषि गण सबजे असुरारी ॥ वनवासी रघुनन्दन तोहीं। पालहिं कृपा करहिं यहमोहीं ३। २५ ॥

इसरीतिसे माला गन्धाक्षतादि वस्तुतिसे कौशल्याजीने रामचन्द्रके मङ्गलके लिये सब देवतावोंकी पूजाकी २६ फिर महात्मा ब्राह्मणकी द्वारा रामचन्द्रजी के मङ्गल के लिये अग्नि में आहुत दिलाने लगीं २७ घृत सपेद फूलों की माला होम के लिये ईंधन सपेद सरसों आदि सामग्री कौशल्याजी ने एकत्र कराई २८ यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणने विधि पूर्व्वक हवन किया अन्तमेंभी शान्ति पुष्ट्यादि पढ़ीपढ़ाई आहुति देनेसे जो साकल्य बची उससे क्षेत्रपालको वलिप्रदान किया २९ मधु दधि घृत अक्षत ब्राह्मणों के हाथों पै धराय रामचन्द्र का वनमें कल्याण हो यह वचन

कहवाया ३० तब रामचन्द्रजीकी परम यशस्विनी माताने उसयज्ञ करा-
ने वाले ब्राह्मणको जो उसने मांगा दक्षिणादी फिर रामचन्द्रसे बोलीं
३१ हेराम वृत्रासुरके नाश करने पर जोमङ्गल इन्द्र को हुआ था वही
मङ्गल तुमको होय ३२ जो मङ्गल अमृतकी प्रार्थनाकरनेकेसमय गरुड़
कीमाता विनताने गरुड़के लिये किया वही मङ्गल तुमको होय ३३
अमृत उत्पन्न करने के समय दैत्यों को मारते हुये इन्द्र के लिये जो
मङ्गल उनकी माता अदिति जी ने किया वह मंगल तुमको होय ३४
तीनि लोक नापने के समय भगवान् वामनजी ने जब तीन बार चरण
उठाया था व उनकी माता अदितिजी ने जोमंगल उनको कियाथाहेराम
वही तुमको होय ३५ ॥

चौ०॥ऋतु सागर श्रुति द्वीपरुलोका । दिशा आदि तुमकाहिं विशो-
का ॥ करहिंरामअरु नाना मंगल । देहिंबहुरि तबमिटहिं अमङ्गल १। ३६
यह कहि सुत शिर अक्षत शेषा । जननी करि कीन्ह्यों शुभवेषा ॥
चन्दनादि सब गन्ध लगाये । राम माथमहँ अति मनभाये २ । ३७ ॥

फिर मूलिकानाम ओषधि कि जिसकीसिद्धताबहुतदिनोंसेजानतीथीं
जिसमें यह गुण था कि जो भीतर तक भी बाण आदि अस्त्र पैठजायँ तो
आपही निकल परें उसको रामचन्द्र के हाथमें बाँधदिया जिसमें कि वह
बहुत अपना गुणकरै इस विचार से मंत्र पढ़ पढ़ उसकी रक्षा की ३८
प्रथम तो मनमें मंत्र पढ़पढ़ रक्षा कीथी फिर प्रत्यक्ष में भीरामचन्द्रजीकी
प्रसन्नता के लिये मंत्र पढ़ा यद्यपि मारे दुःखके उससमय कौशल्या जी
पीड़ित थीं हर्षके साथ बोलना असम्भव था तथापि हृदय से नहीं ऊपरी
मनसे मानों हर्षितही हो बोलीं पर मारे प्रेमके गद्गद वाणीहो आई ३९
झुंकि के रामचन्द्र जी का मूड़ सूंघलिया व छाती से लपटालिया व बड़े
धैर्य्य से कहा पुत्र सुखपूर्वक जाइये ४० ईश्वर वहदिन बहुतही शीघ्र
लावे कि अरोग सब प्रयोजन कियेहुये अयोध्या में फिर आय राजमार्ग
में सुखपूर्वक चलते हुये तुमको देखें ४१ तभी सब दुःख नाश होंगे व
परमहर्षित मुख होगा जब वनसे आयेहुये तुम्हारा पूर्णमासीके चन्द्रमा
के समान मुख देखेंगी ४२ फिर परम कल्याण तो तब होगा जब पिता
के वचनों का पालनकर वनवास से यहां आय राजसिंहासन पर बैठोगे

व हम देखेंगीं ४३ अच्छा जाइये वनवास से मङ्गलपूर्व्वक यहां आय हमारी वधू व हमारे मनोरथ बढ़ाइयेगा ४४ हे राम शिवादि देवता व महर्षिलोग भूतगण देवता नाग सब जिनकी पूजा आजतक हमनेकीहै व सबदिशा वन जातेहुये तुम्हारा हित बहुतदिनोंतककरतेकरातेरहैं४५॥

हरिगीतिका ॥

अति आँशु पूरित नयन जननी सकल मंगलहू करी ।
विधि सहित रक्षाहित प्रदक्षिण रघुवरहि कीन्हीं खरी ॥
पुनिपुनि निहारत दुखहि टारत मिलत हृदय लगायकै ।
बहुवारइमि मिलिमिलिनिहारयहुमन न हारयहुमायकै॥१। ४६
यहिभांति जननि प्रदक्षिणा कृत तासु चरणन रामहूं ।
बहुबार वन्दन कीन्ह सीता सदन गे सुखधामहूं ॥
यशराशिरघुकुल तरणि राघव ज्वलित निजश्रीसोंसही ।
दुखित पुरजन हूं बिलोकत जात जातनसों कही ॥ २ । ४७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपंचविंशस्सर्गः ॥ २५ ॥

इसभांति कौशल्या जीके प्रणामकर माताके कियेहुये मंगल ग्रहण कर श्रीरामचन्द्र वनकोचले १माताके मन्दिरसेनिकसे राजमार्ग्गमेंझुण्ड के झुण्डमनुष्य खड़ेथे अपनेगुणोंसे उनकेहृदय मँथतेदेखते चलेजाते२ इस समाचार को परम तपस्विनी जनकनन्दनी जीने अभीतक नहीं सुनाथा उनके हृदयमें यही बातथी कि आज स्वामी को युवराजपदवी मिलैगी३ इसलिये प्रातःकाल होतेही देवपूजनादि करचुकीथीं महाराज दशरथ की सुमित्रादि रानियोंने जानाथा कि आज ये रानी होंगी इससे महाउर आदिसे पैरों कीपूजा व पट्टबन्धादिसे शिर कीपूजाकर रक्खीथी जानकी जी भी राजोंके धर्म्म अच्छीतरह जानती थीं राजकुमार श्रीरामको अभिषेक कराये हुये आने की राह देखती थीं ४ इतने में श्रीरामचन्द्र जी भी मन्दिरमें पहुँचेदेखा तोसब मन्दिर नानाप्रकारकी चित्रसारी आदिसे भूषितहैं सब प्रसन्नचित्त पुरवासिनी व सेवकी बैठीहैं आपने शोचा कि प्राणप्यारी से क्या कहैंगे कि वनको जातेहैं इसलिये कुछ उदासीन हो मारे लाज के नीचे मुख कर लिया ५ जानकी जी हर्ष के समय अति

चिन्तायुक्त शोक के मारे व्याकुल निज स्वामी को देख अपने आसन से उठ थरथराय कांपनेलगीं ६ श्री जनककुमारी को कांपती हुई देख श्रीरामचंद्र जोकि विशुद्ध चिदानन्द स्वभाव परब्रह्म परमात्मा थे जिनको दुःखकालेश भी कभी नहीं हो सक्ता मनुष्यलीला करने के लिये अवतार लिया था इसलिये हृदय में जो शोक किया था उसे न रोंक सके कि प्रकट न होता किन्तु देखतेही देखते सब शोक प्रकट होगया ७ श्री रघुनन्दन को मुखारबिन्द कुंभिलाये अतिउदास मन कुछ शोच करते हुये देख मारे दुःख के सन्तप्त हो बोलीं महाराज यह हर्ष के समय शोक कैसा ८ आज तो बृहस्पति देवता का पुष्य नक्षत्र है इसी में तो आप का अभिषेक ब्राह्मणों ने विचारा था क्या वह नहीं हुआ आप दुःखित कैसे हैं ९ सौ कामी लगा हुआ छत्र जल के फेना के समान श्वेत व नम्र आप के शिरपै लगाहुआ नहीं देखती इसका क्या कारण है १० फिर चंद्रमा व हंस के समान उजले दो चमर तुम्हारे मुखारबिन्द पै नहीं ढुरते इसका क्या कारण ११ फिर वन्दी मागध सूतादि हर्षितचित आप की स्तुति पढ़ते कियेहुये कर्म्म गाते नहीं देखती इसका क्या कारण १२ फिर राजतिलक पायेहुये आपके शिरपै वेदपारगन्ता ब्राह्मणों को मधु घृत दधि जल छिरकते नहीं देखती इसका क्या कारण १३ फिर मन्त्रीलोग सभासद लोग सब पुरवासी व राज्यनिवासी लोग नानाप्रकारके वस्त्र भूषण ओढ़े पहिरे आपके पीछे पीछे चलते नहीं देखपड़ते इसका क्या कारण १४ फिर सुवर्ण के भूषण पहिरेहुये अति बेग से चलने वाले चार घोड़े नहा नानाप्रकार के फूलों से शोभायमान रथ आपके आगेआगे चलता नहीं देख पड़ता इसका क्या हेतु १५ फिर सब लक्षण युक्त अति शोभायमान हाथी काले पर्व्वतके समान यात्रा के समय आपके आगे चलता नहीं देख पड़ता इसका क्या कारण १६ फिर सुवर्ण की चौकी अति मनोहर लिये आपके आगे चलता हुआ कोई सेवक नहीं देख पड़ता इसका क्या कारण १७ आपके अभिषेक की तो तयारी थी अब इस समय यह क्या हुआ जो मुखका रंग अपूर्व्व होगया हर्षका कहीं लेश भी नहीं लक्षित होता १८ इसभांति बिलाप करती हुई श्री

सीता जी से श्री रामचंद्र जी बोले कि परमपूज्य पिता जी हमें वन को जाने की आज्ञा देतेहैं १९ हे महाकुलीन कुल में उत्पन्न धर्म्म जाननेवाली व सदाधर्म्महीं करनेवाली जानकीजी जिसहेतु हमको वनवास होता है वह सुनो २० परम सत्यप्रतिज्ञ हमारे पिता राजा दशरथजी ने आगे कभी हमारी माता कैकेयी को दो वरदान दिये थे २१ सो जबराजा हमको राज्य देनेलगे तो कैकेयी ने धर्म्मसे बनाय जीत राजा से अपने दोनों वर मांगे २२ उनमें से पिताजी ने एकसे हमको चौदहवर्ष के लिये वनवास दिया व दूसरेसे भरतजी को राज्यगद्दी२३ सो हम अब वन जाने की तैयारी करचुके हैं केवल तुम को देखने आये हैं जब कभी भरत तुम्हारे प्रणाम करने आया करें तो उनके आगे हमारी बड़ाई न करना २४ क्योंकि जो लोग धन प्रतिष्ठा राज्यादि से सम्पन्न होतेहैं वे पराई बड़ाई नहीं सहते इससे भरत के समीप हमारे शूरता वीरता सुशीलता आदि के गुण कभी न कहना २५ व यह भी न आशा करना कि भरत हम को सबसे विशेष मानें किन्तु जैसे सब साधारण लोग घरमें रहतेहैं उसी रीति से रहना विशेषमान जो रानी होतीहै उसीका होताहै २६ इससे तुम जिस रीति से बनै भरत को प्रसन्न रखना क्योंकि राजाने उनको यौवराज्य दियाहै इसलिये राजा अब वहीं रहेंगे राजा की सेवा अवश्यही करनी चाहिये २७ व हम भी अब पिताकी आज्ञा पालने के लिये वनको जातेहैं तुम अब हममें चित्त लगाये हुई यहीं टिकी रहो २८ जब हम वनको चलेजायँगे तो तुमभी यहां व्रत उपवासादि नियम करती रहना क्योंकि हम वनमें मुनिवेष धारण किये रहेंगे फिर तुमको यहां शृङ्गारादिसे कुछ प्रयोजन नहीं२९ बड़े प्रातःकाल उठ स्नानादि कर विधि पूर्व्वक प्रथम देवताओं की पूजा करना फिर हमारे पिता दशरथजी की वन्दना करना ३० व हमारी माता कौशल्या भी एक तो बनाय वृद्धही हैं दूसरे हमारे वन जाने के शोक से और दुर्व्वल होजायँगी इससे उनका मान धर्म्मही के साथ करना किसी प्रकार का अन्तर न पड़ै ३१ कौशल्याजी को छोड़ औरभी जो हमारी माता हैं उनकी भी वन्दना प्रीति व अपनपौ के साथ करना क्योंकि सब माता हमको समानहैं ३२ भरत व शत्रुघ्न को अपने भाई व

पुत्रके समान समझना क्योंकि वे दोनों हमको प्राणसे अधिकप्यारे हैं ३३ भरतके साथ थोड़ाभी बिगार न रखना क्योंकि वे राज्य व कुल दोनों के राजा हैं ३४ राजा लोगों का स्वभाव होताहै किजो अच्छी युक्तिसे उनकी सेवा करौ तौतो वे प्रसन्न रहते हैं नहीं तो जो कुछ भी अन्तर पड़ा तो अप्रसन्न रहते ३५ ॥

चौ० ॥ छुअतहिं मनहुँ हतत गज जैसे। सुंघतहि भुजग मनहुं पुनि तैसे॥ हँसतहितिमि मारत भूपाला। मनहुंदुष्टजन मनत काला १। ३६ औरस सुतहु अहित कर होई। तजत भूप संशय नहिँ कोई॥ समरथ नर सम्बन्ध विहीनहु। ग्रहण करत नरपति अति दीनहु २। ३७ जनक कुमारि भरत नृप केरो। रुख राखत करु यहां बसेरो॥ सत्यव्रत रत धर्म्म परायन। रह्यहु सदा यह है मम बायनं ३। ३८ महावनहि हम जात प्रिये सुनु। यहां बसहु तुम निज मन महँ गुनु॥ कबहुन अप्रिय किह्यहु कोहु केरो। वचन हमार यहै हियहेरो ४। ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषड्विंशस्सर्गः॥ २६ ॥

सदा प्रियकरने के योग्य व प्रियवादिनी जनककुमारी से जब श्रीरामचन्द्र जीने ऐसा कहा तो मारे स्नेह के कुछ क्रोध किया कि हम को यहां रहने को कहते हैं आप वन जाया चाहते हैं इसलिये अपना स्नेह जनाती हुई कुछेक कोपके साथ श्रीरामचन्द्र जीसे बोलीं १ हे पुरुष श्रेष्ठ यह छोटे मनुष्यों के समान अधीनताई के साथ क्या कहते हो तुम्हारे वचन सुन हमको हँसी आती है २ क्योंकि ये अति अधीनताके वचन शस्त्रास्त्र में चतुर राजकुमारों के कहने के योग्य नहीं ऐसे वचनों में उनका अपयश होता इससे सुनने के योग्य नहीं हैं ३ अयेस्वामिन् पिता माता भ्राता पुत्र पतोहू ये सब अपने अपने भाग्य के भरोसे रहते व अपनीही पुण्य को भोगते हैं ४ परन्तु स्त्री पुरुष की अर्द्धाङ्गी होने के हेतु अपने पतिही के भाग्य को भोगती है इससे हमें भी यही आज्ञा दीजिये कि तुमभी वनको चलो ५ क्योंकि स्त्रियोंकी गति एकपतिही है चाहै इस लोक में हो चाहे परलोक में पिता पुत्र अपना जीव माता सखी ये कोई स्त्री की गति नहीं हैं ६ इससे जो आप अभी वनको जाते हैं तो

हम कुशकाँटा आदि गोंजती हुई आप के आगे आगे जायंगी ७ इससे इस बातको न मानिये कि ये हमारे वचन नहीं मानतीं आप हमको साथही लेतेचलिये हममें कोई पापनहीं जिससे छोड़े जाते हो रहा यह कि यहां नानाप्रकार के सुख भोगती हैं वनमें कन्दमूलादि भोजन से कैसे निर्व्वाह होगा सो भी कुछ सन्देह नहीं जैसे भूंड़ के देशों में जहां अधिक जल नहीं मिलता तो मनुष्य एकबार पीनेसे बचाहुआ पानी फिर पीलेते हैं जिसके पीनेसे धर्म्मशास्त्र के अनुसार अधर्म्म व वैद्यकशास्त्र के अनुसार रोगहोता है इसी भांति जब अन्न मिलहीगा नहीं तो फलादिही भोजन करेंगी ८ स्त्रियों को धवरहर आदि उत्तमस्थानों में विहार करने से विमानोंपै चढ़ आकाश में विहरने आदि सुखों से भी अधिक सुख व वेद स्मृति के अनुसार धर्म्म पतिकी सेवामें है ६ हमारे पिता माता ने भी विविध भांति यही सिखलाया है कि पति की सेवा करना इससे जो विचार हमने कियाहै उसका आप निषेध न कीजिये १० हम अति कठिन पुरुषहीन नानाप्रकार के मृगगणों से भरे व्याघ्र सिंहादि के घूमतेहुये वनको चलेंगी ११ तीनों लोकों के सुखकी चिन्तना न करेंगी केवल पतिव्रतही की चिन्ता करेंगी जैसे पिताके घर में सुख से रहतीथीं वैसेही आपके साथ वनमें बसेंगी १२ वनमें आपकी सेवा करेंगी व जो जो नियम बताइयेगा उसके अनुसार ब्रह्मचर्य्य धारण करेंगी सुन्दर महकते हुये वनों में अपूर्व्व पदार्थ देख देख आपके संग प्रसन्नचित्त रहेंगी १३ फिर वनमें आप अकेले तो सब संसार का पालन करसक्ते हैं क्या हमाराही पालन न कर सकोगे १४ अबतो हम वनको तयारहैं आपके रोंकनेसे न मानेंगी क्योंकि धर्म्मशास्त्रानुसार पति के संगही स्त्रीका रहनाठीकहै हम अभी आपके संग चलती हैंइसमें कुछ भी संशय नहीं१५ वनमें फलमूलादि हमभी भोजनकरेंगी भोजनादि के लिये कुछभी दुःख आपको न देयंगी आपके आगे चलेंगीव जब आपभोजन करचुकेंगे तो बचेखुचे फल हमभी भोजन करेंगी १६ प्राणनाथ आप ऐसे बुद्धिमान् स्वामीके साथ निर्भय हो नदी पर्व्वत छोटे छोटे ताल बड़ेबड़े ताल सबकहीं के देखा चाहती हैं १७ फिर हंस कलहंसादि पक्षी बैठीहुई तड़ागों से प्रफुल्लित कमलिनी भी सुख पूर्व्वक आप धीर के सङ्ग

घूमती हुई देखा चाहती हैं १८ वहां जो जो नदी तड़ागादि पुण्यतीर्थ मिलेंगे आपके सङ्ग सबमें अभिषेक करेंगी व सबप्रकार के सुख अपूर्व पदार्त्थों के देखने से होंगे १६ इसप्रकार चौदह वर्ष तो क्या सहस्रों सैकड़ों वर्षतक आपके सङ्ग वनमें रहने से कोई खराबी नहीं समझती क्योंकि उस सुखके आगे प्राणनाथ तुम्हारे बिना स्वर्ग्ग के सुखभी हमारे मतसे कुछनहीं २० बिना आपके जो स्वर्ग्गमें भी हमारा वासहो सो भी हमको नहीं रुचता २१ ॥

चौ० ॥कपिमृग गज सेवित चहुंओरा । दुर्ग्गमवनहिँ चलब मतमोरा ॥ तव आज्ञावश करि नितसेवा । पितुगृह समबसि वन सुखलेवा १ । २२ लगी अनन्यभाव तुममाहीं । अरु अनुरक्त चित्त तुमपाहीं ॥ तव बिन जियब न कौनिउं भांती । सँग लैचलहु नाथ वलिजाती २ । २३ इमि वन गमन हेतु वैदेही । कह्यहु भांतिबहु जानि सनेही ॥ धर्म्म धुरंधर श्रीरघुनाथा । पस्न चहत वनगम त्यहिसाथा ३ वन निवास दुख बहुत देखावत । बोले जानकि सों समुझावत ॥ ज्यहि विधि वनहि न जनक कुमारी । जाइँ आपसो यतन विचारी ४ । २४ ।

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तविंशस्सर्ग्गः॥ २७ ॥

अति धर्म्मज्ञ धर्म्मवत्सल श्रीरामचन्द्रजीने ऐसा कहतीहुई जानकी जीको वनमें नानाप्रकार के दुःखोंकी चिन्तनाकर चाहा कि न लेजायँ १ यह विचार रोदन करती सीताजीको समझातेहुये वन न जानेके लिये बोले २ हे जानकि तुम बड़ीकुलीनहो व सदा धर्म्महो करतीहो यह अपने मनमानी बात न करो यहां रहकर धर्म्म करो ३ जैसे हम कहते हैं वैसा करो वनमें बहुत दोषहैं उनमें कुछ कहतेहैं सुनो ४ वन जानेका मन न करो जहां बहुत दोषहों उसीका वन नामहै ५ हम तुम्हारे भलेके लिये कहतेहैं वनमें सदा दुःखही होतेहैं सुखकभी नहींहोता ६ क्योंकि पर्व्वतों से ठौर ठौर बड़ी बड़ी नदियां बहती हैं जिनका उतरना कठिन है पहाड़ों की कन्दराओंमें सिंह व्याग्घ्रादि गर्ज्जते हैं जिसे सुनतेही महा-दुःख होताहै ७ वे सब निश्शङ्क वनमें घूमाकरते हैं मनुष्य कहींनहीं देख पड़ते हम लोगोंको देख खायलनेके लिये दौड़तेहैं इससे वन दुःखही देता

है ८ नदियों में बड़ेबड़े घड़ियाल मकर सूस आदि होते हैं जो मनुष्यों को जीतेही निगलजाते हैं फिर उनमें बड़ेबड़े दलदल होते जिनमें जीव फँस जाते हैं मतवाले हाथी चिग्घाड़ मारते हैं इससे वन अतिदुखदायी है ६ फिर जितने वनमें मार्ग्ग होतेहैं सबमें नानाप्रकार टेढ़ीमेढ़ी लता कांटा आदि होतेहैं वनमुर्गियां ठौरठौर बोला करतीहैं पानी दूरतक मिलताही नहीं इससे वन दुखदायीहै १० फिरअपने आप टूटेहुयेसूखे पत्तेपड़ेहोते हैं उन्हीं पर सोना पड़ताहै कहीं कहीं पत्तेभी नहींमिलते तो निरवरहरी भूमिही परसोना पड़ता है दिनके चले चलाये रात्रिमें थक जानेपर नीचे ऊंचेका विचार नहीं रहता जैसे तैसे परही रहना पड़ताहै इससे वनदुखदायी है ११ फिर वृक्षसे अपने आप गिरेहुयेही फल भोजन करने को थोड़े बहुत मिलते हैं रात्रिदिन उन्हींके भरोसे सन्तोषकर बैठना पड़ता है १२ फिर फलभी प्रतिदिन नहीं मिलते कभी कभी उपवास भी करना पड़ता है जटाभी रखानी पड़ेंगी व वृक्षोंके बकले भी पहिरने पड़ेंगे १३ फिर देवता पितर और आयेहुये अभ्यागतोंकी पूजा प्रतिदिन करनी पड़ेगी १४ फिर नियमके साथ रहने के कारण चाहेजो ऋतुहो प्रातःकाल मध्याह्न सायङ्काल तीनबार स्नान करना पड़ेगा इन इन बातोंसे महादुःख-दायक वन है १५ फिर अपनेही हाथों से जब फूल पाता कुशादि लावेंगे तब ऋषियों के समान पूजा करनी होगी यह नहीं कि नौकर चाकर सेवक तोड़लावें हे प्रियेइससे वन दुखदायी है १६ फिर जितना मिलजायगा उतनेही से निबाह करना होगा वनवासियों को मनमाना भोजन कभी नहीं मिलता इससे वन दुखदायी है १७ वनमें वायु बहुत चलता रात्रिमें अँधियारी अधिक रहती नाना प्रकारके भय होतेही हैं सो गिनायही चुके इससे वनमें दुखही दुःखहै १८ हे प्राणप्रिये नाना-प्रकार के कीड़ा बीछी आदि जन्तु वनमें मारे अहङ्कार के घूमा करते हैं इससे अति दुःखद वनहै १९ वनमें जो नदियां होती हैं सबमें सर्प्प होते हैं कोईभी सीधे नहीं चलते बहुधा गली रोंक पड़ते हैं व मनुष्यों को देख दौड़तेहैं २० पांखी फनिगा बीछू कीड़े डांस मशा ये वनमें नित्य काटते हैं इससे वन दुखदायी है २१ वनमें बहुधा कटीलेही वृक्ष होते हैं कुश काशादि भी होते जिनके छूनेही से हाथ फटते इससे वन दुख-

दायी है २२ वनमें बसनेवालों को कायक्लेश बहुत होते भयजानो विविध प्रकार के होतेही हैं २३ वनमें बसने से क्रोधलोभ न करने होंगे नित्य तपस्याही करनेमें मन लगाना होगा भयदायक पदार्थों को देख डरना न होगा इससे दुःखदही बनहै २४ ॥

चौ० ॥ तासों वन न जाहु प्रिय जानकि । वनगति कबहुंन तुम्हरे मानकि ॥ बहुत भांति हम लखा विचारी । वन तव योग्य न जनक कुमारी १ । २५ ॥

दो० जनक सुता वन गमनलगि मतिनदीन रघुनाथ ।
तासु वचन नहिं कीन तिन बोली जोरे हाथ २ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टाविंशस्सर्ग्गः ॥ २८ ॥

रामचन्द्रजीके ऐसे वचनसुन अतीव दुःखित जानकीजी रोदनकरती धीरेसे बोलीं १ अयि प्राणनाथ वनवासमेंजितने दोष आपने गिनाये उन सबको अपने स्नेहके कारण गुणही समझिये २ व मृगसिंह व्याघ्र हाथी चीता अठपाये जीव सुरहगाय नीलगाह आदि वनके जीव जो आपने गिनाये ३ वे सब आपका अपूर्व्व रूपदेख भाग खड़े होंगे क्योंकि काल के भी काल होने के कारण आपसे सब डरते हैं ४ हे राम हम तुम्हारेही साथ चलेंगी क्योंकि हमारे पिताने यहीकह आप को दियाहै कि यह हमारी कन्या सीता तुम्हारे पीछेपीछे छायाके समान चलेगी फिर हम यहां कैसे रहसक्ती हैं हम तुम्हारे वियोग से प्राण छोड़ देयँगी रहना कैसे ५ हे राघव देवताओं के ईश्वर इन्द्र भी आपके समीप बैठी हमको अपने पराक्रम से कुछ नहीं करसक्ते फिर और की क्या गिनती ६ आपने कहा कि भरत की आज्ञाके अनुसार चलना सो बिना पतिके पतिव्रता स्त्री कहींजीसक्तीहै फिर हमतो जीहींगींनहीं उनकीआज्ञा के अनुकूल काम कौन करेगी ७ रहा यह कि आप डरते हैं कि वन के दुःख येकैसे सहेंगी सो कुछनहीं हमने अपने पिता जी केही घर में सुन रक्खाहै कि हमें वनमें बसना पड़ेगा फिर जो बात कर्म्महीमें लिखी है उसके लिये कौन शोच ८ यह बात हमने सामुद्रिक पढ़नेवाले ब्राह्मणों से सुनी थी जोकि लक्षणही देख जन्मभरके समाचार कहदेतेहैं इसलिये

तभीसे विचारती रहीं कि कब वनवास होगा हमको तो बड़ी अभिलाषाथी सो पूरीभई ६ ब्राह्मणों के वचन मिथ्या नहीं होसक्ते जो उन्होंने कहाहै वनवास अवश्य होना चाहिये इसीसे हम ब्राह्मणोंकी आज्ञा प्रतिपालन करने के हेतु आपके सङ्ग चलती हैं कुछ और किसी कारण से नहीं चलतीं १० इससे अब ब्राह्मणोंके वचन सत्य हों हमको आज्ञा हो कि आपके सङ्ग चलें ११ यह हम जानती हैं कि वनवास में विविध भांतिके दुःख होते हैं पर वे अजितेन्द्रिय पुरुषों कोही होते हैं नकि हम व आप सरिखे जितेन्द्रियोंको १२ फिर सामुद्रिक जाननेवालोंसेतो सुनाहीथा कि वनवासहोगा और एकदिन एकबड़ी तपस्विनी ब्राह्मणी हमारी माताकेलग आईथी उसनेभी हमारी माताके निकट कहाथा कि तुमवनमें बसोगी१३ इसीसे हमने कईबार पहले आपसे कहाथा कि वनक्रीड़ा करने चलिये सो अबतक नहीं हुआथा अबहुआ हमारी इच्छा वनमें आपके संग रहने की है लेते चलिये १४ हम वनवासके लिये तयार बैठीहैं क्योंकि वनवासी आपकी सेवा हमको रुचती है १५ हे स्वामिन् हम अपने प्रेमके भावसे आपके पीछे पीछे वन जाय पापरहित हुआ चाहती हैं क्योंकि हमारे पतिही देवता हैं १६ सो यहांही नहीं हमतो जानती हैं कि परलोक में भी आपही के संग रहेंगी क्योंकि इसविषय में ब्राह्मणों के मुखसे श्रुति भी हमने सुनीहै १७ कि इसलोकमें कुश जल हाथमें ले माता पिता जिस बर को अपनी कन्या विधि विधान से देते हैं वह इसलोक व परलोक दोनों में अपने उसी पति की स्त्री होती है १८ इसहेतु सदाचारिणी पति-व्रता अपनी स्त्री हमको संग किसकारण नहीं लेचलते १९ हम आपकी सेवकी पतिव्रता अति दीन सुख दुःख में समानचित्त व आपके सुख में सुखित दुःखमें दुःखितहैं हमें ज़रूर संग लेते चलिये २० जो ऐसी दुःखित्त हमको आप वनको नहीं लेचलते कितो विषखाय वा अग्नि में गिर वा जल में डूब प्राणत्याग करेंगी २१ इसरीति से अनेक भांति जानकी जी ने श्रीरामचन्द्र जीसे वनजाने के लिये कहा पर महाराजकुमार श्रीराम-भद्रजीने स्त्रीको वनलेजाना न प्रसन्नकिया कहा वनको तो न लेचलेंगे२२॥

चौ० ॥ इमि पति वचन सुना वैदेही । चिन्तायुत भई नहिं सुधिदेही॥ करनलगीं बहुभांति विलापा । अति दुख ल्यहिक्षण ता तनुव्यापा ॥१॥२३

चिन्ता करत ताहि लषि रामा । क्रोध करत जाना वन कामा ॥ जिमि न जाहिँ वन बहुत उपाया । करि समझायहु काम न आया २ । २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकोनत्रिंशस्सर्गः ॥ २६ ॥

श्रीजनक नन्दनी जब बहुत भांति बन न जानेके लिये समझाई गईं तो वनवास करनेही के लिये फिर पतिसे बोलीं १ जाना कि अवश्य श्री राजकुमार हमको यहीं छोड़ा चाहते हैं इससे मारे स्नेहसे कुछ कोपभी किया जिसमें कह देवें कि अच्छा चलीही चलो २ हेराम जोहमारे पिता जनकजी जानते कि तुम नाममात्रही को पुरुष का आकार कियेहौ व-स्तुतः स्त्रीही हौ तो तुमको हमैं न देते ऐसेको अपना दामाद न बनाते ३ हमको तो यह बड़ा सन्देह है जोआप हमें वनको न लेगये तोसंसार झूठा होजायगा क्योंकि सूर्य्य के समान तपते हुये आपको कहने लगेगा कि इनमें कुछ तेजही नहींहै नहींतो वनको क्यों न लेजाते ४ मनमें कौनसी बात विचार आप उदास हैं व यह भय तुम्हारे मनमें कहां से आई जो कि जिसमेरे मनसा वाचा कर्म्मणा और कोई शरण नहीं तिसेभी परि-त्याग किया चाहते हो ५ जैसे द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान्की स्त्री सावित्री पतिव्रताथी ऐसेही हमको आप अपनी आज्ञाकारिणी समझिये ६ हेरामभद्र हम आपही के सङ्ग चलेंगी क्योंकि अन्य कुलटा स्त्रियों के समान हमनहीं हैं कि जिसी किसीको पावें उसीके वशमें होबैठें आपको छोड़ मनसेभी कभी अन्य पुरुष को देखने को नहीं चाहती ७ देखिये कुमारही अवस्था में हमारा आपके सङ्ग बिवाह हुआ तबसे आपकी सेवा करती हैं व आप ऐसे समर्थहो जोलोग अपनी स्त्री अन्य पुरुषों के पास भेज भेज जीविका करतेहैं उनके समान हमें औरोंको दिया चाहते हो ८ जिस भरत के हितकी बात आप कहतेहो व जिसके लिये तुम्हारा अभिषेक रोका गया तुम्हीं तिसके आज्ञाकारी न सेवक होवो हम यहां रहके उनकी सेवकाईन करेंगी न उनके वशमें रहेंगी ९ इससे आप बिना हमको लिये बनको न जाइये हमें तुम्हारेही संग रहना अच्छाहै चाहे तपस्याहो व वनवास वा स्वर्ग्गवास १० हमको आपके पीछे पीछे वन में चलने से कुछभी परिश्रम न होगा मानो विहार के बिस्तराही परबैठी

हैं ११ ये जो वन के मार्ग में कुशकाश सरपत आदि के बिछौना हैं व और औरभी कँटीले वृक्ष हैं वेसब आपके संग रहने से हमको रुई मृग-चर्म्मादि नरम वस्त्रों के समान सुखदायी होंगे १२ गलिमें जोपवन से उड़के धूलि हमारे ऊपर पड़ेगी वह आपके संग होनेसे उत्तम चन्दन के समान शोभा व सुख देगी १३ बनमें आपके संग हरेरी घासपर शयन करना नानाप्रकार के चित्र विचित्र नरम वस्त्रों के ऊपर शयन करने के सुखसे असंख्यगुण अधिक सुखदेगा १४ वहां पत्र मूलफल थोड़ा वा बहुत जो कुछ आप अपने कर कमल से लाय हमको देंगे वह हमें अमृत के समान हितकारी होगा १५ वहां जिस ऋतुमें जो पुष्प व फल होंगे उनके भोजन करने व सूंघने के समय हम न पिताकी कभी सुधि करेंगी न माताकी न घरकी १६ हमारे लिये वनमें आपको कुछभी दुःख न होगा न कुछ शोचही होगा इससे यह न आपको कहना पड़ेगा कि इनको वन लाये अब कैसे पालन पोषण करें १७ यह आप अच्छी तरह जानलेयँ कि जो हमको आपके साथहै वहतो स्वर्गहै व जो आपके बिनाहै वही नरक इससे परम प्रीतिके साथ हमें संगलेते चलिये १८ बहुत कौनकहै जो हमको आपवनको नहीं लियेचलते तो हमअभी बिषपानकर मरजायँगी पर शत्रुरूप भरतादिकोंके वशमें न रहेंगी १९ क्योंकि हेप्राणनाथ जोआप हमें यहां छोड़ जायँगे तो आखिर बिना आप के हमारा मरणहीं होगा तो अभी आप के सामने ही का मरना अच्छाहै २० हम आपके वियोग में मुहूर्त्त भर भी नहीं जी सक्तीं फिर चौदह वर्ष को कौन कहै २१ इस भांति मारे शोक से सन्तप्त जानकी जी करुणापूर्व्वक बहुत रोय निज स्वामी रामचंद्रजी को लपटाय बड़े ऊंचे स्वर से रोने लगीं २२ क्योंकि रामचंद्र जी के बाण रूप बहुत वचनों से वेधी गई थीं जैसे कि विष में बुझाये हुये बाण लगने से हथिनी व्याकुल हो छट पटाय आंशु बहाने लगती वैसेही रोने लगीं रोदन के समय मानों आगे थल कढ़ी है जो बहुत समय की बटोरी हुई आग को छोड़ती ऐसा बिदित होता २३ व स्फटिक मणि के समान श्वेत रङ्ग के आंशु नेत्रों से मारे सन्ताप के गिरते मानों कमल से जल चूता था २४ पूर्णमासी के चं-द्रमा के समान विस्तृतनेत्रयुक्त जो श्री सीता जी का मुखारबिन्द था

यह शोकाग्नि वाफ लगने से सूख गया जैसे कि जल सूख जाने पै कमल सूख जाता है २५ जब रामचन्द्र जी ने देखा कि ये मारे दुःख के मूर्च्छित हो गई हैं तो दोनों हाथों से पकर हृदय में लगा विश्वास करातेहुये बोले २६ हे देवि तुम्हारे वियोग के दुःख से मिलेहुये स्वर्ग की भी हम इच्छा नहीं करते व जो तुमने कहा कि किस के डर से हमें सङ्ग नहीं ले चलते सो हमको कहीं से कुछ भी डर नहीं जैसे कि ब्रह्मा को कहीं से भय नहीं २७ हे सुमुखि तुम्हारे सब अभिप्राय व सुकुमारता को जान अभी तक तुम्हारा वनवास हमें नहीं रुचता था यद्यपि हम सब प्रकार से सब कहीं तुम्हारी रक्षा करने में समर्थ भी हैं २८ जो अपने साथ वनजाने के लिये तुमको बगदाया था कि न ले चलेंगे इससे यह प्रयोजन न था कि तुम्हारा परित्याग करना चाहते थे नहीं जैसे आत्मज्ञानी पुरुष प्रीति को नहीं छोड़सक्ता वैसेही हमतुम-को नहीं छोड़ सक्ते २९ सङ्ग चलने में कुछ सन्देह नहीं क्योंकि आगे के राजा लोगभी तो अपनी अपनी स्त्रियोंको ले वानप्रस्थ धर्म्ममें तत्पर वन को चले जाते सो यह तो धर्म्म ही की बात है हम भी तुम को वन को ले चलेंगे अच्छा जैसे सूर्य्य के पीछे पीछे उनकी स्त्री सुवर्चला चल-ती है वैसेही तुम भी हमारे संग चलो ३० हे जनककुमारि हम अपने मन से वन को नहीं जाते किन्तु पिता का सत्ययुक्त वचन हम को लिये जाता है ३१ क्योंकि यहपुत्रका धर्म्म है कि पिता माता के वश में रहै इससे हम पिता माता की आज्ञा का उल्लङ्घन कर जीही नहीं सक्ते ३२ जो कहो कि दैव के ऊपर विश्वास कर हमारे संग यहींरहो पिता के वचन न मानो क्या होगा सो नहीं क्योंकि दैव को कभी प्रत्यक्ष में देखते नहीं इस से वह अपने अधीन नहीं होसक्ता कि उसके भरोसे बैठे रहें व प्रत्यक्ष होनेके कारण माता पिता गुरू अपने अधीन हैं फिर इनके वचनों का क्यों न भरोसा करें ३३ जहां पिता माता गुरू इन तीनों को मनुष्य मानता है तहां अर्थ धर्म्म काम तीनों होते हैं व इन तीनों की सेवा कीगई मानों तीनों लोकों की आराधना हुई इसलिये पिता माता गुरू की आज्ञा मानने के समान भूलोक में पुण्य दायक और कुछ भी नहीं ३४ जैसे पिता की सेवा परलोक साधने में बलक्ती है

तैसे सत्य दान मान सहित दक्षिणा यज्ञ ये सब बलवान् नहीं ३५ जो कोई पिता माता गुरू की आज्ञा के अनुसार चलता है उसको स्वर्ग धन धान्य विद्या पुत्र व सबप्रकार के सुख कुछ भी दुर्ल्लभ नहीं ३६ जैसे पिता माता गुरू के आज्ञाकारी महात्मा लोग देवता गन्धर्व्व गोलोक व ब्रह्मलोक पाते हैं तैसे अन्य धर्म्म करनेवाले नहीं पाते ३७ इससे सत्य धर्म्म के मार्ग्ग पर चढ़ पिता जी जैसी आज्ञा हमको देते हैं हम वैसा करना चाहते हैं क्योंकि यह सनातन धर्म्म है ३८ इससे अब हमचाहते हैं कि तुमको दण्डकारण्य को लेचलें तुम अपने मनमें निश्चयकरो कि हम अपने स्वामीके साथ वनमें बसेंगी ३९ इससे अब हमारी आज्ञा है कि वनको हमारे संग चलो व जो जो काम वहां हम करें तुमभी करती रहो ४० ॥

चौ० ॥ ममकुल निजकुल सदृश विचारा । प्रिया तोर शोभन उजियारा ॥ जोपतिसंगरहनमनभावा । यहिसमशुभद नहींकछु गावा १ । ४१ सुमुखि करहु वन गमन तयारी । जोजो उचित होय सहकारी ॥ तवबिन अब मोहिं भावत नाहीं । स्वर्ग्गहु के सुख किमि सो काहीं २ । ४२ द्विजन्ह रत्नदीजै बहु आजू । देहु भिक्षुकन्ह भोजन साजू ॥ वन्दी मागध सूतन्ह काहीं । धनदै चलहु बिलँब कछु नाहीं ३ । ४३ भूषण जो बहुमोल तुम्हारे । अरुवर बसन जहां लग सारे ॥क्रीड़ा हेतु सुभग कछु जोऊ । होइ पदारथ दीजैसोऊ ४ । ४४ मम अरुनिज शयनीय पदारथ । बसन यान भूषण मुख आरथ ॥ प्रथम द्विजन दीजै बहुदाना । पुनि सो भृत्यन कहँ मनमाना ५ । ४५ जानि गमन वाञ्छित पति साथा । मुदित भई जानकी सनाथा ॥ भूषण बसन रत्न मणिनाना । देनलगीं सब कहँ करि माना ६ । ४६ अति प्रसन्न परिपूर्ण मनोरथ । सुनि पति वचनलही सब सोरथ ॥ धन अरु रत्नआदिसबकाहीं । देनलगीं मनसंशयनाहीं ६ । ४७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३० ॥

श्रीरामचन्द्र महाराज व श्रीजानकीजी का ऐसा सम्वाद सुन लक्ष्मण जी जोकि प्रथमहीं वहां आये थे शोकके मारे दुःख न सहसके १ भाई रामचन्द्रजी के चरणों में अच्छी तरह प्रणाम कर महायशस्विनी सीता

जी व महाव्रतधारी श्रीरामचन्द्र जीसे बोले २ भाई जो आपने मृगगण सेवित वनजाने का विचार किया है तो हमभी आपके पीछे पीछे धनुर्व्वाण लिये पहिलेही चलना चाहतेहैं ३ चारों ओरसे पशुपक्षी व मृगगण सेवित नानाप्रकारके रमणीय वन हमको साथले घूमिये ४ क्योंकि अयोध्या तो क्या बिना आपके संग न तो देवलोक गमन हम चाहते न देवता होही जाना चाहते न अन्यही सब लोकों के सुखों की अभिलाषा करते ५ जब वनके जानेके लिये लक्ष्मणजीने अनेक भांति कहा तो श्री रामचन्द्र जी ने नानाप्रकार समझाय बुझाय रोंका तब फिर लक्ष्मण जी बोले ६ भाई आपने तो प्रथम हमें भी चलने की आज्ञा दीथी अब इससमय क्यों रोंकते हो ७ जिसलिये हमें वन जाने के लिये निषेध करतेहो वह हमारे जानने की इच्छा है इस विषय में हमें बड़ा सन्देह है कि क्यों हमको रोंकते हैं ८ वनको चलने के लिये तयारहाथ जोड़े खड़े हुये अति वीर लक्ष्मण जी से महातेजस्वी श्रीराम बोले ९ हे वीर अति कोमल प्रकृति धर्म्मरत निरन्तर अच्छेमार्ग्ग में टिके हमारे प्राणके समान प्रिय सेवक भ्राता व सखा भी तुम हो १० इसमें कुछ सन्देह नहीं परन्तु जो हमारे साथ तुम भी वन को चलोगे तो फिर यहां कौशल्या व परम यशस्विनी सुमित्राका पालन पोषण कौनकरेगा ११ जो कहो कि राजादशरथ पालनकरेंगे तो उनकी गतितो विचित्रहै कि वे तो कामके वशीभूतहैं जिससे उनका विशेष कामचलेगा उसीका पालन करेंगे जैसेकि पृथिवी से वाफ निकलतीहै उसीसे बादर बनतेहैं फिर उसी पृथिवीहीमें बरसतेहैं बस कामवश होनेके कारण कैकेयी उनकी मति पलटा देगी १२ क्योंकि जब वह राज्यपावेगी तो महादुःखित कौशल्यादि सौतियोंके साथ बुराईके सिवाय भलायी कभी न करेंगी १३ न कहो भरत राजाहोंगे वही रक्षाकरेंगे सोवेभी अतिदुःखित कौशल्या व सुमित्रा की रक्षा न करेंगे क्योंकि जबभरत राज्यपावेंगे तो कैकेयीहीकी प्रतिष्ठाकरेंगे इन बेचारियोंकोकौन पूछताहै १४ इससे अपनेआप यहां रह कौशल्या का भरण पोषण करो चाहे राजा के अनुग्रह से करो हम इसीलिये तुमको यहां रखतेहैं हमारा यह वचन पूराकरो १५ ऐसाकरनेसे हममेंभी तुम्हारी परमभक्तिहोगी व कौशल्यादिकोंकी पूजाकरनेसे

अतुल धर्म्म भी होगा तुमतो धर्म्मज्ञ हो क्या नहीं जानते १६ हे लक्ष्मण प्राणप्रिय इतना हमारे निहोरेसे करो जब हम लोग भी वनको चलेजायँगे तो हमलोगों की माताओंको सुख न होगा १७ जब श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसा कहा तो बड़ेचतुर लक्ष्मणजी परमचतुर रघुनन्दनजी से बोले १८ हे वीर तुम्हारेही तेजसे कौशल्या व सुमित्राकी पूजाभरत करेंगे क्योंकि अपने मनमें शोचेंगे कि महातेजस्वी रामचन्द्रकी माताका पालन पोषण न करेंगे तो महाअनर्थ होगा १६ यदि राज्यपाय कैकेयी केमारे दुष्टमनकर कौशल्याकीरक्षा व सेवा भरत न करेंगे बड़ाही घमण्ड उनको होजायगा २० तो हम उन दुष्टमति भरतको मारही डारेंगे इस में कुछभी संशय न कीजिये व तिनके पक्षमें औरभी जो होंगे उनकोभी मारेंगे दशवीशको कौनकहै जो तीनोंलोक उनकी सहायता करें तो सब को मारडारूं फिर उसदुष्टा कैकेयीको क्या उसकी तोमारही डारेंगे२१ और जो कौशल्याजी के विषयमें आप कहतेहो सो वे तो हमें ऐसे सहस्रों मनुष्योंका पालनकरेंगी क्योंकि जिनके प्रसादसे सहस्रोंग्राम नेगीचारी नौकर चाकर पावेंगे २२ तिससे अपने भरण पोषणके लिये व हमारी माताके भरणके निमित्त अकेली कौशल्याजी समर्त्थ हैं हमेंऐसे पालकों की कुछभी आवश्यकता नहीं २३ इसलिये हमको अपनाअनुचर बनाइये सङ्गलेते चलिये हमारे लेचलने में कुछ विपरीत न होगा क्योंकि उनदोनों माताओंके पालनकी युक्ति बताचुके हैं इसयात्रामें हमतो सेवा करके कृतार्त्थहोंगे व आपको फल पुष्पादि लादेंगे इतना आपका भी कामहोगा २४ वनके जीवोंसे रक्षाकरनेके लिये रोदाचढ़ाया हुआ धनुष हाथमें लिये व फल पुष्पादि लेनेके निमित्त एक पिटारी भी लिये आप के आगे आगे गली बताते हम चलेंगे २५ तपस्वियों के भोजन करने वाले वनके मूलफल प्रतिदिन ले आया करेंगे २६ आप पर्व्वतों के कँगूरोंपै वा कन्दराओं में जानकीजीके संग विहरियेगा हम आपके जागते व सोतेमें सब प्रकारकी रक्षाकरेंगे २७ ऐसेवचनसुन श्रीरामचन्द्रजी अतीव प्रसन्नहुये व लक्ष्मणजीसे बोले कि बहुतअच्छा सबसुहृदजनोंसे पूंछलेवो हमारे संग वनको चलो २८परन्तु राजाजनकजीके यज्ञमें जोदो धनुष वरुण जीने प्रसन्न हो राजा जनक को दिये थे २६ व दो अभेद्य कवच

दोतरकस चाहे जितने वाग्ण उसमें से निकालो पर वे पूरेही बने रहें व दो खड्ग जिनमें कबुजा मियान आदि सब सोनेहीं केथे व जिनकी दीप्ति सूर्य्यकी ज्योतिके समान थी ३० राजाजनकजीने ये सब आयुध हमको दायज में दिये थे हमने सत्कार पूर्व्वक गुरूके घरमें स्थापित करदिये थे हे लक्ष्मण वे आयुध तुम शीघ्रही लावो ३१ यह सुन लक्ष्मणजी अपने सुहज्जनों से वनवास के लिये पूंछ पांछ गुरुजीके यहां जाय सब आयुध ले आये ३२ उनपर फूल चन्दनादि सब चढ़े थे लेकर श्रीरामचन्द्रजी को दिखाया ३३ आयुध देख अति प्रीतिसे श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी से बोले हे लक्ष्मण भले समय पर आये ३४ क्योंकि ॥

चौ० ॥ जोमम धनसो सबहम आजू । दीम चहत विप्रन युतसाजू॥ जे तपस्वि तेजसी महाना । तब सँग तिन्हें देव नहिंआना १ । ३५ कछु द्विजमम ढिंग कछु गुरु सदनू । सब विद्या युत गत मद मदनू ॥ लावहु तिन्हें बहुरि सब सेवक । लावहु देव तिन्हेंनहिं भेवक २ ।३६ नाम सुयज्ञ वसिष्ठ तनूजा । विप्रप्रवर नहिं आसम दूजा ॥ लावहुतिन्हें पूजि हम ताहूँ । अपर द्विजन पूजत बनजाहूँ ३ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकत्रिंशस्सर्गः ॥ ३१ ॥

भाई रामचन्द्रजीकी आज्ञा पाय जिससे कि उनको भी सङ्ग चलने को कहा है इससे अति प्रसन्न मनहृवै लक्ष्मण गुरुपुत्र सुयज्ञजीके मन्दिर को गये १ वहां देखातो स्नान किये सुयज्ञजी जहां अग्निहोत्र करनेके लिये अग्निस्थापन रहता वहीं बैठे पूजा कररहेहैं देखतेही कहा मित्र चलिये रामचन्द्रजी आपको बुलाते हैं देखिये तो सही कैसा दुष्कर कर्म्मकररहे हैं २ यहसुन सुयज्ञजी प्रातःकाल की सन्ध्याकर लक्ष्मणजी के साथ आय लक्ष्मीयुक्त रामचन्द्र के मन्दिर में पहुँचे ३ सकल वेदवेदान्त वादी सुयज्ञजीको देख जोकि अग्निकी ज्वालाके समान देदीप्यमानथे सीता समेत श्रीरामचन्द्रजी हाथजोड़ खड़े हुये ४ व जो भूषण मणिजटित सुवर्ण के अङ्गद कुण्डल जंजीरें मोहनमाला कण्ठा कङ्कण आदि आप धारणकिये थे सब सुयज्ञजी को पहिराये ५ औरभी बहुत रत्नादि दिये उसी बीचमें जानकीजी ने रामचन्द्रजी से कहा आपने तो

अपने सखा सुयज्ञजीको अपने सब भूषण दिये हम भी इनकी स्त्री के लिये अपने भूषण दिया चाहती हैं क्योंकि वे हमारी सखी हैं यहसुन रामचन्द्रजी सुयज्ञजीसे बोले ६ हे सखे हार सुवर्णकी जँजीर क्षुद्रघण्टिकादि सब अपने भूषण सीताजी दिया चाहती हैं अपनीस्त्रीके लिये लिये जाइये ७ इनके सिवाय बहूंटा ककना तिलरी पचलरी चम्पकली आदि जितने विचित्र भूषण हैं ये हमारे साथ वनको जाती हैं इसलिये आप व आपकी स्त्री को दिया चाहती हैं ८ सोनेका पलँग भी कि जिसके पावों में व पट्टियों में बड़े बड़े मोलके हीरे पन्ने आदि जड़े हैं व जिसके ऊपर लक्षों रुपयों की तयारी का बिछौना है जनक कुमारी आपकोदिया चाहती हैं क्योंकि वैसेभूषण धारण किये आप दोनों इसी प्रकार की शय्यापै शोभित होंगे ९ व हम अपना शत्रुंजय नाम हाथी सब भांति सजा सजाया सहस्र निष्क दक्षिणा समेत आप को देंगे इसमें किसीका भी साझा नहीं क्योंकि हमारे मामा ने हमींको दियाथा १० इस भांति जब सुयज्ञजी कहेगये तो राम लक्ष्मण सीता तीनों जनों के भूषणादि ग्रहण कर तीनों जनों को कल्याण रूप आशीर्व्वाद देनेलगे ११ इसके पीछे प्राणप्रिय भाई लक्ष्मणजीसे श्रीरामचन्द्र जी फिर बोले जैसे कि ब्रह्माजी इन्द्र से बोलते हैं १२ भाई वसिष्ठजी के पुत्र की पूजा तो हुई अब अगस्त्यजी के पुत्र को व विश्वामित्रजी के पुत्रको भी बुलावो व नाना प्रकार के रत्नों से ऐसी पूजाकरो जैसे पानी की वर्षा से अन्न सींचा जाता है १३ प्रथम तो सोने से सींगें चांदी से खुर तांबे से पीठ मिढ़ा मोतियों की झालरि लगेहुये रेशमी वस्त्र ओढ़ाय ओढ़ाय सहस्र सहस्र गाय दोनों जनों को दीजिये तदनन्तर और भी सोने चांदी व मणियों के भूषण दीजिये १४ व जो ब्राह्मण यजुर्व्वेदकी तैत्तिरीय शाखाओं का आचार्य्य है व सब वेद वेदांग जानताहै कौशल्या जी को नित्य यज्ञ कराता व आशीर्व्वाद दियाकरता है १५ तिसको सवारी दासी रेशमी वस्त्रादि व धन इतना दिलाइये जितनेमें सन्तुष्टहो-आप उसे मांगनेकी इच्छा फिर न रहै १६ व चित्ररथ नाम सारथिको जोकि बहुत दिनोंका नौकर है व अति वृद्ध है इसेभी बड़े बड़े मोलके रत्न वस्त्र धन से सन्तुष्ट कराइये १७ व जो ये ब्राह्मण लोग कटकालाप

सम्बन्धि शाखाध्यायी हैं व जो ब्रह्मचारी लोग हैं उनको गाय भैंस बैल जो जो चाहें सब दिलाइये १८ व जो लोग वेदही पढ़ा लिखा करते हैं स्वादिष्ठ अन्नादि माँगने के आलसीहैं बड़े बड़े महात्मों में उनकी गणना है व्रतोपवासादि कुछ नहीं किया करते १६ उन लोगोंको बड़ेबड़े गाड़ी में चलनेवाले सहस्रों बैल सब प्रकार के अन्न चना मूंग आदि व्यंजन बनाने के लिये व घी दही आदिभी दिलाइये २० व जो ब्रह्मचारीलोगों के झुण्ड के झुण्ड विवाह करने की इच्छा से कौशल्याजी के यहां टिके हैं उन प्रत्येक को सहस्र सहस्र गाय व सहस्र सहस्र निष्क दक्षिणा दिलाइये २१ जितना दान देनेमें हम लोगों की माता कौशल्याजी आन- न्दित हो उतना उतना सब ब्राह्मणों को धन दिलाइये २२ ऐसा सुन लक्ष्मणजी ने सब ब्राह्मणों को जैसा चाहिये धन दिया २३ फिर राम- चन्द्रजी सब नौकर चाकरों को बहुत बहुत धन दे बोले कि २४ लक्ष्मण के व हमारे मन्दिर में जब तक कि हम न आवें जितने जितने लोग अब रहते हो रहा करना खाली न पड़ा रहने देना जिसमें सब पदार्थों की रक्षा रहे २५ यह सुन जितने उपजीवी नौकर चाकर थे सबके सब दुःखित होगये तब श्री रामचन्द्रजी ने अपने खजान्ची को बुलवाय कहा कि अति शीघ्र बहुतसा धन लावो २६ खजान्ची सब सेवकों को अपने संग लेगया बहुतसा धन लदा लाया इतनी धन की राशि लगादी कि वह देखने के योग्य होगई २७ तब महाराज रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी ने बालवृद्ध ब्राह्मणों व अन्य दीन मनुष्यों को सब धन दे डारा २८ उन्हीं दिनों में उसी देश में एक गर्ग्गगोत्र का ब्राह्मण जिसका शरीर बनाय पीतवर्ण होगया था व त्रिजठ उसका नाम था वह फार कुदार व हर से खोद खनके अपनी जीविका करता था २६ तौभी प्रतिदिन उस को अन्न न मिलता था वह ब्राह्मण बहुतही वृद्ध था एक दिन उसकी स्त्री अपने भूखे बालकोंको ले दरिद्रता से पीडित तो थीही ब्राह्मणसे बोली ३० कि यह फार कुदार अलग बहावो अपने पुत्रों को संग ले रामचन्द्रजी को देखावो कि वे कुछ धन दें जिससे भोजन चलें ३१ स्त्रीके ऐसे वचन सुन एक बहुत फटी पिछौरी ले जिस गलीके जाने में रामचन्द्र का मन्दिर मिलता उसीमें चले ३२ त्रिजटमेंभी ऐसा ब्रह्मतेज था जिससे आने के

समय भृगु वा अङ्गिरा मुनि जान पांचयें फाटक के भीतर तक किसी ने रोंका नहीं ३३ श्रीरामचन्द्र जीके निकट जाय त्रिजटजी बोले हे राजकुमार मैं अति निर्द्धन हूं और पुत्र मेरे बहुत हैं ३४ नित्य वनमें जाय जो फार कुदार से खने खोदे कन्दमूलादि पाताहूं लड़कों को खिलाताहूं सो इन बालकोंकी दशा आप भी देख लें यहसुन श्रीरामचन्द्रजी कुछ हँसौवा करतेहुये बोले ३५ कि असंख्यों धेनु हमारे देशमें हैं उनमें से एकसहस्र भी अभीतक हमने नहीं दी आप अपने दण्डासे जहांतक की गाय बटोर सकें उतनी हम देदेयँ ३६ यहसुन ब्राह्मण ने तुरन्त अपना फटहा चादरा करिहावँमें बाँध जितना जोर उनमेंथा बड़ेबेगसे दण्डा उन्होंने बहाया ३७ वह ब्राह्मण का दण्डा सरयू नदीके पार बड़ी दूरपर जाय जहां बहुतसी गाय व बैलोंका गोंठ था वहीं गिरा ३८ धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्र ने यह दशा देख ब्राह्मण को छाती से लपटाय लिया व सरयू के किनारे से त्रिजट के आश्रम तक जितनी गायें रहीं सब ब्राह्मण के स्थानपर पहुंचा दीं ३९ व रामचन्द्र जी ब्राह्मण को समझाते हुये बोले कि आप क्रोध न कीजिये हमने हँसौवा कियाहै जो आपको दण्डा फेंकने के लिये कहा है ४० व आपके इस दुरत्यय तेजके जानने के लियेही हमने ऐसा कहा सो इतनी धेनु तो आपके स्थान पै पहुँच गईं अब और भी जो कुछ इच्छा हो मांगिये ४१ यह बात हम सत्यही कहते हैं कुछ इसमें बनावट सजावट की बात नहींहै क्योंकि जितना धन हमारे है सब आपऐसे ब्राह्मणोंको देनेहीके लिये है नकि भूमिमें गाड़धरने के लिये ऐसे ब्राह्मणों को देनेसे हमको बड़ी प्रसन्नता है क्योंकि इसमें बड़ा यश होता है ४२ यहसुन सहस्रों गाय और ले अति प्रसन्नचित्त त्रिजट जी अपनी स्त्री पुत्रोंके साथ श्रीरामचन्द्र जीको आशीर्व्वाद दे अपने स्थानको गये ४३॥

चौ० ॥ तब रघुबर परिपूर्ण सकल विधि। धर्म्म शक्ति अर्ज्जित सब ऋधि सिधि॥ दीन सकल सुहृदन कहँ नीके। जो जो चहा लहा सो ठीके १।४४ प्रथम द्विजन कहँ पुनि सब मित्रन। भृत्यवर्ग्ग पुनि दरिद विचित्रन॥ दीन सबहिं वांछित धन रामा। अस न तहां कोउ जो न सकामा २।४५॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्वात्रिंशस्सर्गः॥ ३२॥

ब्राह्मणादिकों को इसरीति से सब अन्न धनादि दे जानकी जी को संग ले रामलक्ष्मण दोनों भाई अपने पिताजी को देखने चले १ सेवक लोग दोनों भाइयों के धनुष बाण खड्गादि अस्त्र शस्त्र लियेथे सब हथियारों पर फूलों की माला चढ़ीहुई थीं चन्दनादि सब में लगा था २ मार्ग में जातेहुये श्रीराम लक्ष्मण व जानकी जीको सब अयोध्यावासी घवरहर कोठे कोठरी विमान कँगूरा आदि पै चढ़के बड़ी उदासी से देखते ३ गलियों में मारे भीरके कहीं नीबरे धूमरे के जानेके योग्य न था इसलिये दुखी गरीब धवरहरादि ऊंचे स्थानोंपै चढ़के रामचन्द्र जीको देखतेथे ४ श्रीरामचन्द्र जीको बिना छत्र लगाये पैदर जाते देख मारे शोक के व्याकुल लोग नानाप्रकार की बातें आपस में कहतेथे ५ हाय जिस रामचन्द्रजी के जानेमें पीछे पीछे चतुरंगिनी सेना चलती थी सीता केसंग पैदर जाते हुये तिन रामके पीछे अकेले लक्ष्मण चले जाते हैं ६ देखोजो राम सब ऐश्वर्य्यके सुखके जाननेवाले व सब अर्थियोंके अर्थ पूर्ण करनेवाले हैं बेमारे धर्म्मकी गरोईके पिताके बचन झूंठे नहीं किया चाहते ७ हाय जिनसीताजीको आकाशमें चलनेवाले भी प्राणी आज तक नहीं देखसक्तेथे उन जानकीजीको आजसब साधारणलोगभी राजमार्ग्गमें जातीहुई किजिसमें लक्षोंमनुष्य घूमते हैं देखतेहैं ८ हाय चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओंके लगानेके योग्य जानकीजीको वनमें वर्षा जाड़ गरमी विवर्ण करदेयगी ९ यहबाततो निश्चयहै किराजा दशरथ को कोई भूत प्रेत लगाहै जो ऐसा कहतेहैं नहींतो जोअपने स्वभावमें होते पराई धरी देह न होती तोऐसे प्रिय पुत्रको वनजानेकेलिये न कहते १० क्योंकि निर्ग्गुणभी पुत्रको कोईघरसे नहीं निकालदेता फिर ऐसेपुत्रको कि केवल जिसके स्वभावहीसे लोकजीत लियागया ११ अहिंसा दया विधिपूर्व्वक सकलशास्त्रों में अभ्यास सत्स्वभाव इन्द्रियों को अपने वश में रखना शान्तचित्त रहना ये छवोगुण श्रीरामभद्रको शोभित करतेहैं १२ तिससे ऐसे रामचन्द्र जीके वन जानेसे प्रजा अतिशय पीड़ित होगी जैसे कि जलसे जीव ग्रीष्म ऋतुमें पानी सूखजानेपै पीड़ितहोते हैं १३ भाई इस जगत्पति श्रीरामचन्द्रजीकी पीड़ासे सब संसार पीड़ित होगा जैसेकि जर काटडारनेसे फराफूला वृक्षसूखजाताहै १४ ये महातेजस्वी

रामचन्द्रजी इनसब मनुष्योंके मूलहैं व पुष्प फल पत्रशाखा आदि सब इतर मनुष्यहैं १५ इससे हम सबलोगभी लक्ष्मणके समान रामचन्द्रके पीछेपीछे जिसमार्ग्गमें वे जायँगे चलेजायँगे क्योंकि जबजड़ नहीं रहती तोवृक्षके पत्र पुष्पादि फिरकैसे रहसक्ते हैं १६ सबरमणीय फुलवारी खेतपात घर दुआर छोड़ बराबर सुख दुःख सहते रामचन्द्रही के पीछेपीछे चलेजायँगे १७ अबविना छापेछोप अँगनाई गिरेपरे सब धन धान्यादि अस्तव्यस्त हुये सबप्रकारसे विना सारांश १८ चारोंओर से कूड़ा करकट भरेदेवता रहित जहांतहां विलबनाय बनाय इधरउधर चूहे दौड़तेहुये १९ जल व धुआँहीन विना बहारे बटोरे बलि वैश्वदेव यज्ञहीन मन्त्र होम जपादि शून्य २० अकालके समयके समान टूटेफूटे फूटेटूटे बर्त्तन भरे हमलोगोंके छोड़े हुये ऐसेघर कैकेयीलेय २१ जिस वनको रामचन्द्र जातेहैं वही हमलोगोंको अयोध्याके समान दुःखदेगा व हमलोगोंके त्यागनेके कारण यह अयोध्या वन होजायगी २२ हमलोगों के डरसे वनमें सर्प्प बिलें छोड़देंगे मृगगण व पक्षी पर्व्वतोंकी गुहा व कँगूरा छोड़देंगे गजसिंहादि वनभी छोड़ भागेंगे २३ अच्छा अब हम लोगोंकी छोड़ी अयोध्या वनके जीवलेयँ व हम लोगोंके रहनेके लियेवन खाली करें तृण मांस फलादिहीन वनहोजाय देशमें ठौरठौर सर्प्प पक्षी व मृगगण घूमें २४ सब घरबार कैकेयी लेय हमसब लोग रामचन्द्र जीके साथ वनकोजायँगे २५ इस प्रकार नगर देशबासियोंकी विविध भांतिकी बातें सुनते श्रीरामभद्र चलेजातेथे हृदयमें शोक कुछनहीं करते थे २६ जातेजाते कैलासके समान पिताके मन्दिरके निकट पहुंचे २७ जहां कि सब सेवक बड़ीनम्रतासे खड़ेथे आगेचल देखातो सुमन्त्रजी खड़ेथे २८॥

चौ० ॥ जन पद नगर निवासि दुखारी । लषत जात पर आप सुखारी ॥ हँसत जात पितु सदनहिं रामा । जनक निदेश करन की सामा १ । २९ दुखप्रद वनहिजान हितरामा । लष्यहुसुमन्त्रहि सबगुण धामा ॥ पिता निदेश करनहित जानी।प्रमुदित मन बोल्यहुमृदुबानी २ । ३० धर्म्म धुरीण राम गुण सागर । पिता निदेश करन महँ नागर ॥ कह्यहु सुमन्त्र पिता सों आवन । वनहि जात हमसब विधि पावन ३ । ३१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रयस्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३३ ॥

जब रामचन्द्रजी ने सुमन्त्रजी से कहा कि पिताजी से हमारा आगमन कहो १ तो रामचन्द्रजीके पठाये सुमन्त्रजी मारे शोक के अतिव्याकुल राजमन्दिर को गये व वहां राजा को ऊर्ध्व श्वास लेते देखा २ उस समय महाराज दशरथजी की ग्रहण लगे हुये सूर्य्य भस्म में मूंदी हुई आग व बिन पानी के तालाव की दशाथी ३ राजा रामचन्द्रहीं को शोच करते थे मारे शोच के अतिव्याकुलचित्त थे सुमन्त्रजी हाथ जोड़ ४ जैसे पूर्व्वही आशीर्व्वाद देतेथे उस तरह न देसके किन्तु मारे भय के बहुत उदास हो धीरेसे बहुत मधुरवाणी से बोले ५ महाराज पुरुषसिंह श्री रामचन्द्र तुम्हारे पुत्र सब ब्राह्मणों व सेवकों को दान मान वस्त्र भूषणादि दे द्वार पै खड़े हैं ६ महासत्यपराक्रम श्रीराम अब वन जाने के लिये सब सुहृदों से पूंछ चुके केवल चलने के समय आपको देखने आये हैं ७ इसलिये अब आप वन को जातेहुये सब राजगुण सम्पन्न रामचन्द्रजी को देख लीजिये वे राजगुणों से ऐसे घेरे गये हैं जैसे सूर्य्य किरणों से घिरे रहते हैं ८ यह सुन सत्यवादी धर्म्मात्मा गम्भीरता में समुद्र के समान निर्म्मल आकाश के तुल्य स्वच्छ राजा दशरथजी बोले ९ हे सुमन्त्र हम चाहते हैं कि अपनी सब स्त्रियों के साथ बैठ श्रीरामभद्र को देखें इससे हमारी जितनी स्त्रियां हैं सब को यहां बुलालावो १० यह सुन सुमन्त्रजी रनिवास में गये व बोले कि तुम लोगों को महाराज बुलातेहैं चलो बिलम्ब न करो ११ पति की ऐसी आज्ञाजान सब स्त्रियां सुमन्त्रजी के कहने से तुरन्त जहां कैकेयी के निकट कोपभवन में राजा थे सब की सब गईं १२ कौशल्या कैकेयी सुमित्रा को छोड़ दशरथजी के तीन सै पचास और स्त्रियांथीं वे सब कौशल्याजी को आगेकर राजा के निकट आईं १३ जब सब स्त्रियां आय चुकीं सबको देख राजा सुमंत्र से बोले कि हे सुमंत्र अब हमारे प्राणप्यारे पुत्र श्री रामको लावो १४ यह सुन सुमन्त्रजी श्रीरामचन्द्र जानकी जी व लक्ष्मण जी को अतिवेग से महाराज के निकट लाये १५ हाथजोड़े श्रीरामचन्द्र को आते देख अपनी सब दुःखित स्त्रियोंके साथ राजा आसन परसे उठ खड़ेहुये १६ व रामभद्र को देख राजा बड़े वेग से दौड़े परन्तु मारे दुःखके मूर्च्छा आगई कि पृथिवी में गिरपड़े १७ तब मूर्च्छित राजाके निकट श्रीरामचन्द्रजी

व लक्ष्मणजी आये राजा को कुछ भी चेत न रहा १८ व उसी बीच में जोकि हजारों स्त्रियांथीं सबकीसब हाराम हाराम कहकररोयउठीं वरन वे भी गिर गिर मूच्छित होगईं १६ अब उस समय कोई ऐसा न था जिसे रामचन्द्रजी कहते कि पिताजी को उठावो क्योंकि सब क्या स्त्री क्या पुरुष जोकोई वहांथे सब मूच्छित होगये थे इसलिये श्रीरामचन्द्र जी व लक्ष्मणजी दोनों जन सहित जानकी महाराज को उठाय पलँग पै बैठाया २० दो घड़ीके पीछे राजा की मूर्च्छा जागी कुछ चेत हुआ तो श्रीरामचन्द्र अति शोकसागर में डूबते राजासे हाथजोड़ बोले २१ हेमहाराज आप हम सबोंके स्वामी हैं अब दण्डकारण्य को हम जाते हैं इसलिये आपसेपूंछते हैं कुशलपूर्व्वक हमें देख लीजिये २२ लक्ष्मण व सीता भी हमारे संगवनको जाती हैं बहुत बहुत सत्य सत्य कारणों से इनको रोंका पर ये दोनों किसीप्रकार नहीं मानते संग जातेही हैं २३ इसलिये अब आप शोक को छोड़ लक्ष्मण सीता व हमको आज्ञा दीजिये जैसे कि तपस्या करने को तयार सनकादिकों को ब्रह्माजीने आज्ञा दीथी २४ यह कह राजाकी आज्ञा को श्रीरामचन्द्रजी परखतेही थे कि वनवासके लिये होती है पर महाराज कुछ उसके विपरीत बोले २५ हे प्राणप्रिय राम जिससे कि हमने मोहित होके कैकेयी को वरदान दिया है हमारा चित्त उत्तर देने के योग्य नहीं रहा इससे हमको तो पकड़ एक कोने में जबरदस्ती बैठादीजिये और तुम अयोध्या के राजा बनो २६ धर्म्म धारियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जीने जब पिता के ऐसे वचन सुने तो बड़ी चतुरता से हाथजोड़ के बोले २७ हेमहाराज आपकी सहस्त्रों वर्ष की आयुहो वरन इससे भी अधिक बहुत दिनोंतक जीवें व पृथिवी के राजा बनेरहैं हम आपको थोड़ाभी झूंठा नहीं बनाया चाहते झूंठ कहनेसे तुम्हें नरक होगा इस भयसे हम वनहीं में बसैंगे २८ कुछबड़ी बात नहीं केवल चौदह वर्षतो हैं बस आपकी आज्ञा का पालनकर चौदह वर्ष बन में विहार कर आवें फिर आपके चरणों की सेवा आयकरेंगे २६ यहसुन कैकेयी फिर राजाको एकान्तमें लेजाय बोली कि अभी रामचन्द्र को वन को भेजो यह सुन क्या करें सत्यकी फाँसी में फँसे राजा बारबार खेदम करते श्रीरामचन्द्रजीसे बोले ३० कि हेतात अपने परलोकमें हित होने

के लिये व इसलोक में बढ़ती के लिये निर्भय हो वनको जाइये तुमको कहींसे कुछ भय न हो व तुम्हारा कल्याणहो ईश्वरकरै फिर कुशलपूर्वक लौटो ३१ हमने जानलिया कि सत्यात्मा व धर्म्मात्मा तुम्हारी वुद्धि अब किसीके लौटारनेके योग्यनहींहै ३२ परन्तु अब आजकी रात्रिभर यहां रहिजाइये किसीतरहसे न जाइये भला एकदिनतो तुमको देखलेयँ और आजतो तुम्हारे साथ भोजन करलेयँ३३ हमको व अपनी माताको देखते हुये इस रात्रि भर अवश्य यहांरहो फिर बड़े प्रातःकाल वनको चले जाना हम अब न रोकेंगे ३४ हेपुत्र बड़ा दुष्कर कर्म्म तुमकरते हो ऐसा कोईभी नकरसकेगा किहमारे प्रियके अर्थ अपने सबप्यारोंको व राज्य को छोड़े निर्ज्जन वनको जातेहो ३५ हेपुत्र हम अपने सत्यकी सौगन्द करतेहैंकि हमें यहतुम्हारा वन जाना किसीप्रकार प्रियनहीं पर क्या करें जैसे राखमें मूंदीआग धरीहो कोईमनुष्य बिना समझे हाथडालनेसे जल जाताहै वही दशा हमारी हुई कि हम इस स्त्रीके जालमें पड़गये इसने अपना प्रयोजन करलिया ३६ इस कुलचरित्रनाशिनी कैकेयीनेही हम को सिखलाया व जालमें डाराहै सोतुम ऐसेठहरे किइस दुष्टाके जालको भी काटाचाहतेहो अर्थात् धोखेमें आयकरभी जोहमनेकहा उसका प्रति-पालन करते हो ३७ हे पुत्र जो तुम अपने पिता को थोड़ा भी झूंटा नहीं बनाया चाहते यह कुछ बड़ा आश्चर्य नहीं क्योंकि सब गुण युक्त तुम हमारे ज्येष्ठ पुत्रहो ३८ इस भांति जब अति दुःखित अपने पिताके वचन सुने तब मनमें बहुत शोचकर कि हमने कैकेयी से कहाथा कि हम अभी वनको जातेहैं पिताजी मारे स्नेह के रात्रिभर और यहाँ रखना चाहते हैं जिसके करने से हमारे सत्यबोलने में अन्तर पड़ताहै इससे बहुत शोककर सहित लक्ष्मण श्रीरामचन्द्र जी बोले ३९ कि पिताजी जोगुण अभीके जानेमें हमको मिलेंगे वे प्रातःकाल के जानेमें हमको कौन देगा इससे हम सब कामोंको छोड़ आपके इस पिछले वचन का उल्लङ्घनहीं मांगते हैं जोकि आपने अपनी सत्यता के विपरीत हमारे स्नेहके मारे कह दियाहै कि आजकी रात्रि और यहाँ रहो ४० सहित राज्य सहित जन धन धान्ययुक्त यह पृथिवी हमने छोड़ी आप कृपाकर भरत को देदीजिये अब हमको इसमें न फँसाइये ४१ क्योंकि जो वर-

दान आपने प्रसन्नता से कैकेयी को दियाहै कि अच्छा रामचन्द्रको वन भेजेंगे व भरतको राजगद्दीदेंगे इसको पूरा करनेके लिये हमने जो वनवास करने के निमित्त बुद्धिकी है वह अब किसीप्रकार नहीं चलसक्ती४२ पिताजी अब इसमें आगे पीछे न कीजिये सब राज्यकोश भरत को देदीजिये आप सत्यवादी हूजिये हम जैसा कुछ आप कैकेयी से हारगये हैं वैसेही आपकी आज्ञाका पालन करते हुये ४३ तपस्वियों के साथ चौदहवर्ष तक वनमें बसेंगे इस विषयमें आप कुछभी विचार न करें पृथिवी भरत को देहीदीजिये ४४ क्योंकि हम जैसे कुछ आपकी आज्ञाका प्रतिपालन करना उत्तम समझतेहैं वैसा कुछ लोकदृष्टिसे अपना को सुख देनेवाले राज्यको नहीं प्रिय समझते ४५ आप अपना दुःख मिटाइये आँशू न गारिये देखिये नदियों का पति समुद्र इतना बड़ाहै पर चलायमान नहीं होता ४६ न हम राज्यकी इच्छा करतेहैं न सुखकी न जानकी की न सब इन जनोंकी न स्वर्गकी न जीनेकी ४७ केवल हम आपको सत्यवादीही रखनेकी इच्छा करते हैं झूठा किसी प्रकारसे नहीं बनाया चाहते प्रत्यक्षमें हम अपने सत्य व पुण्यकी सौगन्द करतेहैं ४८ हेतात सम्प्रि भरतो बहुत है हम अब क्षणभर भी यहां नहीं रहसक्ते हमारे जानेका शोक आप अपने हृदयमें धारण कीजिये हमने जो प्रतिज्ञा की है कि वनको जायँगे उसके विपरीत यहाँका रहना नहीं होसक्ता ४९ कैकेयी ने हमसे माँगाहै कि हेराघव वनको जाव तब हमने कहाथा कि जातेहैं इससे हम वे अपने वचनभी सत्यकिया चाहते हैं ५० हेराजन् प्रीतिके मारे रोदन न कीजिये हमलोग वनमें सुखपूर्व्वक बिहार करेंगे उसमें कष्टकी कौन बातहै वनमें प्रशान्तचित मृगगण घूमाकरतेहैं नानाप्रकारके पक्षी बोला करतेहैं ५१ हेतात पिता सब देवताओं का भी देवता है तिससे हम पिताके वचन दैवके समान करेंगे ५२ चौदहवर्ष बीतजाने पर फिर हमको आप देखेंगे यह सन्ताप जो हमारे वियोग का है उसे आप छोड़िये ५३ आपको चाहियेथा कि इन सब रोनेवालों को समझाते बुझाते सोआपही ऐसाशोक करतेहो फिर इन लोगोंको दिलासा भरोसा कौनदे ५४ अयोध्यापुरी राज्य व यह पृथिवी हमने प्रसन्नतासे छोड़दी आप भरतको देदीजिये हम केवल आपकी आज्ञा शिरपैरख वनवासकरने

के लिये अभी जातेहैं ५५ हमारी छोड़ीहुई यह सब पृथिवी कि जिसमें अनेकपर्व्वत अनेकखण्ड अनेकवन हैं व जिसकी सीमा बहुत अच्छी है उसकी पालना केवल भरतहीकरें आपने जो वचन कैकेयी से कहेहैं वेसत्यहों ५६ ॥

हरिगीतिका॥

महिपाल जिमि तव वचन पालन लगत मोहिँ सुहावनो ।
तिमि लगत नहिँ मन मोर नाना प्रिय सुखाकर पावनो ॥
मम हेतु त्यागहु दुख महीपति हमहिँ दुख वन में नहीं ।
तव कृपा तहँहु अनन्द रहिहहुँ वचन मन सों में कही ॥ १।५७
तासों महीपति सुनिय अव्यय राज्य अरु सब कामहू ।
वसुधा विदेह कुमारि जीवन आपनो शुभ धामहू ॥
नहिँ चहत तुम कहँ मृषावादी करि कछू यह भाषहूं ।
तुम होहु सत्य प्रतिज्ञ भूपति देहु यह वर माँगहूं ॥ २।५८
फल मूल भोजन करब वन में लषब गिरि सरितादिहू ।
विविधि तरुयुत वन विलोकब गिरिदरी सर वापिहू ॥
लहब नाना भांति सब सुख दुख कछू नहिँ तात है ।
तुमहू लहहु सुख शोक त्यागहु यहै मोहिं पोसात है ॥ ३।५९
महिप मणि इमि व्यसन महँ फँसि तापसों तनु तायकै ।
दुख दुखी उर लाय लीन्ह्यो सुतहि मूर्च्छा पायकै ॥
नहिँ तनिक चेत अचेतह्वै महिगिरेहु जिमि बिन मूलको ।
धरणी परत तरु सहित शाखा गति सोई नृप शूल को ॥ ४।६०
सब नृपति रानी कहत बानी रोय रोय निहोरि कै ।
बिन कैकयी सब बिपति सागर माहिँ डूबत बोरिकै ॥
करन रुदन लागे सुमन्त्रहु भयहु मूर्च्छित तैसहीं ।
नर नारि हाहा रव पुकारन लगे शोचत वैसहीं ॥ ५।६१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुस्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३४ ॥

जब राजा का परिवार भर सहित सुमन्त्र बिना कैकेयी के मूर्च्छित हुआ तो कुछबेर पीछे राजाके मन्त्री सुमन्त्रजी जल्दीजल्दी अपने हाथों

अपना शिर पीट बार बार ऊधी श्वासें ले हाथ से हाथ मींज दाँत कट-कटाय १ मारे कोप के नेत्र लाले पीले कर देहका रङ्ग जैसा सदा रहता था उसके विपरीत कर मारे कोप के इधर उधर निहार बड़े खराब संताप को पहुंच २ मन से कैकेयी की ओर से स्नेह दूर कर बाकबाणोंसे मानों कैकेयी के हृदय को कँपाते हुये ३ बाण समान तीषे वचनों से कैकेयीके सब मर्म्म स्थानोंको छेदतेहुये सुमन्त्रजी कैकेयीसे बोले ४ हे दुष्ट कैकेयि जिन तुमने सब स्थावर जङ्गमके स्वामी व अपने पति महाराजाधिराज दशरथजी को छोड़ा ५ तो अब इस संसारमें ऐसा अकाज कोई नहीं जिसे तुम न करसको तुमसे जो नहो सो थोड़ा है तुमको हम इसलिये पति के मारनेवाली व कुल नाशनेवाली समझते हैं ६ तुमने महेन्द्र के समान गम्भीर पर्व्वतों के समान अचल समुद्र के तुल्य स्थिर राजा को भी अपने क्रूर कर्म्मोंसे चलायमान कर दिया ७ अरे दुष्टे राजादशरथ ऐसे वरदान देनेवाले पतिका अपमान करै कोटि पुत्रोंके स्नेह से अधिक स्त्रियों को पति की इच्छा के अनुसार चलना है सो तू पुत्र को राज्य दिलाने के लिये पतिका निरादर करती है ८ इस कुलमें सदासे यहरीति चली आई है कि अवस्था के अनुसार जो ज्येष्ठपुत्र होताहै राजाके मरने केपीछे वही राज्य पाताहै सो इक्ष्वाकुकुल के स्वामी राजादशरथ अभी जीते बने हैं उनके आगे ही तुम ज्येष्ठपुत्र श्रीरामचन्द्रको छोड़ छोटे पुत्र भरत को राज्य दिलाया चाहती हो भला इस अन्याय का कहीं ठिकाना है ९ अच्छा तुम्हारे पुत्र भरत राजा हों व पृथिवी का पालन करैं हम लोग तो वहीं जायँगे जहाँ रामचन्द्र जायँगे १० सो हमीं नहीं कोई भी ब्राह्मण अब तुम्हारे इस राज्य में न बसना चाहेगा क्योंकि ज्येष्ठपुत्रको छोड़ छोटेको राज्य दिलाना ऐसा मर्य्यादाहीन काम तुम करतीहो अभी कुछ बिगड़ा नहीं अबसे रामचन्द्रको लौटावो ११ हम इस बातको बड़ा आश्चर्य्य मानतेहैं किजो तुम्हारे ऐसा अयोग्य कर्म्म करने परभी तुरन्त पृथिवी न फट गई १२ व यह भी आश्चर्य्य मानते हैं जोकि वसिष्ठादि ब्रह्मर्षियों के कोपसे उत्पन्न अति भयानक रूप चारों ओरसे अग्निके समान भस्म करतेहुये धिक्कार के साथ वचन के दण्ड रामचन्द्र जी को वनवास देनेवाली तुमको नहीं नाशकरते १३ व राजा को हम क्या

कहें जिन्होंने आम काटके नीमकी रक्षाकर मा प्रसन्न कियाहै यहनहीं जानते किचाहै नींबको दूधसेभी सींचो परवह मीठी नहीं होसक्ती १४ सो यहभी कुछ तुम्हारी लगाय नहींहै क्योंकि जैसी तुम्हारी माताथीं वैसीही तोतुमहुआचाहो लोकमेंभी सबयहबात कहतेहैं कि नींबसे शहद नहीं चूसक्ती चाहे शर्बतसेभी सींचो १५ तुम्हारी माता का स्वभाव जैसाकुछ हमने वृद्धोंके मुखसे सुनाहै वैसा खूबजानतेहैं वह यहहै कि तुम्हारे पिताको कोईऋषि यहवर देगये १६ कि हेराजन् तुम पशु पक्षी कीड़ा मकोड़ा आदिसबजीवोंकी बोली समझोगे१७ परन्तु जैसेही किसी मनुष्यसे बतावोगे तुरन्त मरजावोगे एक समय तुम्हारे पिता माता एक पलँग पर लेटेथे किएक बहुत सुन्दर पक्षी कुछशब्द बोला उसेसुन राजा दोतीन बार हँसे १८ उस समय तुम्हारी माता बड़ा क्रोधकर राजासे बोली राजन् तुम्हारे हँसनेका क्याकारण बतावो हमारे सुननेकी इच्छा है १९ राजा रानीसे बोले किजो हम अपने हँसनेका हेतु बतावेंगे तो हमारा मरणही होजायगा इसमें कुछभीसन्देह नहीं २० तब तुम्हारी माता तुम्हारे पिता राजा केकयसेबोली किचाहे तुमजीवो वामरो परन्तु हमसेअपने हँसनेका कारणज़रूर कहो तुमहमीकोहँसेहो जिसमें मृतक होजाव फिरकभी हमें न हँसो २१ जबरानीने ऐसाकहा तो तुम्हारे पिता ने उन्हीं ऋषिसे कहा जिन्होंने वह वर दियाथा कि हमारी स्त्री हमारे हसनेका कारणपूंछतीहै इसविषयमें क्याकरें २२ ऋषिने कहा कितो इस से कारण बतायके मरजाइये क्योंकि हमारे वचन मिथ्यातो होहीनहीं सक्ते वाइस दुष्टाहीको कुछ दण्ड देदीजिये वा कहींको चलेजाइये नहीं तोयहीं रहिये परइसका वचन न कीजिये चुपहो रहिये २३ ऋषिराजके ऐसेवचन सुन तुम्हारे पिता बहुत प्रसन्न हुये व तुम्हारी माताका परित्यागकर कुवेरके समान विहरने लगे यद्यपि राजा नहींमरे परतुम्हारी माताने कुछ उठानहीं रक्खाथा २४ तैसेही तुमभी राजा को दुर्ज्जनों के मार्ग्गमें चलानेके लिये मारे मोहके यह खराब बात सिखाती हो इस से बड़ीपापिनीहो २५ लोकमें जोयह बात प्रसिद्धहै कि पुत्र अपने पिता के गुण स्वभाव रूपके तुल्यहोतेहैं वकन्या माताके सोतुममें हमने सत्य ही देखा किजैसी तुम्हारीमाता दुष्टप्रकृति रही वैसीही तुमभी ठहरीं २६

बस जोहुआ सोहुआ जोराजाकहतेहैं मानो पतिकीआज्ञा मान हमलोगों की रक्षाकरो २७ इंद्रके समान तेजस्वी यशस्वी पराक्रमी राजाकोपापों से न हुलकारो लोकके करनेवाले राजाको यह असद्धर्म्म न सिखावो किज्येष्ठ पुत्रको वनको निकालें छोटेको राज्यदें २८ हम जानतेहैं कि राजा तुम्हारे वचनभी न मानेंगे क्योंकि तुमने सायदएक खेलके साथ कहाहै कुछ सचमुचनहींकहा२९ अच्छाहै सत्यप्रतिज्ञ शुभकर्म्म करने-वाले सब धर्म्मोंके व संसारके रक्षा करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीके अभि-षेकके लिये राजाको सम्मत देदीजिये क्योंकि वे ज्येष्ठपुत्रहैं व उनमेंसब उत्तम गुण जो राजोंको चाहिये विद्यमान हैं ३० जो पिताको छोड़ रामचन्द्रजी वनको गये तो संसारमें तुम्हारा बड़ा अपवाद होगा ३१ ॥

चौ०॥ रामराज्य निज पालहिँ नीके । बिनज्वर बसहु नगर तुमठी-के ॥ राम समान अवध पुरमाहीं । तवहित कार आनकोउ नाहीं १ । ३२ जब रघुनाथ राज्यपद पैहैं । तब दशरथनृप वनकहँ जैहैं ॥ यह इक्ष्वाकु नृपति कुलवाना । अहै अन्तवय वनमन माना २ । ३३ इमिबहु भाँति सुमन्त्र महाना । समझावा केकयि कहि ज्ञाना ॥ भय अरु प्रीति उभय दिखरावा । परन केकयी मन कछुआवा ३ । ३४ सान्त्व बचनसुनि क्षोभ न आवा । तीक्ष्ण बचनसों कष्ट न पावा ॥ उदासीनता मुख पर नाहीं । लक्षित होत केकयी काहीं ४ । ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेवाल्मीकीयेपञ्चत्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३५ ॥

जब सुमन्त्रजीने कैकेयीसे राजाकी प्रतिज्ञानिष्फल होनेकेलिये कहा और उन्होंने अङ्गीकार न किया तो राजा दशरथभी इस प्रतिज्ञाके विषय में अति पीडितहो आँशुवाने हुये सुमन्त्रजीसे बोले १ हे सूत रामचन्द्र की यात्राके लिये बहुतही शीघ्र चतुरङ्गिनी सेना तैयार करो २ वेश्या लोगभी अपना अपनाश्रृङ्गार करमङ्गलके लियेतैयार होकर मार्गमें खड़ी रहें बनिया लोग भी अपनीअपनी दूकानें फैलावें जिसमें चलने के समय रामभद्रको सब प्रकारकेमङ्गलहों ३ वजोलोग रामचन्द्रकी सेवासे जीतेहैं व जिनके सङ्ग रघुनन्दन खेलते रहेहों इन सब को बहुत धन देवो व कहो कि अब यात्राका समयहै अपने अपने आँशुबन्द करें ४ सब प्रकारके

आयुध व लढ़ी आदिले नगरनिवासी रामचन्द्रके पीछेपीछे वनको चलें व जो व्याधालोग वनमें चलनेमें चतुरहों वे भी सङ्ग करदिये जायँ ५ जिसमें रामचन्द्र इन सबके साथ वनमें मृगगण हाथी आदि मारतेहुये व वनके फूलों का रस पीते हुये राज्यका स्मरण न करें ६ व जितना अयोध्यामें अन्न धन वस्त्रादि हमाराहै सब रामचन्द्रकेसङ्ग वनकोजाय ७ जिसमें वनमें जहां जहां पुण्यदायक देश तीर्थादि मिलें वहां यज्ञकरते कराते विविध भांति दक्षिणा देते दिलाते ऋषियों के सङ्ग वनमें सुखपूर्व्वक राजकुमार श्रीराम बसें ८ अब इतने साल भरत अयोध्यामें राज्य करें जब रामचन्द्र लौटेंगे तोफिर तुरन्त उनको राज्य देदेयँ इस समय रामचन्द्रकी तैयारी वनजानेकेलिये करावो ९ इस बातके सुनतेही कैकेयी बहुत भयभीत हुई मुख सूखगया बोल बन्द होगया १० बड़ी व्याकुलहो बहुत डराय मुख सूखाकर कैकेयी राजासे बोली ११ हेराजन् जब सब धन सेना रामचन्द्रके सङ्ग वनकोचली जायगी तो राज्यमेंक्या रह जायगा भरत ऐसे राज्यको कभी न लेंगे जैसे मदिरामें सारांशकोई प्रथमही पीजाय पीछेसे क्या रहजाताहै १२ जब कैकेयी ने निर्ल्लज्ज हो ऐसे वचन कहे तो राजा दशरथजी उससे बोले १३ हे दुष्टे रामचन्द्र के वनजाने व भरतको राजा करने के विषय में हमसे कहा सोतो भार हमने लादा फिर अब चलते बैलको आरई क्यों देती है क्या हमें उससे निषेधहै जब ऐसाथा तो पूर्व्वही क्यों न कहा कि रामचन्द्र धन फौज सहित राज्य छोड़ वनको जायँ हमने तो केवल राज्य छोड़ कर वन भेजने को कहाथा सो करेंगे अब फिर नहीं कोई काम होसक्ता १४ जब राजाने क्रोधकर ऐसे वचन कहेतो कैकेयी ने राजा से दूना क्रोध किया व कहा १५ कि क्या यह नई बातहै जो ज्येष्ठ पुत्र रामको राज्य नहीं मिलता छोटे पुत्र भरतको मिलता है तुम्हारेही वंशमें राजा सगर हुये हैं जिन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र असमंजस को वनवास दिया व छोटेको राज्य फिर उसी तरह रामभी वनको चले जायँ इसमें क्या आगे पीछे करते हो १६ जब कैकेयीने ऐसे वचन कहे तब राजा दशरथजी ने कहा तुझ दुष्टाको धिक्कार है जो ऐसा कहतीहै सब लोगभी लज्जित होगये पर कैकेयी ने कुछ भी न माना १७ तब प्रधानमन्त्री जिसका सिद्धार्थ नाम था व अति सत्यवादी

राजाको बहुतही प्रियथा कैकेयीसे बोला १८ कि राजासगरके पुत्र असमंजस तो ऐसे दुष्टप्रकृतिथे कि अयोध्यावासियों के खेलतेहुये बालक पकड़ पकड़ सरयूमें फेंक देतेथे यही उनका खेलथा रामचन्द्र तो उनके समान नहींहैं १६ फिर जब उनके ऐसे दुराचार पुरवासियों ने देखे तो जाय क्रोध कर राजा सगर से कहा कितो अकेले असमंजसही को आप अङ्गीकार करैं व राज बढ़ाया चाहें तो हम लोगों को २० राजा ने सुनकर कहा यह भय किस निमित्त हुई बतावो तो यह सुन सब प्रजा मन्त्री लोग बोले २१ महाराज यह असमंजस ऐसा मूर्ख है कि हमलोगों के लड़कों को अपने साथ खेलाता है जब वे खेलते खेलते घबड़ाते हैं तो पकड़ पकड़ सरयू में फेंक देता है और मारे मूर्खता के आप बहुत प्रसन्न हो हसने लगताहै २२ सब लोगों के ऐसे वचन सुन उन सबोंकी प्रसन्नता के लिये पुत्रको घरसे निकाल दिया २३ जो लोग वनको भेजनेगये उनसे कहदिया कि इससे सवारी पै चढ़ाय अति वेग सहित स्त्रीजन्म पर्य्यन्त वनमें बसने के लिये छोड़ आवो २४ जिसमें जैसे पापकर्म्म इसने किये हैं वनमें जाय भुगतै फार कुदार लिये कन्द मूलादि खोद खोद खाय पहाड़ों की कन्दरा देखे अयोध्या में रहने लायक नहींहै २५ इस हेतुसे राजासगर ने असमंजस को परित्याग किया कहो रामचंद्र जीने कौन पाप किया जिससे राज्य के बदले में वनवास पाते हैं २६ हम लोग तो थोड़ा भी दोष रामचंद्रजीमें नहीं देखते फिर पापतो दुर्ल्लभही है जैसे चन्द्रमा में मलिनता दुर्ल्लभ होती है २७ अथवा हम लोगोंकी दृष्टिमें कदाचित् कोई दोष न पड़ाहो तुम्हींने कोई देखाहो तो बतावो कि उस दोष से रामचंद्र वन भेजे जायँ २८ नहीं तो सदाचारनिष्ठ सुमार्ग्गी दुष्टताहीन पुरुष के त्याग करनेसे जो इन्द्रके समान तेजहोतो धर्म्म के विरुद्ध काम करने से भस्महो होजाय २९ तिससे रामचंद्रको जो शोभा तुमने विचाराहै कृपा कीजिये न दीजिये भरतभी तुम्हारे इस विचार को न प्रसन्न करेंगे केवल संसार में दुर्य्यशही दुर्य्यश होगा और कुछ फल न मिलेगा इससे अभी कुछ नहीं बगदा कहो राम वनको न जायँ ३० ॥

चौ० ॥ सुनि सिद्धार्थ वचन नृप दशरथ । नन्द वचन नहिं रह स्वर समरथ ॥ शोकाक्रान्त वचन कैकयिपहँ । बोले शोचत गुनत मनहिमहँ १ । ३१

यह सिद्धार्थ वचन मनमाहीं । मम अरु निजहित जानत नाहीं ॥ कृपण मार्ग्ग चेष्ठा यहतेरी । साधु मार्ग्ग बाहरहमटेरी २ । ३२ धनसुख राज्य त्यागि हम आजू । जाब राम सँग आननकाजू ॥ भरतनृपति सँगज्यहि सुखसारे ॥ राज्य काज भोगहु तुम न्यारे ३ । ३३ ॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषट्त्रिंशस्सर्गः ॥३६॥

सिद्धार्थनाम प्रधानमन्त्रीके ऐसेवचनसुन व राजादशरथकीव्याकुलता देख श्रीरामचंद्रजी महाराज दशरथजीसे अति नम्र ह्वै बोले १ हेराजन् जब हम सब भोग विलास छोड़ निस्सङ्ग ह्वै वनके कन्दमूलादि भोजन कर जीवेंगे तो हमारेसङ्ग धनदौलत सेनाआदिका कौन काजहै २ क्योंकि जिस मनुष्य ने किसीको हाथी देडाला फिर वहगद्दी बांधनेवाली रस्सीके लेलेनेको मनकरै तो जब उत्तम हाथीही देडारा फिर रस्सीके स्नेहसे क्या है ३ तैसेही अब हमको फौज संग चलनेसे क्याहै हमारेलिये अब मुनियों के पहिरनेके योग्य चीर वल्कलादि चाहियेंसो मँगाइये ४ जिसमेंचौदह वर्ष तक हमें वनमें बसनाहै बीचमें टूट फूट न जायँ कन्द मूल खोदनेके लिये एक खन्ता व एक पिटारी चाहिये सो कहिये कैकेयी की दासियां शीघ्र लावैं किहम वनको चले जायँ ५ यह सुन बड़े हर्षसे सबके सामने निर्ल्लज्ज ह्वै कैकेयी आप उठी वनकेयोग्य चीर वल्कलादि वस्त्र लाय रामचन्द्रजी से बोली कि इनको धारणकर वनको जल्द जाव ६ कैकेयीके लायेहुये चीर वल्कल ले श्रीरामचन्द्रजीने पहिर लिया जो सूक्ष्म वस्त्र धारण कियेथे सब छोरडाले ७ लक्ष्मणजीने भी पिताकेआगेही उत्तम वस्त्र उतार मुनियोंके योग्य वस्त्र धारण किये ८ जानकीजी के भी लिये कैकेयी उसी प्रकारके जनाने वस्त्र लाईथी उन्हें देख वे काँप उठीं जैसे जाल देख मृगी काँप उठतीहै ९ कैकेयीके दिये हुये कुशकेबीने वस्त्र शुभलक्षणा जानकीजीनेले अति उदासीन मन ह्वै १० नेत्रों में आँशु भरे सब धर्म्म जाननेवाली व धर्म्मदेखनेवाली गन्धर्व्व राजके समान मूर्त्ति श्रीरामचन्द्र से बोली ११ कि वनवासी मुनि लोग चीर कैसे धारण करतेहैं हमतो नहींजानती इतनाकह मोहितहोगईं क्योंकि महाराजकुमारी श्रीसीताजी क्या जानें मुनिलोग किस रीति से

वस्त्र पहिरतेहैं इससे इस कार्य्यमें निपुण नथीं १२ एक चीरतो गलेमें डारलिया दूसरा हाथमेंले खड़ी रहीं क्योंकि उसके पहिरने में बिल्कुल निपुण नथीं इसलिये लज्जित ह्वै खड़ी रहीं १३ श्रीरामचन्द्रजी ने जब यह दशा देखीतो जानकीजीके हाथसे चीरले जो वे रेशमी सारी पहिरेथीं उसीके ऊपर अपने हाथसे पहिरा दिया १४ सीताजीको चीर पहिरातेहुये रामचन्द्रजीको देख रनिवासमें जितनी स्त्रियांथीं रोनेलगीं १५ व परमतेजस्वी श्रीरामचन्द्र जी से बोलीं भी कि हे वत्स रामभद्र तुम्हारी तरह जानकी वन जानेके योग्य नहींहैं १६ जब तक आप पिता के वचनोंका प्रतिपाल कर वनसे लौटा चाहें तबतक जानो हम लोगों का जन्म इन्हींको देख सफल रहेगा इसलिये इनको यहीं रहने दीजिये १७ लक्ष्मणजीको सङ्गले वनको चले जाइये ये अति सुकुमारीजनककुमारी तपस्वियोंके समान वनमें बसने के योग्यनहींहैं १८ इतना हम को माँगन दीजिये सीताको यहीं राखिये तुमको हम नहीं कह सक्तीं कि तुमभी न जाव क्योंकि तुम धर्म्म में तत्परहौ व तुम्हींको वन जाने को आज्ञा हुई है इसलिये हम जानतीहैं कि यहां क्षणमात्रभी अब नहीं रह सके पर ये तो अवश्य रहजायँ क्योंकि इनको किसीकी आज्ञा नहीं कि वनको जायँ १९ रानियोंके ऐसे वचन सुन श्रीरामचन्द्रजी जानकीजीका रुख पाय रेशमी वस्त्रोंके ऊपर सीताजीको चीर पहिराने लगे २० चीर धारण किये हुई सीता को रोंक राजा के गुरू बसिष्ठजी कैकेयी से बोले २१ मर्य्यादाके नांघनेवाली दुष्टबुद्धि कुलके नाशने हारीहे कैकेयीतू राजाको धोखेमेंडाल आपबड़ी प्रमाणिकबनाचाहतीहै अपने दुष्टकर्म्मनहीं विचारती जबतक कोई न बोले जो पाती करतीही चली जातीहीहै २२ हे दुष्टे अब बनाय तेरा शील जाता रहा जानकी वन को न जायँगी रामचन्द्रके चले जाने पै जब तक वे लौट न आवेंगे तब तक यहीं राज्य कार्य्य करेंगी राजगद्दी इन्हीं को दिलाई जायगी २३ क्योंकि जितने गृहस्थहैं स्त्री आधा अङ्ग होनेके कारण उनका रूपही होती है बस सीता भी रामचन्द्रहीकी मूर्त्ति व अङ्ग हैं इसलिये अवश्य पृथिवी का पालन करेंगी २४ कदाचित तेरी दुष्टतासे यहां न रहीं जानकी भी रामचन्द्र के साथ वनको चली गईं तो हमभी सङ्ग चले जायँगे व सब अयोध्या वासी

भी चले जायँगे कोई यहाँ न रहेगा २५ जहाँ स्त्री सहित रामचन्द्र जायँगे तहाँही को ये जितने जनाने के रक्षक नौकर चाकर हैं ये भी जायँगे व अपनी अपनी जीवनसामग्री के साथ राज्यका राज्यभी चला जायगा दासी दासादि सामग्रीके साथ सब नगर भी चलाजायगा२६ और को कौन कहै जिस भरतके लिये तू ऐसाकरती है वे भी शत्रुघ्न के साथ रामचन्द्रही के समान चीर वल्कल धारणकिये अपने ज्येष्ठ भाई रामचन्द्रके पीछेपीछे वनको चलेजायँगे २७ तो तू अकेली इसनिर्ज्जन शून्यपृथिवी की रक्षा वृक्षोंके सङ्ग किया करना कोई मनुष्य तो रहहीगा नहीं राज्य भरमें वनही वन होजायगा तब प्रजाका नीके तू पालन करेगी हा दुष्टे २८ जहाँ राम राजा न रहेंगे तहाँ राज्य न रहेगा जहाँ रामचन्द्र वनमें बसेंगे वहीं राज्य भी बसेगा २९ जो सत्य सत्य तुझ में राजा दशरथही से भरत उत्पन्न हुये होंगे और किसीसे न हुये होंगे तो बिना प्रसन्नतापूर्व्वक पिता की दीहुई पृथिवी का पालन कभी न करेंगे ३० चाहे तू भूतलसे आकाशको चलीजाय पर भरत तो जानते हैं कि इस वंशमें ज्येष्ठही पुत्रको राज्य मिलता चला आयाहै कनिष्ठको कभी नहीं मिला फिर वे उसके विपरीत कैसे राज्य करेंगे ३१ सौबात की एक बातहै कि तुमने अपनी जान पुत्रको राज्य दिलाय हितकिया है परन्तु सर्व्वथा उनका अप्रियही कियाहै क्योंकि लोकमें ऐसा कोई नहीं जो रामचन्द्रजी के पीछे वनको न चलजाय ३२ मनुष्यों को कौन कहै अरे कैकेयी जैसेही रामचन्द्र वनको चलेंगे पशु पक्षी सर्प्प मृगगण भी पीछे पीछे चलेंगे जीवधारियों को कौन कहे वृक्ष भी उन्हींकी ओर चलने के समय झुकेंगे मानों चलनेही चाहते हैं ऐसा देख पड़ेगा तू भी देखेगी ३३ ॥

हरिगीतिका ॥

करि दूर चीर अतीव उत्तम बसन भूषण लायकै ।
पहिराव जनककुमारि निजकर वधू सुन्दरि पायकै ॥
नहिँ चीरइन्हहिँ कदापि धारय इमिकह्यो मुनिनाथहू ।
कत करत अस अनरीति केकयि उठत किमि तव हाथहू १ । ३४
सुनु केकयी वनवास करि मुनिवेष एकहि रामको ।

तुम लीन माँगि महीपसों यहिँ जनकतनया नामकी ॥
यासों विभूषण वसन भूषित स्वपति सेवा हेतुरी ।
वन बसहिँ जनककुमारिहू यह बात मन में चेतुरी ॥ २ । ३५
नरदेव सुता सुयान चढ़ि परिचारकौं सँगमें लिये ।
वर वसन भूषण भूषिता वनजाय पति मनमें किये ॥
वर माँगिलीन्ह्यों नृपति सों तामें नहीं यह जानकी ।
किमिचीरवल्कल देत या कहँसुनतबात न आनकी ॥ ३ । ३६
द्विजमुख्यअमितप्रभावनृपगुरुवहुतइमि भाष्योसही ।
परजानकी पतिसङ्ग हित चितदीन नहिँटारो चही ॥
मन वचन कर्म्म सुशर्म्म पतिकी सेवमें सब काम है ।
गृह रहनसों वरवस्त्रयुत वनवाससों नहिँ नामहै ४ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तत्रिंशस्सर्गः ॥ ३७ ॥

जब सबकुछ भरेपुरमें अनाथ स्त्रियोंके समान जानकीजीने चीर वल्कलादि धारणकिये तो जितने स्त्रीपुरुष कोई उसस्थान परथे सबके सब चिल्लाय उठे व कहनेलगे कि राजादशरथ को धिक्कार हैं जो स्त्री के कहने से ऐसे पुत्रको वनवास देते हैं जिसके सङ्ग ऐसीबधू इस दशा से वनको जातीहै १ इस हाहाकार शब्दके सुननेसे राजादशरथ अति दुःखितहुये व अपने मनमें जानलिया कि अबहम न जीवेंगे न धर्म्म व यशरहेगा २ बड़ेज़ोरसे ऊधी श्वासले उस दुष्टास्त्रीसे बोले कि हेकैकेयि कुशके वस्त्र पहिर सीता वनजाने के योग्य नहीं हैं ३ एकतो सुकुमारि दूसरे वाल्यावस्थाको प्राप्त इससे सदा सुखही भोगने के योग्य जानकी वनके योग्य किसी प्रकार से नहीं हमारे गुरूजी सत्य कहते हैं ४ इन्होंने तो किसी का कुछ अपकार नहींकिया जो महाराज जनककी पुत्री हो तपस्विनी भिषियारिन के समान कुशकेचीरादि धारणकर सब लोगोंके बीचमें खड़ीहैं ५ इसलिये राजाजनककी पुत्री चीरवल्कलादि छोरबहावे क्योंकि हमने यह प्रतिज्ञा नहीं की थी किये इस दशा से वनको जायँ यह कुछबात नहीं यदि राजकुमार श्रीरामभद्रके साथवन को जातीहीहैं तो सब रत्न भूषणादि धारण कियेही चलीजायँ ६ यह

हमने जानलिया कि अबहम थोड़ेही दिनों में मरा चाहते हैं क्योंकि जिससे तेरे कहने से ऐसी दुष्टप्रतिज्ञा हमनेकी कि रामचन्द्रको वनवास देंगे उसके ऊपर यह तूने अपने अनरपन से किया जो जानकी को भी चीरवस्त्र आनदिये यहतेरा कर्म्म हमको भस्मकरेगा जिससे तू बिधवा होगी यह वैसाही हुआ जैसे बाँशका फूलही बाँशको उच्छिन्न करताहै ७ हे पापे जो रामचन्द्र ने तेराकुछ अनभल कियाहो तोहो भलाहुये वैदेही ने तेरा कौन अपकार किया ८ मृगीके समान उत्फुल्लनयनी अति कोमल शील सदा प्रसन्नचित्त जनकनन्दनी अब कौन तेरा अपकार करती है ९ हे पापे क्या इसरीति से रामचन्द्रको वनवास देना तुझको नरक में गिराने को कमथा नहीं इसीके कारण करोड़ों वर्षतक नरकमें रहेगी फिर जानकी को भी इसदशासे वनभेज और पाप क्यों लेतीहै इससे अब और तेरी कौन दशा होगी १० हे दुष्टे रामचन्द्र को प्रथम हमने अभिषेक करनेके लियेकहाथा फिर तेरे कहनेसे निषेध करनेके हेतुबुलाया उसमें तूने उनसे कहा सहित चीर वल्कल वनको जाव तबतक हमने रामही का वनवास जाना था नकि सीताका भी ११ सो अब तूने उस हमारे कहनेसे भी अधिक जनककुमारी कोभी चीरवल्कल धारणकिये देखती है इससे अवश्य नरक को जायगी १२ इसरीतिसे महात्मा राजा दशरथ बारबार रोदन करतेहुये शोकके अन्तको न पहुँचे अतिव्याकुल होने के कारण पृथिवी में गिरपड़े व उसी पुत्र के शोकसागर में डूब गये १३ ऐसा कहतहुये नीचे शिर झुकाये बैठे पितासे वन जानेकी तयारी किये श्रीरामचन्द्रजी बोले १४ हे धार्म्मिक ये यशस्विनी गम्भीर स्वभाव हमारी माता कौशल्या आपकी कुछ निन्दानहीं करतीं १५ इस-लियेअब हमारे चलेजानेपर शोकसागर में डूबतीहुई इनको कि जिन्होंने अभीतक ऐसादुःख देखाही नहीं आप अधिकस्नेहसे सम्मान करना १६॥

चौ० ॥ जासोंपुत्र शोक नहिँ पावें । मानत रहब सदा मनभावें ॥ हमहिँ शोचती दिन अरुराती । जीवहिं करब मानत्यहि भाँती १ । १७ पुत्र दर्श लगिजिमि मम माता । ममवन गमन शोककृश गाता ॥ प्राण त्यागि यमपुर न सिधावें । तिमिमानव नृप यह वर पावें २ । १८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टत्रिंशस्सर्गः ॥ ३८ ॥

रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन व मुनिवेष धारण किये देख सब रानियों के साथ राजा अतिव्याकुलचित्त होगये १ मारेदुःख के सन्तप्त हो रामचन्द्रजीकी ओर देख न सके न मारे उदासीनता के अच्छीतरह देखभाल कुछ बोलही सके २ एक मुहूर्त्तभर मानों निश्चेतही होगये दो घड़ीके पीछे मूर्च्छा जागी तो रामहीकी चिन्तनाकर बड़े ऊंचेशब्दसे विलाप करनेलगे ३ व यह कहने कि हमजानते हैं कि हमने पूर्व्वजन्म में बहुत गायों के बछरू उनसे अलग करदिये हैं वा बहुत प्राणियों को मार डालाहै तिसीसे हमें यह दुःखमिला है ४ हाय बिना समय आये नतो देहसे प्राण निकलें न कैकेयी से क्लेशित हमारी मृत्युही होय ५ कि जिससे हम अग्निके समान तेजस्वी सूक्ष्म रेशमीवस्त्र छोड़ तपस्वियों के वस्त्र पहिरे आगेखड़े पुत्रको न देखते ६ हाय अपने प्रयोजन के लिये उपाय करनेवाली अकेली इस दुष्टाकैकेयीही के निमित्त ये सबलोग क्लेशपाते हैं ७ इतना कह कफके मारे गलरूंध आया एक बार राम ऐसाकह राजा न बोलसके ८ एक दोघड़ी के पीछे फिरराजा की मूर्च्छाजागी तो रोदन करतेहुये सुमन्त्र से बोले ९ हे सुमन्त्र उत्तम उत्तम घोड़े नहकर जो सबसे उत्तम रथहै लावो उसपर चढ़ाय इसदेश से बाहर रामचन्द्रको पहुंचावो १० देखोभाई शास्त्रमें गुणवानों केगुण का फल यहीलिखाहै कि पुत्र पिता माताकी आज्ञामाने देखो महाशूरवीर साधुप्रकृति रामचन्द्रके समान पुत्र पिता माताकी आज्ञासे वन जाते हैं ११ राजाके ऐसे वचनसुन सुमन्त्रजी अतिवेग जाय उत्तम तुरङ्ग नह रथले आये १२ व हाथजोड़ परमोदार राजकुमार श्रीरामभद्र से कहाकि उत्तम घोड़ोंका रथ तैयारहै १३ इसके पीछे महाराज दशरथजीने कोशाध्यक्ष अर्थात् खजाञ्चीको बुलाया जोकि सब कोशागार व तोसेखाना के पदार्थों को जानता था कि कौन पदार्त्थ कहाँ धरा है व कहाकि १४ बड़ेबड़े मोलके वस्त्र व सबसे उत्तम भूषण चौदह वर्षतक जबतक वनमें रहेंगी जानकीके लियेलावो १५ महाराजकी यों आज्ञापाय कोशागर में जाय सब उत्तम वस्त्र भूषण जानकी जीके उमानके लाय एकहीसंग कोशाधीशने आनदिये १६ अयोनिसम्भव जानकीजीने सबउत्तम वस्त्र भूषण वन जानेके समय महाराजके आगेही धारण करलिये १७

सब वस्त्र भूषण धारणकर वैदेहीजीने उस मन्दिरको ऐसा भूषितकराया जैसे प्रातःकाल उदय हुये सूर्य्यकी प्रभा आकाश को विभूषित कराती है १८ तिस जानकीजीका शिरसूंघ दोनों हाथोंसे लपटाय कौशल्या जी बोलीं १९ जो स्त्रियां विपत्तिकालमें भी अपने पतिका आदर नहीं करतीं चाहे पति उनका सत्कार भी करै वही इसलोक व परलोक में अपतिव्रता गिनी जातीहैं २० यह दुष्टस्त्रियों का स्वभाव होता है कि प्रथम उसी पतिसे नानाप्रकार के सुखभी भोगती हैं दैवयोग से पतिमें थोड़ी भी दरिद्रता आगई वा थोड़ाभी कोईरोग उसके होगया तो उसको सबसे बढ़ाकर कहने लगतीहैं बरन पतिको त्यागभी देतीहैं २१ बहुधा संसार में ऐसीही दुष्ट स्त्रियाँ होती हैं जोसदा झूठही बोला करती हैं सब तरह के विकार उनमें भरे रहतेहैं, उनके मनकी बात बड़ी कठिनता से जान पड़ती है जितने मनोरथ वे करतीहैं सब पापयुक्तही होते व एक क्षणमात्रही में पति घरबार की ओरसे ऐसा मन खींच लेती हैं मानों इनसे कभी कुछ प्रयोजनही नहीं रहा २२ दुष्ट अपतिव्रता स्त्रियों का यह भी स्वभाव होता है कि उनके मनकी दुष्टता को नतो उत्तमकुल रोंकसके न कोई उपकारही ऐसाहै जिसके करने से दुष्टता मिटै न कोई सद्विद्या है जिसके पढ़ा देनेसे दुष्टता मिटै न वस्त्र भूषणादि का दानही ऐसाहै जिसके देनेसे वे दुष्टता न करें न यहीहै कि उनमें कोई दोष देख पड़ै तौभी उनका परित्याग न कियाजाय इसी से दुष्टता छोड़ें सोभी नहीं क्योंकि स्त्रियाँ सदा क्षणक बुद्धिही होती हैं इसलिये जो स्वभाव उनका पड़जाताहै किसी उपाय से मिटाये नहीं मिटता २३ और जो पतिव्रता स्त्रियाँहैं जिनके शील स्वभाव उत्तम हैं सत्यही बोलती हैं वेदशास्त्र की बातको मानती हैं बरन उसीके अनुसार चलतीहैं उन स्त्रियोंके तो पतिही एक देवता है २४ तिससे अबये हमारे पुत्र श्रीराम वनको भेजे जाते हैं वहां चाहेनिर्द्धन रहैं चाहे सधन परतुम इनका अपमानकभी न करना २५ सासु के वचन धर्म्म अर्थयुक्त जान हाथजोड़ आगे खड़ीह्वै जानकीजीबोलीं २६ कि आप जोजो सिखाती हो हम सब करेंगी कुछ भी अंतर न पड़ेगा क्योंकि स्त्रीको पतिके सामने जोजो वर्त्ताव वर्त्तना चाहिये वह सब हम जानतीहैं और बहुत श्रेष्ठ लोगोंसे माता पिता आदिकों से सुना

भीहैं २७ हम को आप अपतिबूता दुष्टस्त्रियों के समान न जानें हम धर्म्म से बाहर कभी नहीं चल सक्तीं जैसे कि चाँदनी चन्द्रमा को छोड़ कहीं नहीं जाती २८ जैसे बिना तारों के बीणा नहीं बाजसक्ती व बिना पहियों के रथनहीं चलसक्ता वैसेही बिनापति स्त्रीको कुछभी सुख नहीं होता चाहे उसके एक नहीं सौभी पुत्रहों २६ क्योंकि पिता प्रमाणही भर देता है व भाई भी प्रमाणही भर देसक्ता पुत्र भी प्रमाणही भरदे और पतितो इसलोक परलोक के सब अनगिन्ती सुख स्त्रीको देताहै फिर ऐसी कौन दुष्टस्त्रीहै जो ऐसे पतिकी सेवा न करै ३० इस से हम तो इस बातको अच्छी तरह जानती मानती हैं कि हमारे पतिही परम पूज्यहैं क्योंकि माता सासु आदि जो श्रेष्ठ लोगहैं उनसे सामान्य विशेष सब धर्म्म हमने सुनेहैं फिरहम आप और स्त्रियोंके समान क्यों मानती हैं ३१ सीता महारानी के ऐसे प्रिय वचनसुन मारे हर्ष व शोक के कौशल्याजी रोदन करनेलगीं ३२ उसी समय श्रीरामचन्द्रजी सबमातों के बीच में बैठीहुई अपनी माता के प्रदक्षिणा कर हाथजोड़ बोले ३३ हे मातः दुःखित होके हमारे पिता जी को देखिये कुछ न कहना यह वनवास भी शीघ्रही नाशहोगा ३४ येचौदहवर्ष चौदहघड़ीके समान मानों आपके सोतेही सोते बीतजायँगे इसके पीछे भाई व स्त्री सहित वनसे आये हमको देखोगी ३५ अपनी मातासे ऐसाकह और जो ३५० स्त्रियां महाराज दशरथजीकेथीं वभी माता होती थीं उनकी ओर देखा व उन्होंने भी राजकुमार सुपुत्र की ओर भली भाँति देखा ३६ वे सब कौशल्याजीकेही समान दुःखितथीं इसलिये हाथजोड़ धर्म्मयुक्त वचन उनसे भी रामचन्द्रजी बोले ३७ कि एक स्थानके रहने से वा अज्ञान से जो कुछ कभी कठोर वचम हमारे मुखसे निकसा हो आपलोग उसके अपराध क्षमाकरें हम सबसे यही प्रार्थना करतेहैं ३८ ॥

दो० धर्म्मसहित रघुबर बचन सुनि सब नृप रनिवास ।
राम गमन अति शोक वश व्याकुल परम उदास १ । ३
इमि भाषत रघुनाथ के दशरथ रानि विलाप ।
कोटिन क्रौंची रव सरिस भयहु भवन सब व्याप २ । ४

कुण्डलिका ॥

दशरथ मन्दिर मुरज अरु शंख मेघ रव पूर ।
राम तिलक हित प्रथम जो भयो रहै सुख मूर ॥
भयो रहै सुख मूर पूर अब भो सो आजू ।
रोदन सों बहु भाँति राम वन गमन अकाजू ॥
लषि युवतिन जोकीन रोंकिसक नहिंकोइसमरथ ।
सुनिगुनि शिरधुनिरहे सकल परिजनयुत दशरथ ३ । ४१

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकोनचत्वारिंशस्सर्गः ॥३६ ॥

इस महाविलाप के पीछे रामचन्द्र जानकी व लक्ष्मणजीने अति दुखी ह्वै महाराज दशरथजी की प्रदक्षिणा की १ व धर्म्मज्ञ श्रीरामचन्द्रजीने सीताजीके संग वन जाने के लिये पितासे आज्ञालेली फिर माताको अति दुःखित देख आप बहुतही दुखीह्वैमाताकेप्रणामकिया२ रामचन्द्रजीके प्रणाम करनेके पीछे लक्ष्मणजी ने भी कौशल्याजी के प्रणाम किया उसके पीछे अपनी माता सुमित्राजीके चरणोंपै पड़े फिर सब और मातोंके प्रणाम किया ३ प्रणाम करते लक्ष्मणजी को देख सुमित्राजी रोदन करतीहुई लक्ष्मणजीका मूंड़ सूंघ उनका हित करने के लिये बोलीं ४ हेपुत्र हम तुमको वनवास करने के लिये आज्ञा देतीहैं क्योंकि तुमको जानती हैं कि अपने सुहृदों को बहुत प्रियहौ तथापि शिक्षाभी देतीहैं कि रामचन्द्रकी सेवामें कोई अन्तर न पड़ने पावै ५ चाहे रामचन्द्र ऐश्वर्य्य सहितहों चाहे बिनाऐश्वर्य्य के हों पर तुम्हें उनको छोड़ इस भुवनमें कोई गति नहींहै क्योंकि यह सनातन धर्म्महै जो छोटाभाई ज्येष्ठभाई के वशीभूतहो ६ और यहभी इसकुलमें उत्पन्न लोगोंका सनातन धर्म्महै कियाचकलोगोंको वांछितदानदेवसदा यज्ञकरतेरहें व संग्राममें शत्रुओंको मारें व आपभी संग्रामहीं में शरीर त्यागें ७ सुमित्राजी इसप्रकार लक्ष्मणजीसे कहजाना कि येरामचन्द्रजी को अतिप्रियहैं बारबार कहनेलगीं पुत्ररामचन्द्रके साथजाइये २ । ८ ॥

चौ० दशरथसमरामहिं बन जान्यहु । मम समजनकसुता कहँ मान्यहु ॥ अवध सरिस बनजान्यहु ताता । जाहुसुखेनजात बलिमाता १ । ६

इसीसमयमें सुमन्त्रजी हाथजोड़ अति नम्रह्वै श्रीरामचन्द्रजीसे बोले जैसे मातलिनाम सारथि इन्द्रजी से समय पर बोलताहै १० हेराजपुत्र महायशस्वी श्रीराम अब रथपैचढ़िये विलम्ब न कीजिये जहाँकहियेशीघ्र आपको पहुंचादें ११ अब इस समय से चौदहवर्ष तक आपकोवनही में बसना ठीकहै क्योंकि कैकेयी कहचुकीहै कि राजाको यही अभीष्टहै १२ ऐसा सुन सब भूषण वस्त्र धारण कियेहुई जानकी जी तिस सूर्य्य समान देदीप्यमान रथ पै प्रथम चढ़ीं चढ़ने के समय कोई उदासीनता नहीं प्रकट होतीथी १३ ये भूषणवस्त्रादि १४ वर्षकेलिये जितनेचाहिये चलने के समय प्रसन्न होके उनके श्वशुर महाराज दशरथ जीने दियेथे १४ इसीप्रकार रामचन्द्र व लक्ष्मण दोनों भाइयों को सब प्रकार के आयुध कवच बखतर आदि भी दशरथ जीनेही दिया १५ सब अस्त्र शस्त्रादि धारणकिये रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी अति देदीप्यमान रथपै चढ़े १६ जब राम लक्ष्मण व सीता तीनों जन रथ पै अच्छीतरह सवार हुये तो वायु के समान बेगवान् घोड़े सुमन्त्र जीने हाँके १७ जब रामचन्द्र जी वनको चले तो नगर भरको मूर्च्छा आगई १८ जितने हाथी घोड़े आदि पशु रहे ठौरठौर चिघरने लगे मनुष्यों ने हाहाकार मचाया १९ सब बाल वृद्ध युवा अयोध्यावासी अपने अपने स्थानोंसे दौड़ खड़ेहुये व रामचन्द्रजी के रथको पिछवालिये जैसे बहुत घाम लगा मनुष्य जल की ओर दौड़ता है २० कोई कोई रथके आगे कोई पीछे कोई बगलमें लपटा गये व सबके सब सुमन्त्रजीसे बोले २१ हे सुमन्त्र घोड़ों की बाग कड़ी कीजिये जिसमें रथ धीरे धीरे चलै हमलोग अच्छीतरह रामचन्द्र जीका मुखारविन्द देखलें क्योंकि अब हमलोगों को इनके दर्शन दुर्लभ हो जायँगे २२ रामचन्द्रजी की माताका हृदय हम लोहेके समान समझतेहैं जोकि देवरूप रामचन्द्र के वनवास के समय मेंभी न फटगया २३ भाई जानकी का जन्म कृतार्त्थहै जोकि अपने पतिके संग चली जातीहैं किसी प्रकार संग नहीं छोड़तीं जैसे कि सुमेरु पर्व्वत को सूर्य्य के किरण नहीं छोड़ते २४ यहकह सब अयोध्यावासी लक्ष्मण जीसे कहनेलगे कि तुम धन्यहो व सबभाँति तुम्हारे प्रयोजन सिद्धहैं जो परम सत्यवादी देवरूप श्रीरामचन्द्र अपने भाई के साथ वनको जाते हो २५ यह तुम्हारी बड़ी

बुद्धिहै व यह बड़े भाग्यकी बातहै व यही स्वर्गका भी मार्ग है जोकि तुम ऐसे भाईके संग चले जातेहो २६ इतना कह सबके आँशु चलनेलगे भल भल यात्राके समय रोदन करने को अमङ्गल समझ रोकनेलगे पर न बन्द हुये २७ राजा दशरथजी भी अपनी सब दुःखित स्त्रियों के सङ्ग रोदन करतेहुये गृहसे परमप्रिय पुत्रके देखने के लिये निकले २८ उस समय राजाके संग रोदन करतीजाती रानियोंका शब्द ऐसा जानपड़ताथा जैसे यूथप हाथी के बँधुआ होजाने पै हथिनियों का चिग्घाड़ मालूम होताहै २६ राजादशरथजी भी उससमय ऐसे उदासीन लगते थे जैसे ग्रहण लगने के समय चन्द्रमा उदासीन रहता है ३० अचिन्त्यात्मा परब्रह्म परमात्मा श्रीरामचन्द्र जी बारबार सुमन्त्र को आज्ञा देनेलगे कि रथ अति शीघ्र चलाइये ३१ रामचन्द्रजी तो कहतेथे कि अति बेगसे रथ चले व सब अयोध्यानिवासी कहतेथे कि अब खड़ा करदीजिये सुमन्त्र जीको न वही करते बनताथा न वही ३२ रामचन्द्रजी के जानेके समय रथसे उठीहुई धूलि लोगोंके रोनेके जलसे कीच होकर नष्टहोगई ३३ व उससमय अयोध्या में सिवाय हाहाकारके व रोदन के और कुछनहींहो-ताथा इसलिये सबपशुपक्षी भी पीडितथे मनुष्योंकी कौन दशाकहै ३४ स्त्रियोंके नेत्रों से ऐसे आँशु बहते थे जैसे कि मछलियों के इधर उधर चलने से जल उछलकर कमलके पत्तोंपरहोअलग गिरनेके समय बहता है ३५ रामचन्द्रजीके वियोग को न सहने की व्याकुलता से अयोध्या नगरको समान चित्त देख मारेदुःख के राजादशरथजी एकाएकी पृथ्वी परगिर पड़े जैसे जर कट जाने पै वृक्ष गिरपड़ताहै ३६ राजाको भूतल में गिरे देख लोगों ने बड़ा विलाप किया रामचन्द्रजी के पीछे उसका बड़ा भारी हाहाकार मचा ३७ कोई कोई जन तो हाराम हाराम ऐसा कहकहरोते पुकारतेथे कोई कोई रामचन्द्रजीकी माताका नाम लेले रोते थे कहाँलो कहें रनिवाससे ले रामचन्द्रजीके रथकेपीछे तक हाहाकारही सुनपड़ताथा ३८ रामचन्द्रजीनेभी रथसे बाहर अयोध्याकीओर निहारा तो बड़े जोरसे रोदन करते गिरते पड़ते माता पिता चले आतेहैं ३९ इस दशाको देख माता पिताके दुःखको न सहसके पर धर्म्मकी फाँसीमें बँधे थे क्या करें देख कर फिर दृष्टि इधर करली ४० व शोचनेलगे कि सदा

शोभन वाहन रथ पालकी आदि पर चढ़ने के योग्य माता पिता पैदर चले आतेहैं सदा सुखही करने के योग्यथे पर महादुःख में डूब रहे हैं इस बातको न सहसके सुमन्त्रसे कहनेलगे कि अति शीघ्र घोड़े हाँको जिसमें यहाँतक माता पिता न आसकें ४१ पुरुषसिंह श्रीराम किसी प्रकार माता पिताका दुःख न सहसके जैसे कि मतवाला हाथी अंकुश को नहीं सहसक्ता ४२ यहाँ कौशल्याजीने देखा कि रथ बढ़ाही चला जाताहै तो पीछे से दौड़ी जैसे सन्ध्या समय जिस गायका छोटा बच्चा घरमें रहता बाहरसे बछराके लिये वह दौड़तीहै ४३ इस भाँति हाराम हासीता हालक्ष्मण ऐसा कहती दौड़ी चली आती माता को बार बार श्रीराम निहारतेजातेथे ४४ कैकेयी बिना तीनो माताओं के प्रिय रोदन करती हुई गिरती पड़ती चली आतीथीं ४५ पीछेसे महाराज दशरथजी पुकारते थे सुमन्त्र रथ खड़ाकरो रामचन्द्रजी कहतेथे कि चलो चलो अब सुमन्त्रको कुछ भी करते नहीं बनताथा ४६ रामचन्द्रजीने कहा इसबात का शोच न कीजिये कि राजा जब पूछेंगे कि हमारे कहने परभी रथक्यों नहीं खड़ाकिया तो क्या उत्तर देंगे उसके लिये यदि तुमसे घुड़क धमक करभी पूछनेलगें तुम कहदेना रथके चलने का शब्द होता था इसलिये आपका वचन हमने नहीं सुना यह इसलिये कहते हैं कि दुःख का बहुत काल का रखना पापका मूल होताहै राजा आवेंगे तो फिर रोया पीटीहोगी ४७ रामचन्द्रजीके ऐसे वचन सुन सुमन्त्रजीने घोड़ोंको अति ज़ोरसे हाँका यद्यपि वे प्रथमहीसे शीघ्र चलतेथे ४८ सब दशा देख जो लोग राजाके कहनेसे रथ खड़ाकरनेको कहते थे वे रामचन्द्रजी के प्रदक्षिणा कर लौट खड़े हुये व जाय राजाके पास पहुंचे व बोले ४९॥

चौ० ज्यहि चाहिय फिरि आवन तासू। दूर न पठवन जाइय आशू॥
यह दशरथसन सबसेवक गन। कहन लगेबहु शोचि मनहिं मन१।५०
तिनके वचन सुनत महिपाला। निज नारिन सँग भयहु विहाला॥
सब गुणमय रोमावलि ठाढ़ी। नृप मन दुखी दीनता बाढ़ी २।५१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचत्वारिंशस्सर्गः॥ ४०॥

जैसेही हाथ जोरे पुरुष सिंह श्रीरामचन्द्रजी गमन किये निकले

महल में जितनी राजा की स्त्रियाँ थीं सब चिल्ला चिल्ला कर रोदन करने लगीं उनके रोदनका बड़ा भारी शब्द हुआ १ सबकी सब यही कहने लगीं कि जो श्रीरामचन्द्र इन हम अनाथ जनोंके नाथथे व जो सबके गति व शरणथे वे कहाँजाते हैं २ जो राम दुर्व्वचन कहने परभी क्रोधनहीं करतेथे व आप तो कभी ऐसे वचनही नहीं कहतेथे जिनकोसुन कोई क्रोधकरै बरन जो कोई किसीकारण किसी अन्यसेभी रिसाताथा उससे भी प्रसन्न करते आप दुःख सुखमें सदा समान रहते वे अब कहाँ जाते हैं ३ जो महात्मा श्रीराम अपनी माता कौशल्या जीके समान हम लोगोंको भी समझते थे वे राम अब कहां जातेहैं ४ हाय केकैयी के कहनेसे राजाने वनवास दिया जो राम सबसंसार के रक्षा करने वालेथे वे अब कहांजाते हैं ५ अहो बड़े आश्चर्य्य कीबातहै जो स्थावर जङ्गम सबके निवाह स्थान परमधार्म्मिक सत्यप्रतिज्ञ राम ऐसे पुत्रको राजा वनवास देतेहैं इससे उनका विचार कुछभी अच्छा नहीं यहक्या करते हैं ६ राजाकी सब रानियां बिन बछरू की गायों के समान यह कह कह रोय रोय कि हाराम कहांगये बड़े जोरसे रोनेलगीं ७ महल की स्त्रियोंका ऐसा दुःखित शब्दसुन पुत्रके शोकसे जलतेहुये राजा अतीव दुःखित हुये ८ रामचंद्र के जानेके समय मुनि ब्राह्मणादिकों के अग्नि आहुति को नहींग्रहण करतेथे यद्यपि वर्षाका समय नथा तथापि ऐसा कुछ बादर होआया कि सूर्य्य मानों अस्तहोगये हाथियोंकी झूलें गिरपड़ीं गायें जो अपने अपने बछरों को पिलातीथीं बिचुक बिचुक अलग भागीं कहांलो कहें सब जीव रामचंद्र के शोकसागर में डूब ने लगे ६ इस लोक के जीवों को क्या कहें त्रिशङ्कु मङ्गल बुधबृहस्पति व सब शनैश्चरादि क्रूरपापग्रह रात्रिको वक्रीहो चन्द्रमाके निकट आय थरथर काँपने लगे १० नक्षत्रोंकी दीप्तिजातीरही सब ग्रहोंका तेज जाता रहा विशाखादि नक्षत्रभी निस्तेज होगये ११ प्रलयसमयके समान प्रचण्ड पवन चलनेलगा कि जिससे समुद्र मेंभी लहरें उठने लगीं विदित होताथा कि मानों पृथिवी डूबही जायगी अयोध्यापुरी तो थरथरा काँपनेही लगी मानोंउलटे जाने चाहतीथी येसब बातें श्रीरघुनन्दन जीकी वनयात्रा के समयहुईं १२ सब दिशाओं में अँधियारी छा गई ग्रह

व नक्षत्र किसीका प्रकाश आकाशमें न रहगया १३ अकस्मात् सब अयोध्या वासियों को चित्त उदासीन होगया आहार वा विहारादि करने को किसीका मननहीं चलता १४ सबअयोध्यावासी मारे शोकके सन्तप्त हो ऊंची सासें भरते हुये राजा दशरथ जीके ऊपर कोप करने लगे १५ राजमार्ग्ग में जितने मनुष्य चले जाते थे सबके नेत्रों से आंशू बहरहेथे कोई भी हर्षितचित्त नहीं पाया जाताथा सब शोक में डूबे हुये देखाई देते थे १६ शीतल मन्द सुगन्ध पवननहीं बहता चन्द्रमा का दर्शन अच्छा नहीं लगता था सूर्य्य नारायण का प्रकाश मन्द होगयाथा इस प्रकार सब संसार महाशोकग्रस्त होगया १७ ॥

चौ० मातु पिता हित सुत नहिँ करहीं । सुतहित मातु पितापरिहरहीं ॥ पति नारिन नारीपति काहीं । चहत नहीं मन सों पछिताहीं १ भ्रातहि भ्राता चहत न नीके । सकल कामतजि सबजन ठीके ॥ रामहि शोचहिं दिन अरु राती । आन न काहुहि बात सुहाती २ । १८ राम सखा जो रहहिं पियारे । सकल मूढ़ इमि भये दुखारे ॥ शोक भार पीडित बहु भाँती । नींद न आवत दिन अरु राती ३ । १९ राम रहित नहिँ अवध सुहावन ॥ लागत काहुहि बहुत भयावन । सकल मही अरु अवध राम सँग ॥ चलन हेतुकाँपत ह्वै डगमग ४ । २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकचत्वारिंशस्सर्ग्गः॥४१॥

श्रीरामचन्द्रजी की रथ की जबतक धूलि उड़ती देख पड़ी तब तक महाराज दशरथजी ने अपनी दृष्टि नहीं खींची यकटक खड़े निहारतेही रहे १ जबतक राजा दशरथ अपने धर्म्मात्मा पुत्र को देखतेही रहे तब तक मानों उनका शरीर पृथिवीपर बाढ़ता जाता था क्योंकि उठ उठ बारबार देखते जातेथे २ जब श्रीरामचन्द्रजी की रथकी धूलि भी न देख पड़नेलगी तब राजा अति पीडित व दुःखितहो भूमिपर गिरपड़े ३ तब उठाने के लिये राजाका दहिना हाथ कौशल्या जीने पकड़ा व बावाँ कैकेयी ने क्योंकि यद्यपि राजाकेसंग सब रानियां थीं पर ये दोनों अत्यन्त निकट थीं ४ तिस दुष्टा कैकेयी को अपना हाथ पकड़ते देख धर्म्म विनय व नीतियुक्त राजा बोले ५ हे पापिनि कैकेयि हमारे अङ्ग तू न छू हम

तुझे देखना अब नहीं चाहते क्योंकि अब न तू हमारी स्त्री है न औरही कोई स्नेह करनेवाली है ६ तुझे क्या जो कोई मन्थरादि दासी दास हैं वेभी अब आजसे न हमारे हैं न हम उनके हैं हमने अब यह जानलिया कि तुझे केवल अपने प्रयोजनही से प्रयोजन है कुछ हमारा स्नेह नहीं रहा इससे हम तुझको छोड़े देतेहैं ७ व जो हमने अग्निकी प्रदक्षिणाकर इसलोकमें पाणिग्रहण कियाहै उसको परलोकमें देखलेंगे इस लोकमें कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि अब हम जीनाही नहीं चाहते फिर स्त्री का कौन प्रयोजनहै ८ व जो इस रामचन्द्रके राज्यके पानेसे भरतको प्रसन्नता हो वा इस विषय में उनका भी सम्मत रहाहो तो जो कुछ हमारे मरण पर वे हमारेलिये देयँ वह हमको न मिलै अर्थात् वे हमको पिण्डदानादि न करें ६ ऐसे वचन सुन धूलि लगेहुये राजा को उठाय मारे शोक के व्याकुल कौशल्या जीने हाथ छोड़दिया और कैकेयीने भी १० श्रीरामचन्द्र ऐसे पुत्रकी चिन्तनाकर धर्म्मात्मा राजादशरथ ऐसा पछिताने जैसे कोई ब्राह्मण को चटकना लात आदिसे मारने से पछिताता है वा हाथसे अग्नि छूनेसे पछिताता है ११ बारबार राजा चलते फिर घूमनिहारते रामचन्द्रजी की रथकी लीक देख फिर गिरपड़ते उससमयग्रहण लगे हुये सूर्य्य चन्द्रमा के समान राजाका रूप मारे व्याकुली के नहीं अच्छा लगताथा १२ राजाने जाना कि अब हमारे प्राणप्रिय पुत्र श्रीरामचन्द्र नगर से बाहर निकलगये होंगे इस बातको स्मरणकर बड़ाही बिलाप किया व बोले १३ हाय जो घोड़े हमारे प्राणप्रिय पुत्रको रथमें लगये उनके पैरोंके चिह्न देखपड़ते हैं पर वे महात्मा नहीं देख पड़ते १४ जो श्रीरघुनन्दन चन्दनादि सुगन्धित वस्तु अङ्गों में लगाय सुखपूर्व्वक उत्तम शय्यापै शिरहाने तकिया धर शयन करतेथे वे अब आज कहीं १५ वृक्ष के नीचे काठ वा पत्थर पर शिर धर सोवेंगे १६ फिर दासी दासों के न होनेसे दुःखियों के समान देहमें धूलि लगाये पृथिवी परसे ऊधी श्वासें लेतेहुये उठेंगे जैसे कोई हाथीकहीं फँसगयाहो उस स्थान से कष्टके साथ निकलता है १७ हाय जिन रामचन्द्र को पुरनगरनिवासी उत्तम उत्तम स्त्री पुरुष देखते थे उन लोकनाथ को अनाथ के समान वनवासी लोग गलीमें चलतेहुये देखेंगे १८ हाय वे श्रीजनकनन्दनी जो सदा सुखही

करने के योग्यथीं अब आज काँटा पत्थर आदि गोंदती वनको जातीहोंगी १६ वनके जीवों का अति कठोर व भयावन शब्द सुन जानकी अवश्य डरेंगी क्योंकि वनके हाल वे क्या जानें २० हे दुष्टचित्त केकेयि अब तू सकामहो विधवा हो राज्य भोगकर हम तो अब प्राणप्रिय रामभद्र बिना नहीं जीसक्ते २१ इसभाँति रोते पीटते राजा सबलोगों के साथ अंगों में धूलि लगाये बहुत उदासीन चित्त अयोध्यापुरी में पैठे २२ देखा तो पुरीकी महादुर्दशा होरही है कि चौरहा व घरोंमें कोई मनुष्य नहीं सब के दरवाजे बन्दहैं जहाँ तहाँ दुखिया दूबरे मनुष्य परे हाय हाय कर कहर रहेहैं सड़कोंपर इधर उधर कोई मनुष्य चलेजाते हैं शतधा नहीं २३ ऐसी पुरीको देखते रोतेहुये राजाराजमन्दिर में पैठेजैसे कि सूर्य्यबा-दरमें प्रवेशकरते हैं २४ जैसे गरुड़ किसीकुण्डके सर्प्पोंको मारडालें वह कुण्ड शब्दहीन होजाय वैसेही रामचन्द्र जानकी व लक्ष्मणहीन राज-मन्दिर शब्दरहित होगया २५ राजमन्दिर में पहुँच गद्गद शब्द से अति दुखीहो महादीन वचन राजाबोले २६ कि हमें रामभद्रकीमाता कौशल्या के मन्दिरको लेचलो अन्यत्र हमारे हृदयको कल्याण नहीं २७ यहसुन द्वारपाल राजाको टेकाय श्रीकौशल्याजीके मन्दिर को लाये २८ जब कौशल्याजीके मन्दिर में गये और शय्यापै बैठे तो इधर उधर देख मन चलायमान हुआ कि हाय रामादि कहाँगये २६ जब देखा कि मन्दिरमें दोपुत्र व पतोहू नहींहैं तो ऐसा मन्दिर लगा जैसे बिना चन्द्रमा का आकाश ३० उस समय दोनों हाथउठाय बड़े ऊंचे स्वरसे राजाने पुकारा हाराम अपने माता पिताको छोड़ कहाँगये ३१ भाई रामचन्द्र के यहां फिर आनेतक जोलोग जीवेंगे व यहाँही रहें वे रामचन्द्रको देख लपटाय लपटाय मिलभेंट सुखीहोंगे हमेंक्या हमतो रहहींगे नहीं ३२ यही कहते कहते रात्रिहुई वह रात्रि मानों राजाके मरणही के लियेहुई होते होते आधीरात्रि बीती तो राजाकौशल्याजी से बोले ३३ ॥

चौ० ॥ प्रिये तुमहिं हम देखत नाहीं । देखन इच्छाहै मन माहीं ॥ पर नहिं छुअहु मोहिं यहि काला । छुअते तुम्हरे होब विहाला १ रघुवर माहिँ दृष्टि मम लागी । लौटत नाहिं तासु रस पागी ॥ नहिँ देखनकर कारण येहू । समझि लेहु मन कछुन सँदेहू २ । ३४सुत चिंतन

करत महिपालहि । लखि कौशल्या अतिहि बिहालहि ॥ ताढिग बैठि ऊधि करि साँसू । रोदन करन लगीं भरि आँशू ३ । ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४२ ॥

जब राजा इतनाकह शय्यापै गिर पड़े तब अति व्याकुल महाराज को देख आपभी मारे पुत्रशोक के व्याकुलचित्त हो दशरथजीसे बोलीं१ हेराजन् यहतो वही दशा ठहरी जैसे कोई सर्प्पिणीको पाले और वहसमय पायअपने स्वामिहीको काटै फिर आप स्वेच्छापूर्व्वक इधर उधर घूमती फिरै तैसेही आपने कैकेयीकी आजतक रक्षाकी अब सर्प्पिणी के समान आपहीके ऊपर विषछोड़खुले बन्धन जहांचाहे घूमेगी २ अबमन्थरा रामचन्द्रको वनको निकलवाय अपने मनोरथ सिद्धकर एकाग्रचित्तहो हमको अधिक दुःख दिलावेगी जैसेकिसीके घरमें सर्प्परहताहो समयपायकाटखाय इससे जो हुआ सोहुआ भला यह दुष्टामन्थरा तो यहांसे निकाल दीजाय अन्यथा आप व हमको भी कुछ न कुछ और इससे भी अधिक कष्ट दिलावेगी ३ आपने वनवास नाहक हमारे पुत्रकोदिया गृहमें रहने देते चाहे यहाँभिक्षाटनीही वृत्तिसे जीते वा दासभावको प्राप्त रहते कुछ कामही करते कैकेयीके कहनेसे भरतही को राज्य देते ४ यथेष्ट स्थानसे रामको कैकेयी से गिरवादिया अब भला मन्थरा को तो निकाल दीजिये उसके निकालनेसे कैकेयी की कुछ अप्रतिष्ठा न होगी जैसे कि अग्निहोत्री लोग जो खीर नीचे पात्रमें जलकर लगजाती है उसे राक्षसों का भाग जान निकाल डालतेहैं तो और खीर शुद्ध रह जातीहै ऐसेहीमन्थरा के निकाल देनेसे कैकेयी शुद्धचित्त हो जायगी ५ हाथ धनुर्व्वाण धारण किये प्रलम्बबाहु श्रीरामचन्द्र सहित स्त्री व सहित लक्ष्मण अजगर सर्प्प के समान पराई विलमें घुसतेहुये वनमें घूमेंगे ६ हाय कैकेयी की सलाहमें आय तुमने ऐसे हमारे पुत्रादिकोंको वनवास दिया जिन्होंने कभी वनके दुःखही नहींदेखे अबइससे अधिक उनको कौनकष्ट होगा७ तरुण अवस्था को प्राप्त पहिरने ओढ़ने के समय रत्न भूषणादि रहित कन्द मूल फलादि खाते पीते कृपणों के समान कैसे हमारे पुत्र वनमें बसेंगे ८ वह समय जो अभी आयजाय जिसमें कि सहित स्त्री सहित

भाई वनसे आये हुये श्रीरघुनाथको देखैं जिससे शोक जाताहै व परमानन्दहो ९ दोनों भाइयोंको निकट आये जान अयोध्यापुरी कब हृष्ट पुष्ट जनयुक्त होगी कि द्वारद्वार कदली आदिके खम्भे गड़ेंगे व फूलों की माला ठौर ठौर टाँगी जायँगी १० वनसे लौटे हुये दोनों वीरों को देख हर्षित जनोंसे भरी पुरी अयोध्या कब आनन्दके मारे उमड़ा चलेगी जैसे कि पूर्णमासी को समुद्र बढ़ताहै ११ सीताको रथ पै आगे बैठाये महाबाहु श्रीरघुनन्दन कब अयोध्या पुरीमें प्रवेश करेंगे जैसे कि वृषभ गाय को आगे किये सन्ध्या समय ग्राममें प्रवेश करताहै १२ कब अयोध्या में प्रवेश करते हमारे पुत्रोंके ऊपर हजारों प्राणी धानके लावा अक्षतादि अपने अपने महलोंपरसे छोड़ेंगे १३ शुभ कुण्डल धारण किये ऊपरको आयुध उठाये अयोध्यामें प्रवेश करते राम लक्ष्मणको कब सहित कँगूरा पर्वतोंके समान देखेंगी १४ ब्राह्मणादिकों की कन्या व देवता लोग हर्षितहो कब अयोध्यामें प्रवेशकिये दोनों वीरों को फल दे दे प्रदक्षिणा करेंगे १५ कब श्रीरघुनन्दन वुद्धि व अवस्थासे परिपूर्ण देवताओंको भी प्रकाशते हुये तीन वर्षके बालकके समान हमारी बुद्धिको दुलारनेके लिये उभारते हुये आवेंगे १६ हेवीर यह बात हम निश्चय मानतीहैं कि पूर्वजन्ममें हमने बछरोंके पीते समय उनकी माताओंके स्तन काट डारेहैं नहींतो राज्य पानेके समय हमारे प्यारे रघुनन्दन बनको न भेजेजाते १७ व इसी हेतु पुत्रके ऊपर बड़ा प्रेम करनेवाली गायके समान हमको सिंह समान कैकेयीने बछरू हीन करदिया १८ इससे अब हम सर्व्वगुण युक्त सकल शास्त्र पढ़े लिखे पुत्र श्रीरामभद्र बिना नहीं जी सक्तीं क्योंकि हमारे अकेलेही पुत्रहै १९ परमप्रिय पुत्र रघुनन्दन व लक्ष्मणको बिना देखे हमारे जीनेकी कुछ भी सामर्थ्य नहींहै २० ॥

हरिगीतिका ॥

सुत विरह शोकज अनल अब यह मोंहि जारतहै सही ।
अति अहित सकल विचारहीन न तनिक समझत कैसही ॥
जिमि महिहि जारत ग्रीष्मऋतुमें तरणि किरणन सोंसही ।
महिपाल सुनिय विहाल वाणी सत्य हम तुमसों कही १ । २१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४३ ॥

सब रानियोंमें उत्तम कौशल्याजीको नानाप्रकार से विलाप करती देख धर्म्म में दृढ़ मतिकर धर्म्मयुक्तवाणी सुमित्रा जी बोलीं १ हे कौशल्याजी तुम्हारे पुत्र श्रीरामचंद्र में सब सद्गुण हैं क्योंकि वे पुराण पुरुष पुरुषोत्तमहैं उनके लिये तुम्हारे विलाप करने व दीनता के साथ रोनेसे क्याहै २ जो कहो कि यदि वे पुराण पुरुष पुरुषोत्तम नारायण होते तो यहीं बैठे बैठे जो चाहते करते वन जानेका क्या प्रयोजन था सो तुम्हारे पुत्र जो राज्य छोड़ वनको चलेगये तो केवल अपने पिताके वचनही मानकर गये हैं जिसमें कि पिता माहात्मा व सत्यवादी कहावें यह बहुत अच्छा काम कियाहै ३ इससे जो पिताकी आज्ञा मानना उत्तम पुत्रोंका धर्म्महै वही श्रीरामचंद्रजीने कियाहै इसमें इस लोकमेंभी सुखहोताहै और उस लोकमेंभी अच्छा फलहोताहै सो रामचंद्र अपने धर्म्ममें टिके हैं वे शोचकरने के योग्य किसी प्रकार सेंनहीं हैं ४ फिर लक्ष्मणके लिये भी शोचकरना अनुचितहीहै क्योंकि वेभी तो उत्तम वृत्तिमें टिकेहैं जो ज्येष्ठ भाई पुराण पुरुष श्रीरामचंद्र की सेवाके लिये उनके सङ्ग चलेगये इसमें उन माहात्मा को सब प्रकार केलाभहैं फिर यह नहीं कि उनका उनका चित्तभी न मिलै नहीं लक्ष्मणभी तो सब प्राणियों पर दया रखतेहैं बहुधा रामचंद्र व उनके शील स्वभाव समान हैं इससे दोनों भाइयोंसे स्नेह बढ़ताही रहेगा ५ व जनकनन्दनी भी वनके दुःखोंको रामचंद्र की सेवाके आगे कुछ नहीं समझतीं व जैसे सुखही करनेके लायक है वैसे सुखही भोगेंगी क्योंकि धर्म्मात्मा तुम्हारे पुत्रके सङ्ग गई हैं ६ जो श्रीराम त्रिलोकी में अपनी कीर्त्तिका पताका घुमारहे हैं कि पिताकी आज्ञासे राज्य छोड़ वनको चलेगये सत्यव्रत करनेमें तत्पर हैं तिन रामभद्रने क्या क्या नहीं पाया ऐसा करने से उनकोसब कुछमिला ७ वा यहभी न शङ्काकरनी चाहिये कि वनमें नानाप्रकारके दुःख सहने पड़ेंगे क्योंकि यहतो प्रसिद्धही है कि श्रीरामचंद्र जीके शौच उत्तम माहात्म्य व सब प्रकारके श्रेष्ठ गुण देख सूर्य्य अपनी किरणोंसे उनको न सन्तापित करेंगे ८ वनोंसे निकल शीतलता उष्णता सहित सब कालोंमें कल्याण देकर पवन श्रीरामभद्र की सेवाकरेगा ९ व जब रात्रिमें श्रीराम सोने लगेंगे तो पिता के समान अङ्गों में लगट

अपने किरणोंसे चंद्रमा उनको आनन्दित करेंगे १० फिरजिन श्रीरामको विश्वामित्र जीने सुबाहु के मारने के पीछे अनेक दिव्यास्त्र दिये ११ वे महाशूरवीर पराक्रमी पुरुषसिंह श्रीराम अपने भुजोंके बलसे रक्षित निर्भयहो वनमें भी गृहही के समान निवास करेंगे १२ जिन रामचंद्रजी के बाणों कोपाय शत्रुलोग नाशको प्राप्त होते हैं तिन रामचंद्र जीकी आज्ञामें पृथिवी क्यों नटिकेगी १३ श्रीरामचंद्रजी के जो लक्ष्मी शूरता कल्याण की सब बातें हैं वे वनवाससे आय बहुतशीघ्र अपने राज्यको पावेंगे १४ फिर रामचंद्रजी सूर्य्य के भी सूर्य्य अग्निकेभी अग्नि प्रभु के भी प्रभु शोभा केभी शोभा कीर्तिके भी कीर्ति रूप क्षमा के भी क्षमा हैं १५ देवताओं के भी देवता सब प्राणियों के प्राण रखनेवाले ऐसे रामचंद्रजीके देश ग्राम पुरादिकों में अगुण माननेवाले कौन लोग हैं कोई भी नहीं १६ यह बात निश्चय जानो जानकीजी व पृथिवी के साथ बहुतही शीघ्र श्रीरामचंद्रजी राजगद्दी पर बैठेंगे १७ फिर देखिये सब अयोध्यावासी वनजानेके समय रामचंद्रको देख मारेदुःख के रोदन करते थे १८ व जटाचीर धारण कियेहुये देख सीता के समान राज-लक्ष्मी भी संगही चली गई तिन रामभद्र को क्या दुर्ल्लभहै १९ फिर यहभी नहीं कि अकेलेही वन को गयेहों नहीं धनुर्बाण धारण किये खड्गादि अन्यास्त्र धारणकिये लक्ष्मण भी उनके आगेआगे गये फिर उनको वनमें कौनवस्तु दुर्ल्लभहै जिस जिस वस्तुकी इच्छा करेंगे सब लक्ष्मण पहुंचाते रहेंगे २० हे देवि हम तुमसे सत्यही कहतीहैं कि शोक मोहादि छोड़िये वनवास से लौटेहुये श्रीराम को फिरदेखोगी २१ शिरसे इन अपने चरणोंकी वन्दना करतहुये श्रीरामको फिर चंद्रमाके समान उदित देखोगी क्यों घबड़ातीहो २२ अयोध्यामें आये अभिषेकपायेहुये राजलक्ष्मीको प्राप्त रामचंद्र जीको देख फिरआनन्दके आँशु छोड़ोगी २३ हे देवि रामचन्द्र के विषय में कोई भी अमंगल की बात नहीं देखपड़ती इससे कुछ भी शोक व दुःख न कीजिये लक्ष्मण व सीता के साथ राम-चन्द्र को शीघ्र देखोगी २४ हेदेवि तुमको चाहिये कि अन्य सब लोगों को समझावो बुझावो कि वे शोक न करें इस समय यह क्या हृदय में कदराई करती हो २५ जिस तुम्हारे रामचन्द्र के समान पुत्र समीचीन

मार्ग में चलनेवाले विद्यमान तिसको शोक न करना चाहिये क्योंकि रामचन्द्र के समान तीनों लोकों में समीचीन मार्ग में चलनेवाला कोई नहीं है २६ हम कहतीहैं कि प्रणाम करतेहुये पुत्रको देख वर्षाके मेघके समान आनन्द के आँशु छोड़ोगी २७ अयोध्याजी में आय तुम्हारेपुत्र श्रीरामभद्र ज़रूर कोमल व मोटे हाथों से तुम्हारे चरण मींजेंगे २८ प्रणामकर सब सुहृदों के संग सामने बैठहुये पुत्र के ऊपर आनन्द के आँशु बरसावोगी जैसे बादर पर्व्वत के ऊपर बरसातेहैं २६ ॥

चौ० ॥ वचन कथन महू कुशल सुमित्रा । विविधि भाँति समझाय पवित्रा ॥ राममातु कहँजसबनिआवा । मौनभईपुनिकहिमनभावा १ । ३० लक्ष्मण मातु वचन सुनि नीके । राम मातु भई मुदित सुठीके ॥ गयहु शोक नहिँ रह त्यहिलेशा । शरद मेघ जिमि बरसु नदेशा २ । ३१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुश्चत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४४ ॥

सत्यपराक्रमी महात्मा श्रीरामचन्द्रजी के पीछे पीछे सब अयोध्यावासी भी वन को चलदिये १ बड़ी कठिनता से सुहृदों का धर्म्म मान राजा दशरथ जी तो किसी तरह से लौटभी गये पर अयोध्यावासी किसी तरह न लौटे २ क्योंकि अयोध्यानिवासियों को सबगुण सम्पन्न होने के कारण पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान प्रियथे ३ यद्यपि सब मन्त्री दीवान प्रजा आदिकों ने श्रीरामचन्द्र को लौट आनेके लिये बहुत प्रार्थना की परन्तु श्रीरघुनन्दन पिता की आज्ञा शिरपै धर वनको चलहो गये ४ पर सब को ऐसी प्रियदृष्टि से देखदिया मानों नेत्रद्वारा पियेही लेतेथे ऐसा देखने के पीछे सब प्रजाओं से अपने पुत्र के समान स्नेह कर बोले ५ अयि अयोध्यानिवासियो जैसी प्रीति हममें करते हो व जैसा हमारा मान करतेहो वैसेही हमारे प्रिय के लिये भरत जी में करना ६ वे भी कल्याणात्मा कैकेयी के आनन्द देनेवाले तुम लोगों का प्रिय व हित करेंगे ७ यद्यपि वे अभी अवस्था देखने से तो बालही हैं पर ज्ञान से तो बड़े वृद्ध हैं व सब गुण पराक्रमादि इनके कोमल हैं इससे तुम लोगों का पालन बहुत अच्छी रीतिसे करेंगे किसी प्रकारका अन्तर न पड़ेगा ८ भरतजी में सब राजाओं के गुण विद्यमान हैं हमने

भी अच्छे अच्छे गुण उनको सिखाये हैं हमारे पीछे युवराज पदवी भी उन्हीं को मिलेगी इससे तुम लोगों को चाहिये कि उनकी आज्ञा भली विधि मानतेरहो ९ इसके सिवाय यहभी उपाय करना कि हमारे वन जाने के पीछे जिसमें महाराजाधिराज पिताजी को कोई कष्ट न होनेपावे ऐसा करनेसे हमारा बड़ाप्रियहोगा १० जैसेजैसे श्रीरामचन्द्रजी धर्म्मकी बातें सिखलाते जातेथे तैसे तैसे प्रजालोग और भी चाहतेथे कि रामचन्द्र ही जो किसी तरह हमारे राजा होते तो अच्छा था ११ अपने गुणों से ऐसा पुरनिवासियोंके मनको बाँधकर खींचा कि सबके सब रोदन करने लगे १२ उनमें ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध पराक्रमवृद्ध तीनप्रकारके ब्राह्मणलोग भी थे वे दूरहीसे शिर व हाथ हिला घोड़ोंसे बोले १३ हे उत्तम जातिके तुरंगो। जल्दी के साथ रामचन्द्रजीको न लेचलो बरन लौटआवो अपने स्वामीके हितकारी होवो १४ जितने प्राणी होतेहैं सब सुनतेहैं पर घोड़े विशेषता से सुनते हैं इससे हमलोग तुमसे प्रार्थना करते हैं कि लौट आवो १५ क्योंकि ये रामचन्द्रजी धर्म्महीसे शुद्धात्मा वीर न दृढ़व्रतहैं और तुमलोगोंके स्वामीहैं इससे तुम्हें यहीचाहिये कि यहीं अयोध्याही से इन कोलिये घूमो पुरीसे वनको न लेजावो १६ इसतरह उन वृद्धब्राह्मणों को रोय रोय कहतेहुये देख श्रीरामचन्द्रजी रथसे उतरपड़े कि ये ब्राह्मण लोग पैदर आतेहैं हम रथपै क्या चढ़ेचलें १७ और धीरे धीरे पैदर बनकी ओर सहित लक्ष्मण व जानकीजी के चले जिसमें ये ब्राह्मणलोग भी चलेआवें १८ चाहते तो रथशीघ्रता के साथ चलवाय आगे बढ़जाते पर श्रीरामचन्द्र ब्राह्मणों को पैदर चलते न देखसके मारे दयाके कुछ दूर चलके फिर खड़ेहोगये १९ कुछ रहकर फिर धीरे धीरे चले चलते हुये राघवको देख अति व्याकुलहो सब ब्राह्मण रामचन्द्रजी से बोले २० हे ब्रह्मण्यदेव हम सब ब्राह्मण भी तुम्हारे सङ्गहीसङ्ग चले आते हैं व हम लोगोंकी यज्ञसामग्री तुम्हारे पीछेहो पीछे आती हैं व ब्राह्मणों केही कन्धों पर चढ़ीहुई अरणी आदि अग्निहोत्र सामग्री भी आतीहीहै २१ व वाजपेय यज्ञ करने से जो छत्र हमलोगों के ऊपर लगेहुये हैं देखिये आपके पीछे पीछे चलेआते हैं जैसे शरदऋतुमें बादर उड़तेहैं २२ जब आप को वनमें घाम लगेगा क्योंकि आप छतुरी नहीं लगाये हैं तो हमलोगों

इन्हीं वाजपेय यज्ञसे मिलेहुये छत्रोंसे आपकी छायाकरेंगे २३ जाइये कुछ सन्देह नहीं यह हमारी वेदमन्त्रमयी बुद्धि तुम्हारे साथ वनहींको जाया चाहती है इससे हमेंलेते चलिये २४ जो कहियेकि तुम्हारे गृहकी रक्षा कौन करेगा सो जो वेद हमारे हृदयमें टिकेहैं वेही गृहकी भी रक्षा करेंगे व स्त्रियोंकी भी २५ हम सब तुम्हारे सङ्ग चलनेको तयार हैं अब किसीकी कुछ सम्मति नहीं लेनीहै क्योंकि जब धर्म्मात्मा आप यहांसे चलेजायँगे तो फिर यहां क्या रहजायगा २६ हे राम अबहम सबवृद्धों के कहने से लौट चलिये देखियेतो गिरते पड़तधूरिमें लोटते पेटत चले आते हैं २७ हे प्यारे रामचन्द्र जो ब्राह्मणलोग यहां आयेहैं तिन सब की यज्ञ समाप्ति तुम्हारे लौटनेही पर निश्चयहोगी २८ स्थावर जङ्गम सबकी भक्ति आपमेंहै इससे अपने भक्तोंमें भक्ति देखाइये २९ हमलोग अतिवृद्ध होनेके कारण तुम्हारे पीछे पीछे नहीं दौड़नेपाते इससे कृपा करके लौट आइये या सङ्गही लेते चलिये क्योंकि प्रचण्डपवनके लगने से जैसे वृक्ष काँपते हैं वैसही हमलोग भी काँपते हैं ३० हमलोग तो जानों चैतन्य रूपहीहैं ये पक्षी लोगभी आपके दर्शनकी इच्छासे वृक्षों पै एकत्र बैठे हैं कोई कुछ भोजनादिके लिये व्यापार नहीं करते ३१ इसरीति से बहुत कुछ ब्राह्मण लोग विलाप करते हुये चले आते थे कि आगे तमसा नदी देखपड़ी मानों आगे रामचन्द्र जी को जाने को रोंकतीही है ३२ ॥

चौ० ॥ तबसुमन्त्र अमथकित तुरङ्गा । रथटमहित को आयु एकसङ्गा ॥ तमसा जल करि पान तहाँमुनि । परन लगे जकसिवाम देहकुंन १ । ३३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४५ ॥

अति रमणीक तमसानदी के तटमें सीता व लक्ष्मण जी को देख श्रीरामचन्द्रजी बोले १ हे लक्ष्मण आज यह बनवासकी पहिली रात्रि है आजहीसे चौदहवर्ष पर्य्यन्त वनमें रहना होगा इससे जो जो कन्द मूल फलादि वनके भोजन हैं उनके विपरीत उत्तमान्नादि की वांछा न करना और सबप्रकारसे कल्याण है २ देखिये सबपक्षी अपने अपनेस्थान को उड़ेचले आते हैं मृगगण भी अपने अपने स्थानोंको आते हैं परसब

वन अति उदासीन विदित होताहै मानों चारों ओरसे रोनेचाहता है ३ आज हमारे पिताजीकी राजधानी अयोध्यापुरी स्त्री पुरुष सहित इहाँ चलेआये हम लोगोंको शोचतीहोगी इसमें कुछ सन्देह नहीं ४ क्योंकि बहुत गुणों के होनेके कारण सब अयोध्यावासी राजा व हमको तुमको शत्रुघ्न व भरत सबको शोचतेहोंगे क्योंकि हमलोगों में सब प्रीति रखते हैं ५ और नहीं हम अपने माता पिता का शोच करते हैं कि हमारे लिये बारबार रोते रोते अन्धे न होजायँ ६ यद्यपि हम जानते हैं कि भरतजी बड़े धर्म्मात्मा हैं हमारे मातापिता को धर्म्म अर्थ कामसहित वचनोंसे समझाते बुझाते रहेंगे कुछ अन्तर न पड़ेगा पर जी घबड़ाता है ७ भरतजीके शील स्वभावों को स्मरण कर हम पितामाता का शोच नहीं करते ८ हे लक्ष्मण तुमभी जो हमारे संग चले आये बहुत अच्छा काम किया नहीं तो जानकीजीकी रक्षाके लिये कोई सहायक ढूंढ़ना पड़ता अब तुम सब प्रकारकी रक्षा करते रहोगे ९ हमारा यह विचार है कि यद्यपि वनके कन्दमूलादि सब यहां विद्यमान हैं तथापि आज केवल जलही पानकर रहजावें १० इतना लक्ष्मण जी से कह फिर सुमन्त्र जी से बोले हे सुमन्त्र तुम अच्छी तरह आज घोड़ोंकी सेवाकरना किसी तरहका अन्तर न पड़नेपावे ११ यहसुन सूर्य्यास्त होते होते सुमन्त्रजी घोड़ोंको यथोचित स्थानपै बँधवाय बहुतबहुतघास दाना आदिदे रामचन्द्रजीकी ओर झुके १२ व सायंकाल की सन्ध्याकर जब रात्रि आई तो आप व लक्ष्मण जोदोनोंजने रामचन्द्रजीके शयन करने के लिये स्थान बनाया १३ सुमन्त्रजीकी बनाई पत्रादिकी शय्या को तमसा के तीरदेख लक्ष्मण व जानकीजीके साथ श्रीरामचन्द्रजी बैठे १४ जब श्रीरघुनाथजी व जानकी महारानी दिनके श्रमसे थके थकाये सोय गये तब लक्ष्मणजी श्री सुमन्त्रजी से श्रीरामचन्द्र जी के विविध भाँति के गुण कहनेलगे १५ लक्ष्मण व सुमन्त्र दोनों जनोंके जागतेही जागते व रामचन्द्रजीके गुण कहतेही कहते प्रातःकाल होगया १६ तमसाके तटपै बहुत गायें चरती थीं जिससे किकोई जलमें न थूके व मैलापन न करै इससे किनारेसे कुछ दूरपर सहित समाज श्रीरामचन्द्रजी उस रात्रि में सोये थे १७ बड़े प्रातःकालही श्रीरामचन्द्रजी शयनसे उठे देखा तो सब अयोध्यावासी सो

रहेथे इससे लक्ष्मणजी से बोले १८ हेलक्ष्मण इन बेचारे अयोध्यावा-
सियोंको देखिये हममें चित्तलगायेहैं व अपने गृहपुत्रादिकों की अपेक्षा
नहीं रखते श्रमकेमारे ऐसे थकगयेहैं कि वृक्षके नीचे बिना कुछ बिछाये
ही सोयेहैं तिसपर भी इससमय तक नहीं जागे १९ जैसे ये पुरवासी
हमारे लौटानेकेलिये नियम कियेहैं तैसेही बिना लौटाये प्राणभी छोड़
देंगे यह निश्चय है कि हमें जाने न देंगे २० इससे जबतक ये सोतेही
रहें तब तक हम सब रथ पै चढ़ चलेजायँ तमसाके किनारे कुछ दूर
तक जानो मार्गही नहीं इससे ये लोग ढूंढ़े भी न पावेंगे चलिये २१
यद्यपि सब अयोध्यानिवासियों का स्नेह हममें बहुत है पर जब सोय
के उठेंगे और मार्गही न जान पावेंगे किधर गये तो इस समय अब
हमारे पीछेनलगेंगे अयोध्याहीको लौटजायँगे फिर चाहेकभी आवें २२
जोकहो कि संगही लिये चलिये तो ऐसा करनेमें इनको वनमें बड़े बड़े
दुःख सहने पड़ेंगे और राजकुमारों को चाहिये कि अपने सुखके लिये
वा ऐसेही प्रजाको दुःख न देवें इससे हमें चाहिये कि अपने दुःखसे
अयोध्यावासियों कोभी न दुःखित करें २३ यह सुन लक्ष्मणजी बोले
कि यहबात हमेंभी रुचतीहै आप बहुत शीघ्र रथपै चढ़िये सत्य सत्य
इनको दुःखदेना अनुचितही है क्योंकि आप धर्म्ममूर्त्ति ठहरे २४
यह सुन श्रीरामचन्द्र जी सुमन्त्रजीसे बोले कि आप बहुत शीघ्र रथ
तैयार कीजिये कि यहांसे अभी वनकोचलें २५ यहसुन सुमन्त्रजी ने
उत्तम घोड़े नहके रथतैयार किया व हाथजोड़ रामचन्द्रजीसे जनाया २६
कि हे राम यह रथ तैयार है लक्ष्मण जानकी सहित आप शीघ्र
इसपै सवार हूजिये २७ इतना कहतेही सहित सामग्री रामचन्द्र रथ
पै चढ़े व अति वेगवती भयङ्कर भँवरवाली तमसानदीको उतरगये २८
कुछ दूरतो अच्छा मार्ग्ग नहीं मिला फिर कण्टकादि रहित सुन्दर
गली मिली २९ ॥

चौ० ॥ पुर निवासि मोहन हित रामा । कह्यहु सुतसों वचन स-
कामा ॥ सारथि रथचढ़िउत्तर ओरा । हाँकहुरथ यहकरत निहोरा १ ॥ ३० ॥
घटिका द्वय उत्तर अति वेगा । चले जाहु मारग करि रेगा ॥ इमि फिरि
आयहु जिमि पुरवासी । जानहिँ हमहिँ न कहाँ प्रकासी २ । ३१

राम वचन सुनि तिमि किय सारथ । मार्ग भुलाय कीन पुरुषारथ ॥
रघुवर निकट लाय रथ फेरी । कह्यहु चलिय सब करिय न देरी३।३२
यह सुनि जनकसुता रघुनाथा । लक्ष्मण युत रथ चढ़िसक साथा ॥
तमसा तटसों तप वन ओरा । रथ सारथी चलाय निहोरा ४।३३ ॥

हरिगीतिका ॥

महारथ रघुनाथ रथ चढ़ि सारथो सँगही सही ।
वन गयहु लक्ष्मण मैथिली सह मुदित ह्वै सुखहीलही ॥
चलन समय कुवेर दिशितन किह्यहु रथ मुख जानिकै ।
माङ्गल्य हेतुक दर्श लगि इमि चल्यहु राघव मानिकै ॥ ५ । ३४॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४६ ॥

वहाँ रामचन्द्रजी तो रथपै चढ़ वनको चलेगये जब बनाय. दिन चढ़ आया तो सब अयोध्यावासी जागे देखा तो रामचन्द्रजी नहीं उनकेबिना मारे शोकके सबके चित्त हर गये १ व सबके सब शोकके आँशु गारते व इधर उधर देखनेलगे जब किसी ओर रथकी लीक भी न विदित हुई तो अति दुःखित हुये २ व सबके मुख मारे विषादके लटक आये व अति दीनहो करुणासहित वचन बोलनेलगे ३ हाय इस नींद को धिक्कार है कि जिसके मारे हम लोगों का चित्त हरगया जिससे अति विशाल वक्षस्थलवाले श्री रामचन्द्र को अब हम लोग नहीं देखते ४ फिर जानो हम लोग सोयही गये श्रीरामभद्र भी अपने भक्त हमलोगों को छोड़ कैसे चलेगये क्योंकि वे तो मर्य्यादा पुरुषोत्तम हैं उन्हें ऐसा काम करना उचित न था ५ जो रघुवंशियों में श्रेष्ठ श्री रामचन्द्र आज तक अपने औरस पुत्र के समान हम लोगों की पालना करतेथे वे अब यहाँ विदेशमें हमको छोड़ वनको कैसे चलेगये ६ खैर उन्होंने जो किया सो किया अब हम कितो इसी स्थान पर मरजायँगे वा हिमालय पर्वत पै जो महापथ नाम स्थानहै वहाँजाय गल जायँगे क्योंकि बिना श्रीरघुनाथके हमारे जीनेसे क्याहै ७ यदि यह भी न होगा तो ये बड़ेबड़े सूखे सूखे बहुत काष्ठ यहाँहैं इनसे चिता बनाय उसीमें गिरके जर मरेंगे ८ भला हम अयोध्या में जाय यह कैसे कह सकेंगे कि निन्दारहित सदा

प्रियवादी आजानुबाहु श्रीरामको वनमें भेज आये ९ जब बिना श्रीरघुनन्दन हम लोगोंको अयोध्यावासी देखेंगे तो निश्चयहै कि बालक युवा वृद्ध स्त्री पुरुष सब बिना आनन्द होजायँगे १० भला हम लोग तिन्हीं श्रीरामचंद्र जीके साथ यहाँआये अब उन्हें बिना पुरीको कैसे जायँगे ११ इसरीतिसे नानाप्रकारके वचन ऊपरको बाहु उठायउठाय कहते व रोदन करते जातेथे जैसेकि बछरू न होनेसे गाय रोदन करती हैं १२ देखातो जिस मार्ग्ग होकर रथगयाथा उसके पीछे कुछ दूरगये आगे फिर रथका भी मार्ग्ग न विदित हुआ तब अतिव्याकुल हुये १३ फिर उसी रथही की गली गली घूमआये व कहनेलगे कियह क्या है अब हम लोग क्या करें हाय बड़े अभागी ठहरे १४ जब बनाय निराश होगये ढूंढ़नेकी शक्ति न रही तो जिधर होकर अयोध्या से आयेथे उसी मार्ग्ग होकर अयोध्यापुरीको चलेआये यहाँ सबमहादुखी होरहेथे १५ पुरीको अति व्याकुल देख मारे शोक के रोदन करनेलगे कि हाय अब इसपुरी की यह दशा होगई १६ ॥

चौ० ॥ बिनरघुनाथ न सोहत नगरी। शोक ग्रस्त रोवत हैं सगरी॥ घन्तग रहित कुण्ड जिमि सिन्धू। मरुड़ हेतु सोहत नहिँ अन्धू १।१७ चन्द्र हीन अम्बर जल हीना। जलधि समान नगर अति क्षीना॥ आनँद रहित देखि अति दीना। भये सकल रोदन बहुकीना २।१८ सघन सदन जन कीन प्रवेशा। महा दुखित नहिं सुख लवलेशा॥ निज-जन परजन पुरजन सारे। देखत मानहुं तिन न निहारे ३।१९॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तचत्वारिंशस्सर्गः॥ ४७॥

इसभांति जब सब अयोध्यावासी अति उदासीनचित्त महादुःखसे दुःखी नेत्रोंसे आंशु बहाते हुये मरणकीइच्छा किये मारे शोकके पीड़ित १ रामचंद्रजी को वन पठायकर आये तो ऐसे निश्चेष्ट उदास होगये मानों उनके प्राणही निकलने चाहते थे २ अपने अपने घरोंमें जाय जाय अपनी अपनी स्त्री पुत्रादिकों से मिले मिलाये व सबके सब रोदन करने लगे ३ जबसे श्रीरामचंद्र वनको चले गये थे न तो कोई कभी हर्षित होता न आनन्दित होता न बनियां लोग दूकानें धरते वा खोलते बा-

ज़ारकी शोभा कुछभी न रहगई थी गृहस्थों के चूल्ह नहीं बरेथे सबके सब भूखे प्यासे बैठेथे ४ कोईभी अयोध्यावासी खोई हुई वस्तुपाय वा ऐसेही बहुत धनपाय हर्षित नहीं होते पहिलौठी के पुत्र को पाय भी कोई आनन्दित नहीं होते ५ सब स्त्रियां जब उनके पति गृहको आते उनको आनन्दसे नहीं मिलतीं वरन करू वचन बोल बोल उनको पीड़ित करतीं जैसे हथिवाल अंकुश से हाथी को पीड़ित करता ६ आपस में सब यह कहते कि जो हम लोग रामचंद्रजी को नहीं देखते तो गृह स्त्री पुत्र धनसुख आदिसे क्याहै ७ भाई संसारमें एक लक्ष्मणजी सत्पुरुष हैं जो सहित जानकी वनजाते हुये श्रीरामचंद्रजीकी सेवा करते हुये उनके पीछे पीछे चलेगये ८ भाई जिन नदियों व तडागों में रामचंद्रजी ने स्नान किया होगा वे धन्यहैं ९ बड़े बड़े वन अपने छोटे छोटे रमणीक वनोंसे व नदियाँ अपनी अपनी तराइयों से पर्व्वत अपने अपने कँगूरों से श्रीरामचंद्रजीको शोभित करातेहोंगे १० भाई जिसवनमें वा पर्व्वत पर श्रीरामचंद्र जाते होंगे वह मानों परमप्रिय अतिथि इनको पाय बिना पूजाकिये न छोड़ता होगा ११ चित्र विचित्र पुष्पोंसे पुष्पित नाना प्रकार की मंजरी धारण किये जिनके लोभसे भ्रमर गुंजार कर रहेहैं ऐसे पर्व्वत अपना अपना रूप श्रीरामभद्रको देखावेंगे १२ रामचंद्रजी जब जिस पर्व्वत पै जातेहोंगे तो चाहे उस ऋतुमें उस उत्तम पुष्प वा फलका समय नहो पर पर्व्वत लोग अकालमें भी सब प्रकार के फल पुष्प देखातेहोंगे १३ फिर पर्व्वतलोग विविधि भाँति के निर्झरों से अनेक तरहके जल देखातेहोंगे १४ फिर सब पर्व्वत परके वृक्ष श्रीरामचन्द्रजी को रमित करावेंगे क्योंकि जहाँ रामचन्द्रजी बसते हैं तहाँ किसीका निरादर नहींहोता १५ हाय ऐसे महाशूरवीर महाराज दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र कभी हम लोगोंसे दूर नहीं होतथे सो दूर होगये अब हमलोग भी उन्हींके पीछेजायँगे १६ क्योंकि हमलोगोंको उन्हींकी पादच्छायामें सुखहै जिससे वही हमारीगतिहैं वह सबके शरणदहैं १७॥

चौ० ॥ हमसब सेवब जनक कुमारी । तुमरघुनाथ बाण धनुधारी ॥
यह निज निज पतिसों पुरनारी । कहा मनोहर वचन उचारी १ । १८
वन महँ योग क्षेम रघुनायक । करहिं तुम्हार सकल सुखदायक ॥

जनक सुता सब नारिन केरो । करिहैं योग क्षेम हिय हेरो २ । १६ ॥

क्योंकि कौन यहाँ बैठे बैठे रामचन्द्र का आगमन परखा करेगा यहां के रहने से क्या होगा चित्त तो रामचन्द्रजी के संग चलाजाताहै फिर अशुभ बातें यहाँ बैठे बैठे कौन सुनेगा २० जो अब मन्थरा काही राज्य होगया है जिसमें अधर्म्म के सिवाय धर्म्म होहीगा नहीं व न अब कोई स्वामी रहाहै तो हम लोगों को जीनेही से कुछ प्रयोजन नहीं फिर पुत्र व धन लेकर क्या करेंगे २१ फिर जिस मन्थराने कह सुन केकयी से पति व पुत्र दोनों राज्य लेने के कारण छोड़ा दिया अब भला वह किसको छोड़ेगी बरन सबको केकयी से दूर करादेगी हमलोग क्या यह कुल भरका संहार करादेगी २२ भाई हमतो अब मन्थरा व कैकेयी के राज्यमें न बसेंगे चाहे ये दोनों हम लोगों का पालन भी करें अपने अपने पुत्रों की सौगन्द खाते हैं कि हमारा अब यहाँ रहा न रहजायगा २३ जिस कैकेयी ने महाराज दशरथजी के प्राणप्रिय पुत्र रामचन्द्रही को कहसुन वनको निकलादिया तो इस दुष्टा निर्दय कैकेयी को पाय कौन सुख भोगेगा २४ यह हम लोगों ने ठीक ठीक जान लिया कि अब यह राज्य बिना स्वामी का होगया इस कैकेयीही के कारण कुछ दिन में नाश भी होजायगा २५ क्योंकि रामचन्द्र को जैसेही राजा सुनेंगे कि वनको चलेगये नहीं लौटे वैसेही वे मृतक होजायँगे फिर यह तो प्रसिद्धहीहै कि दशरथ के मरनेपै राज्य का लोपही होजायगा २६ इससे हम लोग अब क्षीण पुण्य होगये आजही तक जो कुछ था सोथा अब कितो लाओ घोरके बिषपीलेवें वा रामचन्द्र के पीछे पीछे चलें वा ऐसे स्थान पै चलें जहाँ कोई सुन भी न पावे कि कहाँगये २७ हाय राम लक्ष्मण जानकी को नाहक वनको निकाल दिया हम लोगों को भरत के सिपुर्द किया जैसे कोई कसाई को गाय सौंपे क्योंकि मन्थरा के मारे हमकाहे को जीने पावेंगी २८ हाय पूर्णचन्द्र समान मुख श्यामस्वरूप चौड़ी छाती शत्रुओं के नाशनेवाले आजानुबाहु कमलनयन लक्ष्मण के ज्येष्ठभाई २९ सबसे प्रथम बोलनेवाले मधुरमूर्त्ति सत्यवादी महाबली सौम्य स्वभाव सब लोक को चन्द्रमा के समान प्रियदर्शन ३० पुरुषों में सिंह मत्तमातङ्गविक्रम महारथ ऐसे श्रीराम अब वनमें विचरेंगे ३१

इस रीति से अयोध्या नगर के निवासियों की स्त्रियाँ विलाप करतीहुई ऊंचे स्वरसे रोनेलगीं जैसे मरण समय में लोगों के इष्टमित्र रोते हैं ३२ इस तरह अपने अपने गृह में सब स्त्रियाँ अपने अपने पति पुत्रादिकोंके आगे रोदन करती थीं कि इतनेमें सूर्य्य अस्ताचल कोगये रात्रि होआई ३३ मारे उदासी के नतो कहीं गृहस्थों के चूल्हबरे न किसी के दीपक जले इस कारण अयोध्या में उस रात्रि को अँधियारीही अँधियारी दिखाई देती कहीं मार्ग्गमन्दिरादि नहीं सूझते ३४ बनियों की दूकानों पर कहीं मनुष्य का शब्दनहीं होता हर्ष सब लोगों का जातारहा ठौर ठौर लोग छिपे छिपाये पड़े थे इसलिये अयोध्या पुरी तारागण रहित आकाश के समान उदास विदित होती ३५ ॥

दो० राम निमित्त सब युवति गण दुखित भईं बहुरोय ।
जिमि निजसुत भ्रातावनहिं गयेदुखित नर होय १
सकल बिलपि बहु भांति करि रोदन भईं विचेत ।
जासों बिन कर सुतनसों अधिक राममहँ हेत २ । ३६ ॥

हरिगीतिका ॥

शान्त प्रीतोत्सव सुनर्त्तन बाद नादिसकेत में ।
हर्ष रहित न हाट बाटक पाट उघर निकेत में ॥
तिमि भै अयोध्यानगरि जिमिजलरहित जलधिनसोहई ।
नहिं कतहुँ शब्द सुनातनर पशुपक्षि गगनहिं बोलई ॥ ३ । ३७॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्कीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टचत्वारिंशस्सर्ग्गः४८ ॥

वहाँ अयोध्यावासी तो ऐसे रोते पीटते घर पहुँचे वहां श्रीरामचन्द्र जी भी तमसा नदी के किनार से चले जो रात्रि बाकी रहीथी उतनीही में पिता के वचनों का स्मरण करते कराते बहुत दूर निकल गये १ तब प्रातःकाल होनेलगा रात्रि बीतगई रामचन्द्रजी ने उतरकर सन्ध्योपासन किया व फिर रथहाँकी गई नानाप्रकारके देश नाँघती हुईचली२ मार्ग्ग में नानाप्रकारके ग्राम व फूले वनदेखते हुये अति वेगवान घोड़ों की रथपै चलेजाते ३ ग्राम निवासियों के वचन भी सुनते जातेथे जो कि ऐसा कहते थे कि काम के वशीभूत राजादशरथ को धिक्कार है ४

हा यह कैकेयी बड़ी निर्लज्ज पापिनी व पापकर्म्म करनेवाली है बड़ा तीषा स्वभाव है मर्य्यादा का तो नाशही इसने करदिया बड़े तीक्ष्ण कर्म्ममें लगी है ५ जोकि महाराजाधिराज के ऐसे धार्म्मिक महावुद्धिमान् जितेन्द्रिय दयावान् पुत्रको वनको भेजवाती है ६ भला और जो हुआ सो हुआ ये जनकनन्दनी बड़े भाग्यवाली सीताजी जो सदा सुखही भोग करती रहीं वे ये वन के दुःखकैसे सहेंगी ७ अहो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि महाराजा दशरथजीका स्नेह पुत्रमें कुछभी नहीं जो पापरहित प्रजापालनमें कुशल ऐसे पुत्र श्रीरामचन्द्रको वनभेजा चाहते हैं ८ ग्रामोंके जो उत्तमनिवासीथे उनके ऐसे वचन सुनते सुनाते कोशलेश्वर श्रीराम कोशला पुरीही के राज्यके देशों में चले ९ चलते चलते अति निर्म्मल जलभरी वेदश्रुति नामनदी उत्तर दक्षिण दिशाको चले १० चलते चलते अति शीतल व निर्म्मल जलवाहिनी गोमती नदी देखपड़ी जिसके काछामें हज़ारों गाय हरी हरी घास चररहीं थीं उतरकर उसपारगये ११ गोमतीनदी उतर श्रीरामचन्द्रजी अतिशीघ्रगामी घोड़ों की रथपै सवार सईनदी उतरे इसके किनारे पै हज़ारों मोर व हंसबोल रहेथे १२ उसके अनन्तर श्रीरामचन्द्रजी ने जानकीजी को दिखाया कि यह वही पृथिवी है जोकि राजामनुने महाराज इक्ष्वाकु जीको राजधानी बनाने के लिये दीथी देखो इसमें नानाप्रकारके धन धान्ययुक्त देशहैं १३ इसके पीछे श्रीराम सुमन्त्रजीसे मत्त हंसके स्वरके समान वाणीसे बोले १४ हे सूत हमनहीं जानते कि अब कब सरयूके तीरपै पुष्पित वनमें शिकार खेलेंगे व अपनी माता व पिता को मिलेंगे १५ कुछ हमको शिकार खेलना बहुत प्रियनहीं पर जिससे आगेके मन्वादि राजर्षि खेलते चलेआये हैं इसीसे हमभी सरयू तटपै खेला चाहते हैं १६ इसलोकमें रीति चलीआईहै कि बहुधा राजर्षिलोग अपनीप्रीति के लिये वनमें शिकार खेलतेहैं इसीसे सब पराक्रमी राजा खेलते चले आयेहैं १७ महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी औ जो प्रयोजनदेखते उसी प्रयोजनकी बात सुमन्त्रजी से मधुरबाणी से कहते चलेजाते १८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकोनपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ४९ ॥

इसरीति से अति विशाल कोशल राज्य देखते चलेजातेथे कि लौट अयोध्या पुरीकी ओर मुखकर हाथजोड़ श्रीरामजी बोले १ हे काकुत्स्थ बंशियोंकी पाली अयोध्याजी तुमसे व जोतुममें देवतावसतेहैं वा जोतुम्हारी पालना करते हैं सबसे पूंछतेहैं २ कि आप ऐसी दयाकीजिये जिसमें वनवास से कुशल पूर्व्वक लौटके व अपने पिताजीके वचनों का पालन कर उनसे उऋण हो पिता माता के सङ्ग फिरि तुमको देखें ३ इतना पुरीसे कह अरुणनयन श्रीरामनेत्रों से आंसु बहातेहुये दहिना हाथ ऊपरको उठाय सब देशनिवाशियों से बोले ४ कि आपलोगों ने हमारे ऊपर बड़ीदयाकी व बड़ास्नेह किया पर अब अपना अपना काम करो हमारे सङ्ग चलने में बड़ा दुःखपावोगे इससे बिलम्ब न करो ५ ग्रामदेश वाले मनुष्योंसे जब श्रीरामभद्रने ऐसा कहातो वे लोग उनको प्रणाम व प्रदक्षिणाकर बहुत रोदनकर जहाँके तहाँ खड़ेहोगये ६ वे लोग श्रीरामचन्द्रजी को देख तृप्त न हुयेथे इसलिये रोतेही रहे कि वे बड़ी दूर आगे चलेगये फिर न देखपरे जैसे सूर्य्य नारायण अस्त होनेपै नहींदेख पड़ते ७ तिसके पीछे धन धान्ययुत दान शील कल्याण रूप सबओरसे भयरहित अति रमणीक देवमन्दिर व यज्ञस्तम्भ समन्वित ८ पुष्पवाटिका व आम्रके वनसहित नाना प्रकार के तड़ागों से शोभित सन्तुष्ट व हृष्ट पुष्ट जनसहित गोकुलों के झुण्डके झुण्डों सहित ९ राजाओं से रक्षित तपस्वि ब्राह्मणोंके वेदाध्ययनसे पूर्ण ऐसे कोशलराज्यको श्रीरामचन्द्रजी रथपै चढ़ धीरे धीरे नाँघे १० तिसके पीछे छोटेछोटे राजाओं के राज्यदेखनेलगे जोकि महाराज दशरथहीके अधीनथे उनमें नाना प्रकारकी पुष्प वाटिकादि विद्यमानथीं ११ तिन्हीं राज्यों में बहतीहुई त्रिपथगा श्रीगंगाजी को श्रीरामचन्द्रजी ने देखा जिसमें कहीं सेवारका नाम नथा जिसके तीरपै ऋषियोंकी भीर नीर पीरहीथी व बहुतसे सेवा कर रहेथे १२ जिसके निकट महाजनों के स्थान धन धान्य सहित विराजमान थे जिसके कुण्डोंमें स्वर्ग से आय आय आनन्दित मनहो अप्सरा स्नान करती थीं १३ देवता दानव गन्धर्व्व किन्नर नागादिकों की स्त्रियां बैठी सेवा कररहींथीं १४ देवताओं के क्रीड़ा करनेके सैकरों स्थान किनारे पै विद्यमान थे देवताओं की फुलवारियां दोनों तीरोंपै

विराजमानथीं देवताओंके निमित्त आकाशमें जिन गंगाजी की धारा चलीगई थी नानाप्रकार के कमल फुलारहेथे १५ जो इधर उधर से जलके झोकेलागतेथे मानों वही उनका ठठाकर हँसनाथा निर्म्मल फेना जो उठताथा मानों वही उनका हँसनाथा कहीं कहीं जल एक में लपट कर बहता कहीं कहीं नानाप्रकारके कुण्डोंमें भवँरघूमतेथे १६ कहींकहीं बहुत गहिर होने के कारण धीरे धीरे जल बहता था कहीं कहीं अति वेगसे प्रवाह बहता कहीं कहीं बड़े ऊंचे शब्दसे जलहहाता कहीं कहीं अति भयङ्कर शब्द सुनाई देता १७ ठौर ठौर देवताओं के झुण्ड के झुण्ड स्नान करते थे अति निर्म्मल कमल जहां कहीं जल वेगसे नहीं बहता था फुला रहेथे कहीं कहीं करारोंके बराबर जल बहा चलाजाता कहीं कहीं निर्म्मल बालू चमक रही थी १८ हंस सारस बोल रहेथे चकई चकवा किनारेपै बैठ धीरे धीरे बोलतेथे जिसके तटपै सदा मतवालेही पक्षी कूकते १९ कहीं कहीं किनारेके वृक्षों की पाँतिकी पाँति लगी थीं कहीं कहीं प्रफुल्लित कमल शोभायमान थे कहीं कहीं कमलोंके वनही विद्यमानथे २० कहीं कहीं कुमुदके फुलानेफूल कहीं कहीं मुहँ बँधेही पुष्पों से शोभित होरहीथीं नानाप्रकार के पुष्पों के रससे गङ्गा का तीर सुगन्धितथा कहींकहीं समभाव से बहतीथीं न बहुत जोरहीसे न धीरेही से २१ कहीं जलमें मलिनताका नाम न था निर्म्मल मणिके समान जल चमकताथा दिग्गज वनगज ग्रामके पालतूगज शर्बत जल पान कररहे थे २२ इन्द्रके ऐरावतादि हाथी आय आय शब्द करते किनारेके वनोंमें अन्य नानाप्रकारके जीव बोलते इनसब पदार्थों से गङ्गाजी की ऐसी शोभाथी कि जैसे सब भूषण वस्त्रोंके धारण करनेसे स्त्रीकी होतीहै २३ नानाप्रकार के फल पुष्प पल्लवादिकों से सँय्युक्त नानाप्रकारकी झाऽली किनारे किनारे विद्यमान सबप्रकार के पक्षी बोलरहे थे श्रीमहाविष्णु वामनजी के अँगुठेसे निकलीं थीं पापका जिनमें नाम नहीं पर सब पाप नाशतीहैं २४ जिसमें नानाप्रकारके जल कपि नाक मकर मछली सर्प्पादि जीव विद्यमान वा जो श्रीमहादेव जीकी जटासे निकल समुद्र तक पहुंचीं २५ इसीसे समुद्र की स्त्री कहाती हैं व नानाप्रकारके सारसकरांकुल आदिजीव जहां बोलतेथे ऐसी गङ्गाके निकट श्रीरामचंद्र

शृङ्गवेरपुरमें पहुँचे २६ व पहुंचतेही सुमन्त्रजीसे बोले हेसूत आजसबजन यहां गङ्गाजी के तीरही पै निवास करेंगे २७ देखिये इसनदीके बहुतही निकट यह फलपुष्प सघन छायासहित इंगुदीका वृक्षहै इसीके नीचेरहना होगा २८ व इसी स्थानसे नदियोंमें श्रेष्ठ कल्याणदायक जल युक्त देव मनुष्य गन्धर्व्व मृगगण सर्प्प पक्ष्यादि सेवित गङ्गाजी को देखेंगे २९ लक्ष्मणजी व सुमन्त्रजी बहुत अच्छा यह कह सहित घोड़े उसी इंगुदी के वृक्षके नीचे आये ३० तब श्रीरामचंद्रजी लक्ष्मण व जानकीजी सहित रथ से उतरे ३१ सुमन्त्र जी भी रथसे उतर घोड़ों को छोड़ वृक्षके नीचे खड़े हुये श्रीरामचंद्र के आगे हाथजोड़ खड़ेहुये ३२ उनदिनोंमें उसदेश का राजा निषादों का पति गुहनाम था यह राजा दशरथजीका बसाया हुआथा बड़ा सदाचारी व सब शुभ धर्म्मों में निष्ठथा इसलिये रामचंद्र जीका भी सखाथा ३३ उसने सुना कि श्रीरामचंद्र मेरे देश में आये हैं इसलिये अपने जाति बिरादरी के लोग व अन्य भी वृद्ध वृद्ध मनुष्य व मन्त्री दीवानादि को सङ्ग ले जहाँ श्रीरामजीथे आया ३४ रामचंद्रजीने दूरहीसे देखा कि निषादों का राजा गुहआता है इसलिये मारे स्नेह के कुछ आगे बढ़ सहित लक्ष्मण जाय उसेलपटाय कर भेंटे ३५ गुह इस श्रीरामचंद्रजीके भेंटने से अपनाको कृतार्थमान बड़ी दीनतासे बोला हे श्रीराम जैसे आपको अयोध्यापुरी है ऐसेही यहभी है क्या आज्ञा होती है जोहो कियाजावे ३६ क्योंकि इसप्रकार का महिमान कौन पावेगा इतना कह सब तरहके बनेबनाये भोजन ३७ व हाथ पैर धोने पीने आदिके लिये जल मँगाय हाथजोड़ बोला कि हे महाराजा आप अच्छी तरहसे तो आये यहसब आपही की पृथ्वीहै ३८ हमलोग तो केवल आज्ञाकारीहैं व आप स्वामीहैं जिस किसी वस्तु की आवश्यकता हो आज्ञा दीजिये येसब भोजनकरने व पीनेके पदार्थ हाजिरहैं ३९ शयन करने के लिये सब तरह के पलँग बिस्तरा आदि व घोड़ों के खाने को घास दाना आदि हाज़िरहैं गुहने ऐसा कहातो श्रीरामचंद्रजी बोले ४० कि हमतो तुम्हारे पैदर आनेसे व स्नेहसे व दर्शनही से अति प्रसन्न हुये व सबतरह की हमारी पूजा व खातिरी होचुकी ४१ इतनाकह फिर साधुवोंको भेटनेवाली भुजाओंसे फिरगुहको लपटाय कहनेलगे कि

यह भी बड़ी भाग्यकी बातहै कि तुमको सपरिवार अरोग देखतेहैं ४२ भला तुम्हारे राज्य मित्रवर्ग व वनमें कुशल है बड़ी बातहै प्रीतिपूर्व्वक जो ये नानाप्रकार के भोजन के पदार्त्थ व शय्यादि लाये हो ४३ इस सबको हमने जाना पर ग्रहण नहीं करसके क्योंकि हम कुश चीर मृगचर्म्म धारणकिये हुयेहैं देखतेहौ व फल मूलादिही भोजन करतेहैं ४४ इससे हमें जैसे सब वनके तपस्वी हैं वैसेही समझो इसी धर्म्म में हम लगेहैं केवल घोड़ों के खानेकी जो जो वस्तुहैं वही हमें चाहिये और किसीसे हमारा प्रयोजन नहीं ४५ हम आपकी इतनीही वस्तुसे सब तरह पूजित होंगे क्योंकि ये घोड़े हमारे पिता दशरथजीको अति प्यारे हैं ४६ इनको अच्छी तरहसे भोजन मिला जानों हम सब कुछ पाचुके यह सुन गुह अपने सेवकोंसे बोला कि घोड़ोंकेलिये घास दाना तो आ-यही चुकाहै पर मिश्री आदिके साथ मिला सतुआ व खीर महेला आदि भी लावो ४७ यह सुन वे लोग सब सामग्रीला ये श्रीरामचन्द्रजी वस्त्र उतारसायं संध्योपासन करनेलगे ४८ शयनके समय लक्ष्मणजी अपने हाथसे गङ्गाजल लाये वही श्रीरामचन्द्रजी ने पानकिया जब पृथ्वीपर लेटे तब लक्ष्मणजीने चरणकमल धोये ४९ जानकीजी के भी चरण पखारे वे भी सोईं वहाँ से थोड़ी दूरपै लक्ष्मणजी जाय बैठे गुह व सुमन्त्रजीभी कुछ बतलाते हुये उसी वृक्षके नीचे बैठे ५० लक्ष्मणजी धनुर्व्वाण धारणकिये वीरासन बैठ रात्रि भर जागा किये सुमन्त्रादि भी जागतेही रहे ५१ ॥

हरिगीतिका ॥

तिमि शयन करत यशस्वि दशरथ सुत मनस्वि महातमा ।
जिन लष्यहु नहिँ दुख कबहुं सन्तत सुखोचित रहितोपमा ॥
निशि बीति लषत सुमन्त्र गुह सौमित्रि जानतही रहे ।
सब अवध भूपति सदन जनकी कथा कहि दुखही लहे ॥ १॥५२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५० ॥

श्रीरामचन्द्र व महारानी जानकीजीतो शयनकर रहे व अपने परम-प्रिय भाई की रक्षा के लिये लक्ष्मणजी को जागते व बिना कुछ

बिछाये भूमिपर बैठे देख अतिदुखी हो लक्ष्मणजीसे गुह बोला १ हे राजकुमार तुम्हारे लिये यह सुख शय्या बनाई गई है इसलिये आप इस पर सुख सहित शयन कीजिये २ क्योंकि क्लेश सहने के लायक हमीं सबलोग हैं आप सुखही भोगने के योग्य हैं रही रामचन्द्रजी की रखवारी सो उसके लिये हमलोग रात्रिभर जागते रहेंगे ३ क्योंकि हम आपकी सौगन्द खाय कहते हैं कि भूतल में रामचन्द्रजीसे अधिक प्रिय हमको कोई नहीं है यह बात आपसे सत्यही कहते हैं ४ व इन्हीं के प्रसादसे इसलोक परलोकमें महायश बहुत धर्म व अति अर्थकामों की वांछा करते हैं ५ इससे अपने प्रिय सखा श्रीरामचन्द्र को सहित शयन करते हुये अपनी जातिके लोगोंके साथ हाथमें धनुष बाण लिये रक्षा करते रहेंगे ६ इसवनमें हम सदा रहतेहैं ऐसा कोई चोर व्याघ्रादि नहीं जिसे हम न जानते हों इसलिये चाहे किसी की चतुरङ्गिनी भी सेना आवे तो उसे हमीं जीतें ७ यह सुन लक्ष्मणजी बोले कि धर्म्म की रीति देखनेवाले आपकी रक्षासे रक्षित हम लोग यहां किसी से नहीं डरते ८ परन्तु यहतो विचारिये कि श्रीराम व जानकीजी तो भूमि में शयन कर रहे हैं फिर हम कैसे सोयसक्ते व भोजनादि करसक्ते हैं ९ जिस रामचन्द्र के तेजको संग्राम में देवता दैत्यादि कोई नहीं सहसक्ते तिनको देखिये सहित सीता जी के सुखपूर्वक तृणोंपर शयन कररहे हैं १० जिन रामचन्द्रजी को महाराज दशरथ जी ने नानाप्रकारके मंत्र यन्त्र पराक्रम व तपस्या करनेसे पाया है जिनके लक्षणों के समान जिन्हीं में लक्षण हैं ११ इनके यहाँ चलेआने से राजा दशरथजी बहुत दिन न जीवेंगे यह निश्चय है कि यह पृथिवी बहुतही शीघ्र विधवा होजायगी १२ जब रामचन्द्रजी यहांको चलेथे तब स्त्रियाँ हाराम हाराम ऐसा कह बड़े श्रमसे रोदन करकर निस्तेज हो गिरीथीं इससे जानिये कि रामचन्द्रजीके मन्दिर में अति भयानक होने के कारण अब शब्दभी न होता होगा १३ यदि कौशल्याजी व राजा व हमारी माता इस रात्रि में जीती हों तो हम उनलोगों के धैर्य्यकी बड़ाई करतेहैं कि बड़े धैर्य्यवाले ठहरे १४ यदि हमारी माता शत्रुघ्न के देखने से कदाचित् जीती भी रहें तो परम बीर पुत्र के उत्पन्न करनेवाली कौशल्या

जीतो अवश्यही मरजायँगी १५ वहां के रहनेवालों को क्या कहें जो अयोध्यापुरी रामचन्द्र जी के अनुराग से मरेहुये लोगों के रहने व इधर उधर घूमनेके कारण सर्व्व सुख युक्त व सबको प्रिय थी वह अब राम वियोग व्याकुल लोगों को देख आपही नष्ट होजायगी नहींजानते कहां चलीजाय १६ फिर और चाहेजो हो महात्मा ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्रजीको बिना देखे महात्मा राजा दशरथजीके प्राण कैसे शरीर को धारण करेंगे १७ फिर राजा के मरने के पीछे कौशल्या अवश्यही मर जायँगी फिर हमारी माता भी मरही जायँगी १८ जो कहिये कि जब रामचन्द्रजी विश्वामित्र के साथ गयेथे तबतो माता पिता आदि कोई न मरे तो इसकी और बातथी अबकी बनाय राजगद्दी की तयारीकर सब पदार्थ नानादेशों से मँगाय देश देश के भूपों को बुलाय उनके सामने रामचन्द्रजी को गद्दी न देने पाये तो मारे स्नेह व लज्जा के हमारेपिता जरूरही मृतक होजावेंगे १९ उस लोगों के सब अर्थ सिद्ध होंगे जो मरणसमय में वहां रहेंगे व सब प्रेतकार्य्यों में पिताजी के सब संस्कार करेंगे नहीं जानते कौन करें क्योंकि पुत्रों में से तो कोई आज कल नहीं है २० हाँ यदि राजा दशरथ जीते रहे व प्रजापालन भी करते रहे तो वनवास से लौट हमलोगभी रमणीय चौरहा बड़ी बड़ी सड़कें महाजन व राजाओं के मन्दिर व श्रेष्ठ वेश्याओं से शोभित २१ चारों ओर रथ गज तुरङ्गों से पूर्ण नानाप्रकार के बाजे बाजते सब कल्याणों से पूर्ण हर्षित आनन्दित लोगों से भरी पुरी २२ बागीचे व पुष्पवाटिकाओं से शोभायमान समाज के उत्सवसे हर्षित सुखपूर्व्वक अपने पिताकी राजधानी अयोध्या को २३ व महाप्रतापी महात्मा अपने पिताकोदेखेंगे २४ बड़ीभ्रात होतो अपने सत्यप्रतिज्ञ पिताके साथ कुशलपूर्व्वक वनसे आय अयोध्या में प्रवेश करें २५ इसरीति से महात्मा अति दुःखित रोदन करतेहुये राजकुमार लक्ष्मणजीके बैठेहीबैठे सब रात्रि बीतगई २६॥

॥ कुण्डलिका ॥

बीती सारीराति इमि रोवत राज कुमार ।
इमिभाषतवृत्तान्तसब प्रजाहेतुसविचार॥
प्रजाहेतु सविचार सुनत गुह सौहृदजानी ।

अति॰व्याकुलह्वैरुदनकरत सोगद्गदबानी ॥
जिमिआतुरह्वैजातज्वरादि तगजयुतभीती ।
तिमिआतुरगुहलषनहिसोनिशिरोवतबीती ॥ १ । २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५१ ॥

जब रात्रि बीति गई और बनाय प्रभातहुआ तो महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी जागे व शुभलक्षणायुक्त लक्ष्मणजी से बोले १ हे तात भगवती रात्रि बीतगई अब सूर्य्योदय का समय आया क्योंकि यह कृष्णरङ्गका पक्षी काग बोलता है २ व बनमें मयूरों का शब्द भी सुनाई देता है अब अति वेगवती श्रीगङ्गाजी के पार जायँगे ३ श्रीराघवजी के वचन सुन मित्रों के आनन्द देनेवाले लक्ष्मणजी निषादराज व सुमन्त्रजी से समाचार जनाय भ्राता श्रीरामचन्द्र के आगे खड़ेहुये ४ रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन व अङ्गीकार कर निषादराज अपने मन्त्रियों से यह बोला कि ५ श्रीरामचन्द्रजी के चढ़ने योग्य अच्छे केवट के साथ अति सुंदर चित्र विचित्र रँगी रँगाई खूब पोढ़ी जिसमें कहीं छेद न हो ऐसी नाव जिस घाट पै उतार है वहाँ अति शीघ्र पहुँचावो ६ यह सुन गुह का मन्त्री गया व घाट पै उसी तरह की नाव पहुँचवाकर आय निषादराज से खबर जनाया ७ तब गुह हाथ जोड़ श्रीरामभद्रजी से बोला कि महाराज नाव तो घाट पर आई और कौन काम करैं ८ गङ्गा उतरने के लिये नाव आयही गई अब शीघ्र चढ़िये ९ रामचन्द्रजी यह सुन गुह से बोले कि आपने बहुत अच्छा काम किया अब खेवनेवाले से कह दो सब बाँश डाँड आदि नाव पै धरैं १० यह कह श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी धन्वा बाण तरकस ले कवचादि धारण कर जिस मार्ग्ग से सब लोग उतारवाले घाटपै जाते थे सहित जानकीजी चले ११ इसी समय रामचन्द्रजीके अति निकट जाय हाथजोड़ काँध झुकाय सुमन्त्रजी बोले कि अब हम को क्या आज्ञा होती है १२ यह सुन महाराज श्रीरामचन्द्रजी ने अपने दहिने हाथ से सुमन्त्र का दहिना हाथ पकड़ कहा कि अयि सुमन्त्र आप अब अति शीघ्र रथ ले राजाके समीप जाइये देर न कीजिये १३ लौट जाइये बस यहीं तक आनेका प्रयोजनथा

अब हम रथको छोड़ यहांसे पैदरही वन को जायँगे १४ जब सुमन्त्रजी ने जाना कि अब हमको लौट जाने की आज्ञा हुई तो अतिही व्याकुल व दुःखी हो पुरुषसिंह श्रीरामचन्द्रजी से बोले १५ हे राम जैसा आपने स्त्री व भाई के साथ एकाएकी राज्यछोड़ प्राकृतीमनुष्योंके समान वनवास अङ्गीकार कियाहै ऐसा किसी पुरुष ने न कियाहै न कोई करैगा१६ यदि आप दोनों जनों को इस वनवास में कष्ट होता कि उसे समझ वन को न आते हम आप लोगों के ब्रह्मचर्य्य व वेद पढ़ने का फल न समझते यद्यपि आप लोगोंमें दयालुता व कोमल वचनोच्चारण में प्रीति भी थी सो क्यों न आप करैं पढ़ने लिखने व महात्मा होनेका यही फल है कि बड़ों की आज्ञा मानैं चाहे अपने ऊपर कैसाही कष्टहो १७ हेराघव आप श्रीजानकी व लक्ष्मणके सङ्ग वनमें बसके मानों तीनों लोकों के जीतने की गति पावोगे क्योंकि तीनों लोकमें ऐसा काम करनेवाला कोई नहीं है १८ आपको तो सब प्रकार यशही होगा पर हम लोग पापिनी कैकेयी व मन्थरा के वश में पर दुःखी हुये व मरे क्योंकि आप तो धोखा दिये चलेही जातेहैं १९ यह कह सुमन्त्र ने स्मरण किया कि हाय अब नहीं जानते ये कितनी दूर तक वन में जायँ इससे महादुःखी हो रोनेलगे २० जब बड़ी देर तक रोदनकर सुमन्त्रजी ने मुख धोया तब श्रीराम अतिमधुर वचन फिर फिर कहनेलगे २१ हे सुमन्त्र इक्ष्वाकु वंशियोंमें हम तुम्हारे समान सुहृद और किसीको नहींदेखते इससे तुमको वही काम करना चाहिये जिससे राजा दशरथ हमारा शोच न करैं २२ जिससे राजादशरथ हमारे शोककेमारे हतचित्त व अतिवृद्धहैं फिर उन्हींके ऊपर सबराज्यके कामकाजोंका भारभी रहेगा इससे तुमसे कहतेहैं नहीं तो न कहते २३ इससे आपको चाहिये कि कैकेयी के प्रिय काम करनेके लिये महाराज जो आज्ञा देतेरहें उसे बिना विचार किये हुयेही अतिशीघ्र आपकरते रहिये जिसमें इस दशामें उनको कोई और दुःख न पहुँचै२४ क्योंकि राजा लोग इसीलिये राज्यका शासन करते हैं जिससे उनका किसी कार्य्यके करने में मन न टूटै २५ इससे जैसा करने से महाराज का चित्त उदास नहो व शोक के मारे कष्ट नहो हे सुमन्त्र आप वैसेही सार्थ काम कीजिये २६ हमारे पिताने अभीतक इस दुःखको छोड़ कोई

दुःख नहीं देखा वृद्धताको जानो प्राप्तही हैं अतिश्रेष्ठ व जितेन्द्रिय भी हैं इससे हमारेहेतु उनसे प्रणामकर हमारा यह वचन कहदेना कि २७ अयोध्या छूटजाने व वनवास होनेसे न हमीं कुछ शोच करें न लक्ष्मणही कुछ शोच करते हैं इससे हमारे दुःखसे आप दुखी नहों २८ कुछ बात नहींहै चौदह वर्ष झटपट बीत जायँगे इसके पीछे हमको लक्ष्मणको व सीताको बहुत शीघ्र फिर आप देखेंगे २९ यह हमारी ओर से राजा व हमारी माता व कैकेयी सहित अन्य सब देवियोंसे भी बारम्बार कहियेगा ३० व हमारी मातासे हमारे व लक्ष्मण व सीताके वचनोंसे आरोग्य कहना कि सब अच्छे हैं और सबोंसे भी ३१ महाराजसे यहभी कहना कि भरतको जल्द बुलावें व आने पै युवराज पद पै स्थापित करें कि बहुतसा उनका कार्य्य वे करनेलगेंगे जिसमें उनके ऊपर बड़ा भार न रहै ३२ व जब आप भरतको गोदमें बैठावेंगे और युवराज पद देंगे तो हमारे वियोगके सन्तापका दुःख आपको न बाधेगा ३३ आनेपर भरत से भी कहना कि जिस रीतिसे राजाकी आज्ञाका बर्ताव करें उसीरीति से सब मातों को भी समान जान उनसे बर्ते कुछ अन्तर न पड़ने पावै ३४ जैसे तुम्हारी माता कैकेयी हैं तैसेही सुमित्रा कुछ अन्तर नहीं तैसेही हमारी माता कौशल्या उनमें भी अन्तर नहीं अर्थात् तीनों को समान समझो ३५ पिताके प्रियकी कामना से व युवराजपदवी पानेसे भरत तुमको चाहिये कि दोनों लोक को सुख देवो अर्थात् प्रजापालन ऐसा करना जिसमें इस लोकमें भी यश हो व अन्तावस्था में वहां सुख हो ३६ जब लौटानेके लिये सुमन्त्रको इस तरह पै श्रीरामजीने समझाया तो सब वचन सुन स्नेह से श्रीरघुनाथजीसे वे बोले ३७ हे राम मारे स्नेहके जो वचन हमसे उचित न कहाजाय उसेआप क्षमाकीजिये क्योंकि आप भक्तिमान् हैं ३८ हे तात तुम्हें बिना हम उस पुरीको कैसे जायँगे जोकि तुम्हारे वियोगसे पुत्रशोकसे भी अधिक आतुर होगी ३९ जब हम वहांसे रथ लायेथे तब लोगों ने देखाथा कि सहित राम रथ जाताहै फिर अब बिना रामकी देख वे लोग कैसे जीवेंगे व वह पुरीकैसे न विदीर्ण होजायगी ४० रथको शून्य देख अवश्य अयोध्यापुरी दीनता को पहुँचेगी जैसे संग्रामसे बिना वीर खाली सारथि सहित रथको देख

लोग दुखी होतेहैं ४१ यद्यपि आप दूरभी टिकेथे पर प्रजा अपने मनसे अपने आगेही टिके समझती थी परन्तु अब जब बिना आप लोगों के खाली रथ देखेंगी तो फिर अन्न जल न करेंगी ४२ सो यह कुछ बनावट की बात नहीं हे राम आपने देखाहै कि जिस समय आपको वनवास हुआ है प्रजासमूह आपके शोकसे कैसे खिन्नचित्त होगये थे ४३ आपके वनवासके समय अयोध्यावासियों ने जैसा आर्त्त शब्द कियाथा अब आप बिना खाली रथ देख उसका सौगुना कोलाहल मचावेंगे ४४ भला हम आपकी मातासे क्या कहेंगे कि तुम्हारे पुत्रको हम ननियौरे में पठै आयेहैं हे देवि तुम शोक न करो ४५ हमसे तो यह असत्य वचन न कहा कहजायगा व यह अप्रिय सत्यभी न कहजायगा कि सबको वन पठैआये ४६ फिर हमारी तो बात अलगहीरही ये घोड़े जो आपलोगोंको यहां लाये हैं आप लोगोंके न होने पर हमारे हाँके कैसे रथखींचेंगे ४७ तिससे बिना आप लोगों केसाथ हम अयोध्याको नहीं जायसक्ते वनवासहीको जानेके लिये हमेंभी आज्ञा दीजिये ४८ जोहम ऐसी प्रार्थना करतेहैं व हमको आप त्यागही देंगे तो जैसेही त्यागा वैसेही सहित रथ हम अग्निमें प्रवेश करजायँगे ४९ वन में जो कुछ आपकी तपस्याके विघ्न कारक पदार्थ होंगे उनको इस रथसे रोकेंगे इससे अवश्य हमेंभी लेते चलिये ५० आपहीके निमित्त हमने रथ हाँकने से यहां सुख उठाया अब आपही के निमित्त वनवास का सुख भोगा चाहतेहैं ५१ आप हमारे ऊपर प्रसन्नहों हम वनमें आपके अति निकट रहाचाहतेहैं इससे प्रीति से कहदीजिये कि आपके निकटही हम वनमें भी बनेरहैं ५२ हे वीर ये घोड़े भीजो वनवासी आपकी सेवा करेंगे तो परमगति कोपावेंगे ५३ वनमें बस तुम्हारी सेवा शिरके बल करेंगे अयोध्या वा देवलोक सब छोड़देंगे ५४ जैसे व्यभिचारादि दुष्टकर्म करनेवाले पुरुष इन्द्रपुरी में नहीं जाय सकते ऐसेही बिना आपके संग हम अयोध्यापुरी को नहीं जायसकते ५५ हमारा यही मनोरथ है कि जब चौदह वर्ष वनवास बीत जाय तो इसी रथपै चढ़ाय फिरआपको अयोध्यापुरीमें लावें ५६ येचौदह वर्ष आपके साथ वनमें रहने से एक क्षण के समान बीत जायँगे व बिना आपके सैकरों वर्ष के समान होजायँगे ५७ हेभृत्यवत्सल श्रीराम स्वामी

के पुत्र आपके टिकेहुये मार्ग में सेवक रीतिसे टिकेहुये हम ऐसे सेवक को छोड़ने केयोग्य आपनहींहैं ५८ इस भांति जब बारबार सुमन्त्रजी ने प्रार्थना की तो सेवकोंके ऊपर दया करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी सुमन्त्रसे बोले ५६ हे स्वामिवत्सल हम तुम्हारी परमभक्ति को जानते हैं जिस- लिये यहांसे तुम्हें पुरीको भेजतेहैं सुनिये ६० जब आपरथले अयोध्या कोलौट जायँगे तोतुम्हें देख हमारी जो छोटी माता कैकेयीहैं वे यह जानें- गीकि रामचन्द्र अब सत्यसत्य वनको चलेगये ६१ हमारे वनजानेसे वे सन्तुष्टहो धर्म्मात्मा राजादशरथजीको मिथ्यावादी न समझेंगी ६२ यह हमारा प्रथम संकल्पहै किजिससे हमारी छोटी माता कैकेयी भरत से रक्षित राज्य पावें ६३ इससे हेसुमन्त्र हमारे व राजाके प्रियके लिये तुमपुरीको चलेजावो जो जो सन्देश तुमसे कहे गयेहैं सबकहो ६४ ऐसे वचन कह बार बार सुमन्त्रजीको समझाय श्रीराम गुहसे सहेतुक वचन बोले ६५ हेनिषादराज अब हमको इसवनमें न बसना चाहिये क्योंकि इसमें सब अपनेही लोग बसतेहैं इसलिये अबकहीं पर्णकुटी आदि बनाय तपस्वियों को भांति वास करेंगे उसका उपाय कीजिये ६६ तिससे अबहम तपस्विजनों काभूषण नियम ग्रहणकर अपने पिता माता व लक्ष्मण सीताके हितके लिये ६७ जटा बनाय वनको जायँगे आप बरगदका दूध जटा बनाने केलिये लाइये यह सुन निषादराजने तुरन्त बरगद कादूध श्रीराजकुमार रामचन्द्रजी को मँगा दिया ६८ उस दुग्धसे अपनी व लक्ष्मणजीकी जटा श्रीरामचन्द्रजीने बनाई हाय ऐस महाराजकुमार श्रीरामभद्र मनुष्यसिंह जटा रखाय तपस्वी हुये ६६ अब दोनोंभाई रामलक्ष्मण चीर पहिर जटामण्डल धारणकर ऋषियों के समान शोभायमानहुये ७०सहित लक्ष्मण श्रीराम वानप्रस्थ मार्गमेंटिके व वनवासियोंको जोजो करना चाहिये सब लक्ष्मणजी से बताया तदन- न्तर निषादराजसे बोले ७१ हेगुह सेना खजाना कोट देश इनकीरक्षा में सदा उतारू रहना क्योंकि राज्यकी रक्षा बड़ेकष्टों व दुःखोंसे होतीहै ७२ ऐसा गुहसे कह लक्ष्मण जानकीजीके साथ श्रीराम गङ्गाजी के निकट गये ७३ नदीके तीरपै जाय उत्तम नावदेख शीघ्रगामिनी गङ्गाजी के उतरनेकी इच्छासे लक्ष्मणजी से बोले ७४ हेलक्ष्मण इसनावपैप्रथम

सीताजीको युक्तिपूर्व्वक चढ़ाय तदनन्तर तुम चढ़ो ७५ भाई श्रीरामजीके ऐसे वचन सुन लक्ष्मणजी प्रथम जानकीजीको नावपै चढ़ाय पीछे आपभी चढ़े ७६ इन दोनों जनोंके पीछे महातेजस्वी श्रीरामचंद्रजीभी नावपै चढ़े तिसकेपीछे निषादोंके राजा गुहने अपनी जातिवाले लोगों को आज्ञा दी किरामचंद्रजीकी जैसी आज्ञाहो तुमलोग शीघ्र वैसा करो ७७ श्रीराघवजी भी तिस नावपैचढ़ ब्राह्मण व क्षत्रियोंके समान जिस मन्त्रकेजपने से कुशल पूर्व्वक उतरना जाना जपनेलगे ७८ व जैसा शास्त्रमें लिखा है सहित सीता व लक्ष्मण आचमनकर श्रीगङ्गाजी के प्रणाम करने लगे ७९ फिर सुमन्त्र से व सहितसेना गुहसे विदाहो नाव खेवनेवाले मल्लाहों से बोले कि शीघ्र नाव लेचलो ८० तब तिन लोगोंने नाव चलाई व उनमेंसे जिसका जोकाम डांड़ पतवारबाँश आदि चलाने का था सबकरने लगे कि अति शीघ्र नौकाचली ८१ जब जाते जाते नाव बीच धारामें पहुंची तो श्रीजानकी जी हाथजोर गङ्गाजी से बोलीं ८२ हेगङ्गे बुद्धिमान महाराजा धिराज दशरथ के ये पुत्र श्रीराम आपकी रक्षासे रक्षित अपने पिताकी आज्ञाका पालनकर ८३ चौदह वर्ष वनमें वासकर अपने इन भाई लक्ष्मण व हमारे साथ जो फिर लौटेंगे ८४ तो हे सुभगे सब काम बढ़ानेवाली गङ्गे आपकी पूजा हम तीनों जन आनन्दित होके करेंगे ८५ क्योंकि तुमब्रह्मलोक से यहाँ आईहो व यहाँभी समुद्र की स्त्रीहो सब प्रकार पूजा करनेहीके योग्यहो ८६ इससे हम हेदेवि तुम्हारे नमस्कार करतीहैं व आपकी प्रशंसा करती हैं कि जब रामचंद्र जी कल्याण सहित वनसेआय राज्य पावेंगे ८७ तो तुम्हारेनिकटवासी ब्राह्मणों को बुलाय तुम्हारी प्रीति के लिये सहस्रों गोदान देंगी व सबप्रकार के उत्तम उत्तम अन्न वस्त्रादि देंगी ८८ व जो पदार्थ देवताओं के यहां नहीं हैं वपृथिवी में भी उत्तम उत्तमपदार्थ हैं उन से व भात आदि अन्नोंसे फिर पुरीमें आय तुम्हारी पूजा करेंगी ८९ व जो जो तुम्हारे तीर तीर्थ देव मन्दिरादि हैं तिनसबकी पूजाकरेंगी ९० इससे आप ऐसा आशीर्व्वाद दीजिये जिससे हमारे व अपने भाई के साथ आजानुवाहु श्रीराम वनवाससे फिर अयोध्यामें प्रवेश करें ९१ ऐसे गङ्गाजीसे कहती हुई सकल निन्दारहित श्रीसीताजी गङ्गाजीके दक्षिण

तीर पहुँचीं ६२ दक्षिण तीर पै पहुँच लक्ष्मण व जानकीजीके साथ श्री रामचंद्रजी नावसेउतरे ६३ व लक्ष्मणजीसे बोले हेलक्ष्मण चाहे कहीं मनुष्यहों वा नहों सदा रक्षा करते रहना ६४ क्योंकि हमलोग पालकों का धर्म्महो यहीहै किस्त्री बालादिकोंकी रक्षा करते रहैं इससे आगे आगे तो तुम चलो तुम्हारे पीछे पीछे सीता चलैं ६५ व तुमदोनों की पालना करते हुये पीछे पीछे हमचलेंगे कुछ हमारी रक्षा तुमको व तुम्हारी हमको नचाहिये किन्तु दोनों जनों को चाहिये कि सीताकी रक्षा करते रहैं ६६ अभीतक जानकीजी ने ऐसाकाम कोई नहीं किया जिसे येसुगमतासे न करसकीहों अब आजसे वनवासका दुःख जानैंगी किकैसा होता है इससे जहांतक होसकै ऐसा कीजिये जिससे इनको दुःख न पहुँचै ६७ आजही अवनिर्ज्जन खेत फुलवाड़ी रहित ऊंचा खाली अति दुर्ग्गमवनको ये जायँगी ६८ रामचंद्रजी के वचन सुन लक्ष्मण जी आग आगे चले तिनके पीछे सीताजी फिर श्रीरामचंद्रजी ६६

हरिगीतिका ॥

सुरसरित दक्षिणपारगत रघुनन्दनहि लषिह्वै दुखी ॥
सुसुमन्त्र मन्त्रहि भूलि रोदन करन लागि नहैं सुखी ।
अतिदूर गमन प्रभाव सों अबदृष्टि पहुंचत है नहीं ॥
ह्वैव्यथित मींजत हाथ बारहि बार सुखनहिंहैकहीं १।१००

चौ०॥ लोकपाल समजासु प्रभावा । गङ्गाउतरि गयो मनभावा ॥
अति प्रमुदित धन धान्य समेता । वत्स्य देशगेकृपा निकेता ॥ २ ॥

कुण्डलिका ॥

भारयो खेलन हित तहाँ मृगाचारि रघुराज ।
रुरुवराह अरुपृषितऋशि नामक करिसरसाज ॥
नामक करि सरसाज राज रघुनन्दन दोऊ ।
भयहु बुभुक्षित तबै कन्द फल लायहु सोऊ ॥
लै सब शुभतरु देखि बास हित तहँ पगधारयो ।
समयजानिमतिखानि रामपुनिनहिंमृगमारयो ३। १०२॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे द्विपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५२॥

उस वृक्षके नीचे बैठ सायंसन्ध्या वन्दनादिकर श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे बोले १ आज यह अपने देशसे बाहर निकलने पर पहिली रात्रि परीहै व सुमन्त्रभीथे सो भी चलगये परन्तु अयोध्या के सुखोंका स्मरण कर तुम उत्कण्ठा न बढ़ाना २ सोआज क्या आजसेले जबतक वनमें रहना हो हमको तुमको चाहिये कि रात्रि भर जागते रहें व सीता जीके योग क्षेम करते रहें ३ किसीप्रकारसे इस रात्रिको अपने हाथ कुश पत्रादि लाय भूमिमें बिछाय बितानाहै ४ यह कह बड़े बड़े मोल के रेशमी व पशमीने आदि बिछौनों परके शयन करनेके योग्य श्रीरामचन्द्रजी केवल बिना बिछाई भूमि पै बैठ लक्ष्मणजी से बोले ५ हे लक्ष्मण हम यह निश्चय कर कहतेहैं कि महाराज दशरथ मारे दुःख के अचेत हवै सोगयेहोंगे व कैकेयीके सब काम भी होगयेहैं तथापि क्या सन्तुष्ट हुई होगी न हुई होगी ६ हमको यही सन्देहहै कि भरतके आने पै राज्यक कारणसे महाराजके प्राण तो न नाश करादेवै ७ क्योंकि एक तो वृद्ध दूसरे अब अनाथ क्योंकि कोई सहायक नहीं रहा हम यहाँ चलेआये इस अवसर में महाराज कैकेयीके वशमें पर क्या करेंगे ८ हम जानतेहैं कि अब ऐसे दुःखमें परे महाराज को चाहिये कि अर्थ धर्म्मसे कामहीको बड़ामान जैसे बनै काम चलावें ९ हा ऐसा काम तो कोई मूर्ख भी न करेगा कि स्त्री के कहने से अपने आज्ञाकारी पुत्र को छोड़दे जैसे कि हमारे पिताने हमको छोड़ा १० अब कैकेयी के पुत्र भरत सहित स्त्री के सुखी होंगे क्योंकि अति प्रमुदित अयोध्या मण्डल का राज्य अपना अकेले भोगेंगे जैसे बड़ेबड़े महाराज भोगते हैं ११ अच्छाहै राजा न होनेसे भरतके राज्यमें भी प्रजाओंको कुछ पै कुछ सुखही होगा क्योंकि राजाकी जानों अवस्थाही और होरहीहै व हम वनहीको चले आये १२ भाई जो कोई अर्थ धर्म्मको छोड़ केवल कामही के वशीभूत होगा वह इसी तरह गिरेगा जैसे कि राजा दशरथजी १३ हे सौम्य हमतो यही मानतेहैं कि यह कैकेयी राजा दशरथजीके प्राण नाशने व हमको वनवास देने व भरत को राज्य दिलानेहीके लिये यहाँ आई १४ हम यहभी जानतेहैं कि कैकेयी अपने सौभाग्य मदसे मोहित हो कौशल्या व सुमित्राको हमारे निमित्तसे पीड़ा देती होगी १५

हमारेही हेतु कौशल्या सुमित्रादि सब माता दुःख के साथ बसती होंगी इससे प्रातःकाल होतेही लक्ष्मण तुम यहाँ से अयोध्या को जाव १६ हम अकेलेही सीताके साथ वनको जाँयगे तुम वहीं जाव अति अनाथ कौशल्याजी के नाथ होगे १७ क्योंकि उस कैकेयी का बड़ाही ओछा स्वभावहै व हमारे बैर भावके अन्याय कर हमारी तुम्हारी दोनों की मातों को विषय देदेगी १८ हम यह भी निश्चय करते हैं कि हमारी माताने किसी अगिले जन्म में बहुत स्त्रियों को उनके पुत्रों से बियोग कराया है कि उसी पाप से यहपुत्र बियोग का दुःख उनको पड़ाहै १९ नहीं हमीं को धिकार है जिसेमाताने बड़े दुःख से पालन पोषण कर पुष्टकिया व बढ़ाया अबजब उसके फल मिलने का समय आयातो हमने उनको छोड़दिया २० हमतो जानतेहैं कि कोई भी भाग्यवती स्त्री हम ऐसे पुत्रको न उत्पन्नकरै क्योंकि हे लक्ष्मण देखिये तो माता को हम कैसा अपार दुःख देतेहैं २१ ॥

कुण्डलिका ॥

मानत हैं हम सारिका पालित जननी केरि ।
हमसोंधिक प्रिय कारिणीकहत वचनयह हेरि ॥
कहत वचन यहहेरि टेरि सुनियत हैं जासू ।
हे शुक काटहु चरण कोशिलारिपु के आशू ॥
इमिप्रियवचन बनाय सुनावत अरुहितजानत ।
धन्य सारिका लषन मातु के जो गुण मानत ॥ १ ॥ २२ ॥

हे लक्ष्मण अत्यल्प भाग्यवाली व शोचती हुई अपनी माता का हमने कुछ भी उपकार न किया ऐसे पुत्र से उनका कौन उपकार हुआ इससे तो बिना पुत्रही के रहतीं तो अच्छा था पुत्र के वियोग का महा दुःखतो न होता २३ हाय हमारी माता कौशल्या बहुत कम भाग्यवाली ठहरीं जो कि शोकसागर में डूबीहुई परम दुःख से पीड़ित हमारे विनासोय-रही हैं २४ जो कहिये कि ऐसाही था तो क्यों चलेआये क्या किसीसे डरगये सो नहीं हम अकेलेही अयोध्या व पृथिवी भरको जो क्रोध करैं तो बाणों से जीतलें इसमें वीर्य्य का कोई अकारण नहीं है २५ किन्तु केवल अधर्म्म के भयसे डर के व परलोक के भय से हमने इस समय

राज्य नहीं लिया २६ उस निर्जन वनमें यह व इसी तरह और बहुत करुणा पूर्वक बिलाप कर अतिदीन मुख ह्वै रोदन करते हुये रात्रि जान मौनहो बैठे २७ जब बिलाप कर श्रीरामचन्द्रजी चुपाने तो दीप्ति रहित अग्नि व बेगरहित समुद्र के समान शान्त देख लक्ष्मणजी समझाने लगे २८ हेयुद्धकरने वालों में श्रेष्ठ श्रीराम यह तो निश्चय है कि आप बिना अयोध्या निष्प्रभा होगई जैसे बिना चन्द्रमा के रात्रि होजाती है २९ पर हे राम यह आप को योग्यनहीं जो परितापकरते हो कि जिससे हमको व सीता को विषाद कराते हो ३० ॥

चौ० ॥ नहिं सीता नहिं हम रघुनाथा । तुम बिन जियब रहब नित साथा ॥ जिमि जल बाहर जियत न मीना । तिमि जानिय कृपालु परबीना १ । ३१ ॥ तातशत्रु सूदन अरु मातहि । देखा चहत न तुम बिननातहि ॥ और कहौं का स्वर्गहुकेरी । तुमबिनबाञ्छाकरतनहेरी २ । ३२ ॥ इमि सुनि लषन वचन रघुनाथा । गयहुशयन हित जानकि साथा ॥ वट तरलषन सेज तृण केरी । रची तहाँ सोये नहिँ देरी ३ । ३३ ॥ सुनि गुण सहित लषन की बानी । रघुनन्दन सुख प्रद अनुमानी ॥ जबतक कानन बसे कृपाला । तबतक इमि नहिँ भये बिहाला ४ । ३४ ॥ यदपि बिजन भय प्रद अति कानन । पर रघुबर सह लषन सुखानन ॥ कबहुन भयसम्भ्रम ढिग आवा । जिमिहरि युगगिरि शृङ्गसुहावा ५ । ३५

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रिपञ्चाशत्तमसर्गः ॥ ५३ ॥

उस वृक्ष के नीचे वह रात्रि बिताय जब बिमल सूर्य्य उदय हुये तो तीनों जने वहांसे आगेको चले १ बीचमें बड़ा वन परा उसके पारहो उस देश को चले जहांकि गङ्गा व यमुना का सङ्गमहै २ मार्गमें नानाप्रकार के भूमिके भाग नानाप्रकार के देश देखते चलेजातेथे जिन्हें कभी देखाही न था ३ जातेजाते अनेकप्रकार के फूले फरे वृक्ष देखे इतने में दिन थोड़ा रहिगया कि श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले ४ हे लक्ष्मण देखिये यही प्रयाग तीर्थ है क्योंकि इसके चारों ओर सुगन्धित धुआं देखाई देता है हम जानते हैं कि मुनिराज भरद्वाज जी का आश्रम यही है देखिये अग्निसे जो धूम निकलता है मानों अग्नि की पताका है ५ अब

निश्चय है कि गङ्गा यमुना का सङ्गम इसी स्थान पै है क्योंकि दोनों नदियों का जल यहाँ मिलता है वहाँका शब्द सुनाई देताहै ६ वनवासी लोगों ने जीविका के लिये देखिये काठ इकट्ठा कर रक्खें हैं व आश्रमों पर के वृक्षभी कटेहुये देखाई देते हैं ७ इस तरह बतलाते हुये धनुष बाण धारणकिये दोनों भाई सूर्य्यास्त होने के समय प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम पै पहुंचे ८ वहाँजो दुष्ट मृग पक्षी थे उनको भयभीत करतेहुये श्रीराम एक मुहूर्त भरमें जाय बनाय मुनिके निकट पहुंचे ९ वहां मुनिके दर्शन की इच्छा से जानकीजी को आगे किये दोनों जन कुछ दूर पै खड़े होगये १० फिर धीरे धीरे आगे को बढ़ देखा तो महात्मा भरद्वाजजी अपने शिष्यों के सङ्ग बैठे हुये तपस्या कररहे थे ११ व अग्नि में आहुति दे रहे थे उसी समय में श्रीराम लक्ष्मण सहित जानकी प्रणाम करनेलगे १२ प्रणाम के पीछे अपना को जनाया कि हे मुनिराज हम दोनों महाराज दशरथजी के पुत्र हैं व राम लक्ष्मण हमारा नाम है १३ ये जनककी कन्या वैदेही हमारी स्त्री हैं जब हम बनको चले तो येभी पीछे पीछे चलीआई १४ हमारे पिताजीने वनवास तो हमीं को दियाथा पर ये हमारे भाई लक्ष्मणभी परम दृढ़ व्रत धारण कर मारे स्नेहके सङ्ग चले आये १५ अब सब जनों को पिताही की आज्ञासमझियेजो तपोवनको आयेहैं यहां मुनियों के समान कन्दमूलफल हीभोजन करते हैं १६ महाराजकुमार श्रीरघुराज के ऐसेवचन सुनमुनिराज ने कुशल प्रश्न पूंछ चरणपखारने व पीने आदिके लिये जलदिया १७ तिसके पीछे नानाप्रकार के रस अन्न फल मूलादि तीनोंजनों के भोजनके लिये मँगाया भोजनके पीछे रहनेके लियेउत्तम स्थानबताया१८ मुनिराजके चारों ओर पालतू मृग व पक्षी व मुनिलोग बैठेथे सबके साथ रामचन्द्रजीकी पूजाकर १९ भरद्वाजजी धर्म्मयुक्त वचन श्रीराम से बोले २० हेराम हमनेभी जबसे वाल्मीकि मुनिके मुखसे तुम्हारे वनवासहोनेके समाचार सुनेथे तबसे प्रतिदिन तुम्हारी राह देखतेथे कि आजकी कलमें आतेहोंगे २१ इससेअच्छा हुआ यहाँ आगये अब यह गङ्गा यमुना दोनों महानदियोंका बीच पुण्य व रमणीकभी है यहींसुख पूर्वक निवास कीजिये २२ जब भरद्वाज जीने ऐसा कहातो सब जीवों

केहित करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी अति शुभ वचन बोले २३ हे भगवन् यहाँसे अयोध्या बहुत निकटहै वहांके वासी व यहां के निकटवासी भी हमारे रूप को सुन इसआश्रम पैआय आय २४ बड़ी भीड़लगावेंगे जानकीजीके भीदेखने वाली स्त्रियां बहुत आवेंगी इसकारण हम यहां कारहना नहीं प्रसन्न करते नहींतो अच्छाथा २५ हेभगवन् कोई एकान्त स्थान विचारिये जहाँ सब सुखोंकेयोग्य जानकीजी सुख पूर्व्वक रहें २६ रामचन्द्रजीके ऐसे वचन सुन मुनिराज बहुत विचार पूर्व्वक बोले २७ हेतात इस स्थान से दश कोशकी दूरीपर एक पर्व्वतहै वह तुम्हारे बसनेके योग्यहै क्योंकि उसकी सेवा बड़े बड़े ऋषिलोग करतेहैं व सुन्दर सुडौलभीहै २८ उसपर बड़ी पूंछ वाले व छोटी पूंछवाले वानर ऋक्षादि बहुत रहते व चित्रकूट ऐसा नामहै यह गन्धमादनही पर्व्वत के समानहै इसपै सब तरहके सुख पावोगे २९ उसमें एक यह बड़ाभारी गुणहै किजितने समय तक मनुष्य चित्रकूट के कंगूरा देखा करता तबतक कल्याणही उसके मनमें बसता और मोह में तो कभी उसका तनही नहीं लगता ३० इस पर्व्वतपै बहुत ऋषिलोग सैकड़ों वर्ष तक तपस्या विहारकर महादेवजीके साथ स्वर्ग कोचलेगये ३१ हमजानते हैं कि वहांका रहना तो आपके लिये बहुतही सुखदायक है वा वनवास ही बासहै तोचाहिये हमारे संग यहांही निवास कीजिये ३२ इसरीति से उस रात्रि में परम प्रिय पाहुन पाय भरद्वाज जीने राम लक्ष्मण व जानकीजी की सब पदार्थोंसे सेवाकी जिससे वह रात्रि बड़े हर्ष से बीती ३३ वह रात्रि नाना प्रकार की चित्रविचित्र कथाही कहते सुनते बीती ३४ बहुतसी शुभ कथा सुन सुनाय आप तीनों जनोंने वह रात्रि महासुखसे बिताई ३५ जब प्रातःकाल हुआ तो महाराज कुमार परमोदार श्रीरामजी मारे तपस्याके देदी प्यमान भरद्वाजसे जाय बोले ३६ हेभगवन् यह रात्रितो परम शीलवान आपके आश्रम पै बीती अबजो स्थान आपने रहने को बतायाहै वहां जानेकी आज्ञा दीजिये ३७ जब बनाय रात्रि बीतगई व प्रभातकाल आया तो भरद्वाजजी रामचन्द्रजी से बोले कि बहुत अच्छा मधु मूल फल युक्त चित्रकूट पै आप जाय बसिये ३८ वहांका बास आपकेलिये सर्व्वथा योग्य

है क्योंकि वहां छोटे बड़े सब प्रकार के पर्व्वत व वृक्ष हैं जहां सब गन्धर्व्व किन्नरादि देव बस पैहैं ३९ मयूरादि पक्षी सदा बोला करते हैं हाथियों के झुण्ड घूमा करते हैं आप जाइये चित्रकूट अति प्रसिद्ध पर्व्वत है ४०

चौ० ॥ अति रमणीय पुण्य नग पावन । बहुफल मूल फूल मन भावन ॥ तहँ गजयूथ यूथ मृग करे । कियेरहत सब काल बसेरे १।४१ विचरत निर्भय ते बनमाहीं । लषि हहु तिन्हें राम शक नाहीं ॥ नदी दरी कन्दर वर निर्झर । सोता सब लषिहहु नर निर्ज्जर २।४२ जनक सुता सँग विहरत नीके । लषि हहु पैहहु सब सुख ठीके ॥ यहि सम गिरिवर आनन रामा । मन प्रसन्न होइहि त्यहि ठामा ३।४३ हर्षित कोकिलादि रव पूरित । सुख प्रमोद शिव देत विसूरित ॥ मृग कुंजर विहरण रमणीया । बसहु जाय आश्रम सह सीया ४।४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुःपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५४ ॥

रात्रि भर प्रयागजी में रह भरद्वाजजी के प्रणामकर सहित जानकीजी दोनों भाई रामलक्ष्मण चित्रकूट को चले १ चलने के समय तीनों जनोंके कल्याण के लिये महर्षि भरद्वाजजीने स्वस्त्ययन मङ्गलादि पढ़े जैसे कोई अपने और सपुत्रों के लिये पढ़ता है २ स्वस्त्ययन पढ़नेके पीछे महातेजस्वी भरद्वाजजी राम लक्ष्मणजी से बोले ३ हे राम आप जहाँ गङ्गा यमुना दोनों नदियों का सङ्गम है तहां से पश्चिममुख हो यमुना के किनारे किनारे जाइये ४ जब उस अति पवित्र नदी के किनारे जाय नानाप्रकार के जो तीर्थ उसमें हैं उन्हें देखलीजिये ५ तो घरनई आदि बनवाय उस सूर्य्यकी कन्या यमुना को उतरिये उसके पार कुछ दूर पै एक बरगदका बड़ा वृक्ष है जिसके अति हरे पत्ते हैं ६ व उसके चारों ओर बहुत से वृक्ष लगे हैं वृक्षमें कुछ श्यामता भी पाई जाती है सिद्ध लोग उसके नीचे बैठे तपस्या कर रहे हैं उस वृक्षके नीचे जाय हाथजोर जानकीजी आशीर्व्वाद माँगें कि हे वृक्षराज हमारे पति व देवर हमारे साथ कुशल पूर्व्वक बनसे लौटें ७ उस वृक्ष के नीचे पहुंच चाहै उसदिन वहीं बस रहैं चाहै चलाजाय एक कोशपर नीलवर्ण के वृक्षोंका एक वन देख परेगा ८ उस में यमुना के तीर के उत्पन्न

पलाश बैर बाँश आदि वृक्ष लगे हैं उसी वन होकर चित्रकूट का मार्ग्ग है इस मार्ग्ग में हम बहुत बार गये हैं ६ ऐसा रमणीय मार्ग है कि किसी तरह का क्लेश नहीं होता और कहांतक कहें वनोंमें बहुधा दावानल लगा रहता सोभी उसमें नहींहै इसप्रकार श्रीरामचन्द्रजी कोगली बताय भरद्वाजजीलौटआये १० लौटनेकेसमय रामचन्द्रजीसे पूंछलिया था कि अबतो आपचले जायँगे जब उन्होंने हाँकर प्रणामकिया तो मुनिराज फिरे जब मुनिराज लौटगये तो श्रीरामजी लक्ष्मणजीसे बोले ११ हे लक्ष्मण हमसब बड़े पुण्यात्मा हैं क्योंकि मुनिराज हमारे ऊपर बड़ी दया करते हैं यहदोनों महापुरुषों ने परस्पर विचारकिया १२ व जानकीजीको आगे कर यमुना के तीर गये व अति वेगवती व अतिजलवाली नदीको देखा पर नाव उसमें नथी १३ नदीके जलके तरने की इच्छासे बड़ी चिन्ता को प्राप्तहुये तिसके पीछे जैसे भरद्वाज जीने बतायाथा सूखे बाँश आदि एकट्ठाकर घरनई बनाई १४ उसमें वन की और सूखी लकड़ियाँ लगाई गईं गांड़रकीजर कूट कूट भर उसके छेद बन्दकियेगये तिसके पीछे वेत व फँरेंदकी नरम नरम डारें काट १५ लक्ष्मणजी ने जानकी जीके बैठनेकेलिये उस तृण नौकापै कुछ गुलगुल बैठका बनादिया तिसके ऊपर श्रीरामचंद्रजी ने लक्ष्मी के समान रूपिणी श्रीजानकीजी को १६ जोकि कुछ लजारहींथी उठाकर नावपै चढ़ाया व वैदेहीजीके निकट ही वस्त्रभूषणादि सब धरदिये १७ व सब बाँशडाँड़ आदिभी वहीं धरदिये सीताजी को प्रथम बैठाय तदनन्तर आपदोनों भाईचढ़े व नौका चलाया १८ जब जलते चलते नाव बीचधारामें पहुंचीं तो जानकीजी ने यमुना जीके प्रणामकिया १९ व कहा कि हे देवि जो कल्याणपूर्व्वक हमारे पति अपने पिताकी व अपनी प्रतिज्ञा पूरी करलौटेंगे व हमारा पातिव्रत धर्म्म अच्छी तरह निबहजायगा तो तुम्हारे निकट सहस्रगोदान करेंगी व जो पदार्थ देवताओं को भी दुर्ल्लभहैं तिनसे तुम्हारी पूजाकरेंगी २० ये सब बातें तब करेंगी जब आनन्दपूर्व्वक इक्ष्वाकादि राजाओं की पालित अयोध्यापुरीमें श्रीरामचद्रजी आय राजा होंगे इसतरह सीताजीने यमुनाजी से प्रार्थनाहाथजोड़ की २१ इसभांति प्रणाम करती हुई जानकीजी उस कृत्रिम नावकीद्वारा कालिन्दीनदी के दक्षिणतीरपै पहुँचीं

यद्यपि यमुनाजी ऐसी नावकी द्वारा उतरनेके योग्य नहींथीं क्योंकि बड़े वेगसे बहतीं व बड़े बड़े तरंग उठते हैं तथापि भवसागर के उतरने वाले श्रीरामचंद्रजीही जब खेवनेवाले ठहरे तो उतरना कौनकठिन ठहरा २२ इस रीतिसे यमुनानदीको तीनों जनउतरे उतरकर नावछोड़ यमुनावनसे आगेको चले २३ जाते जाते उसहरित पत्रके बरगद केनीचे पहुँचे जिसेभरद्वाजजीने बताया था तहाँ पहुँच जानकी जीनेउस बरगदके प्रणाम किया २४ कि हे वटवृक्ष तुम्हारे नमस्कार हैं जोहमारे पति अपना व्रत पूर्णकर अयोध्या में आय परमयशस्विनी कौशल्या व सुमित्राजीको हमलोगोंके साथ देखेंगे आपकी फिरपूजा करेंगी २५ यहकह जानकी जीने उसयमुना दक्षिण कूलस्थबरगदके प्रदक्षिणा कर ऐसामाँगती निन्दा रहितसीताजी को देख २६ रामचंद्रजी लक्ष्मणजीसे बोले हे भरतानुज सीताकोले तुम आगेआगे चलो २७ हम धनुर्व्वाणादि अस्त्र शस्त्र धारण किये पीछे पीछे आतेहैं जो जो फल वा फूल श्रीजनक किशोरी चाहैं २८ व जिसमें इनका मनरमैं सोसो चीज़ें इन्हेंले आनदिया कीजिये यह कह यमुना के दक्षिणकिनारे किनारे आगे की चले कि इतने में जिसी किसी अपूर्व्व वृक्ष वा लतादि को सीताजी देखती थीं २९ उसी का अद्भुत रूप जान रामचन्द्रजीसे पूंछतीथीं कि यह कौन वृक्ष वा लताहै क्योंन पूंछें वे नानाप्रकारके रमणीय फरे फूले वृक्ष देखाई देते थे ३० जो कुछ सीता जी मांगतीं लक्ष्मणजी तुरन्त आनदेतेथे यमुना के किनारे किनारे तो जाते हीथे सीताजीने स्नान करने को कहा कि लक्ष्मणजी चित्रविचित्र बालुकायुक्त व जिस के किनारे पै हंस सारसादि पक्षी बोल रहे थे तिसके तीर पै जानकीजी को लेगये ३१ ॥

चौ० ॥ नदी विलोकि विदेह कुमारी । विहरन लगीं स्नानपरिचारी ॥ कोशमात्र चलि राजकुमारा । विहरि यमुनतट बहु मृगमारा १ । ३२ तहँ मयूर नादित गज भूषित । वनमहँ विहरत राम अदूषित ॥ इमि विहार करितहँहि निवासू । कीन राम लषि सकल सुपासू २ । ३३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५५ ॥

इस तरह से वहाँ पर एक रात्रि बीती जब बड़ाप्रातःकाल हुआ तो रात्रिभर के जगेहुये लक्ष्मणजी भी कुछ सोय गये थे धीरेसे श्रीरामचन्द्र जी जगानेलगे १ हे लक्ष्मण सुनों वनके जीव सब कैसे मीठे वचन बोलते हैं अब चलनें का समय आया इससे उठिये यहाँ से चलें २ जब इसरीति से श्रीरामचन्द्रजी ने जगाया तो निद्रा जँभोई आदि छोड़ी व मार्ग्ग चलने का जितना परिश्रम था वह भी जाता रहा ३ तिसके पीछे तीनोंजन उठ यमुनाजल से हाथ मुख आदि धोय सकल मुनि सेवित चित्रकूट के मार्ग्ग में चले ४ लक्ष्मणजीके संग जाते श्रीरामचन्द्र कमलदलनयनो श्रीसीताजी से बोले ५ हे वैदेहि देखो तो बसन्त-ऋतु में चारों ओर कैसे पलाश के वृक्ष फुलारहे हैं मानों अपने अपने फूलों की माला धारण किये हैं ६ फिर बीर वृक्ष व बेलके वृक्ष तो देखो जिनके नीचे अति दुर्ग्गम होनेसे कोई भी मनुष्य नहीं मारे फल पुष्पों के सब झुंकेपड़ते हैं यहाँ हज़ारों गजादि जीव आते हैं यहां से बेगही चलना चाहिये ७ हे लक्ष्मण देखो तो प्रत्येक वृक्ष में चार आढक के प्रमाण की शहद की पींड़ें लटकी हैं जिन में सहस्त्रों मधुमक्खियां लिपटी हैं ८ फिर देखिये तो यह कोकिल कैसा बोलरहाहै जिसके पीछे पीछे मोर बोलता है देखिये तो इसी रमणीय वनमें जहां कि नाना-प्रकार के पुष्पफूले हैं ६ हाथियों के झुण्ड के झुण्ड घूमरहे हैं नाना-प्रकारके पुष्पों से युक्त वृक्षों से भूषित चित्रकूट देखाई देता है १० सो हम चित्रकूटके नीचे नीचे जो अति रमणीय वृक्षोंका वनहै कि जि-सकी भूमि सर्व्वत्र समानहै कहींभी ऊँचा खाली नहींहै हे तात इसमें कुछ दिन सबजन क्रीड़ाकरेंगे ११ ऐसाकहते कहाते पैदरही चलते चलते अति मनोहर व रमणीय चित्रकूट पै जाय पहुंचही गये १२ जब नाना-प्रकारके पक्षियों से भरा सब प्रकारके फल मूलादिकोंसे पूर्ण ठौरठौर रसीला व मीठा जल जहाँ विद्यमान १३ ऐसे पर्व्वत को देख लक्ष्मण से कहने लगे हे सौम्य देखो तो यह पर्व्वत कैसा नानाप्रकारके वृक्षों से शोभित बहुत फल मूलदलादि संयुक्त है हमको जानपरता कि हम लोगोंकी जीविका यहां अच्छी निबहेगी १४ किञ्च हेतात इस पर्व्वत पै मुनिलोगभी बहुत बसते हैं इससे बासही करने के योग्य है हमलोग

भी अब यहीं बसेंगे १५ यह कहतेही कहते श्रीराम लक्ष्मण व जानकी जी तीनों उस आश्रमपै पहुंच वाल्मीकि जी के प्रणाम करनेलगे १६ इन तीनों महापुरुषादिकों को देख श्रीवाल्मीकिजी हर्षित हो उनकी पूजा करनेलगे व पहिलेही बैठो बहुत अच्छी तरहसे आये ऐसे वचन कह आगत स्वागत पूंछाथा १७ तब ऋषिसे अपने वनवासादि होनेके कारण बताय श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले १८ हे लक्ष्मण पोढ़े व श्रेष्ठकाष्ठ लावो रहने के लिये एकस्थान बनावो हमारा यहां बसने का चित्त चाहता है १९ तिनके ऐसे वचन सुन लक्ष्मणजी ने बिबिध भांतिके वृक्षोंसे छोटी छोटी डालेंकाट लाय अच्छी पर्णशाला बनादी२० जब अच्छी तरह पत्तोंकी कुटीबनगई तो उसेदेख प्रसन्नचित्तहो आराम करनेलगे व लक्ष्मण जी सेवा करनेलगे उसी समय श्रीरामभद्र भाई से बोले २१ हे लक्ष्मण एक मृग पकड़लावो उसको पर्णशाला के द्वार पै बांधेंगे तब वस्तुकी पूजाकरेंगे क्योंकि जो लोग बहुतदिन जीनाचाहतेहों उनको चाहिये कि बिना वास्तुकी पूजाकिये उसमें न रहैं २२ हे लक्ष्मण इस्से अतिशीघ्र मृगलावो सन्ध्या न होने पावे जैसा कुछ शास्त्रमें वास्तु पूजन लिखाहै व जैसी कुलकी रीतिहै वैसा पूजनकरें२३ भाईके वचन सुन लक्ष्मणजी तुरन्त एक मृगलाये तब रामचन्द्रजी फिर बोले २४ कि हे लक्ष्मण इसमृगके खानेके योग्य कुछ फललावो उन्हें अग्निमें सेंक इसके भोजनके लियेदेवो व उन्हीं फलोंसे हम वास्तुकी शांतिके लिये हवनभी करें पर शीघ्रता कीजिये क्योंकि यह ध्रुवमुहूर्त्त है इसीमें दिन रहेही रहे पूजा होजाय २५ रामचन्द्रजीके ऐसे वचन सुन वे जो कृष्णमृगोंके खानेके योग्य फललायेथे अग्नि बार लक्ष्मणजी ने परिपक्वकिया २६ जब बनाय परिपक्व हुये फलोंकी ललाई जाती रही तो लक्ष्मणजी पुरुषों में सिंह रूप श्रीरामचन्द्र जी से बोले २७ हे देवताओं के समान रूप श्रीराम ये कृष्णमृगोंके खानेवाले फल हमने परिपक्व किये आप देवताओं की पूजा कीजिये क्योंकि आप इस कर्ममें कुशल हैं २८ यहसुन स्नानकर जपकरने में चतुर श्रीराम एक ओर से सब मन्त्रपढ़पढ़ आहुति देनेलगे यहाँतक कि वास्तु पूजन समाप्तहुआ२९ सब वास्तुके देवताओं ने आय आय प्रत्यक्ष में अपना अपना भागलिया

उनको देख प्रसन्नचित्त ह्वै श्रीरामचन्द्रजी ने उस पर्णशाला में प्रवेश किया ३० उससमय उन्हीं होमसे बचेंबचाये फलोंसे वलि वैश्यदेव व रुद्रवलि वैष्णववलि सब किया ३१ तिसके पीछे जपकर नदी में यथा विधि फिर स्नानकर पाप नाशनार्थ फिर फलोंसे वलिप्रदान किया ३२ फिर उस पर्णकुटीमें वेदियां बनाईं देवताओंकी स्थापना की उनकेलिये अलगअलग चबूतरे बनादिये जिसप्रकारका वह स्थानथा उसके अनुरूप छोटे २ स्थान देवोंके बनाये व उनमें देवोंको स्थापित किया ३३ ॥

हरिगीतिका ॥

तरु हरित दल छादित मनोरम विगत पवन सुखप्रदा ।
जहँ चहिय जो तहँ सोइ निर्म्मित सकल पूरित सम्पदा ॥
स्यहि पर्णशाला समुनि माला राम सिय सौमित्रहू ।
किय शुभ प्रवेश सभा सुधर्म्मा मैं यथा रिपु वृत्रहू १ । ३४
रमणीय चित्रक कूटलहि अरु नदी काल्यवती वरा ।
जहँ बसत तीर्थ समूह अरु मृग पक्षिगण पाँतीपरा ॥
तहँ करि निवास सुपास लहि भे परम हर्षित रामहू ।
वनवास दुःख विसारि शुभ उंर धारि पूरण कामहू २ । ३५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषट्पञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५६ ॥

अब यहाँ चित्रकूट में रामचन्द्रजी के बसने की कथा यह सुमन्त्र व निषादराजके समाचार कहते हैं जब सुमन्त्र को समझाय अति दुःखित हो रामचन्द्रजी शृंगवेरपुर से गंगाके दक्षिण तीरपै आये तो सुमन्त्रको संग ले गुह अपने घरको चले गये १ जबतक रामचन्द्रजी प्रयाग में भरद्वाजजी के आश्रम पै हो चित्रकूट तक पहुँचे अर्थात् ५ दिनतक सुमन्त्र निषाद के यहाँ रहे २ तिसके पीछे निषादराज से सम्मत ले सुमन्त्रजी रथमें घोड़े नह अति उदासीन हो अयोध्यानगरी को चले ३ मार्ग्ग में नानाप्रकार के सुगन्धित वन नदी तड़ाग ग्राम नगर देखते अति दृढ़चित्तकिये सुमन्त्र चले ४ शृंगवेरपुर से चलने के दूसरे दिन सन्ध्याके समय आनन्दरहित अयोध्यापुरी में सुमन्त्र पहुंचे ५ देखा तो कोई न कहींबोलता है न चलता फिरता है मानों अब कोई

असता नहीं इस से सुमंत्र मारे शोक के चिन्ता करनेलगे ६ कि क्या हाथी घोड़ा जन राजा सहित पुरी रामचन्द्रजी के वनवास के दुःख से उठे हुये शोकाग्नि से नहीं जरी वा जरगई ७ इस तरह चिन्ताकर शीघ्रगामी घोड़े रथमें नहे सुमन्त्र नगरके बड़े फाटक की ओरसेपैठे ८ सुमन्त्रको चले जाते देख सैकरों मनुष्य इधर उधरसे राम कहाँ हैं यह पूंछनेके लिये तिनके चारों ओरसे दौरे ९ उन सबसे सुमन्त्रजीने यही जवाब दिया कि हमतो गङ्गा परसे परम महात्मा रामसे पूंछ कर उनकी आज्ञासे चलेआये १० और वे गङ्गाजीके उसपारको चलेगये इस समाचारको जान सबकेसब रोय रोय कहने लगे कि अहो हम लोगोंका धिक्कारहै जो बिना रामचन्द्रजीके जीतेहैं यह कह राम राम कह चिल्लाय चिल्लाय रोनेलगे ११ इन सबोंका रोदन सुन झुण्डके झुण्ड हायहाय कर रोने व पुकारने लगे कि जो रामचन्द्रजीको अब देखतेही नहीं तो मरे अब मरे हाय हाय १२ भला अब दान यज्ञ बिवाह व महात्मों के समाजके बीच में बैठे हुये श्रीरामको कभी फिर देखेंगे वा नहीं १३ जिन श्रीरामभद्र ने इस नगरको ऐसा प्रेमपूर्व्वक पाला पोषाथा जैसे पिता पुत्रका पालन करताहै तिन राम बिना इस पुरमें यहाँके निवासी जनोंका अब कौन प्रयोजन चलेगा व कौन प्रिय होगा व सुखही कौन होगा कुछ भी नहीं १४ यह चारों ओरका बिलाप सुन नगर की स्त्रियाँ रामचन्द्रजीकी वार्त्ता सुननेके लिये कोठोंपै चढ़ चढ़ झरोखोंमेंसे झाँकने लगीं व रामही राम कह कह रोदन करनेलगीं तिनका रोदन बीच बज़ारमें जाते हुये सुमन्त्र सुनते चले जाते १५ यही सुनते सुनाते वस्त्र से मुह मूंदे हुये सुमन्त्रजी बड़ी सड़कपै हो जिस मन्दिरमें महाराज दशरथजीथे गये १६ व फाटकपै पहुंचतेही रथसे उतर राज महलमें पैठे सात फाटक नाँघगये सब फाटकों पै बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोग बैठे खड़े थे १७ सुमन्त्रजीको आये सुन कोठों विमानों व धवरहरोंपै चढ़ी स्त्रियाँ बिना रघुनन्दन प्राणप्यारेके आये हुये देख रामके न देखनेसे दुर्बल तो होही रहीथीं हाहाकार करनेलगीं १८ सबकी सब विमल व बड़ेबड़े नेत्रों से आँशुओंकी धारा छोड़ती आपस में देखतीथीं उनके उस देखने सेही प्रकट होताथा कि इनके ऊपर बड़ा भारी दुःख परा है १९ व

महाराज दशरथजीकी स्त्रियोंका रोदन तौ प्रत्येक घवरहर पर से धीरे धीरेही सुन परताथा क्योंकि उन लोगों को मारे दुःखके ज़ोरसे रोने की शक्तिही नहीं रहीथी २० हाँ धीरे धीरे यह तौ रोय रोय कहतीथीं कि रामचन्द्रजी के साथ सुमन्त्र गयेथे व अब बिना रामहीके यहाँ आये भला रोदन करती हुई कौशल्या जी से क्या कहेंगे २१ भाई जैसा कुछ जीव को दुःख के साथ जीने का स्वभाव है वैसा सुख के साथ जीने का नहीं क्योंकि देखिये रामके समान पुत्र राज्य छोड़ वन को चले गये तब कौशल्याजी जीतीही रहीं इस दुःखाशासे कि फिर लौट आवेंगे इससे तो जो तभी मरजातीं तो इतना कष्ट न सहतीं २२ इस रीतिसे स्त्रियोंके सत्य रूप वचन सुनते सुमन्त्रजी शोकके मारे अधिक जलते हुये राज मन्दिरमें पैठे २३ वहाँ देखातो आठयें फाटक के भीतर जो मन्दिर चन्द्रसमान झल झला रहाथा राजा दशरथ अति दुःखित पुत्र शोक से महाब्याकुल शय्या पर परेथे २४ राजा के सम्मुख जाय प्रणाम कर सुमन्त्रजीने श्रीरामचन्द्रजी के वचन यथातथ्य कहे उनमें न्यूनाधिक कुछ नहीं किया २५ महाराज दशरथ सुन चुप होरहे फिर घबराय राम शोकसे पीड़ित व मूर्च्छितहो भूमिमें गिर परे २६ जब महाराज मूर्च्छितहो पृथिवी पर गिर परे तो सब भीतरके रहने वाली रानी दास दासी आदि ऊपरको हाथ उठाय उठाय रोदन करने लगीं २७ तब सुमित्रा व कौशल्याजी ने एक एक राजा का हाथ पकर उठाया व यह कहनेलगीं २८ कि हे महाराज अति दुष्कर कर्म्म करने वाले रघुनन्दनके ये दूतहैं इन से आप क्यों नहीं बोलते २९ हे राजन् जो रामचन्दजी को आपने वनवास दिया उस अन्याय से अब न लज्जित हूजिये उठिये आपकी सत्य प्रतिज्ञता तो सिद्ध होगई अब यदि मन्त्रीसे न बोलोगे तो मारेशोकके येभी प्राण त्याग करेंगे तो जब जब शोक आपको होगा तो सहायता कौन करेगा कौन समझावेगा ३० हे देव जिस कैकेयी के भयसे सारथिसे रामचन्द्र के समाचार नहीं पूछते वह इस स्थानमें इस समय नहींहै आप निश्शङ्कहो हाल पूछिये ३१ इतना राजा से कह शोकसागर में डूब कौशल्याजी गद्गद वचन कहती मूर्च्छितहो पृथिवीमें गिर परीं ३२ ॥

दो० कौशल्यहि रोवत मही पतित देखि रनिवास ।
तैसहि नृप तिहि देखि सब रोवन लगीं उदास १।३३
यह सुन सब नर नारिजे वृद्ध तरुण अरु बाल ।
रहे तहाँ रोवन लगे दुःखित परम विहाल २।३४

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५७॥

जब कुछ देरके पीछे राजाकी मूर्च्छा जागी व चित्तमें सुधि आई तो रामचन्द्रके वृत्तान्त पूंछनेके लिये सूतको वुलाया १ तब सुमन्त्रजीहाथ जोर राजाके निकट खड़े हुये फिर भी राजा रामचन्द्रही को शोचते व दुःख शोकके समुद्रमें डूबते उतरातेथे २ एकतो वृद्ध ही थे दूसरे मारे शोकके जले जातेथे उस समय राजाकी ऐसी दशाथी कि जैसे तुरन्त वन से हाथी पकर आवे वह अपने परमप्रिय साथियोंमें ध्यान लगाने के कारण व्याकुल रहैं ३ राजानेभी देखातो सुमन्त्रजीके सब अङ्गो में धूर लगीथी आंशुओंकी धारा बहती चली जातीथी परम दुःखित हो पूंछा ४ हे सूत अब धर्म्मात्मा रघुनन्दन वृक्षके नीचे बसते होंगे व बड़ा सुख भोगते होंगे भला वहाँ भोजन क्या करेंगे ५ हेसुमन्त्र वे तो दुःख भोगने के योग्य न थे किन्तु सुख शय्यापे ही शयन करने के योग्यथे फिर महाराजाधिराज के पुत्रहो अनाथके समान भूमिमें कैसे सोतेहोंगे ६ जब कभी घरसे शिकार आदि खेलने के लिये बहिरातेथे तो जिन के पीछे पीछे पैदर रथ घोड़े हाथी आदि चलतेथे वे राम निर्ज्जन वनमें कैसे बसेंगे ७ जिस वनमें बड़े बड़े अजगरादि नाग व काले साँप व नाना प्रकार के वन के जीव रहतेहैं तिसमें अति सुकुमार राम लक्ष्मण वैदेहीके साथ कैसे बसते होंगे ८ हे सुमन्त्र अति सुकुमारी तपस्विनी सीता के साथ दोनों राजकुमार रथ से उतर पैदर कैसे गये ९ हेसूत तुम्हारे सब काम सिद्ध होगये जो कि वनमें पैठते हुये हमारे पुत्रों को तुमने देखा जैसे मन्दराचलपै पढ़ते हुये अश्विनीकुमार को कोई देखे १० ॥

चौ० ॥ कहुसुमंत्र भाष्यहु का रामा । का लक्ष्मण लहिवनदुखधामा ॥
जनकसुताका कह्यहु सँदेशू । कहहु तात मोहिं बड़ा अँदेशू १ । ११ ॥
आसन शयनरु भोजन पाना । सूतराम के कहहु बखाना ॥ तासुनि जि-

यव ययाति महीशा । भेजिमि सुख लहि साधु अधीशा २ । १२ ॥

सुमन्त्रजीने जब ऐसे राजा के वचन सुने तो गद्गद वाणी से बोले १३ हे महाराज धर्म्महीकी पालना करते हुये श्रीरामभद्र भली भाँति प्रणाम कर हाथ जोर हमसे बोले १४ कि हे सूत सबकुछ जाननेवाले व शिरसे वन्दना करनेके योग्य महात्मा हमारे पिताके चरणों की वन्दना हमारी ओरसे करना १५ तिसके पीछे सब हमारी माताओंसे विशेषकर आरोग्य कहना फिर प्रणामादि जिसको जो योग्यहो १६ व हमारी माता कौशल्याजीसे प्रथम तो हमारे कुशलानन्द के समाचार कहना फिर प्रणाम कहके यह कहनाकि १७ जैसे सदासे तुम अपने नित्य धर्म्ममें लगी रहती थी वैसे अबभी अग्निहोत्रादि कराय हमारे पिताजीके चरणों की सेवा करती रहना १८ अभिमान व मान सब छोड़ सबमाताओंके बीचमें रहना राजाकी सेवा करने के पीछे हमारी बड़ी प्रियकारिणी केकयीसे मिलाप किये रहना १९ वा यद्यपि भरत आपके लड़केहैं तथापि उनकेसाथ जैसे अन्य लोग राजाओंके सङ्ग वर्त्ताव रखते हैं वैसेही तुम भी वर्त्तना क्योंकि राजालोग अर्थसे सबसे ज्येष्ठ होतेहैं तुम राजधर्म्मोंका स्मरण करो २० व भरतसे यह सन्देश कहा है कि प्रथम तो हमारा कुशलानन्द कहना फिर हमारी ओरसे यहकहना कि सब माताओं में यथायोग्य वृत्तिसे वर्त्ताव करें २१ व यहभी कहदेना कि युवराज पदवी को पाय राजाकी पालना ऐसी करें जिसमें वे राज्यसे बाहर न जायँ २२ यहभी कहनाकि राजा बहुत दिनोंसे राज्य कररहेहैं सब बातें जानते सुनतेहैं उनके मन को कभी न भंग करें बरन सब राजकाज उन्हींकी आज्ञासेकरें २३ यह कह फिर बहुत आँशुओंकी धारा छोड़ श्रीराजकुमार रामने हमसे कहा किपुत्रके विषय इच्छा कियेहुई हमारी माताको अपनी माताके समान समझना २४ श्रीरामभद्र इस तरह हमसे कह बहुतही रोये उसदशाका वर्णन में नहींकरसक्ता २५ इसके पीछे ऊर्ध्वश्वास ले अतिक्रोध से लक्ष्मण राजकुमार ने यहकहा कि इन राजकुमार श्रीरामको किस अपराध से उन्होंने वनवास दिया यहभी उनसे कहदेना २६ राजाने कैकेयीके वचन सुनतेही ऐसा अकार्य्य किया जिससे हमलोग वनमें दुःखितफिरते हैं २७ यदि रामचंद्र जीको लोभके कारण परित्याग किया व कैकेयीके

वरके पूराकरनेके लियेकिया तौभी सर्व्वथाअनुचितहीकिया क्योंकि राम-चंद्रजीको न कुछराज्यहीका लोभथा न इनके वहाँ रहनेसे कैकेयी केवरदान हीमें कोई हानिहोती २८ यदि ईश्वरके कराने से उन्होंने ऐसा किया है तोभी श्रीरामचंद्र जीके परित्याग में ईश्वरकृतिकाभी हेतु नहीं विदित होता२६कुछनहींराजाने इसकापरिणामन विचाराकेवलबुद्धि की अल्पता सेही यह काम किया इसलिये यह रघुनन्दनजी का वनवास राजा की निन्दा अवश्य करावेगा ३० कुछ हम पिता माता आदिके वियोगको न सहकर अयोध्या जानेके लिये ऐसानहीं कहते क्योंकि हमारे तो पिता भाई बन्धु स्वामी सब रामहीहैं ३१ देखिये सर्व्वलोक को प्रिय व सर्व्व लोकके हित करनेमें लगेहुये श्रीरामको इन्होंने वनवासदिया फिर इनके इस कर्म्मसे सब लोक कैसे प्रसन्न होंगे ३२ सब प्रजाओं के अभिराम अतिधार्म्मिक श्रीराम को वनवास दे सर्व्वलोक से विरुद्धकर राजादश-रथ आपही कैसे राजाहोंगे ३३ ॥

चौ० ॥ महाराज मिथिलेश कुमारी । अतिहि तपस्विनि भरि चष-वारी ॥ ऊधी श्वासलेत रहिठाढ़ी । मनहुं भूतहत चित अतिगाढ़ी १।३४ कबहुंन दुख देख्यहु नृपवारी । ता दुख दुखित रुदन करिभारी ॥ मो-सन कछु न कह्यहु तिनभूपा। चित्र लिखित तिय समरहि चूपा २।३५ सूखत बदन रामतन देखी । मोचत आँशु जातमोहिं पेखी ॥ तासु दशा अवलोकि महीपा । कहत बनत कछुनहिं यहिदीपा ३ । ३६ ॥

व तिसी रीतिसे श्रीरामचन्द्रजी भी आँशुआय हाथ जोर मुझसे बोले व चलनेके समय हमें व रथको निहारते रहे इसीतरह सीताजीभी ३७॥

इत्यार्षेरामयणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५८॥

महाराज उनलोगोंकी तो वहदशाहुई कि बारबार रोदन करतेथे यहां जब वे वनको चले तो हमारे घोड़ेभी उसीओर को दौड़नेलगे इधर को पैरही नहीं धरते थे बारबार हिनहिनाय हिनहिनाय आँशुओं की धार छोड़तेथे १ बहुत कहांतक कहें दोनों राजपुत्रों ने चलते समय हाथजोड़ा हम तिनका दुःख हृदय में धारण कर इधर को चले २ आय तीन दिन तक निषादराजके गृहमें इस आशासे रहे कि कदाचित् श्रीराम हमें फिर

न बुलावें तो दूरचले जानेसे हम ना मिलें ३ हे महाराज जीवों की कौन कहै आपके देशके वृक्षभी रामचन्द्रजीके वनवासके दुःखसे पीड़ित कुंभिलागये हैं फूल पल्लवादि सब सिँकुर उठे ४ नदी ताल व छोटीतलैयों का जल सन्तप्त होगया वन व उपवनोंके पत्ता सूखगये ५ वनवासी कोई कहीं नहीं चलते जहांके तहां सबके सब पड़ेहैं सर्प्प चलतेहीनहीं रामचन्द्रजीके शोचके मारे वनमें शब्दहीनहीं होता ६ नदियोंका सबजल मलिन होगया है उनमें कमलों के सड़ेगुले पत्तेबहते हैं तड़ागोंमें कमल सन्तप्त होरहे हैं इसीसे जो मछली व पक्षी उनके पासजाते हैं सब के मन टूटजाते हैं ७ जलसे उत्पन्न कमल कुमुदिनी आदिके फूल व गुलाब नेवारी चम्पादिस्थलके वृक्षोंके पुष्प सबोंमें सुगन्ध अल्प होगईहै इससे जैसे पूर्व्वकाल में शोभित होतेथे अब नहीं होते ८ हे राजन् अयोध्यामें जितनी फुलवारियां थीं सब शून्य होगईं पक्षी अब किसी में नहीं रहे कोई बाग बागीचे चित्तको प्रसन्न करनेवाले नहीं दिखाई देते ९ जब हम अयोध्यामें पैठे तो किसीने भी आदर सत्कार नहींकिया जोई कोई रामचन्द्रको नहीं देखता वही ऊर्ध्वसांस लेने लगताहै १० हेराजन् इस राज रथको बिना रामजीके देख जितने लोग राजमार्ग्गमें जातेथे रोदन करनेलगे ११ कोठों विमानों व अवरहरोंपै चढ़चढ़ स्त्रियोंने जैसेही रथ देखा व श्रीरामभद्रको नहीं देखा उससे दुःखितहो हाहाकारशब्दकरनेलगीं १२ सब स्त्रियां एकदूसरीको निहार निहार अतिदुःखित शब्दकर रोदन करतीं १३ हमको आज अयोध्याजीमें मित्रशत्रु व उदासीन कोईऐसा नहीं देखपड़ता जो कष्टित न हो १४ क्योंकि इसअयोध्यामें सब बिना आनन्दहीके मनुष्यहैं व हाथी घोड़ेभी दुःखितहैं सबलोग जहांदेखो आर्त्तवचन पुकारतेहैं इसीका हल्ला सर्व्वत्र होरहाहै १५ आनन्दका कहीं नामही नहीं सुनाई देता क्योंकि रामचन्द्रजीके बाहर जानेसे आतुरहैं अयोध्या पुरी भरको ऐसाही दुःखहै जैसेकि कौशल्याजी को पुत्रशोकसे है १६ सुमन्त्रजीके ऐसे वचन सुन महाराज दशरथजी अति दुःखित वचन बोले नेत्रोंसे आँशु बहतेथे मुखसे बोल नहीं निकलताथा १७ हाय इसपापिनी केकयीके कहनेसे हमने रामचन्द्रको वनवास दिया सर्व्वशास्त्र कुशल अपने मन्त्रियोंसेभी सम्मत न लिया १८ नतो सुहृद लोगों

से इसविषयमें कुछ पूंछा न मन्त्री व महाजन लोगोंसेभी जनाया केवल स्त्रीके निमित्त मोहहीसे अति शीघ्र यह अयोग्य काम करडाला १९ वा यह बड़ाकष्ट भवितव्यतासे कियागया जिसका परिणाम इस कुलके नाश करनेकेलिये हुआ २० हेसुमन्त्र जो हमने तुमने कुछ सुकृत कियाहो तो उसके प्रभावसे तुम हमें रामके निकट पहुंचाओ क्योंकि अब हमारे प्राण चलनेके लिये उतावली कररहेहैं २१ यदि अबभी हमारी आज्ञा मानीजातीहो तो उसे मान कोई रामचन्द्रजीको वनसे अभी लौटा लावें क्योंकि हम मुहूर्त भरभी बिना रामचन्द्र नहीं जीसक्के२२अथवा रामचन्द्र दूरचलेगयेहों व इस समय न आयसक्के तो हमीको रथपै चढ़ाय अति शीघ्र श्रीरामभद्रको देखावो २३ कुन्द पुष्प समदन्तवाले महाधनुर्द्धर लक्ष्मणके ज्येष्ठभाई श्रीराम कहांहैं यदि उनको इस समय सीता के साथ देखते तो जीजाते २४ यदि अरुणकमलनयन आजानुवाहु मुक्तामणिजटित कुण्डल पहिरे श्रीरघुनन्दनको हमने न देखा तो यमराजके स्थानको अवश्य जायँगे २५ जोअब इस मरणावस्थाको पहुंच कर भी प्राणप्यारे रामचन्द्रजीको हमने न देखा तो इससे अधिक और कौन दुःख पड़ेगा २६ ॥

चौ०हाराघव हालषन पिरीते।हाजानकि तपसिनि पतिप्रीते॥मोहिं नजानत दुखके मारे। मरत अनाथ न समहियहारे १। २७ इमित्यहि दुखसों दुखित नरेशा। बूडत शोक सिन्धु गतवेशा॥ इमि कौशल्या सों महिपाला। कहन लगे ह्वै अतिहि विहाला २। २८ प्रिये राम कर शोक अपारा। महावेग जहँ किये विचारा॥ सीता विरह शोकगत सोई। श्वसित तरङ्ग आँशु जलहोई ३। २९ भुज विक्षेप मीन अरुरोदन। महाशब्द सम सकलकुमोदन॥ छूटकेश स्यवार समानू। कैकेयी वडवानल जानू ४। ३० ममलोचन जल प्रभव गभीरा। ग्राहमन्थरा वचन सुधीरा॥पुनि निर्ल्लज्ज मन्थरा तीरा।रामप्रवास बढ़ोअति नीरा ५।३१ राघव बिन बूडत त्यहिमाहीं। शोक जलधि यह महा अथाहीं॥ जियत न उतरब हमयहि काहीं। कहत प्रिये संशय कछुनाहीं ६। ३२॥

दो० जोदिदृक्षुहम लषन युत रामहि देखत नाहिँ।
महा अशुभ यहइमि कहत गिस्योनृपति महिमाहिँ ७। ३३

नृपके इमिं रोवत करुणा रघुवर हित द्विगुनीत ।
भयहु वचन सुनि सोभई रघुवर मातु सभीत ८।३४॥

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेएकोनषष्ठितमस्सर्ग्गः॥ ५६ ॥

राजा की यह दशा देख कौशल्याजी थरथराय बारबार भूत लगेहुये मनुष्यके समान काँपतीहुई धरणीमें गिर सुमन्त्रजीसे बोलीं १ हे सूत जहां हमारे प्राणप्यारे रघुनन्दन जानकी व लक्ष्मण हैं वहां हमें ले चलो क्योंकि तिनबिना आजहम क्षणभर भी नहींजीसक्ती २ अति शीघ्र फिर रथ लौटावो वनको हमें भी लेचलो यदि तिन के निकट हमें न पहुंचावोगे तो हम अभीप्राण छोड़े देतीहैं ३ यहसुन सुमन्त्र जी गद्गदवाणी से कौशल्या जीको समझाते हुये हाथजोड़ बोले ४ अब आप शोक मोह व दुःख से उत्पन्न सम्भ्रम छोड़दें क्योंकि श्रीरामभद्र बड़े सुखसे वनमें बसेंगे ५ व लक्ष्मणभी वनमें रामचन्द्रजीके चरणारविन्दों की सेवा करतेहुये परलोक की आराधना करते हैं ६ व निर्ज्जन वनमें भी जानकीजी रामचन्द्रजी में चित्तलगाय घरही के समान प्रीतिपूर्व्वक निर्भ्भय बसती हैं ७ हमने कुछ भी दीनता के साथ वनमें सीता का किया हुआ काम नहीं देखा इस बातसे मानो सीता वनवासही के उचित हैं यह विदित होता ८ जैसे यहां फुलवाड़ियों में जाय सीता विहार करती थीं तैसेही निर्ज्जन वनों में भी विहरती हैं ९ पूर्णमासी के चन्द्रसमान मुखवती सीता विजन वनमेंभी प्रसन्नचित्त ह्वै रामचन्द्र के आगे बालकों के समान क्रीडा करती हैं १० जिन सीताका मन रामचन्द्र में लगा है तिनका जीवन भी तिन्हीं के आधीनहै इससे बिनाराम यह अयोध्या सीता को महावनके समान होजायगी ११ देखो वैदेही जिस जिस ग्राम नगर नदी वृक्षादि को देखतीथीं राम वा लक्ष्मण से पूंछती थीं १२ जब उसका हाल जानलेती तो ऐसी प्रसन्न होतीं जैसे गाँव के कोशभरपै की फुलवाड़ी में जाने से प्रसन्न होतीं १३ हम सीता के इसी सुख को स्मरण करते हैं जो रामजीके संग आनन्दित हैं कैकेयी की संगिनी मन्थरा आदि के बकने झंकने का स्मरण बिलकुल हमको नहीं १४ जो बातें मारे प्रमाद के कौशल्याजी को सूझी थीं उन्हें

इसी तरह की बातें कह सुमन्त्र जीने ध्वस्त करदिया फिर अति मधुर आनन्ददायक वचन कौशल्या जी से बोले १५ कि मार्ग के चलने के श्रमसे व प्रचण्ड पवन के वेगसे व सम्भ्रम व घामसे जनकनन्दनी की चन्द्रसमान प्रभानहीं जाती १६ शतपत्र कमल के समान शोभायमान व पूर्णमासी के चन्द्रमा की दीप्ति के समान देदीप्यमान जानकीजी का मुख बनवास के खेद से नहीं कम्पित होता १७ वनमें पैदर चलने पर भी यद्यपि सीता के चरण बिना महाउर के हैं तथापि मारे सुन्दरता के मानों महाउर लगायेही हैं १८ यद्यपि अब चरणों में कोई भी भूषण धारण नहीं किये हैं तथापि ऐसी प्रसन्नता के साथ चलतीहैं मानों घुंघुर बाँधेही चलीजाती हैं १९ वनमें जनककुमारी बाघ सिंह हाथी आदि को देख कुछ भयभीत नहीं होतीं क्योंकि श्रीरामचन्द्र जी की भुजों से रक्षित हैं २० इसलिये अब आप न जानकी रघुनन्दन व लक्ष्मणजीका शोचकरें न अपने शरीरहीका न राजाहीका शोचकरें यह चरित जो रघुनन्दन करते हैं करनेही दीजिये क्योंकि जबतक ब्रह्मा की सृष्टि रहैगी तबतक बनारहेगा २१ और ॥

हरिगीतिका ॥

तजिशोक प्रमुदितचित महर्षि न चरित मारगमें सही ।
सुविचार विचरत बनमनिवसत वनजफलभुज स्वैमही ॥
निजजनक जननि निदेश पालत बैरि घालतहैं सही ।
तिनहेतु शोकन करियरानि सुमन्त्र इमिगुनि कै कही ॥ १ ॥ २२
करियुक्त बहुत सुमन्त्रसोंक्यउ तदपि सुतके शोकसों ।
विश्राम कीन न खेय बारहिबार बाहर लोक सों ॥
प्रियपुत्र राघवराम रघुबर लषन जानकि हैं कहां ।
अब गयहु हमहिं अपारदुखमें डारिसुख गुनिकै तहां ॥ २ ॥ २३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषष्टितमस्सर्गः ॥ ६० ॥

जब रमण करनेवालों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र वनको चलेगये तो मारे दुःख के पीड़ित कौशल्याजी रोदन करतीहुई अपने पति महाराज दशरथजीसे बोलीं १ हे राजन् यद्यपि तीनों लोकों में आपका यह यश फैल

गया कि राजा दशरथ बड़े दयावान् बड़े दानी व प्रियवादीहैं २ तथापि यहतो बताइये कि सहित जानकी तुम्हारे दोनों पुत्र अति दुःखितहवै वनके दुःख कैसे सहेंगे ३ भला षोडश वर्ष की तरुण अवस्था को प्राप्त अति सुकुमारांगी सदा सुखही करने के योग्य जनककुमारी बनकी गरमी व जाड़ कैसे सहेंगी ४ भला यहां व जनक पुरमें सब शोभन व्यंजन युक्त भोजन करके अति विशालनयनी सीता वनके खट्टे तीते फल व तिनीपसाढ़ी आदि मुनियों के निस्स्वादु भोजन कैसे करेंगी ५ यहां नाना प्रकारके गाने बजानेके शब्द सुन अब मांसभोजी सिंहादिकों के अत्यशोभन शब्द कैसे सुनेंगी ६ इन्द्रध्वजके समान सबको उत्सव देने करानेवाले श्रीराम भूषण रहित परिघ समान हाथको तकिया बनाय कहीं शयन करतेहोंगे ७ कमलाकार सुन्दर दाढ़ी मोछ युक्त कमलवत् प्रियश्वाससहित कमलसदृशनयन श्रीरामचन्द्रका मुखारविंद अब फिर कब देखेंगी ८ जोकि रघुनन्दन प्यारेको बिनादेखे हमारे हृदयके सहस्र खण्डनहीं होजाते इससे साफ विदित होता किहमारा हृदय वज्रसार के समान कठोरहै ९ हाय आपने दयाभाव को छोड़ हमारे प्यारे राम जानकी लक्ष्मणको निकालदिया जोकिसदा सुखही करनेके योग्यथे अब वे कृपणोंके समान बनमें इधर उधर दौड़ेदौड़े फिरतेहैं १० यदि चौदह वर्ष बीतनेके पीछे रामचन्द्र वनसे लौटिभी आवैं तोभी राज्य कोशादि भरत न छोड़ें कुछ छोड़ने की जरूरत नहीं ११ क्योंकि जैसे कोई कोई लोग श्राद्धमें अधिक मिलनेके लिये प्रथम अपने दमाद समधी आदिको ही बुलाकर खिलातेहैं तिसके पीछे जब उनका काम निकल जाताहै तो अन्य द्विजोत्तमोंको भोजन करनेको बुलातेहैं १२ परन्तु उन ब्राह्मणोंमें जो गुणवान् विद्वान् ब्राह्मणोत्तम होते उनको जो कोई पीछे से अमृतके समानभी भोजन करावै तौवे नहीं करते क्योंकि उनका मानभङ्ग होजाता है १३ जोकहिये कि प्रथम शूद्र जिस रसोई में भोजन करजाते वहतो अलबत्ता धर्म्मशास्त्रानुसार फिर ब्राह्मणादिकों के भोजन करनेके योग्य नहींरहती फिर ब्राह्मणोंके तो समधी दमादादि सम्बन्धीभी ब्राह्मणही होंगे उनके पीछे भोजन करनेमें कौनदोषहै सोनहीं ब्राह्मणभी जोपहिले भोजन करजाते तो फिर पीछेभी जोश्रेष्ठ कुलीन प्रतिष्ठित ब्राह्मणहैं वे

फिर बचाबचाया अन्न नहीं खाते क्योंकि उसमें उनके मान का भङ्गहो-
जाताहै जैसे कि बैलोंकी जोकोई सींग काटडालता तो उनका मान भङ्ग
होजाता १४ इसीरीतिसे छोटेभाई भरत के भोगेहुये राज्यको ज्येष्ठभाई
सबबातोंमेंश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र कैसे अङ्गीकारकरेंगे व अपना लियेही रहेंगे
क्या करनाहै १५ जैसे बाघ अन्यजीव का लाया मांसादि पदार्थ नहीं
खानेकी इच्छा करता ऐसेही नरों में व्याघ्ररूप श्री रामचन्द्रजी अपने
से छोटे भरतके जूंठे राज्यको न अङ्गीकार करेंगे क्याकिसीका डरहै १६
क्योंकि यज्ञसे बची बचाई खीर घृत कुश खम्भा श्रुव इत्यादि फिर दूसरे
यज्ञके योग्य नहीं रहते क्योंकि जूंठे होजाते हैं १७ तिससे इसराज्य
को जो वनसे आनेके पीछे रामचन्द्र पावेंगेभी तो न ग्रहण करेंगे जैसे कोई
सारांश निकालले तो अमृत ग्रहण करनेके योग्यनहीं रहता व सोमबल्ली
रहित यज्ञ जैसे अङ्गीकार करनेके योग्यनहीं रहता १८ ऐसे असत्कार
को राघव श्रीराम न सहसकेंगे कि आपने तो उनको दियाहीनहीं पीछे
भरतके देनेसेलेलें क्योंकि वे ऐसे असत्कारको कब ग्रहण करनेलगे जैसे
कि बलवान् महाप्रतापी सिंह पूंछ छूलेनेके अपमानकों नहीं सहसक्ता १६
सो राज्यभी न लेंगे तोभी कुछउनकी अप्रतिष्ठा नहींहोसक्ती क्योंकि अप्र-
तिष्ठातो तबहोती जब उनसे कोई जीतकर छोरलेता सोतोहईनहीं क्यों-
कि संग्राममें तो उनको ब्रह्मा महादेव इन्द्र वरुण कुवेरादिभी कुछ भय
नहीं करसके फिर अन्यकी कौनगणनाहै जो कहो कि ऐसेथे तो छोड़कर
चलेक्योंगये सो तो इस अधर्म्मात्मा संसारको धर्म्मात्मा करने के लिये
कियाहै किजिसमें हमारीनाई सबकोई पिताकेवचनमानेनहीं तो क्याकोई
करसक्ता २० नहींतो महापराक्रमी महाभुज श्रीराम सुवर्ण के बाणों से
सबप्राणियों व समुद्रोंको ऐसे भस्म करदेते जैसे प्रलयके समय सबभस्म
होतेहैं २१ सो ऐसे सिंहसमान बलवान् वृषभस्कन्ध श्रीरामको उनके
पिताहो आपहीने मारडाला जैसे कमल अपनासे उत्पन्न पदार्थकी शोभा
अपने आगे नहीं रखता २२ हाय सबप्रकार हमींको खेदहै देखिये ब्राह्मण
क्षत्रिय वैश्योंका धर्म्म जो सनातन से ऋषिलोग लिखते चलेआते हैं व
देखासुना जाताहै वह यदि ऐसे धर्म्मात्मा पुत्रको भी तुमने वनवास
देदिया तो नष्टकिया २३ हे राजन् स्त्रीकी एकगति तो पतिहै व दूसरी

गति पुत्र तीसरी जातिविरादरीके लोग चौथी और कोईगतिनहीं अर्थात्
इन तीनों में से जिसके एक भी न हो उस स्त्रीका धर्म्म नहीं रहता २४ सो
प्रथमगतिपतिठहरासो आपतो मूर्च्छितही परेहैं जानोंहैंइनहीं दूसरी गति
पुत्र सो प्राणप्यारेरामचन्द्र वनको चलेगये तीसरीगति परिवारवाले भी
रामचन्द्रके वियोगसे मरेही हैं बस हमारे धर्म्मका रक्षक कोई भी नहीं
रहा न तो हमवन जायसक्तीं न यहां रहसक्तीं सबप्रकार से हमें आपने
मारडाला हाय हाय २५॥

चौ० ॥ महाराज्य लघुराज्य घनेरे । सकल मंत्रिगण पौरबड़ेरे ॥ स-
हित पुत्र हमकहँ हति डारे । भरत केकयी सुख के मारे १ । २६ यह
दारुण बाणी सुनि तासू । राम राम कहि नृप भरि आँशू ॥ सहित शोक
निज दुष्कृत शोचत । बारहि बार नयन जल मोचत २ । २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकषष्टितमस्सर्गः ॥ ६१ ॥

जब मारेशोक के क्रोधकर रामकी माता ने दशरथजी को ऐसे महा-
कठोर वचन सुनाये तो राजा दुःखित ह्वै चिन्ता करनेलगे १ मोह से
व्याकुलेन्द्रिय ह्वै बड़ी देरतक चिन्ता करते करते मूर्च्छा जागी २ जब
बनाय मूर्च्छागई तो ऊंची व गरम साँसे राजा लेनेलगे देखातो बगलपै
कौशल्याजी बैठी हैं इन्हें देख फिर चिन्ता करनेलगे ३ उसी बीचमें जो
शब्दवेधी शिकार खेलने के समय अन्धी अन्धोंके पुत्र श्रवण को माराथा
व उस अन्धी अन्धोंने शाप दियाथा कि जैसे हम अपने पुत्र के शोक से
मरतेहैं वैसेही तुम भी अपने पुत्र के शोकसे मरोगे इसकी सुधि आई ४
अब उस शोकसे बनाय उदासीन होगये फिर रामचन्द्रका भी शोकआया
दोनों शोकों से महाराज अति सन्तप्त हुये ५ दोनों शोकों से भस्महोते
महाराज नीचे मुखकर काँपते हुये हाथजोड़ प्रसन्न कराने के लिये कौ-
शल्याजी से बोले ६ हे प्रिये जिससे तुम शत्रुओंके ऊपर भी दयाकरती
व प्रसन्न रहती इससे हम तुम्हारे हाथ जोड़ते हैं ७ ॥

चौ० ॥ निर्ग्गुण वा गुणवान सुशीला । वरु कुशील शुभ चरित कु-
लीला ॥ धर्म्मवती नारिन के हेतू । ऐसहुपति सुरसम किय चेतू १ । ८
सो तुम धर्म्मनिष्ठ सब लोका । देख्यहु सुन्यहु रहित सुख शोका ॥ यदपि

दुखित तुम दुःखित मोहीं । करन योग्य समझत नहिं तोहीं २ । ६ ॥
अति दीन राजाके ऐसे करुणारस से भरे बचन सुन कौशल्या जी आँशुओं की धारा बहाने लगीं जैसे पनारा की राहहो कोठे आदि परसे तब जलकी धारा बहती है १० हाथजोड़ शिरपरधर रोदन करतीहुई कौशल्या अति भयभीत हो बड़ी नम्रता के साथ बोलीं ११ हे देव प्रसन्न हूजिये आपके आगे भूमिमें गिरप्रणाम करतीहैं हम पुत्रहीके शोककेमारे मरी बैठी हैं अब आपभी हमारे कड़ेबचनोंसे अप्रसन्नहो हमें न मारिये१२ इसलोक परलोक मेंभी बड़ाई करनेयोग्य बुद्धिमान् पति जिस स्त्री को मनावे वहस्त्री सब स्त्रियोंके समान नहींहै १३ महाराज मैं स्त्रियोंके धर्म्मको अच्छीतरह जानतीहूं कि उन्हें पतिकी प्रसन्नताकेही लिये काम करना चाहिये व यहभी जानती हैं कि आप बड़े सत्यवादी हैं पर जो हमने कुछ कटु बचन आपको कहे सो मारेपुत्र शोक के १४ क्योंकि ॥
चौ० ॥ नाशत धैर्य्य शोक श्रुत नाशक । शोक सकल नाशक न कछू शक ॥ शोकसमान न जग रिपुदूजा । शोकिहिसूझत पाठ न पूजा१।१५ सहन योग रिपु केर प्रहारू । चहै प्रहार करै अति भारू ॥ पर सहि जात न तनिकहु शोकू । जासु नहीं कवनिउ विधि रोकू २।१६ पाँच राति बीतीं वनवासू । रघुबर लीन न तनिक सुपासू ॥ पाँच वर्ष सम बीते मोहीं । शोक जलधि बूड़त तरिबोहीं ३।१७ चिन्ता करत शोक त्यहि बाढ़ा । नदी बेग जिमि जलधि अपाढ़ा ॥ महा शोक ब्याकुल महिपाला । भयहु सकल विधि तबहिं बिहाला ४।१८ कौशल्या इमि वचन रसाला । कहत मन्द रवि किरण विशाला ॥ ह्वै आई रजनी त्यहि काला । शोचन लागि बहुरि महिपाला ५।१६ कछुक मुदित पुनि भयहु महीपा । तासु वचन सुनि रघुकुल दीपा ॥ पुनि ह्वै शोक बिवश महराजू । निद्रा वश भे लहि दुख साजू ६।२० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्विषष्टितमस्सर्गः ६२ ॥

एक मुहूर्त्त भरके पीछे राजा जागे तब मारे शोकके व्याकुल चित्त हुये व बारबार चिन्ता करने लगे १ रामचन्द्र व लक्ष्मण के वनवास के उपद्रव से बढ़ा शोक महाराज दशरथजीको ऐसा पहुंचा जैसे ग्रहण

समयमें राहुकी अँधियारी सूर्य्यनारायणको पहुंच आच्छादित करती है २ सस्त्रीक रामचन्द्रजीके वनवास होने पर अपने किये हुये पापको स्मरण कर राजा दशरथ महारानी कौशल्याजी से कुछ कहने लगे ३ श्री-रामभद्रके जानेके पीछे छठीं रात्रिको महाराज ने जब आधीरात्रि आई तो अपने किये हुये पापको सुमिरा ४ व पुत्र शोक से बनाय पीड़ित हो अपने पापको स्मरण कर पुत्र शोकसे पीड़ित कौशल्याजीसे बोले ५ हे भद्रे पुरुष संसार में शुभ वा अशुभ जो कर्म्म करताहै उस कर्म्मसे उ-त्पन्न फलको वही करने वाला पाताहै ६ जब प्राणी कर्म्म करने लगता है व उसकी गुरुता लघुता सुख दुःख आदिको प्रथमही नहीं जानलेता वह बड़ा अनारी कहाताहै ७ जो पुरुष पलाश वृक्ष के लाले लाले सु-न्दर फूल देख आमके सुन्दर पुष्प न देख उसे काट पलाश को सींचता है कि इसके फूल अच्छेहैं तो फलभी अच्छे होंगे जब उसके फल देखता तो शोचने लगता कि हाय हमने क्या किया जो आम काट पलाशसींचा ८ इससे जो मनुष्य कर्म्म करने लगता व उसके फलको नहीं शोच लेता वह फल पानके समय ऐसाही पछिताता जैसे ढाक की सेवा करने वाला ६ सो हमारी भी वही दशा हुई कि आमका वन काट ढाक को सींचा जब फलपानेका समय आया तो रामचन्द्रको वनकोभेज अपनीदुष्ट-मतिको शोचते झाँकतेहैं १० हे कौशल्ये कुमार अवस्थामें हम एक बार धनुष बाण धारणकर शिकार खेलने गये वहाँ एक मनुष्यघड़ा भरताथा हमने शब्द सुना व शोचा कि यदि अब हम शब्दही सुनइसको मारें तो लोगकहेंगे यह कुमार बड़ा शब्द वेधी है इसलिये यह पाप किया ११ हे देवि वहीहमारा किया दुःख हमको प्राप्तहुआ जैसे कि अनारीपनकेमारे कोई बालक बिनाजाने बिष खायजाय उसे उसका फल भोगना पड़ता है १२ जैसे कोई पुरुष ढाकके पुष्पदेख उससे उत्तम फलपानेकी इच्छा से सेवाकरै पर उसमें उत्तमता कहाँ ऐसेंही हमनेभी शब्दवेधी शिकार को उत्तम समझ ऐसा बिना जाने बूझे किया उसका यहफल पाया १३ यह हाल तबकाहै जबकि तुम्हारा विवाह नहीं हुआथा व हम युवराज-पदवीको प्राप्तथे उन्हीं दिनोंमें वर्षाऋतुआई जिसने हमारे काम बढ़ा-या १४ उस समय सूर्य्यनारायण अपने किरणों से संसार में पृथिवी

कारसखींच दक्षिण दिशाको चलेगये १५ उष्णता तो अन्तर्द्धान होगई बादल चारों ओरसे देखपड़ने लगेथे उस बर्षा ऋतु कोदेख मेढ़क हरिण पपीहा मुरैला आदिजीव परमानन्दको पहुँचे १६ जब वर्षा होने लगी तो सब पक्षी पङ्ख भीजजाने के कारण इधर उधर पखना फटफटाने लगे मानों बड़े कष्टमें परगये इसलिये वर्षाकी पवनसे कँपते हुये वृक्षोंपै जाय जाय बैठे १७ व बरसतेहुये जलसे आच्छादित हाथी अतीवशोभित होने लगे जैसे स्थिर महासागर जहांका तहांहीं स्थिर शोभित होताहै १८ फिर पाण्डुर व अरुण रङ्गके विमल सोता पर्व्वतोंके गेरूआदि धातुओं से मिलकर बहनेसे विमलहो बहनेलगे व कहीं कहीं भस्ममें लग लग कर बहने लगे १६ ऐसे सुखदायक वर्षाकालमें धनुष बाणले रथपै सवार हो शिकारखेलनेव घूमनेके लिये हम सरयूनदीके तीरपै पहुँचे२० जाते जाते वहाँपहुँचे जहाँ वनकेजीव जलपीने आतेथे हमारा यह प्रयोजन था कि वहाँपर रात्रिमें कोई भैंसा हाथी हरिण वा और कोई छोटाही जीव आवेगा तोउसे मारेंगे क्योंकि तबहम इनजीवोंके मारनेके विषयमें इन्द्रिय-जितन थे २१ कि उसी समय वर्षाकी अँधियारी रात्रि तोथीही कोई जल भरने आया जब घड़ा जलमें बोरने लगा तोउसका शब्द ऐसा हुआ मानों हाथीका था कुछ देखतो पराही नहीं केवल सुनहीपरा २२ तब हमने हाथीमारने केलिये तरकससे विषसे बुझेहुये बाण निकाल जहाँ वह शब्द सुनाई दियाथा उसीकी सूधमें चलाया २३ जैसेही पैनबाण हमने चलाया है वैसेही किसी वनवासी का बोल हमें सुनपरा २४ व यहभी जानपरा कि वह हाहा कह बाणव्यथासेव्याकुलहो जलमें गिर परा व मनुष्यतो थाही साफ़ मनुष्य की बोली बोलने लगा २५ कि हाय हमसे ऐसे तपस्वीके ऊपर कैसे बाण चलाया गया हमतो जलभरने के लिये अकेले इस निर्जन वनमें रात्रिको आयेथे २६ सो हमें बाण से किसनेमारा हमने किसका कौन अपकार किया मैंतो केवलऋषिहूँ कुछ दण्डभी नहीं धारण करता बनमेंही रहता व वनही के पदार्त्थ खाय जीता २७ हम ऐसे तपस्वी का बध शास्त्र से कैसे कियागया हम तो केवल जटारखाये बकला मृगचर्म्महो धारण करते २८ हमारे बध से नहीं जानते किसका प्रयोजन चलेगा व उसका हमने कौन अपकार

किया ऐसा निष्फल कर्म्म तो केवल अनर्थहीका मूलहै २६ जैसे कोई गुरूकी शय्यापै बैठजानेको अच्छानहीं मानता वैसेही हम इस कर्म्म को अच्छा नहीं मानते हम अपने प्राणों के नाश होने को वैसानहीं शोचते ३० जैसा कि अपने बधसे अपने माता पिताको शोचते हैं कि उन दोनों वृद्धोंको हमने बहुत दिनोंसे पोषण किया ३१ अब हमारे मरजाने पै वे दोनों किसतरह अपना निर्ब्बाह करेंगे हाय हमारे माता पिता तो वृद्ध व हम एक बाणसे मारेगये ३२ हाय हमसबोंको किस अबिचारीने मारा इस करुणा सहित वाणीको सुन धर्म्मानुकांक्षी मेरे ३३ हाथोंसे धनुष व बाण दोनों गिरपरे क्योंकि मारे दयाके मेराशरीर काँपनेलगा सो रात्रि में उसऋषिका करुणा पूर्व्वक विलाप सुन ३४ शोकके वेगसे भ्रान्त चित्तहो मूर्च्छित होगये फिर अतिदुःखितहोउठउसस्थानकोगये ३५ देखा तोसरयूके तीरपै बाणसे माराहुआ जटाभार धारण किये जलभरा कलश हाथमें पकड़े एक तपस्वी पराहै ३६ देहभरमें रुधिरकी सानीधूलि लगी है बाणकी पीड़ासे पीड़ित पृथिवी में पराहै उसने डरे व घबड़ाये हुये हमको नेत्रोंसे देख ३७ अपने तेजसे हमको मानों जारेही डारता हुआबोला हेराजन् इसवनमें बसके हमने तुम्हारा कौनअपकारकिया ३८ जो कि हमतो अपने माता पिताके लिये जललेने आयेथे तुमने मारडारा भला एकही बाणसे हमारे मर्म्मस्थानमें मारनेसे ३९ तुमने दोवृद्धअन्धों को और मारा वे हमारे पिता माताहैं वे बेचारेअन्धे मारेप्यासके हमको परखते होंगे ४० क्योंकि बड़ीदेर से पिपासित होनेके कारण वे बहुत कष्टित होंगे अब हमारी इसदशाको न वे किसी योगाभ्यासादि तपोवलसे जानसक्के न शास्त्रके पढ़ने के बलसे ४१ क्याकहें पिताजी हम को नहीं जानते कि वे बाण पीड़ित पृथिवी में सोते हैं जान कर भी क्या करसक्के क्योंकि न उनके पारक्रम है न कुछ शक्ति ४२ जैसे कटते हुये वृक्षकी रक्षा दूसरा वृक्ष नहीं करसक्ता क्योंकि उसमें चलनेफिरने की शक्ति नहीं ऐसेही हमारे पिता माताभी अन्धेव पँगुले होनेकेकारण असमर्थहैं इससे हेराजन हमारे पिताके पास जाय तुम्हींकहो ४३ नहींतो तुमको हमारे पिता भस्म करदेंगे जैसे प्रज्वलित अग्नि वनको भस्म करता जहां हमारे पिताका स्थानहै वहांको यही पुरघुरी छोटी

गली लगीहै ४४ वहांजाय हमारे पिताको प्रसन्न करो जिसमें तुमको शाप न देयँ हमारे मर्म्म स्थानमें बाण लगाहै सोभी निकाल डालो ४५ क्योंकि वह हमको पीड़ित करताहै जैसेकि जलका प्रवाह बालूकेऊंचे ढेरकोभी काटडालता है यहसुन हमारे मनमें यहआई कि अभी जबतक इसके शरीरसे बाणनहीं निकाला जाता तबतक कष्ट तौहै परजीतारहेगा व जैसेही बाण निकाला गया वैसेही मरजायगा ४६ जब हमऐसाशोच मारे चिन्ताके आतुरहोगये बाण न निकालसके तो ४७ उस मुनिकेपुत्रने हमारी दशाको लक्षित करलिया वहमसे बड़ी कृपाके साथ बोला ४८ यद्यपि उसको बोलनेकी शक्ति न थी क्योंकि सब अङ्ग काँपतेथे इधर उधर धरणीमें लोटरहाथा प्राण निकलतेहोथे तथापि हमारे ऊपर दया कर बड़ी धीरतासे स्थिरचित्तहो बोला ४६ हेराजन् ब्रह्महत्या से डरते हो इससे बाणनहीं निकालते सो उससे न डरिये क्योंकि हम ब्राह्मण नहींहैं तुम्हारे मनको व्यथा नहो ५० हमशूद्रा स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्नहैं इससे करण नामक कायस्थहैं जब उसने ऐसाकहा व उसके मर्म्मस्थल में जो बाण लगाथा उससे पीड़ितथा ५१ मारेपीड़ाके छटपटाने लगा वथरथरा कँपने कि हमने बाण निकाल लिया ५२ वैसेही उस तपस्वी ने हमारी ओरदेख भयभीतहो प्राणोंको छोड़दिया ५३ ॥

कुण्डलिका ॥

सरयू जलसों अर्द्धसब अङ्ग तपस्वि विशेष ।
मर्म्मस्थल शर अणलग्यो रोदनकरत अशेष ॥
रोदन करत अशेष परो सरयू महँ लोटत ।
अति कम्पित सबगात रेणुका अङ्ग लपेटत ॥
त्यहि लखिकम्पित भयहुं प्रिये ह्वैकै अति अरजू ।
रोदन बहुविध कीनहमहुं ठाढ़ेतट सरयू ॥ १ । ५४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रिषष्टितमस्सर्गः ॥ ६३ ॥

इसतरहसे ऋषि पुत्रका अयोग्य बध धर्म्मात्मा श्रीदशरथजी रोयरोय कहतेहुये कौशल्याजीसे बोले १ कि हे प्रिये अज्ञानसे वह महापापकर व्याकुलेन्द्रियहो अपनी बुद्धिसेही चिन्तनाकरनेलगे क्योंकि वहां कोई

दूसरा थाहीनहीं जिससे कुछ पूंछनेभी चिन्तायही करतेथे कि अब कैसे पुण्यहो जोइसके बधका पापमिटै २ बहुत शोच विचार उसघडेमें अति विमल सरयू जलभर जो गली ऋषिपुत्रने बताईथी उसीकी उसके स्थानपै पहुंच ३ वहां जायदेखा तो अति दुर्ब्बल अन्धे वृद्धपालक रहित उस मुनिके माता पिता पंख कटेहुये पक्षियोंके समान बैठेथे ४ व अपने पुत्रकी राह देखरहेथे कि कब जललेकर आताहै वह आशा हमारे कारण जातीरही क्योंकि उनके पुत्रका हमने बधकियाथा वे बिलकुल अनाथही बैठेथे सिवाय उसपुत्रके कोईदूसरा उनका रक्षक नथा ५ उसी समय मारेशोकके हतचित्त भयके मारे सभयमन उस आश्रमपै पहुंच हमफिर शोकको प्राप्तभय ६ हमारे चरणोंकी आहटसुन वे मुनिबोले कि हे पुत्र अब बिलम्ब क्योंकरतेहो बहुत जल्द हमको जलपिलाओ ७ जिसकारण तुमजलमें बहुत देरतक क्रीड़ाकरतेरहे उससे तुम्हारी माता बड़े स्नेहसे स्मरण करतीहै शीघ्रही अपने स्थानमें प्रवेश करो ८ हेपुत्र तुम्हारी माताने व हमने जो अपराध कियाहो तपस्वी तुम अपने मनमें न करना ९ असमर्थ व अन्धे हम लोगोंके रक्षक तुम्हींहो व तुम्हींमें हमारे प्राण लगेहैं तुम क्यों नहीं बोलते १० येबातें मारे वृद्धताके बहुत धीरेधीरे बोलतेथे निर्ब्बलताके कारण साफशब्द सुनाई नहींदेताथा डरातेडराते हमउन मुनिसे बोले ११ बोलनेके समय मनसा बाचा कर्म्मणा बहुत सँभार धीरेसे उनके पुत्रके कष्टके वृत्तान्त कहनेलगे १२ हेमुनि-राज हम दशरथ नामा क्षत्त्रियहैं तुम महात्माके पुत्रनहींहैं आपलोग बड़े सज्जनहैं पर नहींजानते यह अपने कर्म्मसे क्यों खराब दुःखपाया है १३ वह यहहै कि हेभगवन् हम धनुषबाण धारणकर पनघटपै हाथी सिंह वा अन्य जङ्गली जीव मारनेके लिये सरयूतीर पैगये १४ वहां जल में घड़ा बूडनेका शब्द हमने सुना जानाकि हाथीपानी पीरहाहै उसी का शब्दहै इसलिये उसीसामने बाण चलाया १५ व तिस सरयूके तीर जाय देखा तोउसी हमारे बाणसे भिन्न हृदय प्राण निकलनेही चाहते थे ऐसा एक तपस्वी भूमिमें पड़ाहै १६ तबहम बाण नहीं निकालतेथे तिसीके कहनेसे उसके मर्म्मस्थलमें लगाहुआ बाण हमने निकाल लिया १७ हमारे बाण निकालतेही आपलोग वृद्ध पंगुले वअन्धोंको

शोचतेहुये उसने प्राण त्याग स्वर्गकी यात्राकी १८ सो इसतरह अज्ञान से हमने तुम्हारे पुत्र को मारा अब उसके पीछे जो कुछ हो आप हमारे ऊपर कृपा कीजिये १९ जब हमने अपना पाप अपने मुखसे मुनिसे कहा तो उस क्रूरवचन को सुन वे मुनिराज यद्यपि सब तरह का शाप देसक्तेथे पर कुछ न कहसके २० केवल आँशूभर मारेशोक के मूर्च्छित हाथजोड़ खड़ेहुय हमसे बोले २१ हे राजन् जो यह अपना कियाहुआ अशुभ कर्म्म अपने बूते आय हमसे न कहते तो तुम्हारे शिरके फटकर सैकरों हज़ारों टुकरे होजाते २२ क्योंकि क्षत्रिय होके जो वान-प्रस्थ तपस्वीका बध जानबूझ करैतो जो इन्द्रके समान भीहो तोभी पतित ही होजाय २३ व तिसतरहके ब्रह्मवादी तपस्वीके बधसे जोकि तपस्या कररहाहै वह बध जानबूझकर कियाहोतो उसके शिरके टुकड़े होजायँ२४ तुमने बिनाजाने हमारे पुत्र तपस्वी का बधकिया इसीसे जीतेहौ नहींतौ ऐसा कर्म्म जानबूझकर करने से रघुवंशियों का वंशहीन रहता फिर आप कैसे रहसके २५ अब हे राजन् हम अपने पुत्रको देखा चाहतेहैं इससे दोनों जनोंको वहीं लेचलो क्योंकि अब उसके सब से पिछले दर्शन हैं यह हमसे मुनिने कहा २६ व यह कि उसके सर्व्वाङ्गमें रुधिर लगाहोगा मृगचर्म्म जो ओढ़ेथा अलग पड़ाहोगा मूर्च्छित भूमिमें सोता होगा प्राण उसके यमराज के निकट पहुँच गये होंगे २७ यद्यपि हम अकेलेही वहांथे पर दोनों बूढ़ी बूढ़ोंको कँधेपै चढ़ाय लाय उनके पुत्रको छुआदिया २८ वे दोनों अपने पुत्रके शरीर को छू उसीके देहपै गिरपड़े व उसका पिता बोला २९ हे वत्स आज हमारे प्रणाम नहीं करते न हमसे बोलतेहीहौ भूमिमें सोय रहेहौ क्या हमसे रिसाने हौ ३० यदि हम तुमको अप्रिय होंतो धार्म्मिकी अपनी माताही को देखो क्यों नहीं उठ के लपट जाते हे पुत्र बोलो ३१ भला अबहम अर्द्धरात्रके पीछे शास्त्र पुराणादि पढ़तेहुये अति मनोहर वचन किसके सुनेंगे ३२ भला अब स्नान सन्ध्योपासन कर अग्निहोत्र यज्ञकर कराय पुत्रके शोक से पीड़ित हमारी कौन सेवा करेगा ३३ व कन्दमूल फल ले आय प्रिय अतिथिके समान जिसका हाथ पकड़नेवाला कोई नहीं रहा ऐसे अनाथको अब कौन भोजन करावेगा ३४ भला अब हम इस वृद्धा व अन्धी पँगुली तुम्हारी माता को कैसे पालें

पोषेंगे क्योंकि रात्रि दिन पुत्रहीकी बांछा कियाकरेगी ३५ हे पुत्र अभी टिकेरहो यमराज के स्थानको न जाव प्रातःकाल हमारे व अपनी माताके साथ जाना ३६ क्योंकि हम दोनों जन भी तो शोकके मारे अनाथ कृपण तुम्हें बिन शीघ्रही यमपुर को जायँगे ३७ वहां चल यमराज से हम पूछेंगे कि हमने जो अपराध कियाहो क्षमा कीजिये अब यह हमारा पुत्र हम वृद्धोंका पालन करै ऐसी आज्ञा देदीजिये ३८ जो हम ऐसा कहेंगे तो वेतो धर्म्मात्माहैं और लोकपालहैं बड़े यशस्वी भी हैं हमकोयह अभय क्षयरहित दक्षिणा देदेंगे ३९ हे पुत्र तुमतो पापी नहींहो पर कोई तो पूर्व्वजन्म में पाप था जिससे मारेगये पर अब इसी सत्यता से जो कि तुमने कुछ भी पाप नहीं किया उन लोकों को चलेजाव जो कि अस्त्र से सम्मुख मरेहुये लोगोंको होते हैं ४० हे पुत्र जिस गतिको शूरवीर लोग जो संग्राम से लौटते नहीं सम्मुखही मरजातेहैं वे पातेहैं उसी परमगति को तुमभी शीघ्र चलेजाव ४१ जिस गतिको सगर शैव्य दिलीप जनमेजय नहुष व धुन्धुमार राजा प्राप्त हुये हे पुत्र तुम भी उसी गति को पावो ४२ व जो गति सब प्राणियोंको वेदशास्त्र पुराणादि पढ़ने तपस्या करने भूमि दानदेने प्रतिदिन अग्निहोत्रादि करने एकही विवाहिता अपनी स्त्रीके सङ्ग भोगकरने ४३ गो सहस्र देने गुरु सेवाकरने व प्रयाग अयोध्या काश्यादि तीर्थों में इच्छापूर्व्वक शरीर त्यागकरने से होतीहै हे पुत्र उसी गतिको प्राप्तहो ४४ इस हमारे तपस्वीके कुलमें उत्पन्न मनुष्य कुगतिको नहीं पाता इससे मारेभीगये हमारे बान्धव तुम उत्तमही गतिकोपावो ४५ इसप्रकार वह तपस्वी करुणापूर्व्वक नानाभांति रोदनकर व वैसाकह सहित स्त्री उसको जलदेनेमें उतारू हुआ ४६ जब उन दोनोंने जलदानादि किया तो वह तपस्वीका पुत्र दिव्यशरीर पाय अपनेहीकर्म्मोंसे इन्द्र केसाथ स्वर्ग्गको चलागया ४७ व चलनेके समय इन्द्रके साथविमानपै चढ़ अपने वृद्ध माता पिताको समुझाय पितासे यह बोला ४८ कि आप लोगोंकी सेवाकरनेसे हमको बड़ा उत्तमस्थानमिला आपलोगभी बहुतही शीघ्र उसी हमारे स्थानको प्राप्तहोंगे ४९ इसतरह मुनिसेकह अति देदीप्यमान विमानपै जितेन्द्रिय मुनिपुत्र चढ़ा ५० तिसकेपीछेसहित स्त्री वह मुनिपुत्रको तिलोदकदे हाथजोड़ खड़ेहुये हमसेबोला ५१ हेराजन् तुमने

एकही बाण से हमारे पुत्रको मार हमें बिना पुत्रका करदिया अब अभी हमकोभी मार डालो हमें मरनेमें कुछ व्यथा नहींहै ५२ तुमने अज्ञानसे भी हमारे पुत्रको मारडाला तथापि हम तुम को शापते हैं जिससे तुम्हें अति दारुण दुःख पड़ेगा ५३ हे राजन् जैसे हमको इस समय यह पुत्र का दुःखहै जिससे अब शीघ्रही मरेंगे वैसेही तुमभी पुत्रहीकेशोकसेमरोगे ५४ पर यहभी जानना जिससे तुमने अज्ञान से हमारे पुत्रको मारा है इसीसे शीघ्रही तुमको ब्रह्महत्या नहीं प्राप्तहुई ५५ परन्तु तुमको भी बहुत शीघ्र ऐसाही प्राण नाश करनेवाला भाव आजायगा इसी पुत्र शोकही की दशामें मरोगे ५६ इस तरह से हमें शापदे काष्ठ से तहाँहीं चिता बनाय आगिलगाय दोनों प्राणी जल स्वर्ग को चले गये ५७ सो हे देवि चिन्ता करते करते इस पापकी सुधि आय गई जो कि हमने अनरपनसे शब्दबेधी शिकार खेलनेसे किया है ५८ हे देवि यह उसी कर्म्मका फलहै जैसे अपथ्य रस खानेसे व्याधि होती है ५६ तिस से अब और कोई कारण नहीं उस महात्मा ऋषि के वचन आज हमको प्राप्त हुये यहकह रोदन करतेहुये राजा रानीसे बोले ६० हे कौशल्याजी जिससे कि अब हम पुत्रशोक से मरतेहीहैं इससे अब हमको देखनहीं पड़ता तुम हमको पकड़े रहो ६१ न देख परने का कारण यहहै कि जो लोग यमपुर को जानेवाले होतेहैं वे मनुष्य फिर किसी को नहीं देखते हाँ यदि रामचन्द्र हमको आय छुएं वा पीछेसे कुछ सहारा करें ६२ अर्थात् धन ग्रहण करें वा युवराज पदही को ग्रहण करें तो अलबत्ता जी सक्तेहैं यह हमारी मति है पर जो कर्म्म हम रामचन्द्र के साथ किया है वह इसकेयोग्य नहींहै ६३ जो कुछ उनके योग्यथा सो तो उन्होंने किया हाय कोई बिचारी पण्डित दुराचारी भी पुत्रको न त्यागेगा ६४ व ऐसा कोई पुत्रभी न होगा जिसे पिता घरसे निकालदे पर वह उसे कुछ न कहे हाँ हम ऐसे निर्दयी अविचारी पिता व परम सुशीले पितृभक्ति परायण रामचन्द्र पुत्रको छोड़ और कोई न पिताही होगा न पुत्रही हे कौशल्ये अब तुमको नेत्रोंसे नहीं देखते व स्मरणभी जाता रहा किसी बातकी सुधि नहींआती ६५ हे कौशल्याजी ये यमराजके दूत आगे खड़े हैं हमारे चलनेमें जल्दी करातेहैं हाय इससे महादुःख हमको कौन होगा

जोकि मरण के समय ६६ सत्य पराक्रम व धर्म्मज्ञ रामचन्द्रको नहीं देखते अब जिसके समान दूसरा पुत्र कर्म्म न कर सकेगा ऐसे पुत्रके न देखने का शोक ६७ हमारे प्राणों को शोषे लेताहै जैसे सूर्य्य जल समूह को शोषतेहैं व वे लोग मनुष्य नहींहैं किन्तु देवताहैं रमणीक कुण्डल धारण किये ६८ पन्द्रहें वर्ष रामचन्द्रजी का पद्म पत्रेक्षण सुन्दर भौंह मुक्त व सुन्दर दाँत सुन्दर नासिका सहित मुखारविन्द देखेंगे ६६ जो लोग शरदऋतुके चन्द्रमा व प्रफुल्लित कमल के समान प्रकाशित चन्द्राकार श्रीरामचन्द्रजी का मुख देखेंगे वे लोग धन्य हैं ७० वनवास से निवृत्त हो फिर अयोध्या में आयेहुये श्रीरामचन्द्र जी का कमलसम सुगन्धित मुख जो देखेंगे वे लोग धन्यहैं ७१ व जो लोग काम सम रूप श्रीरघुनन्दन को देखेंगे वे धन्य धन्य हैं हे कौशल्या जी अब चित्तके मोहसे मन बहुत घबराते हैं७२ जिनसे शब्दस्पर्श रसादि जान परतेहैं वे सब इन्द्रिय चित्तके नाशसे नाश होजाते हैं ७३जैसे बिना तेलके दीपककी किरणों लाली परजातीहों हेकौशल्ये यह हमारे हृदयही से उठा शोक अचेतन व अनाथ हमको ७४ वेगसे गिराय देताहै जैसे नदीकी धारा उसके किनारोंको गिरातीहै हाय हाय ७५ ॥

चौ० हाराघव हामहभुज रामा। ममायास नाशन हाश्यामा ॥ हापितृ प्रिय हानाथ हमारे। गयहु कहाँ ममप्राण पियारे १। ७६ हा कौशल्या हाय सुमित्रा। तुम्हें न देखत यह अति चित्रा ॥ हाकुलनाशिनि केकयि पापिनि। मम वैरिणि सब राज्य विनाशिनि २। ७७ कौशल्यारु सुमित्रा आगे। दशरथ इमि रोवत तन त्यागे ॥ दीन वचन भाषत बहुभांती। प्रिय सुत वन्यवास न सुहाती ३। ८७ अर्द्धरात्रि जबगे इमि रोवत। प्राण तज्यहु भूपति जनु सोवत ॥ कौशल्यारु सुमित्रा दोऊ। थकित रोय पीड़ित भई सोऊ ४। ७६

इत्यार्षेरामायणेऽयोध्याकाण्डेचतुष्षष्टितमस्सर्गः ॥ ६४ ॥

जब वहराति बीतगई बनाय प्रातःकाल हुआ तो सब बन्दीगण राज मन्दिरके द्वारे पहुँचे १ सूत लोगभी अच्छे वस्त्रादि धारण किये व स्वस्त्ययनादि मंगलबाचकलोग व जिन लोगोंको गानादि अच्छी तरह सुन

आताहै येसबलोग आयआय अलग अलग बैठे जिसमें गानेलगे तो सुनने वाले अच्छी तरह बिचारते जाँय २ वेलोग बड़े ऊंचे स्वरसे राजाको आशीर्व्वाद देने व उनकी स्तुति करनेलगे जोशब्द जिस धवरहर पै राजा परेथे वहांतक पहुँचा ३ जब वेलोग स्तुति करनेलगे तो जोलोग ताड़ीबजाय बजाय तालदेतेहैं वे ताड़ी बजाय बजाय राजबंशकी परम्परा आदिगाने लगे ४ तिस शब्दको सुन जोराजा के यहां पाले पक्षीथे चाहेवे पिंजरों में रहते थे वा वृक्षोंकी डारोंपै सबके सब जाग उठे व अपनी बोली बोलने लगे ५ इन सबोंके कहेहुये पुण्यशब्द व बीणा आदि बाजनोंका शब्द आशीर्व्वादों की कथा इन सबोंसे वह मन्दिर भरहुआ ६ तिसके पीछे सदाचारी सेवाकर्म्म में निपुणलोग व स्त्रियाँ व नपुंसक लोग जैसे पूर्वकाल में स्तुति करते थे वैसेही करनेलगे ७ चन्दन मिला जल सुवर्ण के कलशों में भरे जोलोग स्नान कराने की शिक्षाको अच्छीतरह जानते थे वे विधि पूर्व्वक अपने समयपर लाये ८ व मंगलदायक भोजन करने चीखने देखने आदिकी शुभ वस्तु कुमारिकादिकों ने ले आय आय एकट्ठा किया ९ जो जो चीजें आईं सब सर्व्व लक्षण सम्पन्न सब विधि-वत्पूजित सब सुगुण लक्ष्मी युक्तथीं १० जबतक सूर्य्योदय नहीं हुआ तबतक अबराजा आने चाहतेहैं अब आने चाहते हैं यही शोचतेहुये लोग खड़े रहे जब तबभी न आये तो शंका करनेलगे कि आज क्याहै अब तक महाराज शयन से नहीं उठे ११ वहाँ भीतरमें जोस्त्रियां महाराज के कुछही दूरपर थीं व रात्रिमें महाराज की स्वर्ग्ग यात्रा नहीं जानी वे आयआय जगाने लगीं १२ यद्यपि वे सब प्रकार से जगाना जानती थीं इसीसे विनय व नम्रतासे राजाको जगाय उनके वस्त्रादिटोये कि राजाको क्या होगया परन्तु उन्होंने उस जगानेका कुछभी फल न पाया १३ वे स्त्रियां सोनेका स्वभावभी अच्छीतरह जानती थीं क्योंकि चलाने खसकाने आदिमें श्रेष्ठथीं जब सवतरह हलाय झुलाय उन्होंने देखलिया किसीतरह राजा न जगे न डोलेहिले तब उनको राजाके प्राण होनेमें शंकाआई १४ राजा की ऐसी दशा देख सब स्त्रियां नदीके सोतेमें जमेहुये वेतोंके समान मारे सन्देहके काँपनेलगीं १५ जो कुछ पाप उनके मनमें आया था कि क्या राजा मरतो नहीं गये अब वहीं उनको निश्चय होगया और

कौशल्या सुमित्रा तो पुत्रों के शोकसे बनाय हारही गईंथीं १६ वे ऐसी सोईं कि उन्होंने राज मरण जानाही नहीं क्योंकि वेतो आप मारे शोकके प्रभाहीन व बिवर्ण होगईंथीं मानो उनकेभी प्राण नथे१७ जैसे बादरकी अँधियारीसे छिपे नक्षत्र नहीं शोभित होते वैसेही राजा के समीपही बैठी कौशल्या व सुमित्रा नहीं शोभित होतीथीं १८ अन्य राज स्त्रियाँभी मारे शोकके अँशुआनी शोभित नहीं होतीं उन सब स्त्रियों ने उसी स्थानपै सोतीहुई कौशल्या व सुमित्राजी को देख व राजाकोभी सोतेही ऐसे देख १६ समझीं कि ये तीनों मृतक होगये बस अति शोक से दीनहो सबकी सब ऊंचे स्वरसे रोने लगीं २० जैसे वनमें अपने झुण्डसे बिछुड़ने पर हथिनियाँ चिल्लाने लगती हैं इन सबका जोरसे विलाप सुन एकाएकी चैतन्यहो २१ कौशल्या व सुमित्रा जाग उठीं झट पट दोनों राजाको देख व छाती आदि उनके अङ्ग टोय २२ हा भर्त्ता यह कह ज़ोरसे चिल्लाय पृथिवीमें गिर परीं व छटपटाय छटपटाय लोटने लगीं २३ देह भरमें धूर लगनेसे कैसी नहीं शोभित होतीं जैसे आकाशसे पृथिवीमें तारा गिरने पर शोभित नहीं होती जब राजा तो मृतकही होगये व कौशल्याभी भूमिमें गिरपरीं २४ तो सब स्त्रियाँ मरी हुई नागवधूके समान कौशल्याजीको देखने लगीं व कैकयी आदि राजा को सब रानियाँ २५ मारे शोकके सन्तप्तहो चैतन्य रहित रोने लगीं तिन सब स्त्रियोंके रोनेसे बड़ा भारी हल्ला हुआ २६ जिससे सब घर का घर शब्दायमान होगया व तिससे भय भीत हो सब देखने वाले लोगोंसे आकुल होगया २७ सब ओर जिधर से देखो मारे दुःखके पीड़ित बन्धु वर्गोंके रोनेका शब्द होरहाहै आनन्दतो तुरतही कहींको चला गया जहाँ देखो दीनताही दृष्टि आतीहै २८ सब राज मन्दिर भाग्य हीन होगया जहाँ देखो हाय होरहीहै २६ ॥

कुण्डलिका ॥

बीते लषि सुयशी नृपहि सकल रानि त्यहि घेरि ।
पद कर भुज नृपके पकरि रोवत बहु विधि टेरि ॥
रोवत बहु बिधि टेरि दुखी ह्वै करुणा करि अति ।
मनहुं अनाथ सनाथ बहुरि नहिं पैहैं शुभ गति ॥

व्याकुल सब नर नारि कहत हे प्राण पिरीते ।
कहँा गयहु यहि काल तुमहिं बिन बहु दिनबीते १ । ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चषष्टितमस्सर्गः॥६५ ॥

तब बुतानी आगि जलहीन समुद्र व प्रभाहीन सूर्य्यके समान राजाको स्वर्ग में टिके देख आँखों से आँशू बहाती विविध भाँति के शोक से कर्षित कौशल्याजी राजाका शिर पकड़ कैकेयीसे बोलीं २ हे कैकेयि अब सकाम होवो अकराटक राज्यभोगो राजाको छोड़ अकेले सब सुख करो हे दुष्टे हे पापचारिणि ३ व हमको छोड़ रामचन्द्रतो वन को चलेगयेपतिभी हमारा स्वर्गको चलागया अबहम नहीं जीसक्तींजैसे कहींखराब मार्ग्ग में साथ छूट जानेसे अनारी नहींजीता ४ सो कैसे जी सकें क्योंकि अपने परम दैव पतिको छोड़ कौन स्त्री जीना चाहेगी एक धर्म्मछुटी कैकेयीको छोड़ ५ हाय लोभीमनुष्य दोषोंकोनहीं समझता केवल शरीर सुखहीकी ओर दृष्टि देताहै जैसे लहसुन आदि अपवित्रवस्तुओं का पाग बाईआदि रोगमिटनेके लिये लोग खायलते उसके असंख्य दोषोंकी ओर दृष्टि नहीं देते कि जिसके खानेसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंका जबदुबारा यज्ञोपवीत कियाजायतो शुद्धहोतेहैं ऐसेकैकेयीनेभी इसदुष्टा मन्थराके कहनेसे लोभ बशहो रघुवंशियोंके कुलका नाश करदिया ६ अभी क्या जब राजा जनक सुनेंगे कि कैकेयीके मतसे राजाने स्त्रीसहित रामचन्द्रको वनवास दिया तोवेभी इसीतरह परिताप करेंगे जैसे हम कर्त्ताहैं ७ इस समय कमल नयन धर्म्मात्मा रामचन्द्र हमको नहीं जानते कि विधवा होजाने केकारण बनाय अनाथ होगई व आपतो यहांसे चलेगये हमारे लेखे जीतेही नाशको पहुँचगये ८ व चारु तपस्या करनेवाली विदेह राजकी कन्या भी नहीं जानती जोकि सदा दुःखके योग्य नहींहैं परवनमें दुःख पाय घबड़ाती होगी ९ वरात्रिमें मृगपक्षियोंके भयानक शब्द सुन मारेभयके व्याकुलहो रामचन्द्रके कण्ठमें लपट जाती होगी १० राजा जनकभी एकतो वृद्धहीहैं दूसरे बहुत पुत्रभी उनके नहीं केवल यही कन्याहै सो जब जानकीके वनवासकी सुधिकरेंगे तोमारे शोकके वेभी प्राणत्यागकरेंगे ११ सोहमभी राजाके शरीरको लपटाय अग्नि प्रवेश करेंगी व अप-

पातिव्रत धर्म्मको पावेंगी १२ इसप्रकारसे विलपती कौशल्याजीको लपटाय सबदासी आदिकोंने राजाकी लोथकेलगसे दूरकिया १३ उस समय बसिष्ठजीकी आज्ञासे राजासे सत्कार पायेहुये लोगोंने एक तेल भरी नावमें राजाका शरीर धरदिया तिसके पीछे औरकर्म्म किया १४ तेलभरी नावमें राजा के शरीर धरने का यह प्रयोजनथा कि उससमय राजाका कोईभी पुत्र वहाँनथा मन्त्रियोंने बिनापुत्र दाहादि क्रियाकी इच्छानकी क्योंकि सबकुछ जानतेथे इसीसे राजाके शरीरकी रक्षा करते रहे कि जबतक कोई पुत्र आयाचाहे तबतक शरीर बिगड़ न जाय १५ जब मन्त्रीलोगोंने शापित राजाके शरीरको तेलभरी नावमें रखदिया तब स्त्रियोंनेकहा हाय अबकुछभी सन्देहनहीं राजा मृतकही होगये यहजान सबकी सब फिर रोदन करनेलगीं १६ उस समय कृपणाहो ऊपर को हाथ उठाय उठाय नेत्रोंसे आंशुओंकी धारा बहाती हुई मारेशोकके सन्तप्तबिलाप करतीथीं १७ कहतीथीं कि हा महाराज प्रियवादीरामचन्द्रसेहीन हम लोगोंको काहेको त्यागतेहो १८ अबहम लोग बिना रामचन्द्र व आपके इस सौतिदुष्टा कैकेयीके समीप बिधवाहो कैसेबसेंगी १९ जोरामचन्द्र हमारे तुम्हारे सबकेसब कुछकरनेवाले स्वामीथे वे राज्य लक्ष्मीको छोड़ वनको चलेगये २० हेमहाराज तुम व प्राणप्रिय श्रीराम बिना मारे दुःखके मोहित हमसब जनी इसकैकेयीसे पीडित कैसे बससकेंगी २१ क्योंकि जिसकैकेयीने राजा व राम व महाबली लक्ष्मण व सीता सबको छोड़दिया फिरवह और किसको नछोड़ेगी २२ महाराजाधिराज दशरथजीको श्रेष्ठश्रेष्ठ वेस्त्रियाँ बड़ेशोकसे पीडित आनन्द रहित आंशुओंकी धारा छोड़तीहुई पृथिवीमें गिरगिर लोटनेलगीं २३ स्त्रियों को कौनकहै महात्मा राजा दशरथ बिना नक्षत्रहीन रात्रि व पतिहीन स्त्रीके समान अयोध्या पुरःकीपुरी नहीं शोभित होतीथी २४ क्योंकि जहां देखो आँशुआये मनुष्य खड़ेथे कुलकी स्त्रियाँ हाहाकार मचारहीथीं घर गली चौरहाआदि सूनेहोगयेथे इसीसे जैसे पूर्व्वसमयमें देदीप्यमानहोतीथी वैसीअब बिनादशरथजी वश्रीरामजीके नहींहोती २५ जब मारेशोकके राजास्वर्ग्गको चलेगये व सब राजस्त्रियां महीतलमें गिरगिर रोनेलगीं इतनेमें सूर्य्यअस्ताचलकोप्राप्तहुये वरात्रिहोआई २६ व जोसुहृद

लोगआये उन्होंने बिनाकिसीपुत्रके राजाका दाहकरना नप्रसन्न किया इसीसे अचिन्त्य दर्शनराज शरीरको उसी तेलभरी नावमें रख जहाँ राजा शयन करतेथे वहीं धरदिया २७॥

दो० ॥ अम्बर बिन प्रभ निसि बिना रवि तारागण हीन ।
जिमिनिशिसोहत नहिंपुरी तिमि दशरथ बिनक्षीन १ । २८
नरनारिन के निकर मिलि भरत जननि कहँ शाप ।
देतसुखी नहिंकोइ सबदुखित भरेपरिताप २ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषटषष्टितमस्सर्गः॥ ६६ ॥

मारेरोदनकेआनन्द रहित आंशुओंसे ठौर ठौरभरी अयोध्यापुरीमें वह रात्रि किसीतरह बीती १ जब बनाय रात्रि बीतगई व सूर्य्य नारायण उदयहोआये तोराज काज करनेवाले ब्राह्मणलोग राजसभामें आये २ उसमें मुख्य मार्कण्डेय मौद् गल्य वामदेव काश्यप कात्यायन गौतम व महायशस्वी जावालिजीथे ३ येब्राह्मण अपने अपने सेवकों समेत आय राजपुरोहित सबमेंश्रेष्ठ वसिष्ठजी के सम्मुख बैठ अलग अलग अपने अपने आशय प्रकट करने लगे ४ कि पुत्र शोकसे इन महाराजाधिराज दशरथ जीके मरनेसे यहजो रात्रिबीती सोसैकरों वर्षके समानहीं हम लोगोंके विचारसे बीतीहै ५ देखो महाराजतो स्वर्ग में जायटिके व श्री-रामचंद्रजी वनमें जाय बसे तेजस्स्वी लक्ष्मणभी उन्हींके साथ गये ६ व शत्रुओंकेमारनेवाले भरतशत्रुघ्न दोनों अपने नानाकेग्राम देशकेकयमेंआज कलरहतेहैं ७ इससे इक्ष्वाकु वंशियोंमेंसे किसीको आजहीराजा बनाना चाहिये क्योंकि नहींतो बिनाराजाके यह हमलोगोंका राजही नाशहो-जायगा ८ क्योंकि अराजक देशमें अर्थात् जिसमें राजा नहींहोताउ-सदेशमें बिजुलीकी चमक सहित अतिजोरसे गर्ज्ज गर्ज्ज मेघलोक प्रथवी में दिव्य जलकी वर्षा नहीं करते ६ व अराजक देशमें किसानलोग बीज की मूठि बोनेके लिये नहीं खोलते न अराजक देशमें पुत्र पिताकी आज्ञा मानता नस्त्री पतिके वशमें रहती १० अराजकदेश में धन नहींरहता क्योंकि चोर वा प्रबल लोग हरलेतेहैं व स्त्रीभी अराजकमें घरमें नहीं रहतीं क्योंकि निर्भय होनेके कारणव्यभिचारकरनेलगती हैं जब ऐसे

ऐसे महा भयहोतेहैं तो अराजकमें सत्य शौचादि धर्म्म कहांसे रहेंगे ११ अराजक देशमें धर्म्म कर्म्मादिके निर्णय करनेके लिये लोग सभाभी नहीं करते न प्रसन्न हो फुलवाड़ी बाटिकादि लगाते न देवतादिकों के पुण्य गृहलोग वनावें १२ अराजकदेशमें यज्ञकरनेवाले उत्तम क्षत्रिय वैश्य उत्तम यज्ञनहींकरते न जितेन्द्रिय ब्राह्मण उनका यज्ञकरातेहीहैं १३ अराजकदेश में धनवान भी ब्राह्मण लोग बड़े बड़े यज्ञ नहींकरते जिनमें बहुत दक्षिणा देनीपड़तीहै १४ अराजकदेश में नट व वेश्या कथिक आदि नाचनेवालेलोग व नानाप्रकारके उत्साहके काम अनेक विषयोंके समाज भी नहींहोते जिनसे कि राज्य बढ़ताहै १५ अराजकदेशमें लेनदेन करने वाले उद्यमीलोग द्रव्य होनेपर भी कोई व्यवहार नहींकरते न कथा प्रिय पौराणिक ब्राह्मणोंको बुलाय भगवान्की कथाही सुनके आनन्दित होते जिनका स्वभाव कथा वार्त्ता श्रवण करने काभी होता परमारे लूटमारके उनका चित्तही स्वस्थ नहींरहता फिर कथा वार्त्ता कैसेहो १६ अराजकदेशमें सुवर्णादिके गहने पहिने कुमारीकन्या लोग खेलनेके लिये फुलवाड़ी आदिकोंमें नहीं जातीं १७ अराजकदेशमें धनवान् लोगोंकी अच्छीतरह रक्षानहींहोती न खेतीकरनेवाले व पशुपालनेवाले लोग विना किवाड़ बन्दकिये निर्भय सोनेपाते १८ अराजकदेशमें शीघ्रगामी घोड़े हाथी रथ आदि सवारियों पै सवारहो कामी लोग स्त्रियोंके संग बिहार करनेको वनोंको नहीं जाते १९ फिर अराजक देशमें घंटा बाँधे बड़े बड़े दाँतवाले साठि साठि बर्षकी अवस्थावाले हाथी सड़कों पै नहींघूमते क्योंकि बिन मालिक का देश कोई घंटा न छोरले वा दाँतही न उखाड़ले २० व अ० में बाणविद्या सीखनेवाले वीरोंका ताड़ ठोंकना नहीं सुनाईदेता यद्यपि उनको बारबार तीर चलाय चलाय सीखना चाहिये २१ अ० दे० में बहुत बजार में बेचनेवाली बस्तुले बनियांलोग उद्यम करने के लिये आनन्दपूर्व्वक चोरोंके भयसे दूर दूर तक नहीं जायसक्के २२ अ० दे० में जितेन्द्रिय मुनिलोग परमेश्वर का भजन करते हुये दिनभर घूम सायंकाल किसीके द्वारपै नहीं टिकते क्योंकि उनको कोई भोजनही नहीं देता २३ अ० दे० में किसीका योग क्षेम नहीं रहता व विना मालिक की सेना संग्राम में शत्रुओं को नहीं जीत सक्की २४

अ०दे० में नानाप्रकारके भूषणवस्त्रादि धारणकर हिनहिनातेहुये घोड़ों व रथोंपै सवारहो लोग एकाएकी नहीं चलते २५ अ० दे० में नानाशास्त्र विशारद पण्डितलोग परस्परकहते सुनतेहुये वन उपवनादिकोंमें निर्भय नहीं बसते २६ अ० दे० में देवताओं के पूजनार्थ माला लड्डू दक्षिणा आदि लोग इकट्ठा नहीं करते २७ अ० दे० में चन्दन अगरु आदि सुगन्धित वस्तु लगाय लगाय राजकुमार लोग बसन्त ऋतुमें वृक्षोंके समान विराजमान नहीं होते २८ जैसे विना जलकी नदी व बिना जल कमलकी बावली विना घास फूसका वन जैसे विना गोपाल की गाय ऐसेही बिना राजाका देशजानो २९ रथका ज्ञान ध्वजसेहोता व धूमसे अग्निका व हमलोगों के ध्वजरूप राजाथे सो यहाँसे जाय देवता होगये ३० कहांतक कहें अराजक देशमें कोई किसीका नहींहोता मछलियों के समान लोग आपसमें एक दूसरे को मारखाय जातेहैं ३१ अराजक में जोलोग वेदशास्त्रकी निन्दाकरते शास्त्रकी मर्य्यादाको नहीं मानते जिनको नास्तिक कहते हैं वे लोगभी बिना राजदण्ड के भय निस्सन्देह हो वेभी अपने मनमाने मार्ग्ग फैला देतेहैं ३२ जैसे दृष्टि अपने शरीरके हितके लिये सदा तत्पर रहतीहै तैसेही राजा अपने राज्य के धर्म्म कर्म्मके सत्य प्रकट कराने में समर्थ होताहै ३३ मनुष्यों का सत्य व धर्म्म राजाहीहै कुलवालों का कुल राजाहीहै व सबका माता पिता राजाहै हित करनेवाला भी सबका राजाहीहै ३४ जो राजा अच्छी राजनीति के साथ प्रजाका पालन करता उसके गुण यम कुवेर इन्द्र वरुण सेभी अधिक होतेहैं अर्थात् यममें दण्डदान मात्र धर्म्महै कुवेर में धन देनेमात्र का धर्म्म इन्द्रमें रक्षाकरने मात्रका धर्म्म वरुणमें सदाचार नियममात्र धर्म्महै व राजामें ये सब गुण होतेहैं इससे राजा श्रेष्ठहोता है ३५ जो लोकमें साधु असाधु कर्म्मोंको राजा शिक्षा न करै तो जैसे बिना सूर्य्य संसारमें अंधकार छाया रहता है वैसेही प्रजाओंमें अज्ञान छायजाय कुछभी भला बुरा न जानपरै ३६ सो हमलोग तो महाराज दशरथजीके जीतेजी परभी तुम्हारे बचनको नाँघ कुछ नहीं करते थे जैसे समुद्र अपने किनारों को छोड़ आगेको नहीं बढ़ता ३७ ॥

॥ * — * ॥

कुण्डलिका ॥

द्विजवर लखिसब हमन के वृत्त नृपति बिन राज ।
जोवन समहवै गयहु अब ब्याकुल सकल समाज ॥
ब्याकुल सकल समाज बात यह चित धरि नीके ।
इक्ष्वाकुहि कर पुत्र चहै आनहि करु टीके ॥
यासों नहिँ कछु काम नृपति कीजै कोइ बर नर ।
बिना भूप नहिँ चलिहि सुनिय चितधै अब द्विज वर १ । ३८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तषष्टितमस्सर्ग्गः ६७ ॥

तिन लोगोंके ऐसे वचन सुन अपने मित्र मन्त्री व आज्ञाकारी ब्राह्मणों से वसिष्ठजी बोले १ कि जो भरत अपने भाई शत्रुघ्नके साथ परमानन्दित सुखपूर्व्वक अपने मामाके यहां बसतेहैं २ उन दोनों भाइयोंके लाने के लिये अति शीघ्रगामी घोड़ोंपै चढ़ दूत अभी जायँ और हमलोग इस विषय में क्या कहैं व क्या विचारैं ३ सब मुनियों ने कहा बहुत अच्छा दूतजायँ यहसुन वसिष्ठजी बोले ४ कि हेसिद्धार्थ विजय जयन्त अशोक व नन्दन तुमसब लोगोंको इससमय जो करना है हम कहतेहैं सुनो ५ तुम लोग अति वेगसे चलनेवाले घोड़ोंपै सवारहो केकयदेश के राजाके गृह को जाव वहाँपहुंच सबतरह के शोक छोड़ हमारी ओर से भरत से कहना ६ कि तुम्हारे पुरोहित वसिष्ठजी व सब मंत्रियोंने आपकी कुशल पूंछी है व बुलाया है कि तुरन्त चलेआवो बड़ी आवश्यकता है विलम्ब करनेसे कार्य्य नष्ट होजायगा ७ परन्तु तुमलोग रामचन्द्र जीका वनवास व दशरथ जीका मरण रघुवंशियों का विलाप उनसे न कहना ८ हाँ जो वस्त्र व अच्छेअच्छे भूषण महाराज दशरथजी भरतादिकोंके लिये भेजने पर थे वे लेतेजाना उन्हें देदेना पर अब विलम्ब न करो शीघ्र जाव ९ इतना कह गलीके लिये भोजन दिलादिया उसे ले सब दूत अपने घरको गये फिर अपने अपने मनमाने घोड़ोंपै चढ़ केकय देशको चले १० जो वस्तु गलीके लिये लेनीथी सब ले वसिष्ठ जीकी आज्ञापाय बड़ी जल्दवा-जीकेसाथ दूतलोगचले ११ अपर तालदेशके दक्षिण दक्षिण व प्रलम्बदेश के उत्तरउत्तर इन्हींके मध्यमें मालिनीनदीके किनारेकिनारे वे दूतपश्चिम

दिशाको चले १२ जातेजाते हस्तिनापुरके तीर गङ्गाजीको उतर पश्चिम मुख चले वैसे पंचालदेश व कुरुजाङ्गल देशके बीचंबीचगये १३ मार्ग्गमें कमलादि फूले बहुत तालाब देखे व निर्म्मल जलवाली नदियां परन्तु दूतोंको जल्द जानेका कामथा इसलिये शीघ्र चलेगये १४ जाते जाते अति प्रसन्न जलयुक्त नानापक्षिगणसेवित शरदण्डानाम नदीके तीरपै पहुंचे १५ उस शरदण्डा नदीके तीरपै एक उत्तम वृक्ष था जिससे जो माँगो मिलता था उसके नीचे जाय प्रणामकर अपनाअपना वांछित माँग आगे चले तो कुलिङ्गानाम पुरी मिली १६ तिसके आगे तेजोभिभवन नाम ग्राम मिला वहांसे बढ़ अभिकालनाम नगर में पहुंचे तिसके पीछे दशरथ जीके पिता पितामह की सेईहुई इक्षुमती नदीको उतरे १७ उसके किनारे अंजलिसे जलपान करतेहुये वेदपाठी ब्राह्मणोंको देख वाल्हीक देशमें पहुंचे बीचमें सुदामानाम पर्व्वत मिला १८ जिसपै विष्णुजी के चरण का चिह्न बनाहै तिसके पीछे विपाशानदी मिली फिर शाल्मली नदी और बहुतसी नदी वापी ताल व छोटी तलैयाँ मिलीं १९ उसके आगे विविधप्रकार के सिंह व्याघ्र मृग हाथी आदि देखते अपने स्वामी की आज्ञाका पालन करतेहुये चलेगये २० चलतेचलते अब दूतोंके घोड़े कुछ थकेथकाये इससे जाय गिरिव्रज नामपुरमें कुछदेर ठहरगये फिर अति शीघ्र चले २१ दशरथादि अपने स्वामी प्रियके लिये व कुलकी रक्षाकेअर्त्थ स्वामी व वंशके निर्व्वाहार्त्थ अनादररहित सबदूत रात्रिको उस पुर में पहुंचे २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६८ ॥

जिस रात्रिमें दूत उसपुरीमें पहुंचे उसी रात्रिमें भरतने बड़ा अप्रिय स्वप्न देख १ रात्रि में स्वप्नतो अप्रिय देखाही था जब प्रातःकालहुआ तो राजाधिराज के पुत्र भरत जीने बड़ा परिताप किया २ तिनको विषाद कियेहुये देख संग के बैठने उठनेवाले मित्र अति प्रिय वचन कह कह खेद मिटाने के लिये रोचक कथा कहनेलगे ३ कोई कोई तो खेद मिटने के लिये वीणादिबाजा बजाने लगे कोई कोई शान्ति पढ़ने लगे कोई कोई नाचने लगे कोई कोई नाटक शास्त्र के खेल करनेलगे कोई

कोई विविध प्रकारके हास्य करने लगे ४ परन्तु महात्मा भरत जी का बोध यद्यपि सब मित्रोंने अपनी अपनी युक्तिसे किया व उससे सभा भर हँसी पर भरतजी न प्रसन्न हुये ५ तब उनमें एक भ तजीका अति प्रिय सखाथा वह सब मित्रोंके बीच में बैठेहुये भरत जीसे बोला हेसखे हम मित्र लोगों ने बड़ी सेवा की तिस परभी आप क्यों नहीं प्रसन्न होते ६ जब ऐसा उस मित्रने कहा तो भरत जी उससे बोले कि मित्र जिस कारण हमको यह दीनता आई उसका कारण कहते हैं सुनो ७ आज रात्रि को स्वप्न में हमने मलिन वस्त्र धारण किये बारछूटेहुये पिता जीको पर्व्वत के कँगूरेपर से मैलेगोबर के कुण्ड में गिरते हुये देखा ८ उसी गोबरके कुण्ड में तैरते व अंजलि से तेलपीते व बारबार हँसते थे ९ तिसके पीछे तिल युक्त भात भोजन कर फिर फिर नीचे को शिर कर सर्व्वांग में तेल लगाये तेलही में बूड़ी मारते हैं १० उसी स्वप्न में यहभी देखाकि समुद्र सूखगया है चन्द्रमा पृथिवी में गिरपरा है मानों सब पृथ्वी अन्धकार से घेरीहै ११ सवारीवाले हाथी के दाँत मानों खण्ड खण्ड टूटगये हैं बरे अग्निमानों बुताय गये १२ पृथिवी जानों फाटगई है विविध प्रकारके वृक्ष सूखगयेहैं पर्व्वतों में जानों धुआँ निक-लता है फिर टूटफाट गयेहैं यहभी स्वप्नही में देखा १३ व लोहेके पीढ़ा पर बैठे नील के रँगे वस्त्र पहिरे हमारे पिताजी को जानौ कालेपीले वस्त्र धारण किये स्त्रियां माररही हैं १४ व परम धर्म्मात्मा पिताजी लाल वस्त्र व चन्दन धारण किये गदहेनहे रथपै सवार मानों दक्षिण दिशा को चले जाते हैं १५ व रक्तही वस्त्र पहिरे एक राक्षसी स्त्री अति बिकराल मुख किये जानौ हँसती राजाको खींचेलिये जातीहै व हम खड़ेदेखतेहैं १६ इस तरह यह भयानक रात्रि हमने देखी इसका फल यहीहोगा कि हम वा रामचन्द्र वा राजा वा लक्ष्मण इनमेंसे कोई न कोई मरैगा १७ क्योंकि जो मनुष्य स्वप्नमें गधानचेहुये रथपै जाता है बहुतही शीघ्र चिता में से उसका धुआँ निकलता देखपरता है १८ इसी कारण हम दुःखी हैं तुम लोगों के वचनों की बड़ाई नहीं करते हमारा गल सूखाजाता है व मन हमारा स्वस्थ नहीं है १९ हम भय का कारण नहीं देखते परभय पातेहैं इसीसे हमारा बोलभी कुछ गड़बड़ होगयाहै इसीसे हमारे शरीर

की कान्ति भी जातीरही है २० केवल अपनी निन्दाही करतेहैं परभय निवृत्त होने का नहीं देखते २१ ॥

कुण्डलिका ॥

दुख स्वपना की गति सुनी कबहुं बिचारी नाहिँ ।
सोदेखी बहुविधिअबहिँ अतिभय ममहृदिमाहिँ ॥
अतिभय ममहृदि माहिँ टरत नहिँ सो अब टारे ।
सुधिकरि भूपति केरि महादुख रहत हमारे ॥
जानत नहिँ अबमीत कौन पन होइहि अपना ।
जोदेख्यहु यहि राति सकलभयप्रद दुखस्वपना १ । २२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकोनसप्ततितमस्सर्गः ॥ ६९ ॥

भरतजी अपने संगियों से यों स्वप्न कहीरहेथे कि थके घोड़ोंपै चढ़े वे दूत राजगृह नाम पुरमें आयपहुँचे १ प्रथम राजासे मिले फिर राजपुत्रने उठने बैठने आदिका स्थान बताय जल पानादि सें पूजा की तब केकयराजके प्रणामकर दूतलोग भरत जीसे बोले २ आपके पुरोहित वसिष्ठजी व मन्त्री लोगोंने कुशल पूंछी कही है व कहा है कि इन्हीं दूतों के संग तुरन्त चले आवो अत्यावश्यक कार्य्यहै जो विलम्ब करोगे तो कार्य्य भ्रष्ट होजायगा ३ हे बिशाल नयन ये बड़े बड़े मोलके वस्त्र भूषणले अपने मामाको देवो ४ इनमें बीशकड़ोर तो तुम्हारे नानाराजा के लिये हैं व दश कड़ोर तुम्हारे मामा के लिये हैं ५ सब वस्त्र भूषणादि नाना मामा आदि सुहृदों कोदे दूतों को खानेपीने आदिकी सामग्री दे दिलाय भरतजी उनसे बोले ६ कि हमारे पिता राजा दशरथजी कुशल पूर्वक हैं महात्मा रामचन्द्र व लक्ष्मणजी आरोग्यतो हैं ७ भला परमश्रेष्ठ धर्म्मनिरत धर्म्मज्ञ धर्म्मवादिनी धीमान् श्रीरामचन्द्र जीकी माता कौशल्याजी अरोग हैं ८ व भला धर्म्म जाननेवाली लक्ष्मण व बीर शत्रुघ्नकी माता सुमित्राजी अरोगहैं ९ भला सदा अपनाही काम करनेवाली जो सदा रिसानीहीं बनी रहतीहैं व परम क्रोध युक्त रहतीं अपनाहीको पण्डित मानतीं हमारी माता कैकेयीजी अरोगहैं उन्होंने तुम्हारे चलते समय कुछ कहाहै १० जब दूतों से महात्मा

भरतजीने ऐसा कहा तो बड़ी नम्रता के साथ वे लोग भरतजी से बोले कि ११ हे नरव्याघ्र जिनकी कुशल तुम चाहतेहो वे सब कुशलीहैं आप को लक्ष्मीजी चाहतीहैं बहुत पूंछने पाँछनेकी आवश्यकता नहीं रथ तैयार कराइये व चलिये १२ भरतजीने भी दूतों से कहा कि महाराज अपने नानाजीसे पूंछलें कि दूत लोग चलनेके लिये बहुत जल्दी कराते हैं १३ यह दूतोंसे कह राजकुमार श्रीभरत जी दूतों के कहनेसे अपने नानासे बोले १४ हे राजन् दूत बुलाने आयेहैं इससे अब पिताजी के निकट जायँगे जब फिर कभी स्मरण करोगे तो आवेंगे १५ जब भरतजी ने ऐसा कहा तो उनके नाना राजा साहब उनका शिर सूंघ भरत से बोले १६ हे तात जाव हमने तुमको जाना कि तुमको पाय कैकेयी सुपुत्रवती कहावेगी अच्छा अपनीमाता व पितासे यहाँकी कुशल कहदेना १७ अपने पुरोहित से भी कुशल कहना जो और ब्राह्मणोत्तम वहाँरहते हैं उनसेभी व बड़े धनुर्द्धर अपने भाई राम लक्ष्मणसेभी अवश्य कहना १८ यह कह विदा किया भरतजीको केकयराजने उत्तम हाथी उत्तम चित्र बहु मूल्य शाल दुशाले व विशेषभाँतिके मृगचर्म्म व बहुत धन दिया १९ व जो कुत्ते बहुत दिनोंसे रनिवासमें बँधे रहतेथे जिनका वीर्य्य बाघों के बलके समानथा बड़े बड़े जिनके दाँतथे व बड़े लम्बे चौड़े ऊंचेथे राजा ने चलनेके समय भेंट दिया २० और दो सहस्र सुवर्णके निष्क एकसौ सोलह उत्तम घोड़े केकयीके पुत्र भरतजी को केकयराजने दिये २१ व साथ जानेके लिये बहुत से प्रियकारी विश्वासी मन्त्री आदि करदिये जो अति वेगसे भरतके पीछे पीछे चले जायँ २२ व इरावान् पर्व्वत पर के ऐरावत नाम हाथीदिये कुछ इन्द्रशिर देशके हाथी दिये जिनकी ऐन्द्रशिर संज्ञाहै जो कि सब तरहसे सुडौल अति शीघ्रगामी खच्चर ये सब पदार्त्थ नाना ने दिये २३ परन्तु केकयीनन्दन भरतजी ने चलनेकी अकुतईमें नानाकीदी कोईभी वस्तुप्रसन्न न की २४ क्योंकि दूतोंकी जल्दबाजी व खराब स्वप्न देखनेसे भरतजीके चित्तमें बड़ीभारीचिन्ताथी २५ जो जो मनुष्य घोड़े हाथियों को इनके सङ्ग आना था वे सब सड़क पर निकार कर खड़े कियेगये २६ तब भरतजी रनिवासमें नानी मामी आदिसे मिलने गये वहाँसे अति शीघ्र बिदाहो आये २७ बाहर आय

नानासे पूंछ युधाजित् नाम अपने मामासेपूंछा बस झट पट रथ पै चढ़ सहित शत्रुघ्न चल दिया २८ जब भरतजी चले तो जो भृत्यलोग सङ्ग जाने के लिये सजे सजाये खड़ेथे सब रथोंमें ऊंट घोड़े खच्चर आदि नह पीछे पीछे चलदिये २९ इस रीतिसे महात्मा भरतजी शत्रुघ्न सहित बड़ी सेना व अपने समान सेवकोंसे रक्षित मातामहके घरसे चल दिये जैसे इन्द्र लोकसे सिद्ध लोग चलतेहैं ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्ततितमस्सर्गः॥ ७० ॥

भरतजी राजगृह नाम नगरसे पूर्व्वको मुखकर चलेजाते जाते सुदामा नाम नदी मिली उसे देख उतरे १ तिसके पीछे ह्लादिनी वा दूरपारा नदी देख परीं जिनका पश्चिम ओरके पर्व्वतपै सोताहै तिसके पीछे श-तद्रू नदी मिली उसेभी भरतजी उतरे २ तिसके पीछे ऐलधान नगर के समीप एक अति वेगवती नदी मिली जिसमें चाहे जो पदार्त्थ परै पर शिलाही होजाता उसे उतर आगे बढ़े तो बहुत ग्राम ऐसे मार्ग्गमें परे जिनमें पित्तपापरा बहुत होताहै तिसके पीछे शल्यकर्षण नाम देश मिला ३ तिसके आगे बढ़े तो शिलावहा नदी उसे उतर बड़े बड़े पर्व्वत मिले तिसके आगे चित्ररथ नाम वन मिला ४ तिसके पीछे सरस्वती नदी मिली उसके आगे एक गङ्गा नाम और नदी मिली तिसके आगे वीरमत्स्य देशोंके उत्तरहो भारुण्ड नाम वनमें पैठे ५ तिसके पीछे वेगिनी व कुलिङ्गा व ह्लादिनी नदी उतरे इनसब नदियोंमें पत्थर बहते हैं आगे बढ़ यमुना नदी मिली उसे उतर सेनाको सुस्तवाया ६ उस नदीमें खूब प्रथम जुड़ाय जुड़ाय घोड़ोंने नहाया क्योंकि बहुत दूरचले आनेके कारण बहुत थक गयेथे जलभी मनुष्य व घोड़े हाथियोंने खूबपिया ७ तिसके पीछे फिर रथपै चढ़ राजकुमार श्रीभरतजी चले आगे एक बड़ा भारी वनमिला उसमें ऐसे चलेहैं जैसेवायु आकाशमें चलता ८ तिसके पीछे श्री गङ्गाजी मिली उनका उतरना बड़ाही कठिनथा इसलिये अति प्रसिद्ध अंशुधान नाम नगरको गये यह नगर प्राग्वटेश्वरनाम पुरकेनिकटहै ९ उसी प्राग्वटेश्वरके सामने गङ्गाजीको उतर कुटिकोष्टिका नदीके तीरपै आये सेनासहित उसनदी को उतर धर्म्मवर्द्धन नाम

ग्राममें आये १० तिसके पीछे तोरण नाम ग्रामके दक्षिणहो जम्बू प्रस्थ नाम ग्राममें पहुंचे तदनन्तर बरूथ नाम ग्राममें श्रीदशरथ नन्दन पैठे ११ वहाँभी एक मुकाम किया क्योंकि वहाँ एक अति रमणीय बनथा वहाँसे पूर्ब्बमुख चले जिन बनमें प्रियक नाम वृक्ष बहुत थे १२ वहां भरतजीने सेना छोड़दी व कहा तुम सुस्ताते चलेआवो हमजातेहैं यह कह बहुत जल्द आपचले १३ आगे सर्व्वतीर्थ नाम ग्राममें एक रात्रि बसे आगे चल उत्तानिका नदीमिली औरभी विविध प्रकारकी नदियां मिली उनसबको पर्ब्बती घोड़ोंपर सवार होकर उतरे १४ कुछ दूरपर हस्थिपृष्ठकनाम ग्राममिला उसके आगे कुटिका नदीमिली तिसको उतर लोहित्य ग्रामके निकट कपीवती नदी उतरे १५ फिर एकसाल नगरके समीप स्थाणुमती नदी मिली आगेबढ़ विनत ग्रामकेलग गोमती उतरे कलिङ्ग नगरके निकट सालवन पड़ा १६ वहाँसे आगे बढ़े अब बनाय घोड़े हाथी आदिजो कुछसंग रहगयेथे थकउठे परन्तु उस बनको नाँघ रात्रि बीतते व सूर्य्योदय होते होते१७ मनु राजाकीबसाई अयोध्यापुरी भरतजीने देखा केकय नगरसे चल बीचमें सात रात्रि बसनेपरअयोध्या पुरी मिली अयोध्याको देखतेही सारथिसेबोले १८ हेसारथे यह यशस्विनी अयोध्या पुरी जिसमें अति पुण्यदायक फुलवाड़ी आदि विराजमान थीं उसकी मृत्तिका जानों उत्सव हीन होनेके कारण पीली पीली लगती है व कोई उत्सब नहीं विदितहोता १६ इसमें पूर्ब्बकालमें बड़ेबड़े वेदपाठीब्राह्मण सबगुण सम्पन्न यज्ञ कियाकरतेथे व राजर्षि लोगनानाप्रकारसे इसका पालन कियाकरते जहांदेखो धन धान्ययुक्तलोग आया जाया करतथे२० इसकारण इसअयोध्यामेंस्त्री पुरुषोंकाशब्द इधर उधर आनेजानेसे बड़े ज़ोरशोरसे सुनाईदिया करताथा वहआज नहींसुनाई देता २१ व इसके उद्यानोंमें सन्ध्या समय जो मनुष्य क्रीड़ा करने आतेथे वे क्रीड़ाकर इधर उधर दौड़ा करतेथे सो आज उन उद्यानोंमें कोईदेखही नहीं पड़ता २२ वे उद्यान मानोंकामी पुरुषों करके छोड़दिये गये हैं जानों रोदन करतेहैं इससे हमको यहपुरी बनके समान विदित होतीहै २३ क्योंकि जैसे पूर्व्वकालमें इसपुरीमें रथपालकी हाथी घोड़े आदिकोंपै सवारहोहो लोग कुछ बाहर को निकलतेथे कुछबाहरसे भीतर

की आतेथे वेतो कोई देखही नहीं पड़ते २४ जनोंकी प्रीतिके संय्योगसे इसके उद्यानादि अतिहर्षित व गुणवान् विदित होतेथे अबनहीं होंते २५ वे पुष्प बाटिका आज सब प्रकार से आनन्द रहित देख पड़ती हैं क्योंकि देखियेतो मार्गोंमें ठौरठौर पत्तेपरेहैं जानों वृक्ष रोदन कररहे हैं २६ देखिये अब वनाय समीपभी पहुच गयेहैं पर मतवाले मृगपक्षियों के बोल अबतक नहींसुनाई देते जोकि अतिअनुरागकारक मधुर व साफ़साफ़ ज़ोरसे पक्ष्यादि बोलाकरतेथे २७ किञ्च चन्दन अगरुसे मिला अन्य सुगन्धित धूपसे धूपित अतुल शोभायमान पवनभी नहीं बहता जैसा पूर्व्वकालमें बहताथा २८ व जो बाजे नगारे मृदङ्ग बीणा आदि बाजा करतेथे व उनकी ध्वनि दूरहीसे सुनाई दियाकरतीथी वहअब क्यों बन्दहोगई २९ बहुत कौनकहै सब प्रकार अनिष्टपाप रूपही सब निमित्त देखतेहैं इसीसे हमारा मन काँपताहै ३० हेसूत हमारे विचारसे तो यही जानपड़ताहै कि हमारे प्यारे भाई बन्धुओंमें कुछपैकुछ अमंगल होईहै इसीसे हमारा हृदय काँपताहै ३१ इसप्रकार उदासीन मनहो हृदयको शान्तकर भय व्याकुलगात्र सब इन्द्रिय चलायमान भरतजी इक्ष्वाकादि पालितपुरीमें पैठे ३२ व बैजयन्त नाम फाटक पहिले मिला थके हुये बाहनोंपै चढ़ेहुये उसमें पैठे द्वारपालक लोग देखदेख उठखड़े हुये व बिजय कुशलादि पूंछ उन्हींके संग आगे चले ३३ पर भरतजी का चित्तस्वस्थ तो थाही नहीं उनद्वारपालों से कुशल पूंछ आज्ञादी कि अपने स्थानपै चलो थकेहुये अपने नानाके सारथिसे बोले जो उनका रथहाँकताथा ३४ कि हम जो बहुत शीघ्रतासे बुलाये गये तो कुछ कारण बिना नहीं बुलाये गये नहीं कुछ अशुभ कारण अवश्यहै क्योंकि हमारा हृदय बारबार अशुभही को बताता व काँपता है ३५ हे सूत राजाओं के मरने पर जो आकार पुर समाजादि के होते हैं जिनको लोगों की ज़बानी सुन रक्खा है वे सब आकार हम देखते हैं ३६ क्योंकि सब फाटक बिना झारे बहारे परेहैं इससे कर्कश जानपड़ते हैं कपवाड़ किसीके ठीक नहीं सब अस्तव्यस्त हैं शोभा सब पदार्त्थों की जातीरही है ३७ परिवारवालों के मन्दिरों के द्वारपै पूजाकी सामग्री कहीं नहीं देखाई देती धूप दीप का तो नामही नहीं देख सुन पड़ता जहां देखो सब भूखेही लोग

दृष्टि में आते हैं सब जन प्रभाहीन होगये हैं ३८ सब परिवारवालों के भवन लक्ष्मीहीन होगये हैं माला आदि किसी के द्वारपै टँगी नहीं देख पड़ती किसीके भी द्वार झारे बहारे नहींहैं ३९ देवताओंके मन्दिर मानों सब शून्यहोगयेहैं क्योंकि पूर्व्वसमयकी तरह प्रकाशित नहींहोते मानों देवताओं की मूर्त्तियां अति वृद्ध होगई हैं यज्ञशालाओं की भी यही दशा है ४० देखो फूलों वाली बाज़ार में जैसे तब फूल बिका करते थे वैसे अबनहीं हैं बनियांलोग जिस धूमधड़क्के के साथ अपनी दूकानें खोलते थे वैसे आजनहीं खोलीं ४१ उनका देनलेनका जो ब्योहार है उसके नष्टहोजाने से दुःखी हैं इसीसे देखते हो जहां के तहां सङ्कोच किये बैठे हैं व देवालय जो हरि मन्दिर शिवालय दुर्गा भवनादिहैं उनमेंभी पक्षी नहीं बोलते ४२ जहां देखो क्या स्त्री क्या पुरुष सबके सब मलिन वस्त्र धारण किये आंखों में जलभरे अतिदीन मन ध्यान करनेसे दुर्ब्बल एक दूसरे को प्रीति जनाते हुये जान पड़तेहैं ४३ इस तरह के अनिष्ट अयोध्या में देखते व सूतसे कहते उदासीन चित्त हो भरत जी राजमन्दिर में पैठे ४४ दूकाने चौरहे मन्दिरादिकों में शून्यहोनेके कारण धूलही धूलि देखाई देती कोई किवाड़े बन्द नहीं होते जो पुरी आगे इन्द्रपुरी को भी प्रकाशित करतीथी उसकी यहदशा देख भरतजी अति दुःखित हुये ४५ ॥

दो० जो अप्रिय निज नगर में कबहुँ सुनी नहिं देख ।
सो देखत नीचे बदन करि लहि दुःख अशेष १ ॥
भरत गयहु निजपितु भवन अति उदास सबगात ।
इतउत देखत दुखितजन दुखित बदन जलजात २ । ४६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकसप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ७१

वहां पिता जीके मन्दिर में जाय भरतजी ने अपने पिताको न देखा फिर माता के देखने केलिये निज माताके मन्दिरको गये १ बहुत दिनोंके पीछे आयेहुये अपने पुत्र भरत जीको देख कैकेयी सुवर्ण के आसन को छोड़ उठखड़ी हुई २ भरतजीने भी अपना घर शोभाहीन देख अपनी माता के चरणों की बन्दना की ३ कैकेयी भी यशस्वी भरत ऐसे पुत्रको धाय छाती में लपटाय शिरसूंघ कोरा में ले अपने पिता व भाई आदिके

वृत्त पूंछने लगीं ४ आज तुमको नाना के मन्दिर से चले कितनी रातेंहुईं शीघ्रता के मारे रथपै आयेहो भला मार्ग्गमें बड़ा परिश्रम तो नहींपड़ा ५ भला तुम्हारे नाना व युधाजित् तुम्हारे मामा कुशल हैं विदेश से चले आते हौ पुत्र सब इन लोगों व अपने सुखके हालकहो ६ जब माताने ऐसा पूंछा तो राजीव नयन भरतजी माता से सब कहने लगे ७ किआजआपके पिताजी के मन्दिर से चले हमको सातवीं रातहै तुम्हारे पिताजी व हमारे मामा युधाजित् कुशल पूर्व्वक हैं ८ राजाने जो धन रत्न वाहनादि हम को दिये उन सब को थकजानेके कारण मार्ग्ग में छोड़ हम चलेआये ६ हमको बड़ी जल्दीथी क्योंकि राजा साहब का सन्देश ले जो दूतयहां से गयेथे वे बड़ी शीघ्रता किये थे सो उसका कारण अब हम आपसे पूंछा चाहते हैं व ताइये १० प्रथम तो यह कि तुम्हारा यह सुवर्ण भूषित बिस्तरा शून्य क्यों है व ये इक्ष्वाकुबंशी कोई हमको आनन्दित नहीं विदित होते ११ हम जानते थे कि जो अपने मन्दिर में नहीं हैं तो राजा हमारी माताके मन्दिरमें ज़रूर होंगे उन्हींको पूंछनेके लिय यहां आयेथे पर यहांभीउन्हें नहीं देखते १२ सो हम पिताजीके चरणोंमें प्रणाम किया चाहतेहैं शीघ्र बताइये कहांहैं भला बड़ी माता कौशल्याजी के मन्दिरमें तो नही ह १३ कैकेयी यहसुन अति अप्रिय व कठोर बचन अपने मनसे प्रियहीके समान बोली भरतजी तो जानतेही न थे पर वह दुष्टा अच्छीतरह जानती भी थी पर राज्यके लोभसे मोहित अप्रियही बोली १४ कि परम यज्ञ शील अति तेजस्वी तुम्हारे पिताजी महात्मा राजा उस गतिको गये जिसको अन्तावस्था में सब प्राणी जाते हैं अर्थात् साकेतलोक को गये १५ इस वज्रपात के समान बचन सुन परम पवित्र व धर्म्मवान् भरत जी मारे पिताके शोकके पृथिवी में मूर्च्छित हो गिरपड़े १६ गिरने के समय यह दीनबचन कहा कि हाय हम मारेगये यहकह बाहु फैलाय गिरपड़े यद्यपि बड़े पराक्रमी थे १७ मारे शोकके पीड़ित पिताके मरण से दुःखित भरत जी ऐसे रोये कि सब इन्द्रियाँ शिथिल होगईं १८ हाय आगे यह हमारे पिताजीकी शय्या अति रुचिरथी ऐसी शोभित होतीथी जैसे शरद ऋतु में चन्द्रमाके उदयमें रात्रिको अकाश शोभित होताहै १६ वह आज तिन बुद्धिमान् महात्मा हमारेपिता बिनानहीं शोभित होती जैसे बिना चन्द्रमा

का आकाश व बिना जलका समुद्र नहीं शोभायमान होता २० यहकह गलेमें वाष्प भरलाये रोदनके मारे बनाय पीड़ित होगये व वस्त्रसे मुख मूँदलिया २१ देव समान देदीप्यमान पुत्रको पृथिवी में पड़े कुल्हाड़ीसे कटेहुये साँखके समान देख २२ माताजो पुत्रचन्द्र सूर्य्यके समानथा उठाय पोंछ झार जाँघपर बैठायके बोली २३ हेराजन् उठोउठो क्या सोतेहो तुम्हारे समान पण्डित व पण्डितोंकी सभाके भूषण लोग नहीं शोचते २४ फिर दान यज्ञकी अधिकारिणी शील वेद व तपस्या के पीछे चलनेवाली सकल बुद्धिमत्तायुक्त तुम्हारी वुद्धि जिसको सब बातें सूझतीहैं जैसे सूर्य्य की प्रभा सब कहीं बाहर भीतर प्रवेश करती है २५ इसतरह माता ने बहुत समझाया पर बड़ी देरतक रोदन करने के पीछे भूमि में कईबार लोटपेट बहुत शोकयुक्त बड़ी ढिठाईकर फिर मातासे बोले २६ कि देखो जब ये दूत नहीं पहुँचेथे तभी हमको पिताजीने सन्देश दियाथा कि हम रामचन्द्रका अभिषेक किया चाहते हैं व आप नित्य यज्ञ किया करेंगे यही जान हमने अपने नानासे यहां आनेके लिये बिदा माँगीथी व बहुत प्रसन्न हुयेथे कि बड़ी बातहै कि रामचन्द्र राजा होंगे २७ सो उसके बिपरीत पिताजीही न रहे इससे हमारा मन विदीर्ण होताहै कि हाय नित्यही प्रिय व हितमें तत्पर पिताजी को नहीं देखते २८ हे मातः यह तो बतावो कि पिताजीके ऐसी कौन व्याधि हुई जिससे झटपट बिना हमारे आयेही वे इसलोकको छोड़ चलेगये श्रीरामचन्द्रादि धन्यहैं जिन्होंने मरणावस्था मेंभी राजाकी सेवा की २९ हाय अब महाराज हमको नहीं जानते कि नानाके यहां से आयेहैं नहींतो हमारा शिर ज़रूर अपना शिर झुकाकर सूंघते ३० हाय अब कृतेही सुख देनेवाला पिताजीका वह हाथ कहाँहै जो धूलि लगेहुये हमारे अङ्गोंको बार बार पोंछे ३१ अब जो हुवा सो हुवा जो हमारे भ्राता पिता बन्धु रामचन्द्रजी कि जिनके हम दासहैं वेकहाँहैं शीघ्र हमारा आना उनसे जाय कहो ३२ क्योंकि हम इसकुलके धर्म्म को जानते हैं कि ज्येष्ठ भ्राता पिताही के समान होता इससे तिसकेही चरणों को ग्रहणकरें क्योंकि इससमय वही हमारे रक्षक हैं ३३ भला धर्म्मवेत्ता धर्म्मशील महाभाग्यशाली व दृढ़व्रतधारी महाराजाधिराज चलनेके समय रामचन्द्रजीसे क्या कहगयेथे सोतो बतावो ३४ व हमारे

पिताजी प्रजाओं के एकही परमशिक्षक गुरुथे व सत्यविक्रम सत्य-सङ्कल्पथे वे चलनेकेसमय कुछ हमेंभी आज्ञा देगयेहों तो उनका सन्देश सुनाचाहते हैं जब इसतरह भरतजीने पूंछा तो कैकेयी बोली ३५ कि ॥

दो० हा रघुवर हा लषण हा सीता कहि नरनाह ॥
रोवत गे परलोक कहँ यह समुझौ मनमाह १ । ३६
यहै तुम्हरे पितु कह्यहु चलन समय मम पाहँ ।
काल धर्म्म वश ह्वैयथा पाश बद्ध गज नाहँ २ । ३७
अरु इमि नृप कह नर भले जो सियलषण समेत ।
फिरि आये रामहिँ बहुरि लखि हैं कृपा निकेत ३ । ३८
यह दूसर अप्रिय सुनत भयहु भरत अति खिन्न ।
कछु चुप ह्वै पुनि मातुसे पूंछहु मानस भिन्न ४ । ३९
कहु धर्म्मात्मा राम सुत लषण सीय यहिकाल ।
कहाँ बसत सबकहँ सुखद जिनदुख दुखि महिपाल ५ । ४०

जब भरतजीने ऐसा पूंछा तो उनकी अति ढीठी माता सब अप्रिय राम बन गमन कारण अपनी जान प्रिय कथा के समान सुनाने लगी ४१ हे पुत्र वे राजकुमार श्रीराम तो लक्ष्मण व जानकी के साथ चीर वल्कल धारण कर दण्डकारण्य को चले गये ४२ यह सुन भ्राता श्रीरामचन्द्र-जीके बनगमन का कारण शोचते भरतजी बहुत भयभीत हुये पर अपने वंशका माहात्म्य जानतेथे धैर्य्य धारण कर पूंछने लगे ४३ कि ॥

दो० न तो राम रघुवंश मणि ब्राह्मण धन हरि लीन ।
नहिँ दरिद्र वा धनिककर बिना पाप बधकीन १ । ४४
नहिँ परनारी सो कबहुँ रति कीन्हीं नृप बाल ।
ममभ्राता रघुनाथ किमि बन पठयहु महिपाल २ । ४५

भरतजी के ऐसे वचन सुन अति चञ्चल स्वभाव कैकेयी ने स्त्री स्वभावसे जैसा कुछ कियाथा ज्यों का त्यों क्रमसे वर्णन करने लगी ४६ महात्मा भरतके पूंछने पर यद्यपि कुछ सङ्कोचके साथ कहनाथा पर वह तो अपनी बुद्धिके आगे पण्डितोंकी बुद्धिको भी वृथा मानतीथी बड़ी प्रसन्नता व धृष्ठताके साथ कहने लगी ४७ ॥

दो० राम हरयोहु नहिं कछुक कभुं ब्राह्मण धन परवीन ।

नहिं दरिद्र वा धनिक जन बिना पाप बध कीन १ । ४८
नहिं देखत लोचनहुं सो परतिय कबहूं राम ।
पर मैं सुनि अभिषेक यहँ तासु कीन यह काम२ । ४६
माँगा तुम्हारे जनक सों तुम्हें राज्य यहि केर ।
रामचन्द्र कहँ विपिन महँ बास कीन नृप घेर ३ । ५०
यासों सिय रघुबर लषण नृपतिदीन बनवास ।
पर प्रिय सुत देखे बिना नृपगे स्वर्ग सुपास ४ । ५१

इससे हेपुत्र हेधर्म्मज्ञ पिता तुमको राज्यदेही गयेहैं तुम राज्यको अङ्गीकार करो ५२ तुम्हारेही लिये हमने ऐसा किया अब न तो तुम शोचही करो न सन्तापही किन्तु धैर्य्यको धारण करो ५३ तुम्हारेही अधीन यह पुरीहै व राज्य भर अभी ज्यों का त्यों बनाहै कुछ बिगड़ा नहीं ५४ तिस से हे पुत्र वसिष्ठादि बिप्रमुख्य व अन्य द्विजेन्द्रों को बुलाय शीघ्रही अपनी तई पृथिवीके राजा बनालो उदासीनता मनसे दूरकरो ५५ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्विसप्ततितमस्सर्गः ७२ ॥

भरतजीने पिताके ऐसे वृत्त सुने कि राम लक्ष्मण ऐसे भाइयोंको बनवास दिया अति दुःखसे सन्तप्तहो यह वचन बोले १ कि पिता व पिताही के समान भ्राता रामचन्द्र बिना मरे के समान व शोच करते हुये हमको राज्य से क्याहै २ अरे दुष्टे तने हमको दुःखमें दूसरा दुःख दिया जैसे कोई घाव में लोन घिसे क्योंकि उधरतो राजाहीको मार डाला दूसरे रामचन्द्रकोभी तपस्वी बनाय बनवास कराया३ इस कुलके नाश करने के लिये तू कालरात्रिही के समान हुई जिसमें सब प्राणी मरजाते हैं हाय अङ्गार रूप तुझको भेंट पिताजी भस्महो स्वर्गको चले गये तुझको न जाना ४ हेपापदर्शिनि तूने हमारे पिताको मारडाला हेकुलनाशकरनेवाली उनके मारने से कुलभरका नाशकिया ५ सत्यसन्ध महायशस्वी वृद्ध हमारे पिता राजादशरथ पुत्रके दुःखसे दुःखित तुझीको पायमरे६ अथवा तूने मारहीडाला वे बेचारे धर्म्मवत्सल स्त्रियोंके जाल क्या जानें यदि कहतीहै कि हमने क्योंमारा अपनेप्रिय पुत्रके शोकसे मरे तो यही बताव कि रामचन्द्रजीको क्यों उन्होंने निकाला क्यों बनको गये यह

सब तेराही तो कियाहै ७ यदि कौशल्या व सुमित्राजी पुत्रशोकसे पीड़ित तुझ दुष्टा हमारी माताको पाय जीतीही रहें तो बड़ा दुष्कर काम करें क्योंकि ऐसे दुःखमें जीना बहुत कठिन है ८ जोकहें कि रामचन्द्रही में कुछ अगुणथा जिससे तूने बनवास दिलाया सोभी नहीं वे धर्म्मात्मा तो बड़े गुरु शुश्रूषा के जाननेवालेहैं जैसे अपनी मातामें भाव रखतेथे वैसेही तुझमेंभी बरन अपनी मातासे तुझमें उत्तमभाव रखतेथे ९ तिसी प्रकार बड़ी दूरतक देखनेवाली हमारी जेठीमाता कौशल्याजीभी धर्म्म की रीतिसे तुझमें बहिनकाही भावरखतीथीं १० हेपापिनि तिस कौशल्या जीके पुत्र रामचन्द्रजीको चीर वल्कल पहिराय बनको भेज क्योंनहीं शोचती ११ अपापदर्शी शूरवीर यशस्वी रामचन्द्रजीको चीर पहिराय बनवास दिया क्या इसका कारण नहीं जानती १२ हम जानते हैं कि तू बड़ी लोभिनी है इसीसे रामचन्द्रकी ओर ख्यालनहीं किया केवल राज्यकेही लिये यह महाअन्याय तूने किया १३ हम पुरुषव्याघ्र रामचन्द्र व लक्ष्मणको बिनादेखे किस शक्तिके प्रभावसे राज्यकी रक्षा करसकें १४ क्योंकि तिन्हीं बलवान् व महापराक्रमी रामचन्द्रजी के आश्रयीहो महाराजाधिराज पिताजीभी राज्यकी रक्षा करतेथे जैसे सुमेरु पर्व्वत अपने समीपके बनके आश्रयसे शोभित होताहै १५ इससे यह राज्यकाभार अकेले कैसे उठाय सकेंगे जैसे बड़भारी गाड़ीके धुरिहा बैलका भार छोटासा बछड़ा नहीं उठा सक्ता १६ अथवा योगसे व बुद्धि के बलसे हमको राज्यभार उठानेकी शक्तिभी हो तौभी हम तुझ पुत्रको दुःखदेनेवाली दुष्टा माताको सकाम न करेंगे अर्थात् तेरामनोरथ न सिद्ध होने पावेगा कि मेराबेटा राज्यकरै व मैं सब सौतोंके ऊपरहुक्म चलाऊँ १७ यदि रामचन्द्रजीकी भक्ति तुझमें अपनी माताके समान सदा न होती तो तुझ पापिनीको छोड़ देनेकी इच्छा हमको न होती १८ हेपापिनि ऐसी बुद्धि तेरे कैसे उत्पन्न हुई जिससे साधु समाज में तेरी निन्दा हुई व हमारे पुरुषों की रीतिमें दागलगा १९ क्योंकि इस कुलमें यह परम्परा से रीति चली आतीहै कि ज्येष्ठहीभाई राजाहोता व उससे छोटेभाई उसकी आज्ञाके अनुसार चलतेहैं २० नहीं जानते कि तूने कौनसा राज्यधर्म्म देखाहै वा राज्यधर्म्मकी निरन्तर गतिही नहींजानती

कुछ हमारे समझही में नहींआता २१ यह सब राजाओं के यहाँ की रीति है कि राजपुत्रों में जो ज्येष्ठहो वही राजाहो और इक्ष्वाकुवंश में तो विशेष ज्येष्ठही राजा होता २२ तिन धर्म्मरक्षा तत्पर कुलाचारयुक्त राजाओं का धर्म्म जो अच्छी तरहसे चलाआताथा वह तुझको पाय नष्ट होगया जो कि ज्येष्ठको राज्य न मिला २३ जो कहें कि तेरे माता पिता के दोष से तेरी ऐसी बुद्धिभई सोभी नहीं कहसक्ते क्योंकि अत्युत्तम जनेन्द्र राजा का कुल जिसमें तेराजन्म फिर यह बुद्धि मोह कैसे उत्पन्न हुआ जिससे तेरी महा निन्दा हुई व होती रहेगी २४ हे पापनिश्चये तेराकाम हम न करेंगे कि जिस तूने ऐसा कामकिया कि हमारे प्राणहीजानेकी नौंबतपहुंची २५ अच्छाहम तेरा अप्रिय करनेकेलिये अभी जाय पापरहित श्रीरामचन्द्रजी को बनसे लिवालाते हैं देखते हैं तू क्या करती है २६ श्रीरामचन्द्रजी को बनसे लौटाय तिन महा तेजस्वी के दास हो सुस्थिर मनसे रहेंगे २७ इसप्रकार भरतजी अप्रियवचन कह कह अपनी माता को व्यथितकर मारे शोकके पीड़ित हो चुप होरहे कुछ न बोले जैसे मन्दराचल की कन्दरा में जाय सिंह मौन होरहता है २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रिसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७३ ॥

मारे रोष के माताकी ऐसी निन्दाकर भरतजी फिर बोले १ हे दुष्टचारिणी कैकयी हे निर्ल्लज्ज राज्यसे हमको भी तूने भ्रष्टकिया व तू भी भ्रष्टहै क्योंकि तू धर्म्मसे छोड़ दीगई हमतो सत्यवादीही हैं कोई कुछ कहहीगा नहीं पर तू भी हमारे लिये रोवेगी २ भला श्रीरामचन्द्रजी व परम धार्म्मिक राजाने तेरा क्याबिगाड़ा जिससे राजाको मारही डाला व रामचन्द्रजी को बनवास दिया ३ हेकैकेयि इसकुलके विनाशनेसे गर्भपात करानेके समान हत्या तुझको हुई इससे नरक को जा हमारे पिता जीके लोक को नहीं जायसक्ती ४ क्योंकि तूने सर्व्वलोक के प्यारे श्रीरामचन्द्रजी को बनवास दिया जिससे हमको भी महाभय हुई यह तूने बड़े घोर कर्म्म से ऐसा पाप किया है ५ हाय तेरेही कारण हमारे पिता जी मृतक हुये व तेरेही कारण रामचन्द्र जी बन में बसते हैं इससे इस लोक में हमारा भी अयश हुआ लोग कहेंगे कि इन्ही की माताहै जिसने

रामचन्द्रजीको वन पठाय अपने पतिको स्वर्ग को पठाया ६ तू माताका तो रूप धारण किये है पर हमारी पूरी वैरिणी है क्योंकि निर्लज्ज हो राज्यकी इच्छा करती है हे पति घातिनि बस अब हमसे राज्यराज्य करनेको कुछ भी न कहना ७ हाय कौशल्या व सुमित्रा आदि जितनी हमारी माता हैं वे सब तुझ कुल दूषिणी को पाय महा दुःख से दुःखित हैं ८ हमने जानलिया कि तू धीमान् धर्म्मराज महाराज केकय राज कीकन्या नहीं है क्योंकि हमारे पिताके कुलके नाशने के लिये केकयराजके गृहमें राक्षसी उत्पन्न हुई है ६ क्योंकि जिससे परम धार्म्मिक सत्य परायण श्रीरामचन्द्रजीको बनको भेजा जिसके हेतु पिताजी स्वर्गको चलेगये १० जिससे तू राक्षसी थी उसीका कर्म्म किया कि हमको बिना पिता व बिना भाइयों के करडाला इसीसे सब लोकों में अप्रिय हमको किया व आप हुई ११ व धर्म्म युक्त कौशल्याजी को बिना पुत्रकी करडाला इस महा घोर पापसे नहीं जानते किसलोक को जायगी बस नरकगामिनीही होगी और कौन लोक तेरे लियेहै १२ हे क्रूरे क्या नहीं जानती कि परम बन्धु ज्येष्ठ भ्राता श्रीरामचन्द्र जो पिताके समान थे जो कौशल्याजी से उत्पन्न हुये थे उन्ही में उनके प्राण टिके रहते १३ पुत्र माता के अंग प्रत्यंग से उत्पन्न होने के कारण हृदयसेही उत्पन्न होता इसी से माता को पुत्र के समान दूसरा प्रिय नहीं होता १४ यदि पुत्रमें सबसे अधिक माताका प्रेम न होता तो धर्म्मज्ञ देवताओंकीप्यारी देव रूपिणी कामधेनु अपने दो पुत्र बैलोंको पृथिवी तलमें हलमें नहे हुये मारे घामके ब्याकुल देख १५ जिनको कि बनाय दोपहर होगयाथा व थक गयेथे किसानने नहीं छोड़ाथा देखतेही आँशु गार गार स्वर्ग में रोदन करने लगीं १६ जहाँ कामधेनुथी उनके नीचे नीचे कहीं इन्द्रजी जाते थे सुरभीके आँशुओं के बूंद उनके ऊपर पड़े उनमें कामधेनु कीसी सुगन्धि आतीथी १७तब इन्द्रजीने ऊपरको मुखकर देखातो रोदन करती हुई अति दीन चित्त कामधेनु आकाशमें देखपड़ी १८ तिन सुरभीको शोक सन्तप्त देख देवराज हाथजोड़बड़े उदासहो बोले १६ हे सुरभि आज कल किसी ओरसे कोईभय हम लोगोंको नहींहै फिर किसलिये तुम्हारे यह शोकहै सब हमसे कहो २० जब इसप्रकार देवराजने सुरभी

से कहातो वचन बोलनेमें अति चतुर कामधेनु इन्द्रजी से बोली २१ हे देवराज आजकल राक्षसादिकों का कोई भय नहीं उनका पापतो शान्त होगया इससे आप लोगोंको कहींसे किसी प्रकारका भय नहीं हमतो अपने पुत्रोंको शोचतीहैं जो बड़े दुःखमें पड़े हैं २२ अति दुर्बल होरहेहैं तिस पर सूर्य्यके किरणोंसे सन्तप्त हैं उस किसानने मध्याह्न हुआहै अभी तक छोड़ा नहीं २३ देखो ये हमारे देहसे उत्पन्नहैं व मारे भारके पीड़ित होरहेहैं इन्हींको देख हम मारे शोकके जरी जातीहैं क्योंकि पुत्रके समान और कोई प्रिय नहींहै २४ जब इन्द्रजीने देखाकि देखोइन सुरभीके हज़ारों लाखों पुत्रहैं जिनसे पृथिवी भरी पड़ीहै तिनको पुत्रका कष्ट देख इतना कष्टहै तो पुत्रके समान अन्य कोई भी पदार्थ प्रिय नहींहै २५ इन्द्रजीने सुरभीके आँशुओंके बूंदोंको पुण्य समझ अपना व सुरभीको बड़ा समझा २६ यद्यपि सुरभीके असंख्य पुत्र हैं तथापि लोकके धारणकी कामनासे व सरल स्वभाव पुत्र वत्सलतासे २७ इ-तना शोच किया फिर असंख्य पुत्र होने परभी सुरभीको अपने पुत्रों को दुःखित देख इतना शोक हुआ फिर कौशल्याजीको बिना श्रीराम क्या कहें कि कैसे जीवेंगी २८ क्योंकि उनके तो एकही श्रीरामही पुत्रहैं व तुमने उनको पुत्र हीन करडाला तिससे तुम इस लोकमें व मरनपै पर-लोकमें भी निरन्तर दुःखही भोगोगी २९ रहे हम सोतो वही करेंगे जि-समें अपने भाई व पितासे उऋण होजायँ व संसारमें यश बढ़ै ३० वह यहहै कि महा प्रतापी व बलवान् श्रीरामचन्द्रजीको बनसे बुलाय राज्य सिंहासन पै बैठावेंगे व आप मुनियोंकी सेवा करनेके योग्य बनको चले जॉयगे ३१ हे पापे पाप सङ्कल्पे तेरा किया पाप हम नहीं धारण कर-सक्ते क्योंकि ये पुरवासी रामचन्द्रजीके बियोगसे रोय रोय हमको निहारेंगे फिर हमसे राज्य कैसे किया जायगा ३२

चौ० सो तुम पैठहु अनल मझारी । वा बन जाहु तुरत भयकारी । वा गलमें फाँसी दै मरहू । आन भाँति भल नहिं उर धरहू १ । ३३ सत्य पराक्रम श्रीरघुनाथा । अवध पठै हम होब समाथा ॥ मिटिहि तबै कल्मष बन केरो । होब कृतार्त्थ रघुबरहि फेरो २ । ३४ ईमि तोमर अंकुश तो दिस गज । सम करि क्रोध गिरथौ धरणी लज ॥ ऊर्द्ध

श्वास पन्नग सम लीन्हीं। भरत राम महँ दृढ़ रति कीन्हीं ३। ३५॥

कुण्डलिका॥

लाले पीले नयन करि शिथिल बसन नृपबार।
सकलअभूषण रहित अरि परितापन ब्यवहार॥
परितापन व्यवहार भूमि पर गिरेहु अचानक।
महायशी श्रीभरत करत बहु रुदन भयानक॥
जिमि उत्सव के अन्त पुरन्दर ध्वज गिरु हाले।
तिमि दशरथसुत भरत गिरे महि लोचन लाले ४। ३६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुस्सप्ततितमस्सर्ग्गः॥ ७४॥

बड़ी देरके पीछे मूर्च्छा जागी तब महापराक्रमी भरतजी उठके रोदन करतेहुये नेत्रोंसे अपनी माताको दुःखित देख १ मंत्रियों के बीच में बैठ माताको घुड़कने धमकने व कहनेलगे कि न तो हम राज्य की इच्छा करते हैं न अपनी इस दुष्टा माता से कुछ सलाह लिया चाहते हैं २ व जो राजाने अभिषेक की तयारी की थी उसे भी नहीं जानते क्योंकि हम व शत्रुघ्न दोनों जन तो अपने नाना के यहाँ महा पर्ब्बतस्थली में पड़ेरहे ३ व न महात्मा श्रीरामचन्द्रजी का बनवासही हम जानते न लक्ष्मण व जानकीहीजी का वनवास जानते हैं कि कैसे हुआ ४ इसतरह से रोते धोते भरतजी का बोल सुन कौशल्याजी सुमित्राजी से यह बोलीं कि ५ उस क्रूरकार्य्य करनेवाली कैकेयी के पुत्र भरत आयेहैं हमने बहुत दिनों से नहीं देखा इससे उनको देखा चाहती हैं ६ इसतरह सुमित्राजी से कह अति दुर्ब्बलगात्र व उदासीन मुख काँपतीहुई व मूर्च्छित कौशल्याजी वहांको चलीं जहां भरतजी थे ७ व महाराजकुमार भरतजी भी शत्रुघ्नको संग ले कौशल्या जी के मन्दिर को चले ८ बीचमें शत्रुघ्न व भरत दोनों भाई कौशल्याजीको देख अति दुःखितहुये व दोनों भाई लपटगये इनको देखतेही कौशल्याजी मूर्च्छितहो गिरपड़ीं ९ फिर बहुत सँभारकर रोते हुये दोनों भाइयों को देख रोदन करतीहुई भरतजी से बोलीं १० कि कैकेयी ने बड़ा क्रूरकर्म्म करके यह राज्य तुम्हारे लिये प्राप्त कराया है क्योंकि तुम्हें भीतो राज्य लेनेकी बड़ी कामनाथी सो अब अकण्टक राज्य

मिलगया ११ नहीं जानती कि क्रूरदर्शिनी कैकेयी चीर जटा धारणकर हमारे पुत्रको बनको पठै कौन गुण देखती है १२ इससे अब जहाँ हमारे, परम यशस्वी पुत्र श्रीरघुनन्दन हैं वहां कैकेयी बहुत शीघ्र हमको भी भेजदेतो अच्छाहै १३ जो कैकेयी नहीं भेजती तो हम आप सुमित्रा को संग ले जहाँ श्रीराघवहैं चली जायँगी १४ अथवा जहाँ हमारे पुत्र श्री राम तपस्या करते व दुःख भोगते हैं तहाँ तुम्हीं हमको पहुंचावो १५ यह धन धान्य संयुक्त हाथी घोड़ा रथ सहित बड़ा भारी राज्य तुम को सौंपती हैं सो भोगो १६ इत्यादि बहुत क्रूर बचन कौशल्याजी ने भरतजी को कहे यद्यपि भरतजी इसविषय में निष्पापथे पर ऐसे क्रूर बचनसुन बहुत ब्यथित हुये जैसे किसीके बड़ा भारी घाव लगा हो वह दुखैजाय १७ महाशोक ग्रस्तहो भरतजी कौशल्याजी के चरणोंपै गिरपड़े व भ्रान्तचित्त हो बहुत रोदन कर प्रथम तो मूर्च्छित होगये फिर चैतन्य हुये १८ व महाशोक ग्रस्त रोदन करती हुई कौशल्याजी से हाथ जोड़ बहुत हालते कांपते बोले १९ हे आर्य्ये हमारी प्रीति श्री-रामचन्द्र जी में जानती हो कि कितनी बड़ी भारी है फिर ना हम उस विषय को कुछ जानते बूझते हैं इसीसे पाप रहित भी हैं तिस पर भी हमारी निन्दा करतीहो २० सत्य सन्धव सज्जनोंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जिसकी सम्मतिसे बनको गयेहो वह शास्त्रभी पढ़ै तोउसको नआवे२१ जिसके मतसे बड़ेभाई श्रीरामचन्द्रजी बनको गयेहों वह नीचपापी चमार आदिकोंका सेवकहो व सूर्य्यनारायणके सम्मुखहो दिशा पेशाबकरै व सोतीहुई गायको पादसे मारै २२ जिसके मतसे श्रीराम बनको गयेहों उसको वह दोषहो जो कि बड़ाकाम करालेने परभी नौकर चाकरको नौ-करी नदेनेसे होताहै २३ व जिसके सम्मतसे श्रीरामचन्द्र बनको गयेहों उसको वहपापहो जोकि पुत्रवत् प्रजापालन के लिये जन्म लियेहुये राजा को प्रजाओंके मारनेसे होताहै २४ जिसके मतसे श्रीरामभद्र बनकोगये हों उसको वहपाप लगै जोउन राजाओंको होताहै जोप्रजासे छठां हीसा पोत बनजर भेंटलेतेहैं पर उनका पालननहींकरते २५ जिसके मतसे श्री रामचन्द्रजी बनको गयेहों उसको वह पापलगै जो उनलोगोंको होता है जो ब्राह्मणोंसे पूजापाठ यज्ञादि कराय दक्षिणा देनेकोकहतेहैं परनहीं

देते उसके ऊपर ब्राह्मण लोगोंके शाप देनेसे होताहै २६ जिसके अनुमत से श्रीरामचन्द्रजी बनको गयेहों उसको वह पापहो जो हाथी घोड़ारथ युक्त व शस्त्रास्त्र युक्त संग्राम में भागने से होताहै २७ जिसके अनुमत से श्रीरामचन्द्रजी बनको गयेहों उसको वह पापहो जोसकल शास्त्र के सूक्ष्म सूक्ष्म अर्थों को पढ़कर भुलादेनेसे होताहै २८ जिसके अनुमत से श्रीरामचन्द्र बनको गयेहों वह दुष्ट विशाल वक्षस्थल आजानु बाहु व चन्द्रभास्कर के समान तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीको राज्यसिंहासन पै बैठे हुये नदेखै २९ व जिसके अनुमतसे श्रीरामचन्द्रजी बनको गयेहों उसको वह पापहो जोयज्ञमें बिनादेवताके अर्पणकी खीरखिचरी व खसी खानेसे व गुरूका अपमान करनेसे होताहै ३० व जिसके मतसे श्रीरामभद्र बनको गयेहों उसको वहपापहो जोगायोंको पैरछूने व मातापिता गुरू आदि बड़ेलोगोंके सामने ढिठाई केसाथ बोलने व मित्रके सङ्ग बैर करनेसे होताहै ३१ व जिसके अनुमतसे श्रीरघुनाथ बनको गयेहों वह दुष्टात्मा उसपापको प्राप्तहो जोकि किसीसे विश्वासघात करने व कह कर फिर नकरनेसे होताहै ३२ व जिसके मतसे श्रीराम बनको गयेहों उसको वह पापहो जोउपकार न करनेवाले व नेकी न माननेवाले व सज्जनोंसे त्यागेजानेवाले व निर्लज्जों व संसार भरसेबैरकरने वालों को होताहै ३३व जिसके मतसे श्रीरघुनन्दन बनको गयेहों उसको वहपाप लगै जोउनलोगोंको होताहै जोकि पुत्र स्त्री सेवक सेवकी आदि उसीस्थान पै बैठेहैं आप अकेले मीठी चीज़भोजन करतेहैं, ३४ जिसके अनुमतसेश्री राम बनको गयेहों उसको उसके योग्य स्त्री पुत्र न मिलै न कोई धर्म्म शास्त्रके अनुसार क्रियाही होसकै केवल ऐसाही मृतक होजाय ३५ व जिसके मतसे श्रीराघव बनको गयेहों वह अपनी स्त्रियों में सन्ततिका मुख न देखै सदादुःखीही बनारहै व उसकी अल्पायु होजाय ३६ व जिसके मतसे श्रीरामभद्र बनको गयेहों उसको वह पाप हो जो राजा स्त्री बालक व वृद्धके मारडालने से होता व जो निरापराध सेवक के परित्याग से होताहै ३७ जिसके अनुमत से श्रीराम बनको गयेहों उसको वह दोष लगै जो लाह मधु मांस व विष आदि निषिद्ध बस्तुओं को बेंच बेंच द्रव्य एकत्रकर उसीसे गृहवाले वा कुटुम्बियों के पालन पोषण करने

वालों को होताहै ३८ जिसके अनुमतसे श्रीरामजी बनको गयेहों वह दुष्ट महा संग्राम से भागे व शत्रुलोग उसे बँधुआ करें ३९ व जिसके मतसे श्रीरामचन्द्र बनको गयेहों वह हाथमें मुर्दाकी खोपड़ी लिये फटे कपड़े पहिरे भीखमाँगताहुआ पृथिवीमें सिड़ीके समान घूमाकरै ४० व जिसके मतसे श्रीरामचन्द्रजी बनको गयेहों वह सदा मदिरा पानकरने व स्त्रियों के संग मैथुन करने व जुआ खेलनेमें प्रसक्तरहै व काम क्रोधके मारे सदा उसका निरादर होतारहै ४१ जिसके अनुमतसे श्रीराघव बनको गयेहों उसका मन कभी धर्म्म में न लगे सदा अधर्म्मही का सेवन किया करै व सदा अपात्रही को दान दियाकरै जिसके देनेसे नरकपात होताहै ४२ जिसके मतसे श्रीराम बनको गयेहों उसका विविधभांति से बटोराहुआ सहस्रों रुपयोंका धन चोर चोराले जावें ४३ जिसके अनुमतसे बड़ेभाई श्रीरामको बनवास हुआहो उसको वह पापलगै जो प्रातःकाल व सायङ्काल की सन्ध्यामें शयन करनेवाले को लगता है ४४ व जिसके अनुमत से श्रीरामबनको गयेहों उसको वहपाप लगै जो अग्नि लगानेवाले व गुरूकी शय्या पै बैठजानेवाले व मित्रको मारडालनेवाले को लगता है ४५ जिसके अनुमतसे रामचन्द्रजी बनकोगयेहों उसको देवता पितर व माता पिताकी सेवा न करनेको मिलै ४६ जिसके अनुमत से श्रीराम बनको गयेहों वह सज्जनोंकेलोक व सज्जनोंकीकीर्त्ति व सज्जनसेवित कर्म्मोंसे इसीसमय भ्रष्टहोजाय ४७ जिसके मतसे श्रीराम बनको गये हों वह आजानुबाहु व चौड़ीछातीवाला होकर भी अपनी माताकी सेवा छोड़ कुमार्ग्ग में चलै ४८ व जिसके मतसे श्रीरामजी बन को गये हों वह बहुत सेवकहोने पर भी दरिद्र हो व ज्वररोगसे सदा पीड़ित रहै बार बार क्लेश सहाकरै ४९ जिसके अनुमतसे श्रीरामचन्द्र बनको गये हों वह अपना मनोरथ जनानेवाले ऊपरको दृष्टि कियेहुये अर्थीलोगों की आशा न पूरी करसकै ५० जिसके मतसे श्रीराम बनको गयेहों वह चुगुल अपवित्र से अधर्म्मात्मा राजासे डरताहुआ नानाप्रकार के कपट करता कराता जहाँ तहाँ फिराकरै ५१ जिसके अनुमतसे श्रीरामचन्द्र जी बन को गयेहों वह दुष्ट ऋतुसमय में स्नान की हुई मैथुन करानेकी अभिलाषा किये ऐसी अपनी पतिव्रता स्त्रीके सङ्ग भोग न करसकै ५२

जिसके अनुमतसे श्रीरामचन्द्रजी बनको गयेहों उसको वह पाप लगै जो उस ब्राह्मण को लगता है जिसके पुत्र मारे भूखोंके मरजायँ व वह पालन न करसकै ५३ व जिसके अनुमत से श्रीराम बनकोगयेहों वह पापात्माब्राह्मण के लिये होतीहुई पूजाको मिटा दे व जिस गायके छोटा बछरा हो उसको दुहै ५४ व जिसके अनुमतसे श्रीराम बनको गये हों वह अपनी विवाहिता पतिव्रता स्त्रीकोछोड़ पराई स्त्रियोंके सङ्ग मैथुनकरै व सब उसके धर्म्म कर्म्म जातेरहैं क्योंकि अपनी स्त्रीकोछोड़ परस्त्रीगमन में सबधर्म्म जातेरहतेहैं ५५ व जिसके अनुमतसे श्रीराम बनकोगयेहों उस को वह पापलगै जो जल भ्रष्ट करडालनेवाले व विष भोजन करानेवाले को लगताहै ५६ जिसके अनुमतसे श्रीरामजी बनकोगयेहों उसको वह पापलगै जोकि उसके पास जलभराहो व प्यासेमनुष्यको वहाँका करटार पानीन पिलानेवालेको लगताहै ५७ जिसके अनुमतसे श्रीरामबनकोगये हों उसको वह पापलगै जो उन मध्यस्थों को लगता है जो उचित विचार नहीं करते वादी प्रति वादियों मेंसे जो उनके अधीन वा उनका कोई सम्बन्धी है उसके जीतने का उपाय चोरीसे बता देते हैं ५८ इस तरह अनेक सौगन्दें खा पति पुत्रहीन कौशल्याजीको समझाते हुये महाराज कुमार भरतजी परम दुःखीहो पृथिवी पैगिरपरे ५९ तब नानाप्रकार की सौगन्दें खाते हुये मूच्छित व शोक से सन्तप्त भरतजी से कौशल्याजी बोलीं ६० हे पुत्र यद्यपि तुम इन सौगन्धोंसे हमारे प्राणोंको रोकते हो तथापि तुमको सौगन्द खानेसे कष्टित देख हमको अधिक दुःख होता है ६१ हे बत्स बड़े भाग्य की बातहै कि तुम्हारा उत्तम लक्ष्मण सहित आत्मा अपने धर्म्म से नहीं चलायमान हुआ इससे हमने तुमको जाना कि तुम सत्य प्रतिज्ञहो जाव जो लोक सज्जनों के लियेहैं उनकोप्राप्तहोओ ६२ यहकह भ्रातृ वत्सल भरतजीको कोरामें बैठाय छाती से लपटाय महादुःखित हो कौशल्याजी रोदन करनेलगीं ६३ महात्मा भरतजीकाभी मारेदुःखके पीड़ित अति मोहसे मन व्याकुलहोगया ६४

दो० ॥ बहुत कहत चेतन रहित गत मति गत महि माहिँ ।
पुनिश्श्वास उसास युत भरतहि गई क्षपाहिँ १ । ६५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७५ ॥

इस तरह शोकसे सन्तप्त कैकेयीके पुत्र भरतजी से उत्तम वचन बोलनेवाले वसिष्ठजी बोले १ हे राजपुत्र अब इस शोक करनेसे क्याहै महाराज दशरथजी स्वर्ग्गबासी हुये उनकी जो क्रियाहै करो २ वसिष्ठजीके ऐसे वचनसुन पृथिवीमें परेहुये भरतजी उठकेप्रेतके निमित्त जोजो कार्य्य चाहिये करनेके लिये आज्ञा दी ३ व आप जाय देखा तो महाराज का देह तेलकी नाव में तो धरही दिया गया था उसे उसमें से निकलाय भूमिमें स्थापितकराया उससमय राजाकी लोथ बनायपीली होगई थी पर तेलमेंरखने के कारण सरी नहीं थी यही जान पड़ता था कि मानों शयन कर रहे हैं ४ उसके पीछे नानाप्रकारके रत्नोंसे जड़ेहुये पलँग पै उत्तम उत्तमबिछौने बिछाय उसपर राजाको पहुड़ाय अतिदुःखितहो भरतजी रोदन करनेलगे ५ हे राजन् आपने हमको बिदेशको पठै आने भी न दिया बीचही में रामचन्द्रजी को बनबास भी दे दिया व लक्ष्मणजीको भी यह कौन बिचार किया ६ हे महाराज पुरुषसिंह अमानुष कर्म्म कर्त्ता श्रीरामचन्द्र रहित दुःखित हमलोगों को छोड़ कहाँ जाते हो ७ हे तात तुमतो स्वर्ग्ग को चले रामचन्द्रजी भी बनको चलेगये अब स्थिरचित्तहो इस नगरमें योग क्षेम कौन करेगा ८ हेराजन् तुम्हें बिना यह पृथिवी बिधवा होगईनहीं शोभित होती व यहपुरी चन्द्ररहित रात्रिके समान शोभाहीन हमको जानपड़ती है ९ इसतरह दीनमन हो रोतहुये भरतजीसे वसिष्ठजी फिरबोले १० हे महाबाहो अब महाराज के जो जो प्रेतकर्म्म हैं उनको बिना बिचार जैसे हमबताते जायँ करो ११ वसिष्ठजीके वचनसुन बहुतअच्छा कह भरतजी पितृमेधकराने के लिये ऋत्विजपुरोहित व आचार्य्य लोगोंको बहुत जल्द बुलवाया १२ उन लोगों से जो राजाके अग्नि मर जानेके कारण अग्न्यागारसे ऋत्विजोंने बाहर करदियाथा उनको बरवाया व उनमें आहुतें करवाईं १३ तिसके पीछे निर्जीव राजाकी लोथ पाल्कीमें पहुड़ाय रोदन करते हुये परिचारकलोगोंने उठाया १४ व राजाकी पालकी के आगे आगे चाँदी सोना व नानाप्रकारके रेशमी आदि उत्तम उत्तम वस्त्र लुटाते हुये हजारों मनुष्य चले १५ ऐसा मार्ग्ग में करते कराते सरयू तीरपै पहुँचे वहाँ चन्दन आगर गुग्गुल साँखू पद्म काष्ठ देवदारु आदि लाय उत्तम पुरी अब

बनाई १६ इस चितामें और भी नानाप्रकारके सुगन्धित पदार्थ डार ऋत्विक लोगोंने अपने हाथोंसे उठाय राजाको उसपै पहुड़ाया १७ व भरतजीसे चिता में अग्नि लगवाय ऋत्विक लोग उस समय के उचित मन्त्र जपनेलगे सामवेद पाठी ब्राह्मण लोग आय सामवेद गाने लगे १८ इसके पीछे पालकी पीनस रथ आदि सवारियोंपै सवार महाराज दशरथजीकी रानियाँ वृद्ध लोगों के साथ नगर से निकलीं १६ वहाँ आय चिताकी अग्नि में प्राप्त राजाकी प्रदक्षिणा भरत व कौशल्यादि राजस्त्रियों के संग ऋत्विजोंने की २० उस समय सहस्रों महाराज की कौशल्यादि स्त्रियोंका रोदन चिल्लातीहुई कराकुलों के शब्द के समान सुनाई देता था २१ इसप्रकार महाराजकी स्त्रियां रोदनकरतीहुई अपनी अपनी सवारियों पै चढ़ बनाय सरयूजीके निकट आई २२ ॥

कुण्डलिका ॥

आये करि जलदान सब भरत पुरोहित लोग ।
नृपमहिषी ऋत्विज सहित साधे बहु बिधि योग ॥
साधे बहु बिधि योग सकल आये पुर माहीं ।
रोवत नानाभाँति काहु तन मन सुधि नाहीं ॥
दशदिन लग सब लोग भूमि पर सोवत भाये ।
ब्रह्मचर्य्य सों रहे दुखी निज निज गृहआये १ । २३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषट्सप्ततितमस्सर्गः ॥ ७८ ॥

इसतरह दश दिन तक सब नियमसे रहे व भरतजी दशगात्रादि करते रहे जब ग्यारहवाँ दिन आया तो एकादशाह श्राद्धादि क्रिया अव बनाय पवित्र हुये जब बारहवाँ दिन आया तो सपिण्डनादि श्राद्ध किया १ व ब्राह्मणोंको धन रत्न बहुत अन्न छाग चाँदी सुवर्ण गाय आदि दानदिये २ बहुतसे दास दासियाँ व रथ पालकी तामदान घोड़ा हाथी ऊंट आदि वाहन तम्बू कनात साह मियाना आदि व ऐसे भी घर बने बनाये सब सामग्री भरे पुरे भरतजीने राजाके निमित्त ब्राह्मणोंको दिये ३ [illegible] पीछे तेरहवें दिन महाबाहु भरतजी मारे शोकके मूर्च्छितहो[illegible]रने लगे ४ फिर रोदन करते करते वहाँ गये जहाँ राजाका

दाह कियाथा चिता स्थान देखतेही ऐसे गद्गदा उठे कि बोलही बन्द होगया बड़ी देर सँभार यह बोले ५ हे तात जिन भाई श्रीरामचन्द्रजीको हमें आपने सौंपाथा वे तो वन को चलेगये अब शून्य होगया हमारा रक्षक कोई नहीं रहा इसी बीचमें आपने हमें छोड़ दिया६ हे तात जिस अनाथमाता कौशल्याजीके पुत्र रामचन्द्र कि उनके शरण थे तिनको वन को पठै व कौशल्याजीको अनाथ कर कहाँ चलेगये ७ यह कह जहाँ महाराज दशरथजी के हाड़ जरे थे व स्वेत रंगकी भस्म परीथी पिताके शरीरका स्मरण कर महाविलाप करते करते वहीं बैठ गये ८ व रोते रोते दीनहो पृथिवी में गिरपरे जैसे बड़ाऊंचा इन्द्रध्वज उठाने के समय गिरने से विदित होता ९ उस समय जितने भरतजीके नौकर चाकर मन्त्री दीवान् आदिथे सब मारे शोकके व्याकुल आये जैसे राजा ययातिके मरण समयमें सब ऋषि लोग आय व्याकुल चित्त हुये थे १० शत्रुघ्नजी भी भरतजीको शोक सागर में डूबतेदेख राजाका स्मरण कर मूर्च्छितहो भूतलमें गिरपरे ११ व अति दुःखितहो बनाय अचेत होके पिताके गुण व भूषणादि भूषित अङ्गोंका स्मरण करतेहुये उन्मत्त मनुष्य समान विलाप करने लगे १२ व मन्थराकी युक्ति पूर्वक उक्ति उससे उत्पन्न शोक सागर जिसमें कैकेयी के टेढ़ेमेढ़े वचनही घड़ियाल थे राजाका वरदान वहीं अथाह अचल जलथा ऐसे समुद्रमें रोदन करते करते शत्रुघ्नजी ने भरतादिकों को डुबोदिया १३ रोदन करते करते यह बोले हे तात अति सुकुमाराङ्ग अभी वाल्यावस्था को प्राप्त जिनको आप अबतक दुलरातेही थे सो ऐसे भरतजीको रोते छोड़ आप कहाँको चलेगये १४ आजतक तो भोजन करने व पीने व वस्त्र भूषणादि धारण करने के लिये हम सबलोगों को आपप्रेरणा करते रहते थे अब कौन कहेगा कि देर होतीहै हमारे प्राणप्यारे भोजन करो वा सर्व्वतआदि पिओ व उत्तम उत्तम भूषण वस्त्र धारण करो १५ हाय आपऐसे धर्म्मज्ञ व महात्मा राजा बिना यह पृथिवी अवदारण केसमय फटनहीं गई १६ हाय पिताजी तो स्वर्ग्गवासी हुये व बड़ेभाई श्रीरामचन्द्रजी वनकोचलेगये अबहमें जीनेसे क्याहै हमतो अग्निमें प्रवेश करजायँगे १७ अथवा पिता व भाईसे हीनहो हम इक्ष्वाक्वादि राजाओं की पालित पुरी अब

बिना राजाकी परीहै इसमें अब न पैठेंगे किन्तु तपोवनको हमभी चले-जायँगे १८ तिनदोनों जनोंका इसतरह से रोदन व कष्टदेख सब नौकर चाकर मन्त्री पुरोहितादि बहुत दुःखित हुये १९ व भरत शत्रुघ्न दोनों भाई तो उदासीन चित्त महाथके से पृथिवी में गिरकर छटपटाने व लोटने लगे मानो सींग टूटेहुये दो बैलगिरे छट पटाते हैं २० इनलोगों की यह दशा देख परम चतुर व सर्व्वज्ञ श्रीरामचन्द्रादि व राजादशरथ के पुरोहित वसिष्ठजी अपने हाथोंसे भरतजीको उठाय यह वचनबोले २१ हे तात तुम्हारे पिताके दग्ध का यह तेरहवां दिनहै व अस्थिसञ्चयन श्राद्ध अभी बाकीहै इसके करनेमें तुम क्या विलम्ब करतेहो २२ संसार में तीन द्वन्द्वहैं प्रथम भूख प्यास दूसरा शोकमोह तीसरा जरामृत्यु वरन छः द्वन्द्वहैं जन्म मरण व लाभ अलाभ सुख दुःख येबातें सब प्राकृती मनुष्यों को होतीहैं तुमसरीषे प्राकृतिक भिन्न बिलक्षण लोगोंको इनमें न फसना चाहिये २३ वसिष्ठजी ने तो ऐसाकह भरतजी को समझाया व सुमन्त्रजी ने शत्रुघ्नजी को उठाय बहुतसी बातें संसार की अनित्यता की सुनाय समझाया २४ दोनों जनोंके समझानेसे ये दोनों भरत व शत्रुघ्नजी उठके बैठे जैसे वर्षा व घामसे उदासीन इन्द्रध्वज २५ ये दोनोंजनआँशुपोंछते व लालनेत्र किये दीनताके साथबोले उसी बीचमें जो कुछ क्रिया करने को बाकीथी लोगोंने कहाशीघ्र कीजिये २६ ॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्तसप्ततितमस्सर्ग्गः ७७

तेरहें दिनकी कृत्यतो जोथी उसको समाप्तकर शत्रुघ्नजी ने विचारा तो भरतजी का रुख जानपरा कि श्रीरामचन्द्रजी के आनने के लिये यात्रा किया चाहते हैं व मारेशोक के सन्तप्त भरतजी से बोले १ कि जो श्रीराम महा पराक्रमी व सब प्राणियों के शरणद व सबके आत्मा सोभी अपनी स्त्रीके सङ्ग बनको भेजेगये व दुःख में परे २ हम यह बड़ा शोच करते हैं कि भला श्रीरामचन्द्रजी तो किसी बात का सङ्कोच कर राजासे कुछ न बोले होंगे परमहाबलवान वीर्य्य सम्पन्न जिनका लक्ष्मणजी नामहै उन्होंने राजाको इस कर्म्म से रोंक रामचन्द्र जी को इसवनवाससे न छोड़ाया ३ जोकहो कि जब राजाकीआज्ञा बनजाने

के लिये होचुकी तब क्या लक्ष्मण जी करें जो प्रथमही न्याय को देख राजाको क्यों नहीं रोंकदिया कि ऐसी आज्ञाही नदेते नहीं फिर उनकी आज्ञाहीको कौन ठीकथा क्योंकि वे तो स्त्रीके वशीभूतथेही कुमार्ग्गमें तो आरूढ़हीथे ऐसे लोग जो चाहें आज्ञा दिया करें ४ लक्ष्मणजी के छोटे भाई शत्रुघ्नजी ऐसा कहीरहेथे कि सब उत्तम उत्तम भूषण वस्त्र धारणकिये कुबरी मन्थरा पूर्व्वके दरवाजे पर देखपरी ५ वह उस समय सर्व्वाङ्ग में चन्दनसार लगाये रानियों व राजाओंके योग्य वस्त्र धारणकिये विविध प्रकारके भूषणोंसे भूषित ६ क्षुद्रघण्टिका वजड़ाऊ कमरपट्टी बांध अन्य सब उत्तम उत्तम गहना पहिरे बड़ी शोभाको प्राप्त मानों राज्य उन्हींको मिलगयाथा कैसी शोभित होतीथी जैसे नानाप्रकार के भूषण पहिरे बालीकी स्त्रीतारा शोभित होतीथी ७ उसको ऐसी बनीठनी रँगी कुही देख महापाप करनेवाली जान द्वारपाल ने शत्रुघ्नजीसे कहा ८ हे महाराज कुमार जिसके कारण रामचन्द्रजी बनको गये व आपके पिता देह छोड़ स्वर्ग्गको गये वह यही निर्लज्ज पापिनीहै अब आपको जोरुचै इसको कीजिये ९ शत्रुघ्नजी इस वचनको सुन व मन्थराको देख बहुत दुखीहुये व भीतरके रहनेवाले सबलोगोंसे बोले १० कि इसदुष्टाने हमारे भाइयों को व पिताजीको अतिही कठोर दुःख उत्पन्न किया इससे यह अपने क्रूर कर्म्मका फल भोगै अर्थात् इसे मारही डारो अन्य कोई दण्ड इसके योग्य नहीं ११ यह कह शत्रुघ्नजीने उसकी सखियोंके बीचसे जबरदस्ती उसे खींच पृथिवीमें पटका कि ऐसा जोरसे चिघरी कि उसके शब्द से घर भरगया १२ मन्थरा की सखियां उसकी यह दशा देख व शत्रुघ्नजीको क्रोध किये जान सबकी सब जहाँ तहाँ भाग खड़ी हुईं १३ व अन्यत्र बटुर सबोंने सम्मत किया कि जैसेही मन्थराको मारचुके हम लोगोंकोभी मारहीडारैंगे क्योंकि हमभीतो उसीकी सखियाँहैं १४ इससे आवो सब जनी अतिदयावती परमदान देनेवाली धर्म्मज्ञा व यशस्विनी कौशल्याजी की शरणमें चलें वही अब हम लोगों को बचासक्ती हैं और अब कैकेयी आदि कोई नहीं बचासक्तीं १५ यह सब तो ऐसा बिचार कौशल्याजी की शरण को गईं यहाँ शत्रुघ्न जी मारे रोषके लालपीले नयन व लाल मुखकर चिघरती हुई मन्थरा के मूंड़के बार पकड़ भूमि में

घरघरायखींचा १६ कई एक घसीटे इधरसे उधर उधर से इधरकिये कि नानाप्रकार के चित्र विचित्र गहने जो वह पहिने थी सबके सब निकल निकल पृथिवी में गिरपरे १७ उन सब फूटे टूटे गहनोंसे वह राजमन्दिर उस समयकैसा शोभित हुआ है जैसे शरदऋतु का आकाश नक्षत्रोंसे शोभित होता है १८ यह दशा देख कैकेयी जी मन्थरा के छोड़ाने को दौड़ीं कि मन्थरा को तो पकड़ेही थे एकहाथ से कैकेयी को भी ज़ोर से पकड़ मारेक्रोधके झिकझोर बड़े कड़े असह्य बचन कहे १६ उन शत्रुघ्नजीके कठोर वचनों व झिझकोरने से कैकेयी बड़ी दुखीहो जाना कि क्या आश्चर्य्य मारही न डालें शत्रुघ्नके भयसे काँपतीहुई अपने पुत्र भरतजी के पीछे लुकी २० शत्रुघ्नजी को महा क्रोध किये देख भरतजी बोले अये प्राणप्रिय स्त्रियां सब प्राणियों से अबध्य होती हैं इस्से अब जाने दीजिये मन्थराके अपराध क्षमा कीजिये २१ और हम क्या करें जो जानते कि धर्म्मात्मा श्रीराम कैकेयीके मारडालनेपै हमको मातृघातक समझ हमारी निन्दा न करते तो इस पापिनी दुष्टचारिणी कैकेयीको अभी मारडालते २२ कुछ कैकेयी केही मारनेपै नहीं इस दुष्टा मन्थराके मारनेपै भी जो श्रीरामचन्द्र जानेंगे तो वेतो धर्म्मात्माहैं स्त्री बधका दोष जान हमसे तुमसे दोनोंसे प्रीति कौन कहै वार्त्ता भी न करेंगे यह हम निश्चय जानतेहैं २३ भरतजीके ऐसेवचनसुन लक्ष्मणजीकेछोटेभाई शत्रुघ्नजी उस दोषसे निवृत्तहुये व बनाय मूर्च्छित मन्थराकोछोड़दिया २४॥

चौ० अति दुःखित लै श्वास उसासा। रोदन बहुबिध करत खुलासा॥
तब मन्थरा कैकयी चरणा। पकरे रोई जात न बरणा १। २५॥

कुण्डलिका॥

रिपुसूदन विक्षेपसों मूर्च्छित कम्पित गात।
देखि मन्थरहि कैकयी कहिकहि धीरे बात॥
कहि २ धीरे बात बहुतविधि त्यहि समुझावा।
वागुरवश जिमिक्रौञ्चि मन्थरा बहुदुखपावा॥
उर्द्ध्वश्वास पुनि लेय नयन खोलन अरु मूंदन।
करत विकल सब अङ्ग भले कूट्यहु रिपुसूदन २। २६॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे ऽष्टसप्ततितमस्सर्ग्गः॥ ७८॥

इसतरहसे तेरहवांदिन बीता जब चौदहवांदिन आयातो प्रातःकाल राजकार्य्य करनेवाले लोग इकट्ठे हो आय भरतजीसे बोले १ ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र व महावली लक्ष्मणजीको वनको पठै जो हम लोगोंके बड़े स्वामी राजा दशरथजी थे आप स्वर्गको चलेगये २ अब यह राज्य बिना राजा का पड़ाहै इससे हे राजकुमार हम लोगों के राजा आप होवें जो कहिये कि ज्येष्ठ भाई रामचन्द्र जीकी विद्यमानता में हमको राज्यलेनेसे अपराध होगा इससे यदि उनकी आज्ञा न होती आप जबरदस्ती लेते तो दोष होता बड़े भाई की सलाह से छोटेको राज्य करनेमें कोई अपराध नहीं लगसक्ता ३ हे राजपुत्र कुछ हमीं लोग नहीं कहते देखिये अभिषेक की सामग्री लिये ये सब राजसेवक मन्त्री पुरोहितादि सब खड़े हैं ४ इसलिये हे भरतजी अपने पिता पितामहादिकों का राज्य लीजिये अपना अभिषेक कराइये व हम लोगों की रक्षा कीजिये ५ यह सुन व जितने पात्र अभिषेक वाली वस्तुओं से भरेथे सबकी प्रदक्षिणा कर परम व्रतधारी भरतजी सब लोगोंसे बोले ६ इस हमारे कुलमें आजतक ज्येष्ठही राजा होता चला आयाहै इससे इसकुल के उचित यहीहै आप लोग चतुर होके ऐसा न कहें कि तुम्हीं हमारे राजा होजाव ७ हमारे भाइयों में सबसे बड़े श्रीरामचन्द्रजी हैं वही राजाहोंगे हम तो चौदह वर्षतक उनकी बदली वनवास करेंगे ८ इसलिये बड़ी भारी चतुरंगिनी सेना तैयार हो ज्येष्ठ भाई श्रीरामचन्द्रजी को हम वनसे लिवा लावेंगे ९ व यहजो अभिषेक की सामग्री इकट्ठा है यहभी रामचन्द्रजी के लिये संगही चलै हमभी चलेंगे १० व वहीं श्रीपुरुष सिंह श्रीरामचन्द्रजी को अभिषेक करके यहां लावेंगे जैसे यज्ञसे अग्निको लोग लाते हैं ११ ये जो हमारी दुष्टमाता कैकेयी हैं इनका मनोरथ तो हम न करेंगे इनका विचार तो हमको राजा बनाने व रामचन्द्र जीको वनवास कराने का है पर उसके बिपरीत रामचन्द्रजीही राजा होंगे व हम महा कठिन वनमें बसेंगे १२ अब प्रथम खनिया बेलदार आदि लोगों को भेजो कि वे मार्ग्ग में जहां खाली ऊंचाहो उसको समान करदें व बहुत चतुर लोग मार्ग्ग की रक्षाके लिये भी जायँ जिसमें कहीं से किसीको किसी प्रकार का भय नहो १३ इस तरहसे जब रामचन्द्र के हेतु भरत

जीने कहा तो सब लोग यह उत्तम बचन बोले १४ कि ऐसा कहते हुये आप को लक्ष्मी व शोभा प्राप्तहो जो कि ज्येष्ठ राजपुत्र श्रीरामचन्द्रजी को पृथिवी दिया चाहते हो १५ ॥

दो० नृपसुत तब उत्तम बचन सुनत सुखद सब काहु ।
हर्षज रोदन बिन्दु सब नयन बहत लहि लाहु १ ।१६
इमि बोले सब सुनि सुखी ह्वैगत शोक समूह ।
मार्ग्ग सुधारन हेतु तब बचन गयेनर ब्यूह २ ।१७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकोनसप्ततितमस्सर्ग्गः ७६ ॥

अब भरतजीकी आज्ञा पाय सुमन्त्रजी के कहनेसे आगे आगे सुन्दर मार्ग्ग बनाने व जहाँ जहाँ निवास करनाहै मन्दिरादि बनादेने के लिये भूमि प्रदेशज्ञ लोग चले जो कि पृथिवी देखतेही जानलेते कि यह देश सजलहै व निर्ज्जल व सूत्रकर्म्ममें विशारद लोगभी चले जो मन्दिरादि बनाने में सीधेसूत लगाने में चतुरथे जितने चले सब अपने अपने कर्म्म करनें में निपुण जहाँ जिसका काम परै बड़ी शूरताके साथ कर्म्म करनें लगते व बहुत खनक लोग चले जो कुआँ बावली आदि खोदने में चतुर थे व यन्त्रक लोगभी जोकिनदी नार आदि उतरनेके लिये नाव घरनई आदि यन्त्र तुरन्त बनासकें १ बहुतसे कर्म्मान्तिक लोगचले जोसाधारण रीतिसे मंजूरी पानेपै सबकाम करसकें व स्थपति लोग चले जो थवइयों के कर्म्म करनेमें प्रधान होतेहैं यन्त्रकोविद लोगचले जो नावादि सबवस्तु बनानेमें पण्डितथे वर्द्धकि जोबढ़ई लोगहैं उनके झुण्डके झुण्ड चलेमार्ग्गी लोगचले जो वनकी गलीअच्छी तरह रखाने जानतेथे तथा वृक्ष तक्षक लोग चले जोकि गलीमें झुंकेझुंकाये वृक्षोंकी डारें काटनेमें निपुण थे २ व सूपकार लोग चले जो सबके लिये भोजन बनाने में निपुण थे व सुधाकार लोग जो धवरहरादिकों की भीतोंमें मिट्टी पाषाणादि लगाने में चतुर थे व बंश कर्म्मकृत् लोग जो बांसका वकला काढ़ने छोलनेमें तत्पर थे व जो लोग उस मार्ग्गमें कभी न कभी गये थे वा जिनको विदेश की प्रक्रिया अच्छी आतीथी वे सब आगे आगे चले ३ रामचन्द्रजी के लिये चलेहुये उनलोगोंके झुण्डका वेग ऐसा शोभितहुआ जैसे पूर्णे

मासीके दिन समुद्र का वेग शोभित होताहै ४ वे लोग अपनी अपनी जातिके झुण्डके झुण्डोंको संगले जोकि सब कर्म्मोंके करने में चतुरथे व सब प्रकार की उपयोगिनी सामग्रीले आगेचले ५ वहांजाय मार्गके अवरोधक जितने लता बल्ली झाली वृक्ष ठूठ व पत्थर टीले आदिथे सब को काट खोद पाटपीट सुधारदिया ६ जहां कहीं मार्ग्गके निकट निकट वृक्ष नथे वहाँ नये वृक्ष लगादिये जहां कहीं इधर उधर डालें बढ़आई थीं वहां कुल्हाड़ी फरसे हँसिया बांका आदिसे छिनगा दिये ७ कोई कोई बलवान् लोग अति पुष्ट ठूंठोंको जो बायुके वेग व मनुष्यादिकों के हिलाने से न हिलतेथे उखार उखार बहा देते व जितने दुर्गमस्थान थे सबको खोद पीटपाट ठीक करते ८ और लोग मार्ग्गके बीच व बहुत निकटवाले कूपों को मिट्टी धूलि आदि डार पाट देते व जहाँ कहीं गड़हे गुड़हे आदिथे उनको समान करदेते ९ व जहाँ कहीं छोटी छोटी नदियां व नाले मिलते कोई कोई लोग उनमें पुलबांध देते जहां कहीं सिटकी खपटा कांकर आदि परेथे उनको बटोर बहायदेते जहां कहीं जल आने की रुँकावट थी वहां उस अवरोधक को बिगाड़ देते १० सब थोड़ेही कालमें जिन नदियों में बहुतसी धारेंथीं उनकी धार एक स्थानपै कर बांधदिया इससे नानाप्रकार के समुद्रों के आकार करदिया ११ जो स्थान निर्ज्जल थे वहां नानाप्रकार के कूप बापी तड़ागादि खोदाय सुन्दर पक्केघाट आदि बँधवादिये १२ उन पक्के बँधेहुये घाटोंपै बड़ेबड़े वृक्षभी युक्ति पूर्व्वक लगादिये गये जिनमें किसीमें फूल किसीमें फल लगेथे इसलिये मतवाले पक्षी उनपै बैठेहुये बोलने लगे व ठौर ठौर पताकायें उनपै बांधदीगई १३ अयोध्याजीसे ले प्रयाग पर्य्यंत जितनी सड़क बनाई गई सबपै चन्दनादि सुगन्धित वस्तु मिश्रित जलसे छिरकाव करायागया व सबपै सड़क के किनारेवाले वृक्षोंके फूल बिछाणये सेना जानेका मार्ग्ग ऐसा शोभित हुआ जैसे इन्द्रपुरी का मार्ग्ग शोभित होताहै १४ उन लोगोंको जैसी जैसो भरतजी की आज्ञा हुईथी सुन्दर रमणीय देशोंमें नाना स्वादुयुक्त जलाशय व मीठे फलवाले वृक्ष लगादिये १५ जैसा कुछ सेनाके रहने उतरने आदिका स्थान उनको अभीष्ट था नानाभांतिके भूषणोंसे भूषित वैसाही उन अधिकारियोंने बनादिया १६

इन स्थानों में ज्योतिश्शास्त्र जाननेवाले लोगोंने उत्तम उत्तम नक्षत्र मुहूर्त्तादिकों में सेना निवास की सामग्री स्थापित की जिसमें महात्मा भरतजीका कल्याणहो १७ जहां जहां सेना निवास स्थान बनाये गये उनके गिर्द बड़ाभारी खावाँभी बनाया गया जिसके किनारे किनारे बड़े बड़े तेजस्वीलोग रक्षक नियुक्त हुये इन्द्रनीलमणि से बनीहुई प्रतिमा ठौर ठौर खावोंपै स्थापित करदीगईं ठौर ठौर उनपै से उतरने चढ़ने को सिढ़ियां लगादीगईं १८ ठौर ठौर बड़े बड़े धुस बनादियेगये जिनपै नानाप्रकार के धवरहर बनाये सबोंपै पताका बांधीगईं सड़कें सबके किनारे किनारे बनाई गईं १९ उन धवरहरों के ऊपर कपोत-पालिका ऐसी शोभित होतीथीं मानों आकाश में विमान चले जातेहुये शोभित होतेथे ऐसे निवेशस्थान बनेथे जैसे इन्द्रपुरी में बनेहैं २० ॥

दो० विविध द्रुम कानन सहित महामीन युत पानि ।
शीतल अमल समेतसुर नदितट पहुँच्यहु आनि १ । २१
शुभ शिल्पीगण रचितनृप पथइमि शोभित सोय ।
जिमि निशितारा चन्द्रयुत अम्बर शोभित होय २ । २२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽशीतितमस्सर्गः ॥ ८० ॥

वहां जो अधिकारी मार्ग्गादि बनाने के लिये भेजे गयेथे उनलोगोंने गङ्गाजीके किनारेतक मार्ग्गादि बनाया यहां जब वह आनन्द की रात्रि बीती तो प्रातःकाल सूत मागध व बन्दीगण नानाप्रकारके मंगल स्तोत्रों से विशेष बचन जाननेवाले वेलोग भरतजी की स्तुति करनेलगे १ उस समय सुवर्णके दण्डसे जोनगारा पहरभर रात्रि रहे जागनेकेलिये बजाया जाताथा बजानेवालोंने बजाया उनके सिवाय और भी सैकरों शङ्खादि बाजा बजायेगये जिनमें नानाप्रकारके ऊंचे नीचे शब्द निकले २ वह नगारों का शब्द आकाश में भरहुआ उसने शोक से सन्तप्त भरतजीको मानों अधिक रौंधडारा ३ उसे सुन भरतजी जागे व तुरन्त बाजा बन्द करादिया कि अरे हम राजानहीहैं क्यों राजा कहके हमारी स्तुति करतेहो यहकह शत्रुघ्नजीसे बोले ४ हेशत्रुघ्न देखो कैकेयीने लोक भरका अपकार किया जिस अपकार से राजादशरथ जी मुझ को दुःख

समूह देखस्वर्गको चलेगये ५ तिनमहात्मा धर्म्मराज महाराजकी राजश्री भ्रमण करतीहै जैसे समुद्र में बिना केवट की नाव इधर उधर घूमती है ६ हाय दशरथजीकी तो वहदशा हुई जो हमारे बड़ेभारी स्वामी रामचन्द्रजी थे उन्हेंभी इसहमारी माताने धर्म्मको छोड़ बनको भेजवा दिया ७ इसतरह भरतजीको रोदन करते देख सब स्त्रियाँ बड़े ज़ोरसे दुःखितहो रोनेलगीं ८ इसप्रकार भरतजी बिलाप करहीरहेथे किराजधर्म्म जाननेवाले महायशस्वी वसिष्ठजी इक्ष्वाकुनाथकी सभामें आये ९ सबसभाकी सभा सुवर्णमय रमणीयथी मणिवसानाही सोनाजिधर देखा तिधर देखपड़ताथा जैसे सुधर्म्मा सभामें अपने गणोंकेसाथ इन्द्र प्रवेश करतेहैं वैसेही वसिष्ठजी अपनी समाजके साथआये १० व गोलाकार एकसुवर्णका स्थान बनाथा उसपै बैठगये व सर्व्व वेदोंके जाननेवाले मुनिराज दूतोंको आज्ञा देनेलगे ११ कि ऐ दूतो इससमय हमारा बड़ा कामहै बहुतही शीघ्र ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व अन्य सेवक लोगोंको बुलावो १२ व राजपुत्र भरत शत्रुघ्न व परम यशस्वी युधाजित् उनके मामाको व सुमन्त्रादि जोकोई सभासद हैं सबको बुलावो १३ इतना वसिष्ठजी कहीरहेथे कि रथ घोड़े हाथी आदिपै चढ़हुये आते लोगोंका हल्ला सुनपरा वरन सबलोग आपसे आपही आगये १४ उसी बीचमें भरतजी आये मन्त्री दीवान आदि उनको देख जैसे दशरथजी को देख आनन्दित होते होवातेथे वैसेहीहुये होवाये जैसे इन्द्रकोदेख देवतालोग आनन्दित होतेहैं १५ ॥

दो० मणि सिकता दर सहित ह्रद मीन गोह युत ज्योंहि ।
शोभित दशरथ समभरत युत शोभित सभत्योंहि १ । १६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकाशीतितमस्सर्गः ॥ ८१ ॥

भरतजीने भी वसिष्ठादि श्रेष्ठजनों से भरी पुरी सभाको देखा जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमा के संग रात्रि शोभित होती है वैसेही शोभितथी १ जितने श्रेष्ठ लोग प्रथम से आय चुकेथे व जो भरतजी के संग आये इन सबोंके वस्त्राभरण चन्दनाद्युनु लेपनों से वह सभा प्रकाशित होती थी २ व सभा सब विद्वज्जनों सेही पूर्ण थी इसलिये ऐसी शोभायमान होती

थी जैसे शरदऋतु में पूर्णमासी की रात्रि शोभित होती है ३ राजा दशरथजी के सबमंत्री दीवान आदिकों को देख परम धर्म्मज्ञ वसिष्ठजी भरतजीसे बोले ४ हे तात राजा दशरथजी धनधान्य युक्त सब सामग्री सहित इस पृथिवीको तुम्हेंदे धर्म्म मार्ग्गमें टिकके स्वर्ग्गको चलेगये ५ चलने के प्रथमही रामचन्द्रजी को भी जो आज्ञा देगयेथे धर्म्मात्मा सत्यवृत्ति श्रीरामचन्द्रजी ने भी सज्जनों के धर्म्म का स्मरण कर पिता की आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं किया जैसे उदित चन्द्रमा अपनी उजियारीका उल्लङ्घन नहीं करता ६ इसलिये यह राज्य तुमको तुम्हारे पिता तथा बड़े भाई रामचन्द्रजी ने भी दिया है अतिवेग अपना अभिषेक कराय राज्यको इन सेवक मन्त्रादिकोंके संग भोगो ७ उत्तर पश्चिम व दक्षिण के समुद्र तक वरन स्वर्ग्ग पातालादि व मध्य निवासी करोड़ों देशों के मनुष्य देवता व समुद्रादि सब तुमको उत्तम उत्तम रत्नदेंगे ८ यहगुरू का वचन सुन परम धर्म्मज्ञ भरतजी शोक में डूब धर्म्म की इच्छा से मनसे रामचन्द्रजी के निकट पहुंचे ९ व गदगदवाणी से सभा के बीच में बिलाप करनेलगे पीछे गुरूजी की कुछ निन्दा करतेहुये बोले १० कि भला ब्रह्मचर्य्य धारणकिये सकल विद्याओं में कुशल महाबुद्धिमान धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी का राज्य हमारे समान ऐसा कौन है जो हरले ११ भला हम दशरथजी से उत्पन्न होकर राज्यापहारी कैसेहों क्योंकि यह राज्य श्रीरामचन्द्रजीकाहै आपको धर्म्मही की बात कहनी उचित है १२ एक तो सब भाइयोंमें ज्येष्ठ फिर सब प्रकारसे श्रेष्ठ परम धर्म्मात्मादिलीप व नहुष के समान श्रीरामचन्द्रही राज्य पानेके योग्य हैं क्योंकि दशरथजी नहीं रहे मानों दूसरे दशरथ बनेही हैं १३ यदि यह अनरपन का काम जो नरकदायी है हमकरें तो इक्ष्वाकु वंशियों के कुलके दूषकहों १४ व जो पाप हमारी माताने किया है रामचन्द्रजीको बन भेजवाया है सो हम को नहीं रुचता यद्यपि रामचन्द्रजी कठिन बन में टिकेहैं व हम यहाँ अयोध्याजी में हैं तथापि यहीं से हाथजोड़ उनके प्रणाम करते हैं १५ व हम रामचन्द्रही के पीछे जायँगे पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रही राज्य भोगने के योग्यहैं क्योंकि वे त्रिलोकी के राजाहैं १६ अति धर्म्मयुक्त भरतजीके वचन सुन सब सभासदलोग रामचन्द्रजी

में चित्तलगाय हर्ष के आँशुओं से रोदन करनेलगे १७ भरतजी ने कहा यदि बनसे श्रीरामचन्द्रजीको लौटार न सकेंगे तो जैसे श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी बनमें बसते हैं उन्हीं के संग हमभी तहांही रहेंगे १८ अभीतो यही विचार है कि आपलोग साधु व गुणवत्तो व परमश्रेष्ठ लोगों को सङ्गलेजाय जैसे कैसे बनेगा ज़बरदस्ती पाय पलटिया करके लौटारही लावेंगे १९ इससे अब अन्य बिचारकी आवश्यकता नहीं मार्ग्गादि शोधन करनेवाले नानाप्रकारके लोगों को प्रथम भेजचुके हैं उन्होंने सब सुधार रक्खा होगा अब हमको वहीं चलनेकी यात्राही रुचती है २० इतना कह धर्म्मात्मा व भ्रातृ वत्सल भरतजी मन्त्र कर्म्म में चतुर समीपपै बैठे हुये सुमन्त्रजीसे बोले २१ हेसुमन्त्र हमारी आज्ञासे अतिवेग यहां से उठ के जावो सबसे कहो कि श्रीरामचन्द्रजीके निकट चलने की तैयारी है सब सेना तैयार होकर आवे २२ इस तरह महात्मा भरतजीने जो सुमन्त्रजी से कहा तो परमानन्दित हो सुमन्त्रजी ने जाय सबको आज्ञादी २३ श्रीरामचन्द्रजीके लौटारने केलिये आज्ञाको सुन सब नौकर चाकर सेना पत्यादि अत्यानन्दित हुये २४ सब योधा लोग यात्रा के समय जब अपने अपने घरमें तैयारी करनेलगे तो श्रीरामचन्द्रजीके लगजानें को तैयार जान उनकी स्त्रियां शीघ्रता कराने लगीं व मारे हर्ष के कहती थीं जाव जाव २५ अब सब योधा लोग घोड़ोंपै सवार होहो वा बैलों घोड़ों को रथमें नहके उनपै सवार होहो सबसेना को आज्ञा देनलगे २६ भरतजीने देखाकि सब लोग तैयारहुये अबहम बाकी हैं इसलिये निकटही ठिके सुमन्त्रजीको आज्ञादी कि हमारा रथ अति वेग तैयार करलावो २७ भरतजीकी आज्ञा पाय परम हर्षित हो सुमन्त्रजी परमोत्तम घोड़े नह रथ लेआये २८ ॥

दो० सत्यबुद्धि दृढ़ सत्यवर विक्रम भरत प्रतापि ।
बनगत गुरु रघुवर यशिहि आनन हेतु अलापि १ । २९
उठि सुमन्त्र जाइय त्वरित सेना धिपन हँकारि ।
जगहित बनगत रघु पतिहि आनब कहहु पुकारि २ । ३०
भरत वचन सुनि सूत परि पूरण काम बुलाय ।
प्रकृति प्रधानन बल पतिन सुहृदन कह्यहु बुझाय ३ । ३१

सोसुनि कुल कुल क्षत्रि द्विज वैश्यशूद्र मुखलोग ।
रथ खर हय गज उष्ट्र सब सजन लगे करि योग ४ । ३२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्व्यशीतितमस्सर्गः ॥ ८२ ॥

तिसके पीछे प्रातःकाल उठ भरतजी उत्तम रथपै सवार हो श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन की कामना से शीघ्रही चले १ भरतजीके आगे आगे मन्त्री व पुरोहित लोग सूर्य्यनारायण के रथके समान उत्तम रथों पै चढ़ चढ़ चले २ जब इक्ष्वाकु कुलके आनन्ददेनेवाले भरतजी चले तो ६००० हाथी सजे सजाये पीछे पीछे चले ३ व ६०००० रथ चलेधनुर्द्धर लोग तो बिबिध प्रकारके आयुध धारण किये यशस्वी राजपुत्र के पीछे असंख्यचले ४ एक लाष सवार पीछे पीछे चले ५ कैकेयी सुमित्रा व कौशल्याजी पालकियों में चढ़ चढ़ रामचन्द्रजीके आननेसे सन्तुष्टहोचलीं ६ श्रीरामचन्द्रजीके देखने केलिये जब यह श्रेष्ठ लोगों की समाज चलीतो प्रसन्न मनहो उन्हीं महात्मा रामभद्रकी चित्र बिचित्र कथा कहते सुनते चली अन्य बार्त्ता नहीं करतीथी ७ सब परस्पर यही बतलाते थे कि मेघवत् श्याम महाबाहु स्थिरपराक्रम दृढ़व्रत व जगत् के शोक नाशन श्री रामचन्द्रजी को कब देखेंगे ८ हम लोगों का शोक देखतेही श्रीरामभद्र दूरकरेंगे जैसे सब लोकों का अन्धकार उदय होतेही सूर्य्यनारायणहरते हैं ९ इस तरह पररुपर प्रसन्न मनहो रामचन्द्रजीकी शुभकथा कहते सुनते सब अयोध्य वासी एक दूसरे को मिल भेंटते जाते १० और बनियां लोगभी जिनको भरतजीने आज्ञादी व जिनको नहींभीदी सब प्रकृतिलोग हृष्टपुष्टहो श्रीरामजीको देखने चले ११ और भी मणियों में छेद करने वाले वा खरादने वाले लोग व कुम्हार लोगजोलोग बखरी आदि बनाने में सूधा सूत लगाना जानते तथा सब हथियार बाँधनेवाले लोगचले १२॥

चौ० । मायूरक बेधक अरु रोचक । दन्तकार क्राकचिक बिशोचक ॥ सुधा कार गँध जीवि अनेका । चले चतुर निजकृति सटेका १ । १३ स्वर्णकार अरु कम्बलकारी । चले मुदित मनथे अधिकारी ॥ स्नापक उष्णोदक न्यारे । वैद्य धूप कारक अति प्यारे ॥ शौण्डिकादि सब चले तुरन्ता । साजे सकल वस्तु नहिं अन्ता २ । १४ रजक तुन्नवायक मुख

लोगू। ग्राम घोष शैलूष सुयोगू ॥ निज निज नारि संग लिय सारे । कैवर्तक सब चले हँकारे ३ । १५ ॥

व इसीतरह वेदवादी ब्राह्मणलोग बैल नद्दे रथोंपै चढ़चढ़ भरतजी के पीछे हज़ारों चले १६ व सहस्रों अयोध्यावासी अरुण रंगके चन्दनादि अनुलेपन लगाये सुन्दर वेष बनाये भरतजीके पीछेपीछे धीरेधीरे पालकी रथादि सवारियों पै चढ़चढ़ चले १७ भ्रातृवत्सल भरतजी जब भाईको आनने जातेथे तो अति प्रहृष्ट व आनन्दित सेना पीछेपीछे चली १८ जाते जाते सबके सब घोड़े रथ हाथी आदि सवारियों पै चढ़े शृङ्गवेरपुर के सामने गङ्गाजीपै पहुंचे १९ जहां कि श्रीरामचन्द्रजी का सखा गुह अपनी ज्ञाति बिरादरी के लोगोंके साथ बसताहुआ उस देशका राज्य करता रहताथा २० चकई चकवा आदि पक्षिगणों से सेवित गङ्गाजीके तीरपै पहुंच भरतजीके पीछे चलनेवाली सेना जाय वहां टिकी २१ अपनी सेना को उतरी देख व गङ्गाजीका जल सब सुखदजान भरतजी अपने मंत्रियों से बोले २२ कि अब आज सब सेना यहीं टिकै प्रातःकाल इस महानदी को उतरेंगे २३ क्योंकि स्वर्गवासी महाराज को यहां जलदान करना चाहतेहैंसो जब प्रातःकाल उतरेंगे तो तर्पण करेंगे २४ जैसेही भरतजी ने ऐसा कहाहै कि सब लोग अपना अपना समाज ले अलग अलग उतरने लगे २५ ॥

गङ्गा तट निज सैन्य कहँ दै शुभ वास भरत्थ ।
रामफिरन शोचत मनहि लहत न सुख समरत्थ १ । २६

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेऽयोध्याकाण्डेवाल्मीकीयेत्र्यशीतितमस्सर्गः ८३ ॥

तिसके पीछे श्रीगङ्गा नदीके तीरपै टिकी भरतजीकी महा सेना देख निषादोंके राजा गुहने अपनी जाति वाले लोगोंसे कहा कि १ यह बड़ी भारी सेना सागर के समान परीहै इसके अन्त को मनसे भी शोचते हैं पै नहीं जाते २ जो ए भरत महाकाय दुर्बुद्धि धारणकर रथपैचढ़ यहां आयेहैं व रामचन्द्रजीसे वैरभाव रखते होंगेतो ३ रामचन्द्रजी के पीछेहम लोगों को भी यातो वरुणफाँसीसे बाँधही लेंगे व मारही डालेंगे क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी को पिताने तो निकालही दिया है पै ये उनको मार

निष्कण्टक राज्य अवश्य करना चाहते होंगे ४ हम जानतेहैं भरत कैके-
यीही केतो पुत्रहैं फिर चाहतेहोंगे कि अपने पिताकी राज्यश्रीको इनको
मार भोगें इसीसे जातेहैं नहींतो अब जानेका कौन प्रयोजन है ५ और
श्रीरामचन्द्रजी हमारे स्वामी सखा सबकुछ हैं इसलिये तिनके प्रयोजन
के लिये अपने अपने अस्त्र शस्त्र लेले गङ्गाजीके कांठा में बैठो ६ जितने
केवट लोग हौ सबके सब अपने अपने साथी सङ्गियोंके साथ इन गङ्गा
जीके घाट रखाते रहौ व मांस मूल फलादि भोजन करते रहौ क्षणमात्र
को भी कोई यहांसे न हटै ७ पाँचसौ नावें यहां लगाई जायँ एक एक
नावपै सौसौ युवा मनुष्य लड़ाई करने में चतुर तैयार बैठे रहैं ८ यदि
भरतजी रामचन्द्रजीके ऊपर सन्तुष्टहोंगे वैरभाव न रखते होंगेतौ तो उन
कीयह सेना स्वस्तियुक्त गङ्गाजी के पार आज जायहीगी नहीं तोक्या
जायगी ९ इतना अपने जातिवाले व नौकर चाकरोंसे कह भरतजीकी
भेंटके लिये मछली मांस शहद आदि बनकी चीज़ें ले निषादों का पति
गुह चला १० गुहको आते देख समय के जाननेवाले प्रतापी सुमन्त्रजी
बड़ी नम्रताके साथ भरतजी से बोले कि ११ यह जो अपनी ज़ाति के
सहस्रों मनुष्यों के संग आताहै इस दण्डकारण्यमें रहनेवाला व यहां
का राजा अति वृद्ध व श्रीरामचन्द्रजीका सखा गुहहै १२ तिसीसे यह
निषादाधिप गुह आपको निहारता चला आता है कि रामचन्द्रजी तो
मुझसे मित्रभाव रखते हैं देखें ये कौन भाव रखते हैं व यह निश्चय
निश्चय जहां रामचन्द्र व लक्ष्मणजी होंगे अवश्य जानता होगा १३
सुमन्त्रजी से ऐसे शुभ बचन सुन भरतजीने आज्ञा दी कि बिना रोंक
टोंक गुह को हमारे सामने आने दो कि अच्छीतरह से हमें देखे १४
इस तरह देखनेके लिये आज्ञापाय अपनी ज़ातिके लोगोंके साथ माथ
नवाय हाथजोड़ सामने आय भरतजी से गुह बोला १५ कि यह देश
आपके उपबनहीं के समान सुखदायी है यद्यपि आपने कभी कृपा नहीं
की हमलोगों को अपना से दूर रखकर छला है तथापि जो कुछहोगा
सब आपको निवेदन करेंगे इस अपने दासके घरमें बसिये १६ भोजन
के लिये निषाद लोग अपने हाथोंसे लायेहैं मूल फलादि ग्रहण कीजिये
व मांसभी ओदा सूखा दो प्रकारका है यदि कोई भोजन करता हो तो

वहभी ले इसके सिवाय बनकी नानाप्रकार की छोटी बड़ी चीज़ें विद्य-मानहैं ग्रहण कीजिये १७॥

दो० हम यह चहत महीप करि अशन तुम्हारी सेन॥
रहैं रजनि भरि यहँ सुखित उतरै प्रात सुखेन १।१८

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुरशीतितमस्सर्ग्गः ८४

इस तरह जब गुहने भरतजी से कहा तो महाप्राज्ञ भरतजी निषा-दोंके अधिपति गुहसे सहेतुक वचन बोले १ कि जो तुम हमारी इतनी बड़ी भारी सेना की पहुनई किया चाहते हो तो जानो सबकुछ करचुके व हमारे परम गुरु श्रीरामकी भी सेवा करही चुकेहो बस इसीमें हमने सब कुछ पाया अब कुछ करने को बाक़ीनहीं रहा २ यह कह भरतजी राह पूंछते गुहसे फिर बोले ३ कि आप यह बताइये कि किस मार्ग्ग होकर व कितने दिनोंमें यहाँसे भरद्वाजजीके आश्रम पै पहुँचेंगे क्योंकि यह गङ्गाजी का काछा बड़ा दुरत्यय व भयानक देश हमको विदित हो-ता है ४ तिन धीमान् राजकुमार भरतजीके ऐसे वचन सुन हाथ जोड़ वनकी सब बातें जाननेवाला गुह बोला ५ हे महाबल राजपुत्र इस विषयमें आप न घबड़ाइये हम व कहार आपके सङ्ग करदेंगे जो बनके सब समाचार जानते हैं सो वे तो आगे आगे राह बताते हुये चलेंगे व हम आपके पीछे पीछे चलेंगे ६ परन्तु आपकी यह बड़ीभारीसेना देख हमारे मनमें बड़ी शङ्का होती है कि आप रामचन्द्रजी के सङ्ग कुछ दुष्टता करने तो नहीं जाते क्योंकि उनके कर्म्म तो ऐसेनहीं हैं कि कोई दुष्टता करै ७ यह कहतेहुए गुहसे आकाशके समान निर्म्मलहो परम मधुरवाणी से भरतजी बोले ८ कि भाई गुह ईश्वर न करै कि वह दुष्ट समय आवै जिसमें रामचन्द्रजी में दुष्टता करनेको जी चाहै आप इस विषयमें शङ्का न करैं श्रीरामचन्द्र हमारे ज्येष्ठ भाईहैं इसलिये पिताजीकेसमानहैं९ इस से वनवासी श्रीरामचन्द्रजीको हम बनसे लौटारनेके लिये जातेहैं कुछ अन्यबुद्धि से नहीं जाते हेगुह यह तुमसे सत्यही कहते हैं १० भरतजी के ऐसे वचन सुन गुह परम हर्षित हुआ व बड़ेआनन्द के साथ भरत जीसे फिर बोला ११ कि भाई भरत तुम धन्यहो तुम्हारे समान दूसरा

हमको भूतल में नहीं दिखाई देता क्योंकि बिना यत्नकिये हुये ऐसे राज्यको पाय फिर छोड़ा चाहतेहौ १२ आपकी यहकीर्त्ति निरंतर सदा सर्व्वदा बनीरहेगी जोकि तुम बनमें नाना प्रकार के कष्ट भोगते हुये रामचन्द्रजी को लौटारने जातेहौ १३ इस तरह भरतजी से गुह वार्त्ता कर रहाथा कि सूर्य्य नारायण की दीप्ति जाती रही रात्रि होगई १४ व गुहने सब सेनाके लिये जिस जिस बस्तुकी आवश्यकता थी मँगादिया सब सेना सन्तुष्ट हो ठौर ठौर सोई व भरतजी भी शत्रुघ्नजीके साथ एक आसन पै विराजमान हुये १५ उस समय श्रीरामचन्द्रजी के विषयकी चिन्ता भरतजी को हुई जिससे महाशोक उत्पन्न हुआ यद्यपि भरत जी शोकके योग्य न थे तथापि औरों को प्रेमातिशय देखाने के लिये न थँभा शोक प्रकटही हो आया १६ मारे शोकके सन्तप्त भरतजीके अन्तःकरण को शोकाग्नि जारनेलगा जैसे बनके दावानल से जरेहुये वृक्ष को उसके खोंढ़िलेवाला अग्नि धीरे धीरे जारता है १७ भरतजी के सब अङ्गोंसे शोकाग्नि से सन्तप्त होने के कारण पसीना होआया जैसे सूर्य्य नारायण के अग्नि से सन्तप्त होनेके हेतु हिमालय पर्व्वत से पाला टघिलता है १८ अब श्रीभरत जी शोकरूप पर्व्वत से दबायगये जिसशोक पर्व्वत में रामचन्द्रजी का उत्कण्ठा पूर्व्वक ध्यान वही मानों छिद्ररहित शिला है व बार बार जो ऊर्द्ध्वश्वास लेना वही गेरू आदि धातुहैं उदासी के मारे जो दीनता वहीमानों वृक्ष समूहहैं शोकका जो बड़ा फैलाव वही कँगूरा १९ बड़ा भारी जो मोह वही अनन्त जीव शोकसे जो सन्ताप वही औषधि व बाँश इसतरह के शोक पर्व्वत से भरतजी दबाये गये २० ॥

कुण्डलिका ॥

ऊधी श्वासें लेत अति दुर्म्मन मूर्च्छित गात ।
परम विपति महँ लीनभे भरत सुकाँपत जात ॥
भरत सुकाँपत जात लहत नहिं कुछ कल्यानू ।
हृदय ज्वरार्दित पुरुष श्रेष्ठ रघुबर गत मानू ॥
शोकिल इमि बिललात यूथ बिगलित अरु रूंधी ।
जिमि रोवतहै धेनु लेत बहु श्वासें ऊधी १ । २१ ॥

दो० राम शोक ब्याकुल भरत गुह मिलि अतिहि दुखारि ।
पुनि पुनि गुह सम धाव त्यहि धीरहि धीर पुकारि २ । २२

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चाशीतितमस्सर्ग्गः ८५.

भरतजी को अति ब्याकुल देख गुह महात्मा लक्ष्मणजी का सद्भाव जो रामचन्द्रजी में था भरतजी से कहने लगा १ हे भरत जब श्रीरामचन्द्रजी शयन कररहे व लक्ष्मणजी धनुष पै प्रत्यञ्चा चढ़ाय भाई की रक्षा करने वीरासन मार बैठे तबहम उनसे बोले२ कि हे तात यह सुखदायक शय्या तुम्हारे लिये बनाई बिछाई गई है इसलिये आनन्द पूर्ब्बक इसपै शयनकीजिये ३ क्योंकि हम सबलोग दुःख भोगने के योग्य हैं व आप सदा सुखही भोगने के लायक हैं हे धर्म्मात्मन् रही रामचन्द्रजी की रक्षा सो उसके लिये हमलोग बराबर जागते रहेंगे ४ क्योंकि रामचन्द्रजी से अधिक प्रियतम हमारा इस संसार में कोई नहीं इसमें कुछ सन्देह न मानिये आपके आगे यह सत्यही कहते हैं ५ इन्हीं रामचन्द्रही के प्रसाद से इसलोक में बड़ा यश चाहते हैं व बिपुल धर्म्म की प्राप्ति व अर्थ कामभी चाहते ६ सो सीताजी के सङ्ग सोतेहुये श्रीरामचन्द्रजी की रक्षा हम धनुर्ब्बाण हाथ में लिये अपनी ज़ाति के लोगों के संग करते रहेंगे ७ जो कहो कि तुम निषाद होके रक्षा करना क्या जानो सोनहीं हम रात्रि दिन इस बनमें घूमने के कारण ऐसा कोई भयानक चोर वा अन्यजीव नहीं जिसको न जानते हों इसीसे जोचतुरङ्गिनी भी सेना हमारे ऊपर चढ़ आवे तो उसको भी हम सह सक्ते हैं ८ जब हमने महात्मा लक्ष्मणजी से ऐसा कहा तो धर्म्महींकी बात कहके हमको ऐसा सिखाया कि ९ भला जानकी सहित श्रीरामचन्द्रजी भूमि में शयन करते हैं तो हमकोनींदकैसे आवेगी व प्राण सुखादि रहने होने की कहां सुधिहै १० हेगुह जिन रामचन्द्रजी के सामने संग्राममें देवता दैत्यादि कोई खड़े नहीं होसक्ते वे आज सीताजी के संग तृणकी साँथरी पै सोते हैं ११ इन श्रीरामचन्द्रजी को महाराज दशरथजी ने बड़ी तपस्या करने से सब सदृश लक्षण सहित पुत्र पाया है १२ यहभी जान लीजिये कि अब इनके यहाँ चले आने के पीछे महाराज दशरथजी

बहुत दिनों तक न जीवेंगे यह पृथिवी शीघ्रही विधवा होजायगी १३ स्त्रियाँ सब ऊंचे स्वरसे रोय रोय सब चुप होगईं किसी के ऐसी सामर्थ्य नहीं रहगई थी जो ज़ोरसे रोदनकरें इसलिये राजमन्दिर में आज कोई चिनकता न होगा १४ व कौशल्या राजा व हमारी माता इनतीनों को हम नहीं जानते कि इसरात्रि में जीतेरहे हों वा रहें अवश्य मृतकही होगये होंगे १५ कदाचित् शत्रुघ्न के देखनेकी आशासे हमारी माता जीती भी रहैं तो रामचन्द्र ऐसे वीर पुत्र के उत्पन्न करनेवाली कौशल्याजी तो किसी तरह न जीती रहेंगी १६ हाय बड़े शोचकी बातहै कि राज्यपै रामचन्द्रजी को बिना बैठाये अपने मनोरथ को बिनापाये हमारे पिता बीचही में मरजायँगे १७ वे लोग धन्य हैं व उनके सब अर्थ सिद्ध होजायँगे जोलोग मरने के समय पिताजी के निकट होंगे व उनके सब प्रेत कर्म्मों के संस्कार करेंगे १८ हमतो अब उनकी प्रेतक्रिया करने को नहीं अँटते हां जब सत्यप्रतिज्ञ श्रीरामचन्द्रजी बनसे चौदह बर्षके पीछे लौटेंगे तो रमणीय चौरहायुक्त सड़कों पै सुगन्धित जलसे छिरकाव होती धवरहर व धुस्सों पै नानाप्रकारकी शोभा युक्त सबरत्न बिभूषित १९ इधर उधर से हाथी घोड़े रथादिकों की आवाजाही युक्त जहां देखो नगारे तुड़ही आदि बाजा बाजते सब कल्याणों से पूर्ण हृष्ट पुष्ट जनोंसे भरी २० फुलवाड़ी व उपबनादि संयुक्त नानाप्रकारके समाजोंसे शोभित सुखितहो अपने पिताकीराजधानी अयोध्याजी में बिचरेंगे २१ व श्रीरामचन्द्रजी के साथ आय अपनी राजधानी में प्रवेश करेंगे २२ इसतरह महात्मा राजकुमार लक्ष्मणजी के बतलातेही व रोदन करतेहीकरते वहरात्रि बीतगई २३ जबप्रातःकाल हुआ तो दोनों भाइयों ने इन्हीं गङ्गाजी के किनारे पै जटा बनाई व नाव पै चढ़ाय सुखपूर्ब्बक हमने पार उतार दिया २४ ॥

कुण्डलिका॥

गज यूथप सम द्वौचले जटा बनाय बनाय।
तरु वल्कल धारणकिये महाबली रघुराय ॥
महाबली रघुराय चाप शरकर सन्धाने।
खड्गलिये पुनिपाणि शत्रुतापन बलवाने॥

एक दूसरहि लखतचले पूजहिं ज्यहि शिव अज ।
सीता सँगद्वौ भायगये मानहुं द्वयबरगज १ । २५ ॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेबाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषड़शीतितमस्सर्ग्गः ८६ ॥

भरतजी गुहके ऐसे अप्रिय बचनसुन कि इसी स्थानपरसे जटाआदि बनाय श्रीरामचन्द्रजी गये जहाँ उन्होंने जटा बनाईथी उसी स्थानपै बैठ श्रीरघुनन्दनका ध्यान करने लगे १ जोभरतजी अति सुकुमार महा पराक्रमी सिँहस्कन्ध आजानुबाहु कमल दलसेभी बिशाल बक्षस्स्थल तरुणावस्थाको प्राप्त अतिप्रिय दर्शनथे २ एक दो घड़ीतक तो ऊधी साँसें लेतेरहे फिरअति उदासीनचित्त मूर्च्छितहो पृथवीपै गिरपड़े जैसे अंकुश के कहीं मर्म्मस्थलमें लगजाने से हाथीब्यकुलहो गिरपड़ताहै ३ भरत जीको मूर्च्छितदेख अति बिबर्ण बदनहो गुहभी अति ब्यथित चित्तहुआ जैसे भूकम्प आनेपै वृक्षकांपताहै ४ ऐसीअवस्थाको प्राप्त भरतजीको लपटायके मिल मारेशोकके दुःखित शत्रुघ्नजीभी मूर्च्छित होगये५ तिसके पीछे भरतजीकी सबमाता दुःखितहो उनके निकट आईं जोकि पतिके मरणके दुःखसे दुर्ब्बल व उपवास करनेसे अतिदीन होगईथीं ६ पृथिवी मेंपरे भरतजीको उनकी मातोंने रोय रोय घेरलिया कौशल्या जीने इस दशाको देख अति दुःखितहो भरतजीको उठाय हृदयमें लगालिया ७ जैसे अपने बछरूके ऊपर दयाकरती हुई गायबच्चेको चाटने लगतीहै वैसेही तपस्विनी कौशल्याजी शोककेमारे ब्याकुल भरतजीसे पूंछने लगीं ८ हेपुत्रइस समय कोई ब्याधि तोनहीं तुम्हारे शरीरको वाधता ईश्वर नकरै किबाधै क्योंकि इस राजकुलके प्राण तुम्हारेही अधीनहैं९ हेपुत्र सहित भाई श्रीरामभद्र तो बनको चलेगये व राजास्वर्ग्गको गये अब तुम्हीं को देखजीती हैं क्योंकि इस समय तुम्हीं हमारे नाथ हो १० हेपुत्र क्या लक्ष्मणकी कोई अप्रियबाततो नहीं सुनी वा एकपुत्रा जोमैंहूं तिसके पुत्र श्रीराम सहितस्त्री बनको गये उनके बिषयमें तोकोई अप्रिय बचन नहींसुना जोऐसा रोदन करतेहो ११ यहसुन मुहूर्त्त भ-रतक आपरोदन कियेभीजाते थे पर कौशल्याजी को समझाते भी रहे पीछेसे फिरगुहसे बोले १२ हेगुह अबहमसे यह बतावो कि उस रात्रिको

हमारे भाई किसस्थानपै बसेथे व सीताजी कहाँ बसीथीं लक्ष्मणजी कहाँ व किस किस आसनपै सोयेथे भोजन क्याकियाथा १३ यह सुन अति हर्षितहो निषादाधिपति गुहने रामचन्द्रजी के आनेपै जैसी पहुनई की कराईथी कहने लगा १४ कि श्रीरामचन्द्रजीके भोजनके लिये नानाप्रकारके खट्टे मीठे करू कसैले तीखे सबप्रकारके भक्ष्य भोज्यादि पदार्त्थ फल कन्दमूलादि हमलाये थे १५ परन्तु सत्यपराक्रम व सत्यप्रतिज्ञ रामचन्द्रजीने गङ्गाजीके तटपै पर द्रव्यलेना क्षत्रियोंका धर्म्म नहींहै यह समझ कुछभी नहींलिया १६ कहा कि हेसखे हमलोग क्षत्रियोंका यहीधर्म्महै कि सदा सर्व्वदा सबको सबकुछ देतेरहें पर किसीका दान न लें यहकह तिन महात्मा श्रीरामचन्द्रजीने हमलोगोंके ऊपर अनुग्रह किया १७ केवल लक्ष्मणजी अपने हाथोंसे गङ्गाजल भरलाये वही महात्मा रामचन्द्रजी ने पानकिया आप व जानकीजी दोनोंजन उपवासही करके रहगये १८ जोकुछ उनदोनों जनोंके पीनेसे जल बचगया लक्ष्मणजी उतनाहीं पानकर रहगये मौनव्रत धारण कर इसी स्थानपै तीनों जनों ने सन्ध्योपासन किया १९ तिसके पीछे लक्ष्मणजीने अपने हाथसे कुश काट लेआये दोनों जनोंके रहनेके लिये सुन्दर आसन लगाय दिया २० तिसके ऊपर श्रीरामजानकी दोनों जन बैठे लक्ष्मणजी दोनों जनों के चरण पखार आप वहाँसे अलग चलेआये २१ यही वह पांखी का वृक्ष है जिसके नीचे यह तृण पराहै इसीपर शयन कर श्रीरामचन्द्र व जानकी जीने रात्रि बिताई २२ जब वे शयन करनेलगे तो धनुष पै प्रत्यञ्चा चढ़ाये तरकसों में तीर भरे अंगुलित्राणादि पहिरे लक्ष्मण जी रात्रिभर चारों ओर घूमतेरहे २३ जहाँ लक्ष्मणजी घूमघाम बैठजातेथे धनुर्बाण लिये हमभी वहीं बैठेरहे हमारे साथ अन्यभी हज़ारों हमारी जातिके लोग नानाप्रकार के शस्त्रास्त्र धारणकिये बैठे खड़े थे इस तरह से हम रखाते रहे २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्ताशीतितमस्सर्ग्गः ॥८७॥

निषादराज के ऐसे युक्तवचन सुन भरतजी अपने मन्त्रियोंके सङ्ग उस पाँखी के वृक्षके नीचे जाय रामचन्द्रजी की शय्या को देखने लगे १ व

सब माताओं से बोले कि यहाँपर तिन महात्मा श्रीरामचन्द्र की रात्रि भूमिमें शयन करतेहुये बीती ये कुश उन्हींके बिछौना के हैं २ महाभाग्यवान् धीमान् महाराजों में कुलीन श्रीदशरथ महाराजाधिराज चक्रवर्ती के पुत्रहो श्रीरामचन्द्रजी ऐसे बिस्तरा पै सोनेके योग्य नहीं हैं ३ राजाओं के योग्य अति कोमल मृगचर्म्मादि सुन्दर बिछौना बिछाये पर्य्यङ्कों पै शयनकर अब इस बिना बिछौनाकी भूमिपै पुरुषसिंह श्रीराम कैसे सोते हैं ४ जो श्रीराम धवरहरोंके ऊपर बिमानों पर व कूटागारों पै जहाँ कि सोने चाँदी व पृथिवी के बिकार से बने हुये पर्य्यङ्कादि बिछाये रहते उनपै नानाप्रकार के उत्तम उत्तम बिछौने बिछाये जाते तिनपै सोते थे ५ जिनके ऊपर पुष्प चुनदिये जाते इससे चित्रबिचित्र होजाते व चन्दनादि सुगन्धितबस्तु धरीजातीं उज्ज्वल बादलके समान प्रकाशित सब शयन की सामग्री होती थी उसी स्थानपै सुआ मैना आदि शुभ पक्षी बोलते थे ६ धवरहरों में श्रेष्ठ धवरहरोंपै जहाँ गरमी के महीने में सब इतनी खसखस आदि शीतल सुगन्धित बस्तु धरीजातीं जिनसे गरमी का प्रभावही नहीं व्यापता सुमेरु पब्र्बत से कुछेकही न्यून सुबर्ण के प्रासाद बनेथे जिनमें दीवारें भी सुबर्णही की थीं उनपै शयनकर ७ जहाँ कि नानाप्रकार का गाना बजाना होता व उन नाचनेवालों के उत्तम उत्तम भूषणोंकाही शब्द सुनाई देता मृदङ्गादि बारबार बजाये जाते तो उनका शब्द सुनके जागते थे ८ प्रातःकाल सूत मागध व बन्दीगण जो उनके योग्य कथायें थीं गाय गाय बन्दना करते थे व स्तुति भी करते थे ६ इस भावमें हमको बिश्वास नहीं आता कि सत्य हो पर सत्यहीसा बिदित होता इसबिषय में हमारा मन मोहित है कि क्या यह स्वप्न की बात तो नहीं है क्योंकि ऐसे महाराज कुमार हो श्रीराम इसपर कैसे सोयसके होंगे १० भाई कालसे बलवत्तर कोई देवता व भाग्यभी नहींहै कि जिसकालके बशहो श्रीरामचन्द्रजीभी भूमि में सोये ११ फिर जिस कालही की गतिमें पर बिदेहराज की कन्या व महाराज चक्रवर्ती दशरथजी की पतोहू अतिप्रियदर्शना व रामचन्द्रजी की प्राणप्यारी जानकीजी भी भूमिमें सोईं १२ यह शय्या हमारे भाई की है देखो जैसे जैसे करवटें उन्होंने ली हैं वैसे कड़ी भूमिमें बिछे के

कारण गात्रोंसे तृण कचरगये हैं १३ हम जानते हैं कि इस शय्या पै जानकी जी सब भूषण पहिरेही सोयगईं हैं क्योंकि उनके गहनों से सुवर्ण टूट टूट कुछ बिन्दु समान हो ठौर ठौर देख पड़ते हैं १४ देखो इस स्थानपै जानकीजी ने अपनी सारी धरदी थी व फिर धारणकिया है क्योंकि रेशमी डोरे उनकीही सारी के हैं जो बाज बाज कुशोंमें लगे हुये देखाईदेते हैं १५ हम यहभी मानते हैं कि भर्त्ता श्रीरामचन्द्रजीकी शय्या जानकीजी को सुखदही है क्योंकि जिसको पाय सुकुमारी भी सीताजी को बाल्यावस्थाही में तपस्या करने से बिदेश के दुःख नहीं जान पड़ते १६ हाय हम जीतेही मरगये व बड़े निर्ल्लज्ज मूर्ख हैं जिस हमारे लिये स्त्री सहित श्रीराम अनाथ के समान ऐसी शय्या पै शयन करते हैं १७ हाय सार्व्वभौम चक्रवर्ती दिलीप रघु अज दशरथादि के कुलमें उत्पन्न हो सबलोकोंके सुखदायी सबके प्रिय करनेवाले उत्तम व प्रिय राज्यछोड़ १८ कमलवत् श्यामस्वरूप अरुणनयन प्रियदर्शन सुख केभागी दुःखकेयोग्य कभी नहीं ऐसे रामचन्द्रजी भूमिमें सोतेहैं १९ भाई शुभ लक्षण श्रीलक्ष्मण भाई धन्यहैं व बड़े भाग्यवान्हैं जो ऐसे बिषम कालमें ज्येष्ठ भाई श्रीरामके पीछेपीछे जाय सेवा करतेहैं २० व जानकी जीके भी सब अर्थ सिद्धहोगये जिससे वे पतिके पीछे पीछे बनको चली गईं इसमें हमीलोग अभागी व संशय करनेके योग्य ठहरे जो कि तिन महात्मा श्रीराम से हीन होगये उनके काम न आये २० अब दशरथजी के स्वर्गजाने से व श्रीरामचन्द्र जी के बन आने से यह पृथिवी बिना मल्लाह की नावके समान होगई क्योंकि हमको शून्यही समझपड़ती है इस कारक्षक कोईनहीं देखपड़ता २१ हमलोगोंमें तो कोईभी इसपृथ्वी कीइच्छा नहीं करता कि इसका पालन करै क्योंकि यह रामचन्द्रही के पराक्रमसे रक्षितथी फिर वे तो बनमें बसतेहैं पराई बस्तुकी इच्छाकौन करै २२ भला उनका इष्ट मित्र भाई बन्धु तो इस पृथ्वी को क्या ले सकेगा शत्रु भी उनके मारे प्रताप के नहीं लेसक्ते नहीं तो यह राज-धानी अयोध्यापुरी अब शून्यपड़ी है शहरपनाह की रक्षा कोई नहीं करता हाथी घोड़ोंके बाँधनेवाला कोई नहीं सब मनमाने घूमतेहैं फाटक कोई भी बन्द नहीं प्रत्यक्षमें कोई रक्षकनहीं २३ जो कुछ सेना उसमें

है भी उसे मारे उदासी के रक्षा करनेकी सुधिही नहीं इसीसे न्यून विदित होती जो लोग हैं सब अनवस्थित चित्त इसीसे बाहरसे कोई रक्षा नहीं करता सो शत्रुलोग तो ऐसा डरतेहैं जैसे लोग बिष डारेहुये भोजन से डरते हैं क्यों नडरैं रामचन्द्रजीका प्रतापही ऐसाहै २४ अब आजसे हमभी फल मूलही खायँगे व जटा चीरादि धारण करेंगे व भूमि में तृणही बिछाय सोवेंगे २५ व रामचन्द्रजी को लौटाय बनमें बसेंगे क्योंकि अब जो समय उनका बनबास करने का बाकी है उसे हम पूरा करेंगे जिसमें चौदहवर्ष बनमें बसने की प्रतिज्ञा जो बड़ेभाई ने कीहै वह मिथ्या न हो २६ व बड़े भाईके अर्थ जबतक हमबनमें बसेंगे तब तक शत्रुघ्न हमारे साथ बसतेरहेंगे व लक्ष्मण के साथ भाई अयोध्या का पालन करेंगे २७ ब्राह्मणलोग अयोध्याजी में श्रीरामचन्द्रजी का अभिषेक करेंगे देवतालोगोंसे हम यही माँगतेहैं कि हमारे इस मनोरथ को सत्य करैं २८ ॥

कुण्डलिका ॥

बहु विधि शिर धरि चरण पर जाय मनैहों राम ।
ताहू पर रविकुल तिलक जो न जायँ निज धाम ॥
जो न जायँ निज धाम काम तब करिहौं येहू ।
तिन सँग बसिहहुँ बनहिँ नहीं है कछु सन्देहू ॥
बन महँ मोहिँ कृपालु न तजिहैं राम दयानिधि ।
सुनि मम आरत बचन करहिँगे पालन बहुविधि १ । २९

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टाशीतितमस्सर्ग्गः ८८॥

वह रात्रि तिसी गङ्गातीर पै बिताय बड़े प्रातःकाल उठ भरतजी शत्रुघ्नजी से बोले १ हे शत्रुघ्न अब क्या सोतेहो उठके जाव निषादों के राजा गुह को बुलालावो कि शीघ्रही सेना को पार उतारै २ यह सुन शत्रुघ्नजी बोले कि जैसे आप बड़ेभाई की चिन्ता में नहीं सोये ऐसेही हम भी उनका चिन्तवन करते जागतेहैं सोते नहीं हैं ३ इसतरह दोनों पुरुषसिंह परस्पर बतलाहीरहेथे कि प्रातःकाल होतेही गुहआय हाथजोड़ बोला ४ हे काकुत्स्थ भला सुखपूर्ब्बक रात्रि भर नदीके तीर

आप रहे कोईकष्ट तो नहीं हुआ सहित सैन्य आप अच्छे तो हैं ५ स्नेह से कहेहुये गुहके ऐसे बचन सुन रामचन्द्रजी के बशीभूत भरतजी भी वैसेही प्रेमसाने बचन बोले ६ हेबुद्धिमन् हाँ यह रात्रि बड़े सुखसे बीती व आपने हमलोगोंकी बड़ी सेवाकी अब ऐसा कीजिये कि केवटोंको आज्ञा दीजिये बहुतसी नावें पै चढ़ाय शीघ्रही हमलोगों को गङ्गा उतारें ७ भरतजीकी आज्ञाको सुन गुह अतिबेगसे अपने नगरको जाय निजजाति के लोगों से बोला ८ कि अरे भाइयो उठो जागो आप लोगों का सदा कल्याणहो बहुतसी नावें खींचलावो कि भरतजीकी सेनाको पारउतारें ९ जब राजा गुहकी ऐसी आज्ञा उनलोगों ने पाई तो अति बेग तुरन्तही जाय पाँचसो नावें खींचकर उतरनेवाले घाटपर लगादी १० इनके सिवाय और भी जिनका स्वस्तिक नामथा व राजा महाराजों के उतरने के योग्यथी बड़ी बड़ी घण्टा व पताका बँधीहुई अतिशोभायमान बर्द्दवान आदि लगी लगाई लाये ११ उनमें जिस किसी एक नावका स्वस्तिक मुख्य एकही नामथा व ऊपरसे पीले दुशाला आदि ऊनी कपड़े बढ़ाये थे व जिसका शब्द बहुत सुहावनथा देखतेही जिसके कल्याण होजाता वह नाव गुह लाया १२ उसपै महाबलीभरत व शत्रुघ्नजी चढ़े व कौशल्या सुमित्रादि और जो राजा दशरथजी की रानियाँथीं सब चढ़ीं १३ पुरोहित वसिष्ठजी व अन्य गुरू व ब्राह्मण लोगतो पहिलेही चढ़ेथे भरत व कौशल्याजी के चढ़नेके पीछे और जो राजकुलकी स्त्रियाँथीं सबचढ़ीं तिसके पीछे लढ़ी चढ़ाई गईं फिर बाज़ारकी सामग्री जो सङ्गथी वहचढ़ाई गई १४ चलने के समय बस्तु देखने भालने के लिये मसालचियों का शब्द व गङ्गाजी में स्नान करनेवालोंका हल्ला तथा भोजनादि के बर्त्तन लादने फाँदनेवालों का कोलाहल ऐसाहुआ कि अन्तरिक्षतक जाय पहुँचा १५ नावोंमें ऐसे बर्द्दवान लगाये गयेथे कि यद्यपि एक एक पै सौ सौ खेवनेवाले बैठेथे पर चढ़ेहुये लोगों को वे आप उड़ाये लिये जातीथीं खेवने की आवश्यकता नहीं पड़तीथी व बड़ीजल्दी के साथ चलीजाती थीं १६ कोई कोई नावें तो स्त्रियोंसेही भरीथीं व कोई कोई घोड़ोंसे भरीथीं किसी किसीपै रथ पालकी तामदानादि व इन सवारियों के ले चलनेवाले घोड़े बैलआदि चढ़ेथे व धन सब लदा था १७ वे सब

नावं उसपार पहुँच अपनी अपनी सवारी उतार उतार लौटीं बीच में मल्लाह लोग जलक्रीड़ा करते कराते इस पार फिरलाये १८ इनसबों के पीछे हथिवालों ने अपने अपने हाथी ध्वज सहित पैठाये वे पैरने के समय पङ्क सहित पर्ब्बतों के समान शोभित होते थे १६ कोई कोई लोगतो बड़ी बड़ी नावोंपै चढ़के पारउतरे कोई कोई बाँश खरआदि से बनी छोटी कठनावों पै चढ़के कोई कोई मेटुका मठोर आदि आठ आठ एकमें बाँध घरनइयों पै चढ़के व कोई कोई योंहीं अपने हाथों के वलसे पैरही गये २० वह भरतजी की पुण्य रूपिणी सेना मल्लाहों से उतारीहुई मैत्र मुहूर्त में प्रयाग के उत्तम बनको गई क्योंकि प्रातःकाल से रौद्र सार्प्प दो मुहूर्तों में उतरी यह मैत्र मुहूर्त्त तीसरा है उसमें प्रयाग को गई २१ ॥

हरिगीतिका ॥

रौद्र १ सार्प्परु २ मैत्र ३ पौत्ररु ४ वास ५ वार्य्यक ६ नामहैं ।
वैश्य ७ ब्राह्मरु ८ प्राजरौद्ररु ६ अग्नि १० ऐन्द्र ११ सुकाम हैं ॥
निऋति १२ वारुण १३ यमरु १४ सायक १५ पञ्चदश नित भोगहैं ।
प्रात कालहि सों मुहूरत द्वयघरी के योग हैं १
तहँ पहुँचि भरत स्वसैन्य आदर सहित पूँछि टिकाय कै ।
ज्यहि रह्यहु जहाँ सुपास त्यहि तहँ वास दीन बनाय कै
लै सङ्ग मन्त्रि पुरोहितादिन भरद्वाज मुनीश के ।
गे दरश हित रघुबंश भूषण अधिप परम अनीशके २ । २२
लहि बिप्र आश्रम देवगुरु सम पूज्यकर मन मान्यऊ ।
तहँ वृक्ष तर मुनिवर कुटी लषि सघन बन हर्दि आन्यऊ ॥
अति सुभग बन रमणीय सब बिधि को बखानै ताहिकी ।
शुभसकल शोभा लखतलोभा मन मुनिनको जाहिकी ३ । २३

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकांडेएकोननवतितमस्सर्गः ८६ ॥

भरद्वाजजी के आश्रम से कोशभर दूर सब सेना को टिकाय मन्त्री पुरोहितादिकों को सङ्ग ले मुनिराज के आश्रम पै नरराज भरतजी गये १ वसिष्ठजी को सबसे आगेकर अस्त्र शस्त्र जो धारण किये थे सबो

बाहरही धर रेशमी बस्त्र पहिने पैदरही वहाँ गये क्योंकि परम धर्म्मज्ञ थे जानतेही थे कि अपने बड़े के स्थानपै बड़ी भीर भारसे न जाना चाहिये २ जब बनाय निकट पहुँचे तो मन्त्रियों को भी खड़े करदिया मुनि के दर्शन के लिये केवल वसिष्ठजी को आगे कर उनके पीछे पीछे गये ३ जब भरद्वाजजी ने देखा कि वसिष्ठजी आते हैं शिष्यों से कहा कि अर्घ्य के लिये जल्द जल लावो व आप जल्दीही आसन से उठ आगे को चले ४ जाय बढ़के वसिष्ठजी से परस्पर नमस्कार किया कि भरतजी ने दण्डप्रणाम किया महातेजस्वी भरद्वाजजी ने जाना कि महाराज दशरथजीके ये पुत्रहैं ५ दोनों जनों को अर्घ्य व पाद्य केलिये जलदे पीछे उत्तम उत्तम फलदे तदनन्तर प्रथम वसिष्ठजी से फिर भरतजी से उनके कुलके कुशल पूंछे ६ अयोध्या में जो कुछ सेना खज़ाना मित्र वान्धव पक्षी घोड़े हाथी आदि थे सबके शुभ समाचार पूंछे यद्यपि राजा दशरथजी को सुन चुकेथे कि वे स्वर्ग्गबासी हुये तथापि उस समय उनको भी पूंछा ७ तब वसिष्ठजी व भरतजीने भी मुनिके शरीर अग्नि मृग व कुटीपरके पक्षियों के कुशल पूंछे ८ तीनों जनोंने कहा हाँ सब आनन्द है तब भरद्वाजजी रामचन्द्रजीके स्नेह के हेतु भरतजीसे बोले ६ कि भरत तुमको तो सुनाथा कि राजा हुयेहो फिर राज्यका पालन छोड़ यहां आनेका कौन प्रयोजन है कहिये इस बिषयमें हमारा मन शुद्ध नहीं होता १० सबके आनन्द बढ़ानेवाले शत्रुओं के नाशनेहारे जिनको कौशल्याजीने उत्पन्न किया है व श्रीराम तो भाई लक्ष्मण के संग बनको भेजेगये ११ उनके भेजने में केवलस्त्री ही कारणहै कि जिसके कहनेसे पिताने बनबास दिया सोवे महायशस्वी श्रीरामतो चौदहबर्ष केलिये बनमें बसे १२ भला तुम तिन अपापीरामचन्द्रके साथ अकण्टक राज्यभोग करने केलिये कुछ पापतो नहीं किया चाहते वा उनके भाईही के साथ तो नहीं पापकिया चाहते १३ यहसुन भरतजी मारे दुःख के नेत्रों में आँशुभर अति गद्गद वाणी से भरद्वाजजीसे बोले १४ कि यदि महाज्ञानी अन्तर्य्यामी आप हमको ऐसा जानते हैं तो हम मरे महाराज हमसे रामकी ओर कभी पाप न होगा आपभी यही जानिये १५ जो हमारे सूने हमारी माताने ये बचन कहे सो हमको

अभी नहींथे न हम अबभी उनसे सन्तुष्टहैं न उसके बचनों को अङ्गीकार करते हैं १६ हमतो तिन पुरुषसिंह श्रीरामचन्द्रजीकी प्रसन्नता चाहते हैं व इसके लिये आयेहैं कि अयोध्या को लिवा ले चलें वहां उनके चरणों की बन्दना किया करें १७ इससे हमको इसकार्य्य के लिये आये जान प्रसन्नहूजिये व बताइये महाराज रामचन्द्रजी इससमय कहांहैं १८ यह सुन बसिष्ठादि ऋत्विज्लोगों ने भी भरद्वाजजी से कहा कि इस विषयमें इनका कुछ अपराध नहीं आप इनके ऊपर प्रसन्नहों तब प्रसन्न हो भरद्वाजजी भरतजीसे बोले १९ हे पुरुष सिंह भरत रघुवंशमें जन्म लिये आपको यह योग्यही है जो गुरुलोगों की सेवा व शत्रुओं का दमन करना व साधुओं के अनुयायी होना आदि गुण तुममें हैं २० हम यह जानते हैं कि तुम्हारे मनमें यहीहै परन्तु और पुष्टकरनेकेलिये व तुम्हारी कीर्त्ति फैलाने के लिये हमने पूंछा २१ व हम रामजानकी लक्ष्मण को भी जानतेहैं ये तुम्हारे बड़े भाई चित्रकूट नाम पर्ब्बत पै बसते हैं २२ वहांको प्रातःकाल जाना आज अपने मन्त्रियोंके साथ इस हमारी कुटीपै बसिये यह हमारा काम कीजिये २३ ॥

चौ० । एवमस्तु कहिभरतभुआला । अति प्रिय बोलयहुबचनरपाला॥
मुनिआश्रम पर त्यहि निशि बासू । करन बिचारेहुसकलसुपासू १।२४॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेनवतितमस्सर्ग्गः ॥ ९० ॥

जब कैकेयीके पुत्र भरतजीने रहनेका बिचारकिया तो भरद्वाजजीने आतिथ्यभावसे न्योताकिया १ तब भरतजी बोलेकि बनमें जिस तरहका न्योता अर्घ्य पाद्यादिसे होताहै सो तो आपनेकिया बस अब और इससे अधिक निमन्त्रण न करनाचाहिये २ यह सुन हँसके भरद्वाजजी भरतजी सेबोले कि हम जानतेहैं तुम प्रीति संयुक्तहो जोई कुछहो उससे सन्तुष्ट होजातेहो ३ हम तुम्हारी इस सेनाको भोजन कराया चाहते हैं इससे इस हमारी प्रीतिको तुम पूर्ण करनेके योग्यहो ४ आप अपनी फौजदूर क्यों टिकायकर यहाँ आये हे पुरुषर्षभ सहित फ़ौज के क्यों नहीं चले आये ५ यह सुन हाथजोड़ भरतजी मुनिसे बोले हे भगवन् आपके भयसे सहित सेना हम यहाँ नहीं आये ६ क्योंकि राजा वा राजपुत्रक

सदा चाहिये कि तपस्वियोंके स्थान पै यत्न पूर्ब्बक कोई उपद्रव न हानें-दें ७ सो आश्रम पै सेनाके आने पै उपद्रव ज़रूरही होता क्योंकि अच्छे अच्छे घोड़े मनुष्य व मदान्ध हाथी हमारे पीछे पीछे चलतेहैं तो बहुतसी भूमिको मूंद लेतेहैं ८ इसीसे हमने बिचारा कि वे आपके आश्रम के वृक्ष जल भूमि व पर्णकुटी आदिको न नाश करदें इसीसे हम अकेलेही यहाँ चलेआये ६ मुनिराज भरद्वाजजी ने कहा कोई कुछभी उपद्रव न करेगा आप सेना यहाँ बुलवाइये जब परमर्षिने ऐसी आज्ञादी तो भरतजी ने सेना बुलाई १० भरद्वाजजी भी अग्निसालामें जाय तीनि बार आचमन कर व वेदमन्त्रों से मार्ज्जन कर आतिथ्य क्रिया के सिद्ध होनेके लिये प्रथम तो विश्वकर्म्मा को बुलाया ११ उस समय यहमन्त्र पढ़ा कि त्वष्टा नाम विश्वकर्म्माजी को हम बुलाते हैं क्योंकि सेना सहित भरतका हमने निमन्त्रण कियाहै सो उसके निर्ब्बाह की सामग्री प्राप्तकरो १२ व वरुण कुवेर यमराज इनतीन लोकपालोंका व इन्द्रादि अन्य देवताओं को आवाहन हम करते हैं क्योंकि ससैन्य भरतजी का आतिथ्य भावसे हम निमन्त्रण करतेहैं सो आय उस कर्म्मकी सामग्री एकत्रकरो १३ फिर कहाकि जो नदियाँ पूर्ब्बबाहिनी हैं व जो तिरछी बहतीहैं चाहे वे पृथिवी में बहती हों चाहे अन्तरिक्ष में परन्तु आज यहाँ सब आवें १४ यहाँ आयकोई तो मैरेयचुऐं कोई सुन्दर बनीबनाई मदिरा कोई ऊषके रसके समान मीठा व शीतलजल चुआवें १५ व बिश्वावसु हाहाहूहू आदि तथा अप्सरा देवी गन्धर्ब्बियोंका आवाहन करतेहैं १६ उनमें घृताची विश्वाची मिश्रकेशी अलम्बुषा नागदत्ता हेमा सोमा व अद्रिकृतस्थलीका आवाहन करते हैं १७ व जो स्त्रियाँ इन्द्र व ब्रह्माके निकट टिकी रहती हैं उन सबको तुम्बुरु नाम गन्धर्ब्ब के साथ आवाहन करते हैं १८ व जो बन दिव्य वस्त्र भूषणयुक्त पत्र उत्तर कुरुदेशमें हैं जिसमें दिव्य स्त्रियाँही फर लगतीहैं तिस कुवेरके बनको बुलातेहैं १६ व भक्ष्य भोज्य चूष्य लेह्यादि बिविध प्रकारके अन्न यहाँ आय भगवान् चन्द्रमा हमारे यहाँ उत्पन्नकरें २० व वृक्षोंसे चुए विचित्र फूल व सुरा आदि पीनेकी बस्तु बिबिध प्रकार का माँस २१ इसतरह अद्वितीय तपस्या के प्रभाव से ध्यान युक्त हो सुन्दर ब्रत धारण करनेवाले मुनिराज

शिक्षास्वर समन्वित वचन बोले २२ पूर्व्व को मुखकर हाथजोड़ इस प्रकार ध्यान करते हुये मुनिके सब देवता अलग अलग आईं २३ व मलया चल दर्दुराचल पर्व्वतों का स्पर्श कर सर्व्व प्रिय व कल्याण रूप पवन युक्ति पूर्व्वक बहनेलगा जिसके लगतेही गर्मी दूर होजाती है २४ तिसके पीछे बादरों से दिव्य पुष्प वृष्टिहुई व सबदिशों में देवों के नगारों का शब्द सुनाई देनेलगा २५ व उत्तम पवन बहने लगे अप्सरालोग नाचने लगीं देवता व गन्धर्व्व गानेलगे बीणाओं से स्वर निकलने लगा २६ सो ताल भेदों के साथ स्वर स्वर्ग्ग व भूतल में प्राणियों के कानोंमें अच्छी तरहपैठा सुननेवाले प्रसन्न हो उठे २७ जब इसतरह सबके कानोंमें दिव्य शब्द परा जिससे सबको सुखहुआ तो उसी समय भरतजी की सेनाने विश्वकर्म्मा का और भी बिधान देखा २८ वह यहहै कि चारों ओर पाँच योजन तक भूमि बराबर होगई कहीं खाली ऊंची न रही व सब कहीं नीलवैदूर्य्य मणियों के समान हरी हरी घास जमगई २९ तिसभूमिपर बेल कैथा कटहर बिजौरा नेंबू आ-वला आमआदि वृक्ष सुन्दरफरे फराये लगगये ३० व उत्तर कुरुदेशोंसे दिव्य दिव्य भोगकी बस्तु समेत बनआया व वहींसे किनारे किनारे वृक्ष लगी एक सौम्यानाम नदी आई ३१ बहुत से चौमहले अति सुन्दर आये जिनमें नानाप्रकार की अँटारी धवरहरादि बनेथे व घोड़े हाथियों के रहनेके लिये अनेक बाजिशाला दन्तिशाला आईं ३२ व उजले बादरों के समान सुन्दर बन्दनवार लगे उजले फूलोंकी मालाओं से सुवासित दिव्य सुगन्धित बस्तु मिश्रितजलसे छिरके सैकरों राजमन्दिर आगये ३३ जिनमें चौकोने अति बिशाल सोने बैठने उठने आदि के स्थानबने अनेक तरह के पालकी पीनस तामदान आदि सवारी के बिमान धरे देवताओं के भोजन करनेवाले सबतरह के रसीले भोजन व उत्तम बस्त्र धरे ३४ सबतरह के भक्ष्य भोज्य चूष्य लेह्य अन्न सय्युंक्त धोये निर्म्मल बर्तन भोजन करने बनाने आदि के मौजूद सबतरह के बिछौने बिछाये धन धान्य संय्युक्त सब लेटनेवाले स्थानों पै सुन्दर बिस्तरे बिछे ३५ ऐसे एक सर्वोत्तम मन्दिर में वशिष्ठजीकी व भरद्वाजजी की आज्ञासे महाबाहु कैकेयी के पुत्र भरत प्रविशे ३६ तिसके पीछे मन्त्री व पुरोहित लोग भी

उसीमें पैठे तुरन्तही ऐसा उत्तम मन्दिर बना देख सब लोग परमानन्दित व बिस्मित हुये ३७ वहां एक राजसिंहासन बनाथा जिसके निकट राज योग्य चमरछत्र लिये सकल भूषण भूषित दासलोग खड़ेथे मन्त्रियोंके संग जाय सिंहासन पै भरतजी राजवत् बिराजमान हुये ३८ परन्तु जो सबसे उत्तम स्थान बनाथा भरतजी उस पै नहीं बैठे किन्तु उसको तो बिचारा कि यह राजा रामचन्द्रजीही के बैठने के योग्य है इससे उस आसन के प्रणाम कर जो उसीके निकट सर्व्वोपरि मन्त्री के बैठने के निमित्त बनाथा हाथमें पङ्खा ले उसपै आप बैठे ३९ तिसके पीछे क्रमसे यथोचित स्थानों पै मन्त्री पुरोहित सेनापति व आज्ञालेखक आदि बैठे ४० जब सब समाज अपने अपने स्थानों पै बैठगई तो जिन नदियों का बोदा पायस रूपहै व जल अमृत दुग्ध घृतके समान वे आय भरतजीके आगे भरद्वाजजी की आज्ञासे प्राप्तहुईं ४१ इन नदियोंके दोनों किनारे पीली मिट्टीसे लिपेहुयेथे व भरद्वाजजीके प्रसादसे अति मनोहर रमणीय दिव्य मन्दिर बनेथे ४२ उसी समय सब दिव्य भूषण वस्त्र धारणकिये ब्रह्मा जीकी पठाई बीससहस्र स्त्रियां आईं ४३ व सुवर्ण मणि मुक्ता मूंगाआदि पहिने कुवेरजी की पठाईभी बीस सहस्र स्त्रियां आईं ४४ व बीस सहस्र अप्सरा नन्दन बनसे आईं जिनको देखनेही से पुरुष कामातुरहो बिक्षिप्त सा होजाता ४५ नारद तुम्बुरु गोप येसूर्य्य समान तेजस्वी गंधर्ब्बराज भरतजी के आगे आय गानेलगे ४६ वा अलम्बुसा मिश्रकेशी पुण्डरीका आदि अप्सरा भरद्वाजजी की आज्ञासे भरतजीके आगे आय नाचनेलगीं ४७ जोफूल देवलोकहीमें सुनेजाते व जो चैत्ररथ नाम बनमें होते वे सब भरद्वाजजी के तेज से प्रयागजी में उससमय देख परते ४८ व बेल के जितने वृक्षथे सब मृदङ्ग बजाते शमीके वृक्ष ताल बजाते बहेरा व पीपल के वृक्ष नाचतेथे येसब भरद्वाजजी के तेजसे ऐसा करते नहीं तो जड़ वृक्षोंमें येशक्तियाँ कहाँ ४९ तिसके पीछे साँखू तिलक व तमालके वृक्ष कुब्जा व बामनकहो अति प्रसन्न मनहोके आये ५० सिरसा अँवरा जामुन आदि वृक्ष बनमें जोलतायें थीं स्त्रियोंका रूप धारणकर उस समय भरद्वाजजी के आश्रम पैबसीं ५१ अब आपसमें सब लोग कहनेलगे कि भाइयो जो लोग भूखेहों वे खीरभोजन करें जोप्यासेहों दुग्ध शर्बत

घा मदिरा जिसको जो भावे पियें व जो मांस भोजन करनाचाहें सबतरह का मांस तैयारहै भोजन करें ५२ जैसेही लोगोंने भोजन करनेको मन किया कि एक एक पुरुषको पन्द्रह पन्द्रह स्त्रियाँ लपटजायँ कोई किसी अङ्गमें कोई किसीमें उबटन लगाय अति सुन्दर नदीके तीर लेजाय स्नान कराने लगीं ५३ हाथ पैर आदि अङ्ग अच्छी तरह मींज मींज स्नान कराय सुन्दर बस्त्रसे देहें पोंछ शर्बतादि अपने हाथोंसे उठाय उठाय पिलाने लगीं ५४ घोड़े हाथी खच्चर ऊंट व बैलोंको साईस हथवाल गाड़ीवान आदि जो भोजन उन पशुओंके योग्यथे खिलाने पिलाने लगे ५५ सो इक्ष्वाकुवर भरतजीके योधोंके वाहनोंको ऊंख मधु लावा जलेबी आदि सबोंनेभोजनकराया ५६ सब साईसहथिवालादिकोंने ऐसीमादक वस्तु खाई कि साईसों ने न अपने घोड़ोंको जाना कि कौन हमारा है न हथिवालोंने हाथियोंको इससे यह मत्त प्रमत्त होनेसे हर्षित सेना बड़ी शोभाको पहुंची ५७ जब सैन्य के लोग सब कामोंसे तृप्तहुये तो लाल-चन्दन लगाय लगाय अप्सराओंके संग मत्तहो विहरे तो मतवालोंकीसी बातें कहनेलगे ५८ भाई अब हम न अयोध्याही को जायँगे न दण्ड-कारण्यहीको भरतजी को कुशलहो व रामचन्द्र जीको सुख ५९ यह बात पैदरयोधा व हाथी घोड़ोंके चढ़ने वालेभी कहने लगे क्योंकि उनको कभी किसीने मादक पदार्थ नहीं खिलायाथा व यहाँ वे चारोंको प्रमाद मादकही पदार्थ खाने को मिले इससे विक्षिप्तहो ऐसे वचन कहनेलगे ६० सहस्रों मनुष्य भरतजी के अनुयायी हर्षित हो ऐसा कहते थे भाई जो स्वर्ग सुनते थे वह यहीहै क्या ६१ फूलोंकी माला पहिरे हजारों सेनाके लोग नाचते गाते हँसते हँसाते थे व इधर उधर दौड़तेथे ६२ वह अमृतोपम भोजन कर यद्यपि सब अघायेथे तथापि दिव्य दिव्य पदार्थदेख उन लोगोंका चित्त फिरफिर भोजन करनेको चलताथा ६३ सेवक सेवकी बधू व सेनाके सब लोग सबको नये नये वस्त्र भूषणादि मिले इसलिये सबके सब अति प्रसन्न हुये ६४ हाथी खच्चर ऊंट बैल घोड़े मृग गण व पक्षी जो फौजमेंथे सबसब प्रकारसे मनमानी चीजें खाय पी प्रसन्नहुये व कोईभी किसीअन्य पदार्थकी इच्छा नहींकरताथा ६५ उस समाज में अस्त्र विना न कोई ऐसा था जिसके वस्त्र लाल न हों

कपड़े न हों न कोई भूखा व मैला कुचैला था न किसी के बारों में धूर लगी थी सब साफ़ सुथरे वस्त्र पहिने बालझारे तेल फुलेल आदि लगाये हुये थे ६६ सेनामें जो कुत्ते आदि पालतू जीव थे उनके भोजनके लिये आम आदि फलोंके काढ़ा से पचाये हुये खसी सूकर आदिकों का मांस मूंग उर्द आदि की दाल व हींग आदि सुगन्धित वस्तुओं से बघारा नानाप्रकार का श्रेष्ठ व्यंजन विद्यमानथा ६७ लोहे के सैकरों पात्रों में फूलोंकी पताका किनारे किनारे गाड़ी बीचमें सुन्दर उज्ज्वल भात भरा देख लोग विस्मित होतेथे ६८ जो वन उत्तर कुरु देश से आयाथा उसके किनारे किनारे जो कुआंथे सबमें खीरही का चहला भराथा जो चाहता निकाल निकाल खाता इसके सिवाय गायें ऐसीथीं जो पदार्थ चाहो उन्हींसे दुहलो वृक्षों मेंसे दूध दही मिठाई आदिकी धारा चलतीथी ६९ बावलियों में मद्य भरा था सुन्दर हरिण आदि का मीठा मांस बना बनाया भी भराथा मृग मुरैला मुरुगा आदि का मांस कुण्डोंमें चुरे चुरे भरा गयाथा ये भोजन हाथी व घोड़ोंके लिये थे ७० अन्न धरनेके लिये छोटे छोटे सुवर्ण के सहस्रों पात्रथे भात आदि रींधनेके लिये भी सुवर्णहीके लाष पात्रथे भोजन करनेके निमित्त सुवर्णहीके दशकिड़ोर पात्रथे ७१ लोटा आबखोरा आदि जलपीने के पात्र अग्नि आदि से तपाये हुये पवित्र करम्भी दही धरने के पात्र जिनमें दही भरारहता बहुत पात्र यौबन मट्ठाधरने के थे जिनमें मथने के पीछे पहरभर तक मट्ठा रहसक्ता था बहुत पात्र केसर आदि पीत वस्तु डारेहुये पीला माठा धरने के थे बहुत ज़ीरा आदि सुगन्धित वस्तु मिश्रित मट्ठा केथे ७२ बहुतसे शिखरणि भरे कुण्डथे बहुत उजले दहीसे भरे बहुत से दूध भरे बहुतों में शकरही भरीथी ७३ अवँलादि चुराया हुआ काढ़ा व लावा आदि का काढ़ा बर्तनोंमें भरा स्नान करनेके योग्य घाटोंपै धरा लोगोंने देखा ७४ सुन्दर दुधारे वृक्ष के दन्त धावनों के ढेरके ढेर धरे सबकी एक ओरकी फुनगी खूंद खूंद के कूंची बनाय दीगई थीं उज्ज्वल चन्दन घिसा घिसाया कटोरों में भराधरा ७५ उसी घाटही पर हजारों दर्पण सिन्दूर आदि से मलेदले साफ़ धरे वस्त्रों के ढेरके ढेर पनही व खराउवों की हजारों जोड़ियां धरीं ७६ आंजन भरीहुई डबियां ककहा दाढ़ी आदि

आरनेके लिये खसखस की छोटी छोटी कूंचियाँ छाते धन्वा मर्म्मस्थलों की रक्षाके लिये कवच बखतरादि चित्र विचित्र शयन करने व बैठने उठने के आसन ७७ खर ऊंट हाथी घोड़े आदिकों के पीनेके पदार्त्थ भरे हुये कुण्ड जिनमें नहाने जानेके लिये सुन्दर घाट बँधे कमलफूले ७८ कुण्डों में निर्म्मल आकाश के समान साफ़जल भरा उतरजानेमें सुलभ नील वैदूर्य्यमणिके समान हरी हरी घासकी सानी पशुओं के लिये बोरी धरी ७९ घासके ढेरके ढेर लगे यह सब सामग्री लोगोंने देखी व देखके सबोंने विस्मय किया कि आर्य्ये यह स्वप्नहै वा सत्यही सत्य ऐसी सामग्री इनके पासहै ८० यह सब भरद्वाज महर्षिने जब भरत की सैन्य का न्यौता किया तबहुआ इस तरह भरद्वाजजीके आश्रमपै लोग रमित हुये जैसे देवता लोग नन्दनबनमें रमित होते ८१ उस आश्रम पै इसतरह वह रात्रि बीती प्रातःकाल होतेही वे स्त्रियाँ जहाँसे जैसे आईथीं वहाँ को वैसही चलीगईं व गन्धर्ब्ब लोग भी अपने लोक को गये ये सब भरद्वाज मुनि से आज्ञा ले ले गये ८२ ॥

दो० तिमि मदिरारुकट मत्तनर तिमि चन्दन गरुगात ।
तिमि वर माला धृत गले मर्दहु नरन सकात १ । ८३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे एकनवतितमस्सर्गः ॥ ९१ ॥

तिसके पीछे भरतजी अपने सङ्गियों के सङ्ग वह रात्रि वहाँ भरद्वाज जीकी पहुनई में बिताय कुछ कहने की कामना से भरद्वाजजीके निकट गये १ तिन पुरुष सिंह भरतजीको हाथजोड़े आते देख अग्निहोत्र किये हुये भरद्वाजजी भरतजी से बोले २ भला हमारे आश्रम पै तुम्हारी यह रात्रि सुख से बीती तुम्हारे सब जनोंको सामग्री अँटगईथी सब प्रसन्न हैं यह हमतें कहौ ३ यह पर्णकुटी से निकलते महातेजस्वी मुनि को देख हाथजोड़ भरतजी बोले ४ हे भगवन् परम बलवान् आपने सहित समाज हमारी पहुनईकी सबको सब काम मिले इससे बड़े सुखसे आपके आश्रम पै बसे ५ मार्ग्ग चलने आदि से जो सबको कष्ट हुआ था सब जातारहा छोटों बड़ों सबको उत्तम उत्तम पदार्त्थ भोजन करने को मिले सबको सुन्दर रहने का स्थान मिला हम अपने दासवर्ग्ग सहित बहुत

सुखी रहे किसीको कुछ कष्ट नहीं हुआ ६ अब आपसे आज्ञा मांगते हैं अपने भाई के समीप को जाया चाहते हैं आप दयादृष्टि से देख जानेकी आज्ञा दीजिये ७ हे धर्म्मज्ञ तिन धर्म्मज्ञ व महात्मा भाई रामचन्द्रजी का आश्रम बताइये यहाँ से कौन गली है व कितनी दूर है बताइये ८ भाईके दर्शनोंकी अभिलाषा किये भरतजीसे प्रसन्नहो भरद्वाजजी बोले ६ हे भरत यहाँ से ढाईयोजनपै दुष्टजन रहित बनमें चित्रकूट नाम पर्व्वतहै जिसपर नानाप्रकार के रमणीय जलोंके झरना झरतेहैं व सुन्दर बनहै १० उस पर्व्वत के उत्तर भाग मन्दाकिनी नदीहै जिसके दोनों ओर पुष्पित वृक्ष अति सघन लगे हैं पुष्पित बन भी अति रमणीय वहाँहीं है ११ उस नदीसे मिलाही हुआ चित्रकूट पर्व्वत है उसी पै पर्णकुटी बनी है दोनों भाई वहाँ रहते हैं १२ यहांसे यमुनाजी के उत्तर के किनारे किनारे थोड़ी दूर अपनी सेना हाथी घोड़े सहित लेजाइये फिर यमुना उत्तर दक्षिण पश्चिमके कोणका रास्ता लेना १३ इसतरह से जानेमें रामचन्द्र जीको शीघ्रही देखोगे भरत व भरद्वाज जी की वार्त्ता सुन राजस्त्रियों ने जाना कि यात्रा होगी १४ यद्यपि क्षणमात्र भी महाराज दशरथजी की स्त्रियाँ पैदल नहीं चलसक्तीथीं तथापि यात्रा सुन पैदरही भरद्वाज जीकी प्रदक्षिणा करने लगीं उससमय सुमित्रा जीके सङ्ग काँपतीहुई १५ कौशल्याजीने प्रदक्षिणा कर आय मुनिराज भरद्वाजजी के चरण पकड़े यद्यपि सब लोकों के पालन करनेवाली कौशल्याजी हैं तथापि उनका मनोरथ जो रामचन्द्रजीके अभिषेक होनेका था वह नहीं पूर्णहुआथा १६ उसीसमय तिन महामुनिकी प्रदक्षिणाकर कुछलज्जितहो मुनिके चरणों पै गिरीं १७ व प्रणामकर जाय भरतजीके बनाय समीप खड़ीहुईं तिस समय महामुनि भरद्वाजजी भरतजीसे बोले १८ हेराघव तुम्हारी माता-ओंका विशेष हाल जाना चाहतेहैं जब धीमान्भरद्वाजजीने भरतजी से ऐसा कहा तो १६ वचन कहनेमें बड़ेचतुर भरतजी हाथजोड़बोले हेभगवन् जो यह बहुत दीनमुख मारेशोक व उपासों के दुर्ब्बल होगई हैं २० पिताजीकी सबसे बड़ी पट्टरानी हैं जो देवताके समान रूपधारण किये हैं सिंह विक्रान्तगामी पुरुष शार्दूल श्रीरामजी को इन्हीं २१ कौशल्या जीने उत्पन्न कियाहै जैसे धाताको अदितिजी ने उत्पन्न कियाहै व जो

इन्हींकी बाईंभुजामें लपटी उदास खड़ी हैं २२ ये सुमित्रा देवी राजाकी मँझिली स्त्रीहैं व पुष्प गिरी हुई कर्णिकारकी शाखाके समान उदासहैं २३ इन्हींके सत्य पराक्रमी देव समरूप लक्ष्मण व शत्रुघ्नहैं जो बड़ेभारीवीर हैं २४ व जिसके निमित्त राम लक्ष्मण दोनों जने बनको गये व राज-पुत्रसे हीनहो राजादशरथ स्वर्गको गये २५ व जो सदा क्रोधहीकिये रहतीं बुद्धि रखतीहीं नहीं अहङ्कारसे जानों भरीही रहती अपनाको सदा सुभगाही मानतीं सदा अपनाही ऐश्वर्य्य चाहतीहैं बड़ी मनार्स्विहैं पर अपनाको आर्य्यरूप मानतीहैं इनका कैकेयी नामहै २६ सो इन पाप निश्चया व निर्ल्लज्ज को हमारी माता जानिये कि जिनको इस शोक समुद्रका मूल समझना चाहिये २७ यह कह नरशार्दूल श्रीभरतजी की वाणी गद्गद हो गई मारे क्रोधके नेत्र लालहोगये क्रोध किये हुये हाथी के समान श्वास लेनेलगे २८ ऐसा कहते हुये भरतजी से महा मुनि भरद्वाज जी बोले २९ हेभरत कैकेयी बेचारीका दोष न देना चाहिये क्योंकि यह रामचन्द्रजीका बनवास होना बड़ेसुखदेनेवालाहोगा ३० क्योंकि रामचन्द्रजी के बनवास से देवता मुनि ऋषि दैत्यों का हित होगा ३१ यहसुन भरतजी मुनिके प्रणाम व प्रदक्षिणा करआज्ञालेचले सेना से कहाकि अपनी अपनी सवारी तैयार करो यात्राहै ३२ यह सुन लोग सुवर्ण भूषित रथादिकों में घोड़े आदि नहि के यात्रा के लिये बहुत सवारियों में बहुत लोग चढ़े ३३ हाथी व हाथियों की बच्चियाँ सुवर्ण के भूषण धारण किये पर्व्वताकार आगे आगे चले ३४ विविध प्रकार के वाहन व विमान बड़े छोटे चले व पैदरलोग अपने अपने पैरोंसे चले ३५ इसके पीछे रामचन्द्रजीके दर्शन की आकांक्षा किये कौशल्यादि राजस्त्रियां पालकियोंपै चढ़ चढ़ चलीं ३६ नुवा सूर्य्यचन्द्र के समान देदीप्यमान शुभ पालकीपै सवारहो सहित समाज भरत-जीभी चले ३७ हाथी घोड़ायुक्त महा सेना वहाँसे दक्षिण दिशा को चली जैसे उसी दिशामें मेघ उठनेसे शोभा होतीहै शोभायमान होने लगी ३८ मृगगण व पक्षिगण सेवित बन नांघ गङ्गाजी व यमुनाजी के उसपार सेना पहुंची बीचमें पर्व्वत व नदियां बहुतसी मिलीं ३९ ॥

दो० मुदित दन्ति हय युथयुत आसत मृग द्विजयूह।

महाबनन बिचरत भरत सैन्य चली करि हूह १ । ४७

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्विनवतितमस्सर्गः ९२ ॥

तिस भरतजी की महासेना के चलने से सब बनबासी व्याकुल हुये जिससे दुःखीहो हाथी आदि झुण्डों के स्वामी अपने अपने झुण्ड वालों को सङ्ग ले भागे १ ऋक्ष पृष तरुरु आदि जीव चारों ओरसे भाग भाग बनों पर्ब्बतों व नदियों के किनारेपै जाय गिरे २ इस तरह दशरथ नन्दन श्रीभरतजी तिसबड़ी भारी चतुरङ्गिनीसेनाके साथ प्रसन्नमनहो चले३ तिस महात्मा भरतजीकी सागर के जलकी लहरों के समान चलती सेनाने पृथिवी को आच्छादित कर दिया जैसे वर्षाकाल में बादर अन्त रिक्ष को आच्छादित करलेते हैं ४ घोड़े हाथियों के झुण्डों से बढ़ीहुई वह सेना उसकाल में बहुत समय तक नहीं देखी जाय सक्ती थी ५ इस तरह भरतजी सहित सेना बहुत दूरतक चले गये वाहन सब थक उठे तो मन्त्रियों में श्रेष्ठ वसिष्ठजी से बोले ६ कि जिस तरह का इस देशका रूप देख पड़ता है व जैसा हमने सुनाथा जिसको भरद्वाज जीने बताया था निश्चय यह वही देशहै ७ बस यही तो चित्रकूट पर्ब्बत है व यही मन्दाकिनी नदीहै व यही कालेबादर के समान नीलरंग का बनहै जो देखाई देता ८ देखिये इस समय इस चित्रकूट पर्ब्बत के रमणीय कँगूरे हमारे पर्ब्बताकार हाथी पीड़ित करते हैं ९ ये वृक्ष पर्ब्बतकी कँगूरोंपै फूल बरसते हैं जैसे बदरीमें काले बादर जलकी वर्षा करते हैं १० हेशत्रुघ्न किन्नरों के रहने वाला स्थान इस पर्ब्बतपै देखते हो जिसपै चारों ओरसे घोड़ चले जाते हैं जैसे बड़े बड़े मकरों से समुद्र पूर्ण होता है११ देखो ये मृगगण अति शीघ्रता से भागे जाते शोभितहोते जैसे शरद ऋतुमें आकाश में वायुके वेगसे चलते हुये बादल शोभित होते१२ देखो तो ये हमारे सैनिकलोग शिरोंपैकैसे महकुये काले फूलोंके गुच्छे धरेहैं जैसे दक्षिण के लोग मेघोंके समान नीली ढालें शिरपै धरे रहते १३ इस समय हमारी सेनासे पीड़ित होनेके कारण यह बनपक्षी व मृगों के शब्दों से रहित होजाने से ऐसाघोर भयङ्कर लगता है जानों इन दिनोंकी अयोध्या पुरीही है १४ देखो घोड़े खच्चर आदि पशुओं

के खुरोंसे उठी धूलि आकाश को तायेहै तिसको मानों हमारा हितही करने के लिये पवन शीघ्रही उड़ाय अलग करता है १५ हेशत्रुघ्न तुरङ्ग नहे सारथि चढ़े इनरथों को देखो तो चारों ओरसे बनमें चले जाते हैं १६ इन प्रिय दर्शन सुन्दर मोरोंको देखो तो मारे डरके कैसे उड़े जाते हैं व तैसेही अन्य पक्षीभी अपने अपने स्थानों से उड़े जाते हैं १७ यह देश जिससे कि तपस्वियों के निवास का स्थान है इससे हमको स्वर्गही के समान प्रिय व सुन्दर लगता है १८ इस बनमें बहुत मृग मृगियों के सङ्ग चले जाते उनके अति मनोहर रूप जान पड़ते हैं मानों फूलोंसे चित्रित हैं क्योंकि उनके ऊपर विन्दु बने हैं १९ अब सैनिक लोग ठौरठौर घूमे व बनमें ढूंढें जिसमें रामचन्द्र व लक्ष्मण मिलजायँ २० भरतजी के बचन सुन शस्त्र धारण किये पुरुष इधर उधर बनमें पैठे तो आगे धुआँ उठता देखाई दिया २१ वे लोग धुआँ देख आय भरतजी से बोले कि बिना मनुष्यके स्थानमें धुआँ नहीं होसक्ता इसलिये विदित होता है कि जहाँ यह धुआँहै वहीं श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणहैं २२ अथवा जो शत्रुओं के सन्ताप करनेवाले राजपुत्र दोनों भाई यहाँ न होंगे तो रामचन्द्रही के समान औरही कोई तपस्वी रहते होंगे २३ इन लोगोंके ऐसे बचन सुन शत्रुओंका बल दमन करनेवाले भरतजी उनलोगोंसे बोले २४ कि तुम लोग सावधानी से यहीं ठहरो यहाँसे आगे न जाना सुमन्त्र के साथ हम अकेलेही जायँगे २५ यह सुन सैनिक लोग तो वहीं ठहरगये व भरतजी जहाँ धुआँ देखाई देताथा उसी ओरको देखते चले २६ ॥

दो० भरत टिकाई सेनमहिं देखत रही बनाय ॥
रामागम देख्योनहीं रहीत्यहूँ हरषाय १ । २७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रिनवतितमस्सर्गः॥ ९३ ॥

गिरिवर चित्रकूट के प्रियकारी श्रीराम बहुत समय से उस पर्ब्बत पै बसे रहे जानकीजी का प्रिय करने व अपने चित्तको लोभाने केलिये १ अपनी भार्य्या जानकी जी को चित्र विचित्र चित्रकूट दिखानेलगे जैसे इन्द्रजी इन्द्राणी को बनकी शोभा देखाते हैं २ व जानकी जीसे कहने लगे हे प्रिये इस रमणीय पर्ब्बत को देख राज्य त्याग करना व बिना

सुहृदोंके यहां रहना हमको नहीं बाधता ३ हे भद्रे नानाप्रकारी गणसे वित धातु सहित कंगूरों से शोभित यह पर्व्वत देखो ४ इस पर्व्वत के कोई कोई स्थानतो चांदी के समान चमक रहे हैं कोई कोई रुधिर के समान लालहैं कोई कोई पीली मँजीठके रंगके कोई कोई इन्द्रनीलमणिके रंग केहैं ५ कोई कोई पुष्पराग व स्फटिक मणिके रंगके कोई कोई केतकी के रङ्ग के कोई कोई नक्षत्रों व पाराके रङ्गके ये सब नानाप्रकार के धातुओं के कारण नानाप्रकार के रङ्गके स्थानहैं ६ नानाभाँतिके मृगगण व्याघ्र व चीता ऋच्छ आदि मृगों से यह पर्व्वत शोभितहोता पक्षीभी तरहतरह के इसपैहैं जितने जीवहैं अपनी अपनी दुष्टताको छोड़हैं ७ आम जामुन असना लोध चिरौंजी कटहर अँकुहर तिमिश बेल तेंदुआ बाँश ८ काश्मरी नींब करुणा महुआ तिलक देर अमला कदम्ब बेंत बिजौरा नेंबू ९ इन्हें आदि और नाना प्रकारके फूले फरे सुन्दर सघन छाया युक्त वृक्षों से शोभित यह पर्व्वत लक्ष्मी को पुष्ट करता है १० हे भद्र इसके रम्य कँगूरों पै अपनी अपनी जोड़ीके सङ्ग बिहरतहुये किन्नरों को देखो कैसे कामों को हर्षित करा रहे हैं ११ देखो वृक्षोंकी डालों पै विद्याधरों की स्त्रियों के वस्त्र व उनके खड्ग धरेहैं ठौर ठौर उनके क्रीडा करनेके स्थान बनेहैं १२ ठौरठौर जलके बहनेके स्थान व मार्ग बनेहैं कहींकहीं झरना झररहेहैं ठौर ठौरसे जल चू रहाहै मानों मद चूताहुआ हाथी है १३ व इसकी गुहासे निकसा पवन नानाप्रकारके पुष्पोंका रथ जोकि प्राणोंका तृप्तकरताहै समीपआय किस मनुष्यको हर्षाता नहीं १४ यदि यहाँ अनेक वर्षोंतक तुम्हारे व लक्ष्मणके साथ बसेंगे तो हमको शोक न बधेगा १५ इसको बहुत पुष्पफल लगेहुये रम्य नानापक्षियों से सेवित विचित्र शिखरयुक्त देख हमारी प्रीति यहाँ बसनेको होतीहै १६ ॥

दो० पाये यहि बनवासमें फलद्वय हमसुनु काम ॥
एक अनृणता जनककी दूज भरत प्रियकाम ॥ १७

हेवैदेहि मन वचन कर्म्मोंके विविध भांतिके भाव देखती देखाती हमारे संग यहाँ बिहरो १८ हेराज्ञि मनुप्रभृति हमारे पुरुषा लोग लोक के कल्याण के लिये प्रवृत्त नियमपूर्व्वक वनवास करने को अमृत कहाहै १९ इस पर्व्वत की सैकरों चित्र विचित्र शिला चारों ओर से

शोभित होतीहैं क्योंकि नील पीत सित अरुण रंगोंकी शिलाहैं२०रात्रिको इस पर्व्वत परकी औषधी अपनी प्रभाकी लक्ष्मीसे शोभित अग्निकी शिखाके समान शोभित होतीहैं २१ इस पर्व्वतके कोई कोई स्थानतो गृहोंके समान बनेहैं कोई कोई फुलवारियोंके समान कोई कोई एकही चट्टान के हैं २२ यह चित्रकूट ऐसा विदित होताहै कि मानों पृथ्वीको फोड़ कर निकल आयाहै ये जो सब पर्व्वत देखाई देतेहैं वे चित्रकूटही केहैं२३ हे कमल नयनि कमल व पुत्रजीवक व भूर्ज्ज पत्रादि वृक्षोंके पत्तोंके गुच्छ देखो तो कामीलोग इनको बिछौना बनातेहैं २४ हेवनित कमलोंके फूलों की माला देखतीहो कामीलोगोंने इनको बिछाय बिछाय मर्द्दित करके छोड़ दियाहै व फलभी नानाप्रकारके खाय खाय बचे खुचे बहायेहैं सो पड़ेहैं २५ यह चित्रकूट पर्व्वत्त कुवेरपुरी व इन्द्रपुरियों का व उत्तर कुरु देशोंका अनादर करता यहाँ बहुत पुष्प व फलों से संयुक्तहै २६ ॥

दो० तव अरु लक्ष्मण सँग प्रिये यहँ बिहरब यहिकाल।
लहब प्रीति कुलधर्म्मकी नियम सहित शुभचाल १। २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुर्न्नवतितमस्सर्ग्गः६४ ॥

इसके पीछे पर्व्वत देखानेसे निवृत्तहो अयोध्यानाथ श्रीरघुनाथ जनक किशोरीजीको शुभजल सहित व अतिरमणीय मन्दाकिनी नदी देखाने लगे१व श्रीराजीवनयन करुणाअयन श्रीरामचन्द्र चारु चन्द्रमुखी जानकीजीसे बोले२हेप्रिये विचित्र पुलिना अतिरमणीया हंस सारस सेविता पुष्पोंसे सम्पन्ना मन्दाकिनी नदी देखो ३ नानाप्रकारके पुष्पफल युक्त किनारेवाले वृक्षोंसे घेरी चारों ओरसे कुवेरकी पुरीके समान राजतीहै४ मृगोंके झुण्डोंके पीनेसे इसका जल ढबैला होगयाहै पर घाट इसके अति रमणीयहैं इससे हमारी प्रीतिको उत्पन्न करातेहैं ५ हेप्रिये बड़े प्रातःकाल इस मन्दाकिनी नदीमें जटा मृगचर्म्म धारणकिये वृक्षों के बकले व पत्र पहिने ऋषिलोग स्नान करतेहैं ६ हे विशाललोचनि वे लोग और ये महातपस्वी लोग शास्त्रके लिखेहुये नियमों के पालनके लिये ऊपरको बाहु उठाये सूर्य्योपस्थान करतेहैं ७ पवनके लगनेसे कँपतेहुये व पत्र पुष्प गिराते हुये वृक्षोंसे जो कि इसनदी के दोनों किनारों पैलगे

हैं युक्त यहपर्ब्बत मानों नाचकरने का प्रारम्भही कररहाहै ८ इस मन्दाकिनी नदीको तो देखो कि कहीं तो मणियोंके समान निर्म्मल जल बहरहाहै कहीं सुन्दर काच्छा आनन्द देरहा है कहीं सिद्धलोग बैठतपस्या कररहेहैं ९ देखो तो पवनके लगने से कांपतेहुये वृक्षोंसे गिरे पुष्पोंकेढेर के ढेर पड़ेहैं व बहुत पुष्प इसनदीमें बहे चलेजातेहैं उन्हें भी देखो १० हेकल्याणि अतिप्रिय मधुरबाणी बोलनेवाले चकई चकवा पक्षियों को देखो तो कैसी सुहावनी बोली बोलते हैं ११ चित्रकूट पर्ब्बतके दर्शन करने व मन्दाकिनी नदी देखने व तुमको देखने से अयोध्याके निवाससे अधिक सुख मानते हैं १२ जप तप सम दम करनेसे पाप रहित सिद्धों के नहाने से नित्य चलायमान जलयुक्त मन्दाकिनी में हमारे साथ स्नानकरो १३ हेसीते रक्त कमल व उजले कमलों को जलमें डुबावती हुई सखीके समान इस मन्दाकिनी में स्नानकरो १४ ॥

दो० पुरजन समब्यालन गुनहुअवध सरिसगिरि येहु ॥
सरयू सम मन्दाकिनिहिं मानहुं नितकरि नेहु १ । १५
धर्म्मात्मा लक्ष्मण सदा मम निदेश महँ लीन ॥
तुम अनुकूल सदारहत करत प्रीति द्वौ पीन २ । १६
तवसँग तीनिहुं काल हम करत यहाँ असनान ॥
राज्य चहेतनहिं अवध सुखप्रिये सकल कल्यान ३ । १७
गजहरि कपि यूथप मथी अरु तिन पीत सुवारि ॥
जो न सुखी यहँ स्नानकरि सोनहिं कछु निरधारि ४ । १८
इमि रघुपति बहुभाँति कहि मन्दाकिनि माहात्म ॥
बिचरत जानकि सँग सुखित चित्रकूट परमात्म ५ । १९

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चनवतितमस्सर्गः ९५ ॥

जानकीजीको चित्रकूट पर्ब्बत व मन्दाकिनी नदी देखाय श्रीरामचन्द्रजी पर्ब्बतके एक चट्टान पै बैठगये व तपस्वियों के भोजनके योग्य फल सीताजी को देखाय देखाय पूंछनेलगे १ कि हेप्रिये यहबड़ा पवित्र फलहै व अग्निमें पक्व कियागयाहै इससे और भी स्वादिष्ठ होगयाहै यह कहते सुनते धर्म्मात्मा श्रीराम जानकीजी के साथ वहाँ बैठे २ कि उसी समय

रामचन्द्रजी के समीप को आते हुये भरतजीकी सेनाकी धूलि व शब्द देखाई सुनाई दिया ३ व उसी समय बड़े शब्दसे डरेहुये व पीड़ित बन के हाथी मृग आदि अपने अपने झुण्डवालों के सङ्ग इधर उधर भागते देखपड़े ४ उस सेना का जो बड़ाभारी हाहाकार शब्द होताथा श्रीराम-चन्द्रजी ने सुना व उनजीवोंको चारों ओर को भागते भी देखा ५ तिन हाथी मृगादिकों को भागते देख व उस महाशब्द को सुन श्रीराम-चन्द्रजी महातेजस्वी लक्ष्मणजी से बोले ६ हेलक्ष्मण तुम्हारे होनेसे सु-मित्राजी सुप्रजा हुईं यह भयङ्कर बादरों के गर्ज्जन के समान अति भया-नक शब्द सुनते हो कहांसे आताहै देखो तो ७ क्या सिंहों से डरे हुये हाथी भैंसे आदि जीव तो नहीं इस बनमें दौड़ आते ८ कि तो कोई राजा वा राजपुत्र बनमें शिकार खेलता होगा वा औरही कोई बन्यजीव होगा जो कुछ हो इसका हाल तुमको जानना चाहिये ६ हे लक्ष्मण यह पर्ब्बत तो ऐसाहै कि पक्षीभी बड़ी कठिनता से इसके ऊपर उड़ सक्तेहैं फिर अन्य कौन आया इससे इसका ठीक ठीक हाल तुम जान आवो १० यहसुन लक्ष्मणजी एक फुलाने साखू पर चढ़के सब ओर देखनेलगे प्रथम पूर्ब्ब दिशाकी ओर देखा ११ फिर उत्तर दिशा की ओर निहारा तो बड़ी भारी सेना देखपड़ी जिसमें हाथी घोड़े रथ ऊंट आदि असंख्यथे व पैदर लोगोंसे तो भरीहीथी १२ तिस घोड़े रथ आदि से सम्पूर्ण व रथकी पताकाओं से भूषित सेना को श्रीरामचन्द्रजी से बताया व यह बचन बोले १३ कि आप अब इस अग्निरूप सेनाको नाशकरें जानकीजी तबतक किसी गुहामें बैठें धनुषकी प्रत्यञ्चा चढ़ाइये बाणभी तरकस से निकालिये कवच बखतर आदि भी धारण कीजिये १४ पुरुषसिंह श्री रामजी यहसुन लक्ष्मणजी से बोले हे प्रिय लक्ष्मण जानों तो किसकी सेना है १५ जब रामचन्द्रजी ने ऐसा कहा तो क्रोधकर अग्निके समान रूपहो उस सेना को मानों जारही देंगे ऐसे लक्ष्मणजी बोले १६ कि अभिषेक को पाय निष्कण्टकराज्य करने की इच्छासे हम दोनों जनों के मारने के लिये कैकेयी के पुत्र भरत आते हैं १७ क्योंकि श्रीमान् फल पुष्प समन्वित वृक्ष के समान कोविदार वृक्षवत् ध्वजा लगायेरथपै चढ़े उजले उजले स्कन्ध धारण कियेहैं बस भरतहीकी सेनाहै १८ देखिये

ये लोग तो शीघ्रगामी घोड़ों पै चढ़े आते हैं व ये लोग हाथियों पै चढ़े शोभित होते हैं १९ इससे हम दोनोंजने कि तो धनुष बाणादि धारण किये इस पर्ब्बत पै बैठें अथवा आयुध धारण किये तैयार इस स्थानपै बैठे रहें २० बड़ी खुशीकी बातहै कि भरत संग्राममें हमारे वशमें परेंगे भला भरत को देखेंगे तो जिनके लिये महाकष्ट २१ आपने व हमने व सीताजी ने उठाया है व जिसीके कारण निरन्तर राज्य से आप च्युत हुये २२ हे वीर वही परमशत्रु भरत आयेहैं ये मारहीडालने के योग्य हैं क्योंकि भरतके मारडालने में हम कुछ दोष नहींदेखते २३ क्योंकि जो पहिले अपकार करै उसके मारनेवाले को पाप नहीं होता सो भरत तो पूर्व्वही अपकार करहीचुके हैं इनको छोड़देनेही में अधर्म्म है २४ इनके मारेजानेपै सम्पूर्ण पृथ्वी आप भोगें आज राज्य पाने की इच्छा किये कैकेयी अपने पुत्रको २५ हमसे मारडाला हुआ देखै व दुःखार्त्तहो जैसे हाथी का तोड़ाहुआ वृक्ष लोग देखतेहैं फिर सब साथियों व उसके भाई सहित कैकेयी को भी मार डालेंगे २६ महा पापसे आज यह पृथ्वी छूटै हे मानद आज यह बहुत दिनों का क्रोध व असत्कार २७ शत्रुकी सेनापर छोड़ते हैं जैसे कोई सूखे खर पै अग्नि छोड़ै आजही चित्रकूट का बन पैने बाणों से २८ शत्रुओं के शरीर काट उस रुधिर से सींचेंगे व बाणोंसे छिन्न भिन्न हृदय हाथी घोड़ों को २९ व हमारे मारेहुये मनुष्यों को भी कुत्ते घसीटेंगे इस महा बनमें शरों से व धनुष से हम ३० सैन्य सहित भरत को मार उऋण होजायँगे इसमें कुछ संशय नहीं ३१ ॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषण्णवतितमस्सर्गः ९६ ॥

भरतजीको शत्रुमान उनके ऊपर क्रोधकिये लक्ष्मणजी को समझाते हुये श्रीरामचन्द्रजी बोले १ कि यहाँ धनुष से व तरवार ढाल से कौन कामहै क्योंकि महाबल व महोत्साह भरतजी आपही आयेहैं २ पितासे चौदह वर्षके लिये बन में रहने के लिये प्रतिज्ञा करचुके सो कहीं नहीं संग्राम में भरत को मार निन्दा के साथ पायेहुये राज्य को क्या करेंगे हे लक्ष्मण ३ जो द्रव्य अपने भाई बन्धुओंके वा मित्रोंके नाश होने पर होवै हम उसे न ग्रहण करेंगे जैसे विष मिलीहुई वस्तुको खानेके लिये

कोई नहीं ग्रहण करता ४ धर्म्म अर्थ व काम व पृथिवी हे लक्ष्मण तुम लोग भाइयों केही अर्थ हम चाहते हैं यह तुमसे प्रतिज्ञा करतेहैं ५ हे लक्ष्मण सब भाइयों के संग्रह करने व सुखकेही लिये राज्य भी हम चाहते हैं हम इस अपने आयुध को छूकर सत्य कहते हैं ६ हे लक्ष्मण सागर पर्य्यन्त यह पृथ्वी हमको दुर्ल्लभ नहीं है अधर्म्म से हम इन्द्र पदवी की भी इच्छा नहीं करते ७ जो सुख हमको बिना भरत बिना तुम्हारे व बिनाशत्रुघ्न के रहने पर हो उसे अग्नि भस्म कर डालै ८ हमतो यह जानते हैं कि भरत हमको प्राणोंसे भी अधिक प्रियतो हैंही व सब भाइयोंके ऊपर दयालु तो रहते हैं अयोध्यामें हमारे पीछे आये होंगे हमको यहाँ सुन कुलके धर्म्मों को स्मरण कर कि इसी कुलमें बड़ेही को राज्य मिलताहै ९ सो यह सुनाहोगा कि जटा बल्कल धारण कराय हमको बनबास हुआ सङ्गमें जानकीजी व तुमको भी आये सुन १० मारे स्नेहके आक्रान्त हृदयहो व शोकके मारे व्याकुलेन्द्रिय हो ये भरत देखने के लिये आयेहैं कुछ लड़ने भिड़नेके लिये नहीं ११ किन्तु अपनी माता कैकेयीको रिसाय व अप्रिय बचन कह पिताजी को प्रसन्न कर हमको राज्य देनेके लिये आयेहैं १२ जो ऐसे समय को पहुँचे हुये हम लोगोंके देखनेको भरत आये तो अब हमलोगों के साथ मनसे भी अप्रिय न करेंगे १३ भला कभी भरत ने तुम्हारे साथ कोई विप्रिय कियाहै कि तुमको ऐसा भयही होगया है जिससे कि भरत से ऐसी शङ्का करतेहो १४ खबरदार अब भरत को कुछ निष्ठुर बचन न कहना न अप्रियही बचन कहना क्योंकि यदि भरत को तुमने कुछ अप्रिय कहा तो मानों हमी को कहचुके १५ क्योंकि किसी आपत्काल में भी पुत्र प्राण समान प्रिय पिताको दुरुक्ति कह के न ताड़न करेंगे न प्राण सम प्रिय भाई को भाई दुरुक्ति कहेगा १६ जो राज्य के हेतु तुम भरत को ऐसा कहते हो तो जबहम भरतको देखेंगे तो कहदेंगे कि भाई राज्य इनको दे दो १७ हे लक्ष्मण जैसेही हम भरतसे कहेंगे कि राज्य इनको दो तैसेही वे कहेंगे बहुत अच्छा देते हैं १८ जब धर्म्मशील भाई श्रीरामचन्द्रजीने लक्ष्मण के हित करनेहीं के लिये ऐसे बचन कहे तो मारे लज्जा के लक्ष्मणजी सिकुरकर मानों अपने शरीर के अङ्गोंमें पैठ-

होगये १९ श्रीरामचन्द्रजीके ऐसे बचन सुन लक्ष्मणजी अति लज्जित हो बोले कि महाराज हम भरतको ऐसा समझेंगे जानों आप को देखने के लिये पिता दशरथजी आप आयेहैं २० लक्ष्मणजी को लज्जित देख श्रीरामचन्द्रजी बोल कि हाँ यह तो हम मानतेहैं कि ये महाबाहु भरतजी हमको देखनेही को आयेहैं २१ अथवा हम को तुमको सुखके उचित मान बनबास का ध्यान कर हमलोगों को घरको ले जायँगे २२ व अत्यन्त सुखसेविनी वैदेही को पितारूप भरतजी बनसे गृह को ले जायँगे २३ ये दोनों भाई भरत व शत्रुघ्न अपने गोत्रवालों को सङ्गलिये वायुवेगके समान वीररूप अति चञ्चल घोड़ों पै चढ़े आते हैं २४ यह महाकाय धीमान् पिताजी का शत्रुंजन नाम हाथी भी तो सेना के आगे आगे चला आताहै २५ परन्तु लोक विश्रुत पाण्डुरवर्णका पिताजी का छत्र नहीं देखाई देता इससे बड़ा सन्देह होताहै २६ लक्ष्मण अब वृक्ष परसे उतर आवो हमारे बचन मानों धर्म्मात्मा रामचन्द्रजी लक्ष्मण जीसे ऐसा बोले २७ तिस वृक्षपर से उतर संग्राम विजयी लक्ष्मणजी हाथजोड़ श्रीरामचन्द्रजीके पासआय खड़ेहुये २८ वहाँ भरतजी ने यह विचारकर कि हमारी सेना से इस चित्रकूट पर्ब्बत का सम्मर्द्दन न होजाय सेनाको टिकजाने के लिये आज्ञादी तो सेना उसी स्थान पै उतर पड़ी २९ गज बाजी व नरोंसे भरी पुरी भरतजी की सेना पर्ब्बत के छः छः कोशतक पर्ब्बत के किनारे पड़ी ३० न्यायवान् भरतजी की सिखाई सेना चित्रकूट पर्ब्बतके निकट श्रीरामचन्द्रजी की प्रसन्नता के लिये आय पड़ी क्योंकि धर्म्म को आगेकर अहङ्कार को दूरकर इस सेना की शिक्षाकीगईथी ३१ ॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकांडेसप्तनवतितमस्सर्गः९७ ॥

मनुष्योंमें श्रेष्ठ भरतजी सेनाको वहीं टिकाय आप पैदर पिताके बचनों के पालन करनेवाले श्रीरामचन्द्र जी के निकट जानेको चले १ जब सेना ठौर ठौर टिकगई तो भरतजी शत्रुघ्न अपने भाईसे बोले २ हे सौम्य बहुतही शीघ्र अपने बहुत से मनुष्य व निषादों को सङ्गले इस बनमें ढूंढ़ोतो ३ व अपनी जातिवालों मेंसे सहस्रों मनुष्यों को सङ्गले

बाण खड्गादि हाथोंमेंले गुह आप श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी कोढूंढ़ें ४ व हमभी सब मन्त्री पुरबासी गुरू व ब्राह्मणों के साथ पैदर फिरतेहैं ५ क्योंकि जब तक श्रीरामचन्द्र जी व लक्ष्मण व वैदेही जी को नहीं देखते तबतक कलनहींहै ६ जब तक भाई का चन्द्र समान मुख नहीं देखते जिसमें कि कमलसमान नयन हैं तबतक हमको शान्ति न होगी ७ राजचिह्नों से चिह्नित जब तक भाईके चरणकमल नहीं ग्रहण करते तबतक हमारे मनको शान्ति न होगी ८ राज्य के योग्य श्रीरामचन्द्र जी जबतक पिता पितामहादिकों के राज्य पै अभिषेक के जलसे भीग के नहीं बिराजमान होते तबतक हमको शान्ति न होगी ९ भाई लक्ष्मण के तो सबअर्थ सिद्ध होगये क्योंकि बिमलचन्द्र समान व राजीव-लोचन श्रीरामचन्द्र जी का मुख देखतेहैं १० व समुद्र पर्य्यंत पृथिवी के पति श्रीराम अपने भर्त्ता के पीछे पीछे जाती जनकनन्दनी वैदेही जी कृतार्थहैं ११ भाई यह चित्रकूट पर्ब्बत सुशोभितहुआ व सुमेरुपर्ब्बत के समानहै जिसमें कि नन्दनबनमें कुवेर के समान श्रीरामचन्द्रजी बसतेहैं १२ देखो यह सर्प्पोंका स्थान अति कठिन बनभी उत्तमहोगया कि जिसमें राजराज श्रीशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी बसते हैं १३ ऐसाकह पुरुषश्रेष्ठ व महाबाहु व महातेजस्वी भरतजी पैदर महा बनमें पैठे १४ महात्मा भरतजी पर्वत के कँगूरोंपै जमेहुये वृक्षसमूहोंके बीचमें होकर चले १५ चलते चलते झटपट एक सांखू के वृक्षपै आपहीने चढ़के देखा तो रामचन्द्रजीके आश्रमपरकी आगिका धुआँ देखपड़ा १६ तिसकोदेख सहितभाई भरतजी परमानन्दितहुये यह जानके कि यहांहीं श्रीरामचन्द्र हैं जैसे कोई जलमें बूड़ताहो व उसके पारचले जानेसे हर्षित होता वैसेही हर्षित हुये १७ ॥

कुण्डलिका ॥

मुनि गण सेवित सुनि सुनग चित्रकूट पर धाम ।
रामचन्द्र कर सुभग अति सकल भाँति अभिराम ॥
सकल भाँति अभिराम साथलै गुहहि भरत तब ।
ढूंढ़न हित जो सैन्य रही सोउ टिकइ तहाँ सब ॥
चले अकेले आप शत्रुसूदन गुहद्वय जन ।

संग लिये बिचबीच लषत जहँ तहँ बहु मुनिगन ११ १८

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टनवतितमस्सर्गः ९८॥

जब संगवाली सेना भी ठहर गई तो वशिष्ठजीसे कहकरे कि हमारी माताओं को शीघ्रलावो आप शत्रुघ्नजीको देखाते हुये चले १ ऋषि वशिष्ठजी को तो जननियों के लाने की आज्ञा दे आप अति शीघ्रता से चले २ सुमन्त्रजी भी शत्रुघ्नजी के पीछेही पीछे अति निकटही निकट चले जाते थे क्योंकि जैसे उन दोनों जनों को रामचन्द्रजी के दर्शनकी अभिलाषाथी वैसेही उनकोभीथी ३ इस तरहसे जाते हुये भरतजीने तपस्वियों के स्थानों के बीचमें भाई श्रीरामचन्द्रजीकी पर्ण कुटी देखी ४ व उसीपर्ण शाला के आगे होम करने केलिये तोड़ी छोटी लकड़ियां व पूजा करनेके लिये फूल इकट्ठे देखे ५ फिर और कुछ निकट गये तो देखाकि रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी कहीं निकटहीसे आये कुटी में प्रवेश करतेहैं व जहाँ भरतजीथे वहीं से देखा तो कुटी तक बराबर सब वृक्षोंकी किसी किसी डाल में फटे हुये कपड़े बाँधे थे ६ फिर देखातो पर्णशाला के आगे हरिणों व भैंसों के झूरे गोबर का ढेर तापनेके लिये लगाथा ७ चलतेही चलते श्रीमान् भरतजी हर्षितहो शत्रुघ्नजी व सब सुमन्त्रादि मन्त्रियों से बोले ८ कि हम जानतेहैं उस स्थानपै पहुँचगये जो कि भरद्वाजजीने बताया था क्योंकि हम जानतेहैं कि मन्दाकिनी नदी अब निकटहीहै ९ हम जानते हैं कि ये जो वृक्षों की ऊपरवाली डालों में कपड़े बाँधे हैं उनसे यह प्रयोजन होगा कि कभी कभी अँधेरे में जब जल आदिलाने का प्रयोजन पड़ा होगा लक्ष्मणजीने पता जानने के लिये ऊंचे वृक्ष में बाँध दिये हैं जिसमें मार्ग्ग न भूलै १० व यह बड़े २ दतारे व शीघ्र चलनेवाले व सदा गर्ज्जनेवाले हाथियोंके चलने का मार्ग्ग है ११ यह उसी अग्निका धुआँहै जिसे तपस्वीलोग सदा बनमें रखना चाहतेहैं १२ अब हम आज यहाँ पुरुष सिंह व पिताकी आज्ञा करनेवाले श्रीरामको हर्षित देखेंगे१३ इसके अनन्तर एक मुहूर्त्तभर चित्रकूट पर्ब्बतके प्रणाम कर मन्दाकिनी के निकट पहुँचे व सब लोगों से बोले कि १४ सब जनोंके इन्द्र पुरुष सिंह श्रीरामचन्द्रजी बीरासन मारे निर्ज्जनबनमें बैठे

हमारे जीनेको धिक्कारहै १५ हाय लोकोंके नाथ महाद्युतिमान् श्रीरामचन्द्रजी हमारेलिये बड़े कष्ट को पहुँचे जो कि सब काम की बातें छोड़ बनमें बसते हैं १६ यह बिचार करते करते रामचन्द्रजी व सीताजी व लक्ष्मणजीके चरणों पै गिर परूंगा १७ इस तरहसे बनमें रोदन करते हुये भरतजीने महा पुण्यदायक पर्णशाला देखी १८ जोकि साखूताल व हाथीचिग्घार आदि के पत्तोंसे बनीथी व अति बिशाल व कोमल व विस्तीर्ण थी जैसे कुशों से यज्ञ की वेदी आच्छादित होती है १६ व जो इन्द्रायुधकी दीप्तिके समान भारसाधक सुवर्णके पुङ्खलगे महासार रूप शत्रुओंको बाधा करनेवाले बाणों से शोभित थी २० व जो सूर्य्यकिरण के समान दीप्तिमान् अतिघोर रूप तरकसमें प्राप्त प्रकाशित मुख बाणों से शोभित थी जैसे सर्प्पों से भोगवती शोभित होती है २१ स्वनहुला कबुजा व स्वनहुले मियानवाली तलवारोंसे शोभित व सुवर्णके बिन्दुयुक्त ढालोंसे शोभित २२ फिर चित्र बिचित्र सुवर्ण भूषित गोधांगुलित्राणयुक्त होने से शत्रु समूहोंके जाने के अयोग्य जैसे कि जिस गुहामें सिंह रहता उसमें कोई मृग नहीं जायसक्ता २३ व वहीं रामचन्द्रजीके स्थानमें ईशानकोणकी ओर झुकीहुई अतिबिशाल व प्रज्वलिताग्नि युक्त वेदी भरतजीने देखी २४ प्रथम पर्णशाला को दोघड़ी तक देख जटाधारण किये परमगुरु श्रीरामचन्द्रजीको पर्णशालामें बैठेदेखा २५ जो कि मृगचर्म्म धारणकिये चीर व बकला पहिने अग्निके समान रूपथे २६ फिर जो सिंहवत्स्कन्धयुक्त आजानुबाहु कमलनयन परम धर्म्मचारी सागर पर्य्यन्त पृथिवी के स्वामी थे २७ ऐसे बैठे थे मानों निरन्तर रहनेवाले ब्रह्माजीही थे एक चौतरा बनाथा उसपै सीताजी व लक्ष्मणजीके साथ बैठे थे २८ तिन रामचन्द्रजी को देख मारे दुःख व मोहके व्याकुल धर्म्मात्मा कैकेयी के पुत्र भरतजी सामने दौरे २६ व अति दुःखित हो विलाप करनेलगे आँशु बहेजाते थे चाहतेथे कि रोकें पर नहीं रुकतेथे कुछ देरमें धैर्य्यको धारणकर गद्गद बाणीसे बोले ३० ॥

दो० जो रघुबर बैठे सभा मन्त्रि उपासन योग ॥
सो अब मम अग्रज मृगन सेवित यह बड़ शोग १ । ३१
जो धर्म्मात्मा राम बहु बसन धारयो योग ॥

सो अब धर्म्माचरण बश मृग त्वच धरत सशोग २। ३२
जो राघव सुमनन रची माला धारत देह ॥
सो अब जटा कलाप नित धरत सहत करि नेह ३। ३३

हाय जिस रामचन्द्रजी के यज्ञोंके करनेसे धर्म्मकी राशि एकत्र होगई थी वे रामचन्द्रजी शरीर क्लेशसे उत्पन्न धर्म्मोंको ढूंढ़ते हैं ३४ हाय जिन रामचन्द्रजी के अङ्गोंमें बहुमोल के चन्दन लगाय जाते थे उनमें अब मैल लगीहै बड़े भाई कैसे सहतेहैं ३५ जिस मेरे निमित्त श्रीरामचन्द्रजीको दुःख मिला जो कि सदा सुखही के योग्यहैं तिस निर्ल्लज्ज व मूर्ख मेरे जीने को धिक्कार है कि जिसकी लोकमें निन्दा होती होगी ३६ इसतरह रोदन करते भरतजी अति खिन्नमुख हो भाईके चरणारविन्द छूने को हाथ लपकाया पर पहुँचे नहीं कि मूर्च्छित हो पृथिवी में गिरपड़े ३७ व मारे दुःखके एकबार यह तो कहा कि आर्य्य सो भी दीन हो अति धीरे से कहा फिर मोह आगया चुप होगये और कुछ न बोल सके ३८ ऐसे आँशु व बाफ मुखमें भर आई कि यशस्वी श्रीरामचन्द्रजीको देख रोदन कर आर्य्य यहकह फिरभी न कुछ बोलसके ३९ शत्रुघ्नजीने भी रोदनकर श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें प्रणाम किया दोनों जनों को छातीसे मिलाय लपटाय श्रीरामचन्द्रजी ने भी अश्रुपात किये ४० व तिसीतरह श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी सुमन्त्र व गुह से छाती से छाती लगाय लपटाय मिले जैसे कि सूर्य्य व चन्द्रमा आकाश में शुक्र व बृहस्पति के संग मिलें ४१ ॥

कुण्डलिका ॥

वारण यूथप योग्य श्रीराम भरत सौमित्र।
अरु रिपुहन वर नृप कुअँर भावीबड़ीविचित्र ॥
भावी बड़ी विचित्र सोय बन महँ पग धारे।
देखि वन्य सबलोग सुखी नहिँ किन्तु दुखारे ॥
जासों नहिँ बनयोग्य रहे ये शर धनु धारण।
याही सों भे सकल दुःखी करुको तिन वारण १। ४२

इत्यार्षेश्रीरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेनवनवतितमस्सर्गः ९९ ॥

जटा रखाये चीर बसन धारणकिये हाथजोड़े भूमिमें पड़े भरतजी को श्रीराम करुणासागर ने देखा जैसे युगान्त में सूर्य्यका प्रताप हत होजाता वैसेही मारे व्याकुलता के भरतजी थे १ मारे शोकके भरतजी का ऐसा रूपान्तर होगया था कि रामचन्द्रजी ने अनुमानही से जाना कि भरत हैं कुछ उनके रूप से नहीं पहिचाना जब जाना तो हाथों से पकड़ उठानेलगे २ अति प्रेमसे उठाय मस्तक सूंघ छातीमें अच्छीतरह लगाय आप बैठ भरतजीको गोदमें बैठाय आदरसे पूंछनेलगे ३ हेप्यारे तुम्हारे पिताजी कहाँगये जो तुम बनको आये हम जानते हैं कि वे अब जीते नहींहैं नहीं तो उनके आगे तुम बनको न आनेपाते ४ हेतात तुम को तो बहुत दिन होगये थे जब कि मामाके यहाँ गये थे सो बहुतदिनों के पीछे देखने व दुर्ब्बल होनेसे चीन्हिही नहीं पाया भला व्याघ्र सिंह सेवित इस बनमें तुम कैसे आये ५ हे तात भला राजा राज्य करते हैं जो उनको छोड़ बनको चलेआये कि दुःखित हो राजा एकाएकी स्वर्ग्ग को तो नहीं चलेगये ६ हम जानते हैं अवश्य चलेगये कहो उनके पीछे तुम लड़केही राज्यके मालिक रहगये वह अक्षयराज्य नष्ट तो नहीं होगया कि पिताजी अभी जीतेहैं तो उनकी सेवा अच्छी तरह करते हो ७ भला राजादशरथ जी जो बड़े सत्यसङ्कर हैं कुशली तो हैं राजसूय अश्वमेधादि यज्ञ करने का विचार करते हैं क्योंकि धर्म्म करनेमें तो उन की बड़ी निष्ठा थी इसीसे सदा राजसूयादि किया करते थे ८ भला इक्ष्वाकुवंशियों के गुरू महाविद्वान् वेदप्रणीत धर्म्म करनेवाले महातेजस्वी ब्रह्माजीके पुत्र वसिष्ठजी की पूजा तुम करते हो ६ हेतात भला कौशल्या व पुत्रवती सुमित्राजी सुखिनी तो हैं व परमश्रेष्ठ कैकेयी जी आनन्दित तो रहती हैं १० भला विनयसम्पन्न सुन्दर कुलमें उत्पन्न सब वेदशास्त्र पढ़े पढ़ाये निन्दारहित सकल सत्कर्म्मनि निपुण वशिष्ठजी के पुत्र पुरोहित का सत्कार करते हो ११ भला अग्निहोत्रादि कर्म्मोंमें तुमने हवनकर्म्मकी विधि जाननेवाले मतिमान् व सरल स्वभाव पुरोहित को नियत किया है वे अपने समय पर हवन कियेहुये व जिसमें हवन करने को बाकी रहताहै उसको जगाते रहतेहैं १२ हे तात भला देवता पितर मन्त्री दीवान नौकर चाकर पिताके समान महान् गुरूलोग वृद्ध

लोग वैद्यलोग व ब्राह्मणलोगों को तुम मानतेहौ १३ हेतात बाणविद्या व अन्य शस्त्रास्त्रों में अति निपुण न्यायशास्त्र में अतिही कुशल राजनीति में पूर्ण सुधन्वानाम उपाध्याय को मानते हौ १४ हेतात भला तुमने अपने समान शूरवीर वेदशास्त्र पढ़े जितेन्द्रिय कुलीन मनकी बात जानने वाले मन्त्री अपने मनके कियेहैं १५ हे राघव हे भरत राजाओं को मन्त्रही विजयका मूल होताहै इससे राजाको चाहिये कि शास्त्रमें चतुर वेदशास्त्र गुरूसे पढ़े लिखे ऐसे मन्त्रियों से सदा मन्त्र अर्थात् एकान्त में सलाह कियाकरैं १६ भला कभी सन्ध्यादिकालमें सोय तो नहींजाते व समय पर जागतेहौ व प्रहरभर रात्रि रहेसे उठके अपने प्रयोजन के सिद्धहोनेकी रीतिको विचारते हौ १७ भला एकहीके साथ बैठके सम्मत करते हौ कि नहीं बहुतों के सङ्ग बैठके तो सलाह नहीं करते कि राज्य भरमें तुम्हारा मन्त्र दौरा दौरा फिरै १८ हे भरत भला जो काम करना होताहै उसका पहिलेही निश्चय करलेते हौ कि थोड़ेही उपाय में बड़ा फलहो फिर ऐसे कर्म्मके करने में शीघ्रही प्रारम्भ करदेते हौ बहुत देर तो नहीं लगाते १६ भला जो कर्म्म तुम करडालतेहो वा करने पर होतेहौ तो ये जो तुम्हारी राज्यमें खण्डमण्डलेश्वर छोटे छोटे राजा हैं वे तो नहीं जानपाते २० हे तात भला बिना तुम्हारे कहे सुने तर्कणा से वा अन्य युक्तिसे कोई लोग तुम्हारे अभिप्राय को तो नहीं जानलेते भला तुम वा तुम्हारे मन्त्री औरकी सलाह को युक्तिपूर्व्वक जानलेतेहौ वा नहीं २१ भला सहस्र मूर्खोंको छोड़ एक पण्डित को चाहते हो वा नहीं क्योंकि जब कहीं अर्थ समझने की कठिनता पड़ती है तो एकही पण्डित सब कल्याण की व भलाई की बातें बताय देता है २२ व जो राजा सहस्रभी मूर्खोंको अपनेपास रखता है वा दशसहस्र रखता है तो उनसे कुछभी सहायता नहीं मिलती २३ ॥

दो० मेधावी अरु शूर यक दक्ष विचक्षण मात्य ॥
नृप वा नृप सुत कहँ महा श्री पहुँचावत आत्य १ । २४

हे तात भला तुम जैसा जो भारीकर्म्म होता उसमें भारी सेवकनियत करते वा नहीं राजाको चाहिये कि भारीकाजकेवास्ते भारी ओहदेदारको भेजे मध्यमकेलिये मध्यम को व लघुके वास्ते लघुको २५ भला सुपरी-

क्षित पुराने जो पिता पितामहादिकों के मन्त्री हैं व कपटरहित श्रेष्ठतरहैं उनको श्रेष्ठ कामों में नियोजित करतेहो वा नहीं २६ भला थोड़े सेभी अपराध में कहीं अति कठोर दण्ड देकर प्रजाओं को उबाय तो नहींदेते कि जिस में प्रजा वा मन्त्र्यादि सब तुम्हारा अपमान करने लगेहों व जानें कि कैकेयीही के पुत्रतो हैं क्यों न ऐसेहों २७ भला तुमको यज्ञ कराने वाले ऋषिलोग ऐसा तो नहीं कहतेहैं कि किसी हीनजाति शूद्रा-दिकी स्त्रीको अङ्गीकार करलो व वेलोग पतित जाति भ्रष्टके समान जानने लगते हों जैसे अति कामी पुरुष जो परस्त्री गमन करता है उसे उसकी बिवाहिता स्त्री पतित व भ्रष्ट समझती है २८ जो वैद्य उपाय में ऐसा कुशल हो कि जब जिसरोग को चाहै मिटादे व जब चाहै फिर उसी के ऊपर लौटादे ऐसे वैद्य व जो मन्त्री अन्य नौकरचाकरों को बहका देताहो व आप स्वतन्त्रतासे राजैश्वर्य्य भोगने की इच्छा रखताहो चाहै शूरबीर भी हो जो राजा ऐसे वैद्य व मन्त्री को नहीं मारडालता वह आप उस वैद्य व मन्त्री से मारडालाजाता है तुम्हारे भला कोई ऐसा वैद्य व मन्त्री तो नहीं है २९ भला तुमने ढीठ शूर धैर्य्यवान् बुद्धिमान् पवित्र कुलीन व स्वामी के कार्य्य में तत्पर सेनापति किया है वा नहीं ३० भलाजो बलवान् लोग जिन्होंने बहुत वृत्तान्त देखेसुने हैं व सब तरहकी लड़ाई लड़ने में चतुर हैं व विक्रम विशेष रखते हैं ऐसे लोगों को प्रिय वचनों व वस्त्र भूषणादि देनेसे तुमने प्रसन्न रक्खा है वा नहीं ३१ भला सेना आदि के जितने छोटे बड़े व साधरण नौकर चाकर हैं उनको प्रतिदिन भोजन व समय पर महीना महीना भरपै नौकरी चुकादेते हो विलम्ब तो नहीं करते ३२ क्योंकि जब नौकर चाकरों को समय पर भोजन व मासिक नहीं मिलता तो वे अपने स्वामी के ऊपर बड़ा कोप करते हैं जिससे महा अनर्थ होता है ३३ भला तुम्हारे बंशवाले लोग तुमको प्रधान समझ तुममें प्रीति रखते हैं जोकि कभी काम पड़ने पर तुम्हारेलिये अपने प्राणभी देनेपै उतारूहों व दे भी डालें ३४ भला राजनीति जानने वाला चतुर जिसको कही हुई बात कभी न भूले व सत् असत् कार्य्यका विवेकी ज्योंका त्यों सन्देश कहने वाला व अपने मनसेभी यथार्थ प्रश्नो-त्तर करनेवाला व अपनेही देश का रहनेवाला दूत किया है वा नहीं ३५

भलाजो नीतिशास्त्र में राजाओं के लिये मन्त्री १ पुरोहित २ युवराज३ सेनापति ४ द्वारपालक ५ जनानेका अधिकारीखोजा ६ बन्धनागाराधिपति अर्थात् जिहलखाने का दारोग़ा ७ ख़ज़ाञ्ची ८ राजाज्ञानुसार औरों को आज्ञादेनेवाला ६ लेनदेनजाननेवाला १० धर्म्माध्यक्ष ११ व्यवहारोंको निर्णय करनेवाला १२ फ़ौजकी तनख्वाह बाँटनेवाला १३ ठेकेदार १४ नगराध्यक्ष अर्थात् कोतवाल १५ डांड़ोंपै रहनेवाला व उसकारक्षक १६ दुष्टोंको दण्डदेनेका अधिकारी फर्रास १७जल पर्ब्बत बन कोट इनकी रक्षाकरनेवाला १८ ये १८ मंत्रीके समान इन लोगों को रखना चाहिये सो तुम रख़तेहौ सोभी औरोंके राज्यकेलिये १८ व मंत्री पुरोहित युवराज इनके सिवाय सेनापत्यादि १५ अपने समीप व हरएक विषयके लिये कमसेकम तीनतीनदूत रखतेहौ व हरकारोंसे उनकीपरीक्षा लेते रहतेहौ कि कहाँ कौन कौनकाम कररहाहै कि नहीं ३६ भला जिन शत्रुओं को जो तुम्हारा अनभल चाहते थे व उनको देशसे निकाल दियाहो व फिर दुर्बलहोके तुम्हारे राज्यमें बसने की इच्छासे आयेहों तुमने जानाहो कि अब असमर्थ होगये हमसे कौन शत्रुता करेंगे यह विचार बिना अच्छीतरह परीक्षालिये बसने तो नहींदिया ऐसेलोगों को कभी न बसाना चाहिये क्योंकि वे अपने पूर्ब बैरको नहींभूलते ३७ भला जो ब्राह्मणलोग केवल तर्कहीशास्त्र पढ़ेहैं वा वाममार्गीहैं वा बौद्धमतके अनुयायीहैं वेदशास्त्र को नहीं पढ़ेहैं उनलोगों की सेवा तो नहीं करते क्योंकि ये लोग बड़े अज्ञानी होते परलोक विषयकज्ञान इनके नहीं होता केवल अपनाको पंडितही पंडित मानते वास्तव में उनको महामूर्ख समझना चाहिये ये सब सर्ब्बार्त्थ के विघात करने व परमार्त्थ से बुद्धि घुमा देनेमें बड़े चतुर होते ऐसी ऐसी तर्ककी बातें करते कि परमार्त्थ पुण्य धर्म तीर्थादि सेवनसे बुद्धि हटादेते ३८ क्योंकि ये लोग बड़े दुष्ट पंडितहोते यद्यपि सब मनुस्मृत्यादि समीचीन धर्म्मशास्त्र व वेद सब विद्यमानहैं पर दुष्ट कुछ देखतही नहीं अपने मनमानी तर्कलगा कर इन धर्म्मशास्त्रों के विपरीत नास्तिकों के धर्म्म बतादेते हैं जो सदा निरर्त्थकहैं ३६ हे तात भला हमारे पूर्ब्बज इक्ष्वाकु दिलीप रघु दशरथादि बीरों की भोगकीहुई मज़बूत दरवाज़े लगी जिसमें हाथी

घोड़ों के झुण्ड के झुण्ड आते जाते हैं ४० व जिसमें हज़ारों ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र अपने अपने कर्म्मों के करने में लगे व जितेन्द्रिय बसेहैं ४१ व जिसमें तरह तरह के दुमहले चौमहले पँचमहले आदि मकानहैं वैद्योंके भी हज़ारों मकान हैं व सब धनधान्यसे भरी पुरीहै ऐसी अयोध्यापुरी की रक्षा करतेहो ४२ हे भरत भला हज़ारों देवमन्दिर सेवित सबकहीं आनेवाले जनों से युक्त देवालय पौशाला तालाबों से शोभित ४३ प्रसन्नचित्त मनुष्यों से भरा पुरा समाजों के उत्सव से शोभित अच्छे बलिष्ठ पशुओंसे सेवित जीव हिंसारहित ४४ बहुतसी नदी तड़ागों से संयुक्त अति रमणीय क्रूरजंतुओं से वर्ज्जित सबभयों से हीन ठौर ठौर खानोंसे पूर्ण ४५ पापी मनुष्यों से हीन हमारे पुरुषालोगों से रक्षित ऐसा जो कोशलदेश धनधान्य युक्तहै वह सुख से बसता है कि नहीं ४६ भला खेती करनेवाले व गायोंके पालन करने वाले वाणिज्य करनेहारे लोग सब तुम्हारे प्यारे आनन्द से बसते हैं व अपना अपना काम करके सुख उठातेहैं ४७ भला इन रोज़गारी लोगोंकी रक्षा डाका चोरादिकोंसे करतेहो व उनका भरण पोषण होता जाता है क्योंकि राजा को उचितही यहीहै कि अपने देशके रहने वाले सबलोगोंकी रक्षा करता रहै ४८ भला अपनी स्त्रियोंको समझाते बुझाते रहतेहो व उनकी रक्षा भलीबिधिसे रखतेहो भला उनकी बातों का विश्वास तो नहीं मानते व मनकी गुप्त बात तो कुछ उनसे नहीं कहते ४९ भला जिसबनमें हाथी रहते हैं उसकी रक्षारखते हो कोई अनारी तो नहीं वहाँसे हाथी फँसालेजाता भलातुम्हारे गाय बैलइत्यादि तो वैसेही अबभी हैं भला हाथिनी हाथी घोड़ी घोड़ादिकों के रखनेसे तृप्त तो नहीं होजाते कि अब बहुत होगये क्या करेंगे ५० हे राजपुत्र भला अच्छे अच्छे भूषण बस्त्र पहिन ओढ़ सड़क पै दोपहर के पहिले घूमतेहो जिसमें सब नगरके लोग देखें कि ये हमारे राजाहैं ५१ भला सब कामकाजी निश्शङ्क हो तुम्हारे निकट तो नहीं चलेआते वा सब मारे डरके अतिदूर तो नहीं रहते क्योंकि राजाओंको मध्यभावसे सेवन करना चाहिये ५२ भला जितने क़िलेहैं सब रुपया पैसा अन्न पानी हथियार नानाप्रकारकी कलों व थवई धनुर्द्धारी आदिकों से पूर्णहैं वा

नहीं ५३ हे भरत भला तुम्हारे आमद बहुत व ख़र्च कमतरहैं वा नहीं वह भी ख़र्च अनुचित जुआ आदि खेलने वा वेश्यादिकों के देनेमें तो नहीं होता ५४ भला देवता पितर ब्राह्मण अभ्यागत सेना व मित्रों के अर्त्थ ख़र्च होताहै वा नहीं ५५ भला जो लोग शुद्धात्मा पवित्र श्रेष्ठगुण युक्त हैं जिन्होंने कभी कोई ख़राब कर्म्म नहीं किया न कभी किसीने असत्कर्म्मकी ओरलगे उनको देखाहै लोभमें आय उनको कभी मारने पीटने व बँधुआ तो नहीं करते ५६ भला चोरको चोरीकरते देख व पूंछनेपै उसने अङ्गीकार भी करलिया और सब तरहके सबूतभी पहुँच गये तौ भी धनके लोभसे विनां दण्डदिये उसको छोड़ तो नहीं देते ५७ भला जबकभी किसी तालेवर वा ग़रीबको कष्ट परता तो बहुत कुछसुनेजाने हुये तुम्हारे मन्त्री दीवान न्यायाधीशादि निर्लोभ हो उनका प्रयो-जन देखते हैं वा नहीं ५८ क्योंकि निरपराधी लोगोंको जब अविचार से दण्ड दियाजाताहै व उनवेचारों के आँशु पृथिवी में गिरतेहैं तो ऐसे दण्ड देनेवाले राजा व राजसेवक के पुत्र पशु धनादि को वे आँशु नाश करदेतेहैं ५९ हे भरत भला वृद्ध बालक वैद्य व और मुखिया लोगों को दान मान मीठे बचन बोलने इनतीनोंसे सत्कार करतेहो वा नहीं ६० भला गुरू वृद्ध तपस्वीदेवता अतिथि ठाकुरद्वारा आदि देवमन्दिर व सब छोटे बड़े ब्राह्मणोंके नमस्कार करतेहो वा नहीं ६१ भला कभी अर्त्थसे धर्म्म व धर्म्म से अर्त्थ व अर्त्थ धर्म्म दोनोंको लोभ व कामसे तो नहीं रोंकदेते कि न होनेपातेहों ६२ भला हेभरत अर्त्थ काम व धर्म्म अपने अपने समय पर इन तीनोंका सेवन करतेहो वा नहीं ६३ भलापुरबासी व देशबासी सहित ब्राह्मण लोग तुम्हारा कल्याणचाहतेहैं वा नहीं ६४ भला नास्तिकता झुंठाई क्रोध अहङ्कार सुस्ती ज्ञानवानों का न देखना आलस्य देखने सुनने संूघने खाने आदिके वशीभूत होना ६५ अकेलेही राजकाजके लिये बिचारकरना वा जो लोग उसबातको नहींजानते उनसे सलाहलेना व जिस बातका निश्चय होजाय कि फलाने दिनको होगा उसदिन उसमें न लगा लगाना सलाहवाली बात सबसे कहदेना ६६ हरएक कामके आरम्भ करनेमें मङ्गल शब्दोंका न पढ़ना सबतरह के नीच व छोटे लोगों को भी देख उठ खड़े होना भला ये जो राजाओं के चौदह

दोष होते हैं उनको तुम बरातेहो वा नहीं ६७ भला हे भरत १० वर्ग्ग ५ वर्ग्ग ४ वर्ग्ग ७ वर्ग्ग ८ वर्ग्ग ३ वर्ग्ग व तीनों विद्या ६८ इन्द्रियोंका जीतना ६ वर्ग्ग देवता व मनुष्यों से दुःख राजकृत्य २० वर्ग्ग ५ प्रकृति १२ मण्डल६ ६यात्राविधान दण्डविधान मिलापकरना व बिगारकरना इनमें जो करनेवाले हैं जो नहीं करनेवाले हैं उनको बिचार के साथ करते हो वा नहीं करते ७० इनमें १० वर्ग्ग ये हैं १शिकार खेलना २ जुआ खेलना ३ दिनको सोना ४ बतबढ़ाव करना ५ स्त्रियोंका अति सेवन ६ नशा खाना ७ अति नाच देखना ८अति गान सुनना ९ अति बाजा सुनना १० बिना प्रयोजन घूमना व ५ वर्ग्ग ये हैं १ नदी तालाब आदि जलके बीच में क़िला बनाना २ पर्ब्बत पै क़िला बनाना ३ वृक्षोंके बीचमें क़िला बनाना ४ ऊसर में क़िला बनाना५हथियारों के बीचमें क़िला बनाना ४ वर्ग्ग ये हैं १ सामसमझाना २ दानदेकर शत्रुको क़ाबूमें लाना ३ शत्रुओं में तोड़फोड़ करादेना ४ दण्डदेना व ७ वर्ग्ग ये हैं १ स्वामी २ मंत्री ३ देश ४ क़िला बनाना ५ खजाना रखना ६ सेना रखना ७ मित्र रखना ये साती राज्यके अङ्गहैं व आठ वर्ग्ग ये हैं १ चुगुली २ साहस ३ द्रोह करना ४ परारे गुणोंका न सहना ५ निन्दा करना ६ किसी के कहेहुये अर्थका दूषण करना ७ कठोर बचन कहना ८ दण्ड देना ये आठो क्रोधसे उत्पन्न होते हैं कोई कोई लोग अष्टवर्ग्ग इनको कहतेहैं १ खेती कराना २ उद्यमियों की रक्षा ३ क़िला बनाना ४ पुल बँधाना ५ हाथी बझाना व रखाना ६ पोतलेना ७ उजाड़गावँ बसाना ८ औरों का राज्य लेना व ३ वर्ग्ग ये हैं १ धर्म्म करना २ अपने लिये द्रव्य इकट्ठा करना ३ काम व तीनों विद्या ये हैं १ तीनों वेदोंका पढ़ना २ खेती बाणिज्यादि ३ राजनीति व ६ वर्ग्ग ये हैं १ मिलाप करना २ बैर करना ३ चढ़ाई करना ४ अपने क़िलेमें बैठा रहना ५ शत्रुओं से दूर रहना व दूर रखना ६ भागकर कहीं जाय रहना देवताओं से राज्यमें ये दुःख होतेहैं १ आग लगना २ अति जल बरसना ३ महामारी आदि बीमारी होना ४ अकाल पड़ना ५ मरना व मनुष्यों से ये दुःख होते हैं १ प्रथम राज्य के नौकर चाकरोंसे २ चोरोंसे ३ शत्रुओं से ४ राजाके भाई बन्धुओं से ५ राजाके लालची होनेसे व राजकृत्य यहहै कि किसीकी नौकरी न रक्खे

लालची न रहै जो मानने के योग्य हो उनका अपमान न करै आप सदा कोप न किये रहै नाहक किसी को कुपित न करै बहुत डरा न करै किसीको न डरवावै व २० वर्ग्ग ये हैं १ बालक २ वृद्ध ३ जो बहुत दिनोंसे रोगी हो ४ जो अपनी बिरादरीके लोगोंसे निकाल दिया गयाहो ५ जो डरा करता हो ६ जो औरोंको डरवाता हो ७ जो अति लोभीहो ८ जो लोभी का सम्बन्धी हो ६ जो विरक्त प्रकृति हो १० जो अति विषयी हो ११ जिसका चित्त सुस्थिर न रहता हो १२ जो देवता व ब्राह्मण की निन्दा करता हो १३ जो भाग्य हीन हो १४ जो भाग्यही के भरोसे हाथ पै हाथ धरे बैठा रहता हो १५ जो अकाल के मारे पीड़ित हो १६ जो बड़ा पहल-वान्हो १७ जो अपने देशका रहनेवाला न हो १८ जिसकेबहुत वैरीहों १६ जो मरने पर तयार हो २० व जो झुट्ठा अधर्म्मी हो राजाको चाहिये कि इनके सङ्ग मित्रता न करै ५ प्रकृति ये हैं मंत्री १ देशबासी २ क़िला ३ ख़ज़ाना ४ व दण्डदेना ५ मण्डल १२ हैं १ शत्रु २ मित्र ३ शत्रुका मित्र ४ मित्रका शत्रु ५ मित्रके शत्रुका मित्र ६ व परम मित्र ये जो विजय की इच्छा करके किसी पै चढ़ाजाता हो उसके आगे आगे चलें व १ पार्ष्णि-ग्राह २ आक्रन्द ३ पार्ष्णिग्राहासार ४ आक्रन्दासार ये पीछे पीछे चलें व जो ऐसे न हों मध्यभाव रखते हों वे दोनों सङ्ग सङ्ग चलें ५ तरह का यात्राविधान है १ विग्रह्ययान २ सन्धाययान ३ सम्भूययान ४ प्रसङ्ग-तोयान ५ उपेक्ष्ययान जहाँ बड़ी बीरता के साथसेनापतियों को सङ्ग लेकर यात्रा की जाय वह विग्रह्ययान है जहाँ जिस शत्रु के ऊपर चढ़ाई हो उससे मेलकरके और शत्रुके ऊपर चढ़ाई की जाय वह सन्धाययान है जहाँ बीरों को सङ्गले खुलाखुली के साथ यात्रा की जाय वह सम्भूययान है जहाँ तैयारी तो और शत्रुके ऊपर कीजाय व बीच में और के ऊपर जाय पहुंचै वह प्रसङ्गतोयान है जहाँ शत्रु को अति प्रवल जान उस पै तो न चढ़ाई कीजाय पर उसके मित्र पै कीजाय वह उपेक्ष्ययान है व दण्ड विधान सेनाकी रचना को कहते हैं ॥

हे भरत भला जैसा कुछ शास्त्रमें लिखाहै उस रीतिसे चार वा तीन मंत्रियों के साथ बैठके सलाह करते हो वा सबको एकसङ्ग बैठायके व सब से अलग अलग भी सलाह करते वा नहीं ७१ हे भरत भला तुमने जो

तीनों वेद पढ़ेहैं उनके अनुष्ठानादि किये हैं जिनसे वे सफल समझेजायँ भला सब क्रिया तुम्हारी सफलहैं महात्मा लोग आयाजाया करते उनका सत्कार होता जाता है भला स्त्रियाँ सब पुत्रादि युक्त हैं क्योंकि उनकी सफलता यहीहै भला शास्त्र सुनने का जो नम्रता गुणहै वह तुममें टिकाहै वा नहीं ७२ हे भरत जैसा हम कह आये हैं इसीतरह की तुम्हारी बुद्धि आयुष बढ़ानेवाली यश बढ़ानेवाली व धर्म्म अर्थ काम बढ़ानेवालीहै ७३ भला जिस वृत्तिको पिताजी व पितामह प्रपितामह लोग वर्त्तते थे उस समीचीन वृत्तिका वर्त्ताव तुम भी वर्त्तते हो ७४ भला नानाप्रकार के स्वादु के भोजन बनवाय के आप अकेलेही तो नहीं भोजन करते जो मित्रलोग वा परिवार के लोग वहाँ रहते हैं उनको भी देते हो ७५ जो राजा दण्ड धारण कर धर्म्मसे प्रजा पालन करता है वह यहाँ तो पृथिवी भर का राज्य भोगता है अन्तावस्था में स्वर्ग्गको जाता है ७६ ॥

इत्यार्षेश्रीरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेशततमस्सर्ग्गः १०० ॥

श्रीरामचन्द्रजीके बचनसुन भरतजी बोले कि धर्म्महीन हमको राज-धर्म्म क्या करेगा १ क्योंकि हमलोग सूर्य्यबंशियों में यह बहुत दिनों का धर्म्म चलाआताहै कि जब ज्येष्ठपुत्र विद्यमान हो तो छोटाराजा नहीं होता २ इससे अब हमारे साथ सब धनधान्य युक्त अयोध्यापुरी को चलो हमारे व इसकुलके कल्याण केलिये अपना अभिषेक कराय राजाहोवो ३ क्योंकि जिन राजाको लोग मनुष्य कहतेथे व कर्म्म उनके धर्म्म अर्थ सहित सब देवोंके समान थे मनुष्योंके समान न थे वे हमारे पिताजी देवता होगये ४ हमतो केकय देश में अपने नानाके यहां रहे व आप यहाँ बनमें रहे इसी बीचमें यज्ञ करनेवाले व सज्जनों में प्रतिष्ठित राजा दशरथ स्वर्ग्गको चलेगये ५ सो अब नहीं जैसेही जानकी लक्ष्मण सहित आप बनको चले वैसेही मारेदुःख व शोकके राजा स्वर्ग्ग को चलेगये ६ इससे हे पुरुषसिंह उठिये पिताजीको जलदीजिये हम व शत्रुघ्न दोनों जने प्रथमही जलदान कर चुकेहैं ७ यद्यपि हमलोग जलदा-नादि सब क्रिया पिताजीकी करचुके तथापि धर्म्मशास्त्र वाले लोग कहतेहैं कि जो जलादि कोई प्रिय देताहै वह पितरोंके लोक में सदाके लिये रहता

है कभीउसका नाश नहींहोता फिर आपतो पिताजीको अत्यन्त प्रियथे ८॥

कुण्डलिका ॥

तुम काहीं शोचत रहे तव दर्शन की आश ।
करतरहे तुम महँ लगी मति न खिँची तिन पास ॥
मति न खिँची तिन पास तुम्हें बिन दशरथ राऊ ।
तवशोकहि सों दुखित तुम्हहिँ सुमिरतचितलाऊ ॥
याबिधि सब बिधि रामलगन लागी तुम पाहीं ।
पिता गये तव स्वर्ग्ग मुहुर सुमिरत तुम काहीं ९ । ६

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकशततमस्सर्गः १०१॥

जब पिताके मरणकी करुणा सहित बात भरतजीके मुखसे श्रीरामचन्द्रजीने सुनी तो मूर्च्छा आगई १ व सङ्ग्राम में इन्द्रके छोड़े हुये बज्र के समान कठोर भरतजीका बचन सुन २ दोनों हाथ माथ पै धर जैसे बनमें फूलाफला वृक्ष कुल्हाड़ीसे काटे जानेपै पृथिवीपर गिरताहै वैसेही श्रीरामचन्द्रजी गिरपड़े ३ जब पृथिवी के पति श्रीराम जी इस तरहसे पृथिवीमें गिरे तो नदीका किनारा गिराय मारे मिहनत से थक के सोते हुये हाथीके समान पड़े श्रीरामको देख ४ तीनों भाई व सीता जी मारे शोकके मूर्च्छित श्रीरामचन्द्र जीके ऊपर मूर्च्छा जागनेके लिये जल छिड़कने लगे ५ इसके पीछे श्रीरामचन्द्र जीकी मूर्च्छा मिटी रोदन करते हुये बहुतकुछ करुणा सहित बचन कहने पै उतारू हुये ६ व राजाको स्वर्ग्गबासी सुन धर्म्मात्मा श्रीरामजी धर्म्मसहित बचन भरत जीसे बोले ७ कि अब पिताजी तो स्वर्ग्गहीको चलेगये हम अयोध्यामें जाय क्या करेंगे राजश्रेष्ठ शिरोमणि श्रीदशरथ बिना कौन अयोध्याका पालन करेगा ८ व तिन महात्मा राजाका कौन काम हमऐसे कुपूत पुत्र से होगा कि वे तो हमारे शोकसे मरे हमने उनकी प्रेतक्रियाभी न की ९ हे भरत तुम्हारे तो सबकाम सिद्ध होगये जोकि शत्रुघ्न के साथ पिताजीके सब प्रेतकार्य्य तुमने किये १० हमतो अभी तो क्या बनबास से निवृत्त होनेपैभी बिना राजाके बिना मालिककी अयोध्याको नहींजाना चाहते ११ क्योंकि जो हम बनबास समाप्तकर अयोध्याको जायँगे तो बिना पिताजीके

हमको कौन सिखलावेगा १२ हमको सदाचारी देख आगे जो जो बातें समझाय समझाय पिताजी हमसे कहतेथे कि जिनके सुनतेही कानों को सुखहोताथा अब वे किससे सुनेंगे १३ भरतजीसे ऐसाकह श्रीराम मारेशोक के सन्तप्त हो पूर्णमासीके चन्द्र समान मुखी श्रीजानकीजीसे कहनेलगे कि १४ हे सीताजी तुम्हारे श्वशुर मृतक हुये लक्ष्मण तुम अब बिना पिताके हुये क्योंकि भरत कहते हैं कि महाराज दशरथ स्वर्गबासी हुये १५ श्रीरामचन्द्रजीने जब ऐसा कहा तो महा यशस्वी तीनों भाई नाना प्रकारसे रोदन करने लगे १६ व सब भाइयों ने श्रीरामचन्द्रजी को समझाय बुझाय कहा कि अब आप पिताजीको तिलांजलि दीजिये १७ सीताजी अपने श्वशुर महाराज दशरथजीको स्वर्गवासी सुन आँशु भरेहुये नेत्रोंसे रामचन्द्रजीको न देख सकीं १८ रोतीहुई जानकीजीको समुझाय बुझाय अति दुःखित लक्ष्मणजीसे श्रीरामजी अति दुःखित वचन बोले १६ हे लक्ष्मण तपस्वियोंके खानेके योग्य इंगुदीके फलोंका गूदा व पहिरने के लिये दूसरा चीर वस्त्र लावो महात्मा पिताजी को जलदान करनेको चलेंगे २० आगे आगे तो सीता चलें उनके पीछे पीछे अति निकट तुम व तिसके पीछे हमचलें क्योंकि मरेहुये के सब कार्य्यों में जानेकी यहीविधिहै कि सबसे आगे स्त्रियाँ चलें तिसके पीछे जो छोटे लड़के हों वे चलें फिरसब बड़े लोग चलें २१ रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन इक्ष्वाकुबंशियोंके नित्यअनुगामी बड़ेविख्यात महाबुद्धिमान् कोमलस्वभाव जितेन्द्रिय अति सुन्दर स्वरूप व रामचन्द्रजी में अति दृढ़भक्ति करनेवाले २२ सुमन्त्रजीने भरत लक्ष्मण व शत्रुघ्न तीनों राजपुत्रोंके सङ्गबहुत समुझाय बुझाय रामचन्द्रजीका हाथपकड़ कल्याण रूप जलयुक्त मन्दाकिनी नदीके घाटपै धीरे धीरे उतारा २३ व लोगबड़े कष्टसे सुन्दर घाट वाली मन्दाकिनी नदी को जिसके किनारे किनारे बन फूल रहाथा २४ व बड़े वेग से बहरहीथी घाट पै कीचड़ [illegible] था वहाँ पहुंच राजा को तिलांजलि देने लगे हे तात यह जल तुमको प्राप्त हो २५ व श्रीरामचन्द्रजी तो जल पूरित अंजलि उठाय दक्षिण दिशा को मुख कर रोदन करते हुये यह वचन बोले २६ ॥

दो० नृप शार्दूलाक्षाम विमल यह जल मम कर दीन ॥

स्वर्गलोक गत आप ढिग पहुँचे आज नवीन १ । २७

इस तरह जलदान करने के पीछे मन्दाकिनी के तीरही पै जल से थोड़े ही दूर पै सब भाइयों के सङ्ग श्रीरामचन्द्रजीने अपने कर कमल से पिताके लिये पिण्डदान किया २८ इंगुदी व बेर के फलों के गूदे से पींड़ी बनाय भूमि पर कुश बिछाय तिसके ऊपर धर के रोदन करते हुये रामचन्द्रजी ऐसे वचन बोले कि २६ ॥

दो० प्रीति सहित महराज यह भोजन करहु बिचारि ॥
जासों हम फल मूलही खात देत निरधारि १
पुरुष अन्न जो खातहै तासु देवहू सोय ॥
भोजन करत महीप वर शास्त्र लिखित यह होय २ । ३०

इस तरह पिण्डदान कर नदीके तीर से बाहर आय अति रमणीय कँगूरा सहित चित्रकूट पर्ब्बत पै श्रीरामचन्द्रजी आये ३१ जब अपनी पर्णकुटीके द्वारपै पहुँचे तो एक हाथसे भरतजी का दूसरे से लक्ष्मणजी का हाथ पकड़ महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी ३२ रोदन करने लगे जब रामचन्द्रजी की ऐसीदशा देखी तो सब भाई ज़ोर से रोनेलगे तिन भाइयोंके रोनेका शब्द पर्ब्बतपर ऐसा जानपड़ा मानों गर्ज्जते हुये सिंहों का है ३३ पिताजीको जलदान पिण्डदान करतेहुये चारोंभाइयों काजो बड़ा भारीशब्द रोदन करने का हुआ उससे भरतकी सेनाके लोगबहुत डरे ३४ व आपस में कहने लगे कि रामचन्द्रजीसे भरतकी भेंट ज़रूर हुई क्योंकि मरेहुये पिताके शोचकरने का यह महा कोलाहल होरहा है ३५ यहकह सुन जिस दिशामें रोदन का शब्दहोता था उसी ओर मुखकर अपनी अपनी सवारीछोड़ सबकेसब पैदरही दौड़े ३६ व जो लोग अति सुकुमार थे पैदर चलही नहीं पातेथे वे सजे सजाये हाथी घोड़े रथ आदि सवारियों पर चढ़हीकर दौड़े ३७ यद्यपि अभी थोड़ेही दिन हुयेथे जबसे रामचन्द्रजी परदेशमेंथे परंतु मारेप्रेमके अयोध्यावासी मानों बहुतही दिनोंके विदेशी रामचन्द्रजीके देखनेको तिनके आश्रमपै पहुँचे ३८ चारोंभाइयों का समागम देखनेकेलिये खुर व पुट्टियोंसे भूमि खोंदतेहुये नानाप्रकार के बाहनोंपर चढ़ चढ़ सबलोग गये ३६ उस समय रथोंकी पुट्टियों के चलनेका भूमिमें ऐसा शब्द हुआ जैसा बादरों

के आनेसे आकाश में होताहै ४० उस शब्दको सुन जितने हाथी उस बनमें थे मारेडरके अपनी अपनी हथिनी बच्चोंके साथ भाग भाग और बनको चलेगये ४१ सूकर हरिण सिंह भैंसा नीलगाय व्याघ्र चीता आदि जीवभी भागे ४२ व चकई चकवा हंस जलमुरगी बकुला कराँकुल कोकिला क्रौञ्चादि पक्षी मूच्छितहो गिरते पड़ते इधर उधर भाग खड़े हुये ४३ उस शब्दसे डरेहुये पक्षियोंसे तो आकाश व मनुष्योंसे पृथिवी युक्त हुई उस समय दोनों शोभित होतेथे ४४ लोगोंने जाय देखातो परम यशस्वी दोषरहित पुरुषसिंह श्रीरामचंद्रजी चबूतरापै बैठेहैं ४५ रामचंद्र जी को देखतेही सब लोग कैकेयी व मन्थरा की निन्दा करनेलगे जब बनाय निकट पहुँचे तो सबके सब रोनेलगे ४६ तिन लोगोंको रोदन करते दुःखितदेख धर्म्मज्ञ श्रीराम किसीको पिताके समान किसीको माताके समान मिले ४७ किसी किसी मनुष्यको तो श्रीरामचंद्रजी मिले वा कोई कोई लोगों ने उनके प्रणाम किया किसी किसी अपनी अवस्था वालेसे जैसा उससे बतलाते थे बोले प्रयोजन कि जिसको जैसीभावना थी उससे उसीतरह मिले ४८ मिलने के समय उन लोगोंके रोनेके शब्दसे पृथिवी व आकाश शब्दायमान होगया पर्वतोंकी गुहा व सब दिशाओं में मृदंगके शब्दके समान सुनाईदिया ४९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेद्व्यधिकशततमस्सर्गः १०२॥

अन्यलोग तो गिरतेपड़ते इसतरह रामचन्द्रजीके निकट पहुँचे रामचंद्रजीके दर्शनकेलिये वशिष्ठजीभी महाराज दशरथजी की कौशल्यादि सब स्त्रियोंको आगेकर जहाँ श्रीरामचन्द्रजीथे वहाँको चले १ राजाकी स्त्रियोंनेभी धीरेधीरे जातेजाते मंदाकिनी नदीको देखा वहाँ रामचन्द्र व लक्ष्मणजी के स्नान करने के योग्य घाट भी देखा २ उसे देख व रोदनकर मुख सुखाय कौशल्याजी व सुमित्रा अन्य महाराज की स्त्रियों से बोलीं ३ कि जो हमारे प्राण प्यारे राम जानकी लक्ष्मण अयोध्या से निकाले गये जिनका मालिक वहाँ कोई भी न रहा यद्यपि उनके कर्म्म सब अमानुषथे यहघाट उन्हींके स्नान करनेके योग्यहै ४ हेसुमित्राजी इसीघाटसे हमारे पुत्रकेलिये तुम्हारे पुत्र लक्ष्मण आलस्य

छोड़ आपआय जल भर लेआते हैं ५ यद्यपि यह जलादिका भरना नीचोंका कामहै पर इसके करनेसे तुम्हारे पुत्रकी कुछ निन्दानहींहै क्योंकि यदि ज्येष्ठभाई रामचन्द्रजीके लिये यह कर्म्म न होता तो अलबत्ता निन्दित होता ६ यद्यपि लक्ष्मण इस नीचकर्म्मके करनेके योग्य नहीं है क्योंकि ऐसा क्लेश कभी काहेको उठायाहोगा तथापि अब इस नीचकर्म्म को आजहीसे छोड़देंगे रामचन्द्र अयोध्याको चलें वहाँ ऐसा काहेको करना पड़ेगा ७ उसीघाटपै कौशल्याजीने देखातो पृथिवीमें दक्षिणको फुनगी उत्तरको जड़ ऐसे कुशबिछाये थे उनपै श्रीरामचन्द्रजीने जोपिताके लिये इंगुदी के फलके गूदाके पिण्ड दिये थे धरेथे ८ धर्म्म पूर्व्वक रामचन्द्र जीकेदिये पिण्ड देख कौशल्याजी सब दशरथजीकी स्त्रियोंसे बोलीं ९ अयेसब स्त्रियो देखतीहो इक्ष्वाकुनाथ महात्मा महाराज दशरथ अपने पिताके लिये श्रीरामचन्द्रने यथाविधि ये पिण्ड दियेहैं १० परन्तु हम तिन देव समान महात्मा नाना प्रकारके भोजन भोगकियेहुये महाराज दशरथजीके लिये ये इंगुदीके पिण्ड उपयोगी भोजन नहीं समझतीं ११ क्योंकि चारोंसमुद्रपर्य्यन्त पृथिवीको इन्द्रके समान भोगकर अब वही राजा इंगुदीके पिण्ड कैसेभोजन करेंगे १२ सब सम्पत्तिमान् श्रीरामचन्द्र जीने इंगुदी के फलके पीठाका पिण्ड अपने पिताको दिया है इसके देखनेसे बढ़के संसारमें हमको और दुःख नहीं जानपड़ता १३ हाय रामचन्द्रजीने जोपिताके लिये इंगुदीके पीठाका पिण्ड दियाहै उसेदेख मारे दुःखके हमारा हृदय सहस्र टुकड़े नहींहोजाता १४ यहजो श्रुतिहै किजोलोग जिस पदार्त्थको खाते हैं उनके देवताभी वहीखातेहैं वह सत्य हीहै इसीसे रामचन्द्रजो आप भोजन करतेथे वही अपने पिताकोभी उन्होंने दिया हाय १५ ऐसा बिलाप करती कौशल्याजीको समझातीहुई सबस्त्रियोंने जाय रामचन्द्रजीको बैठेदेखा मानों स्वर्गसे गिरेहुये देवता हैं बैठे हैं १६ नाना प्रकारके भोग विलासके पदार्त्थ छोड़े बैठे रामचन्द्र जीकोदेख मारेशोकके पीड़ित सब मातालोग आँशुछोड़ने व ऊंचे स्वरसे पुकारनेलगीं १७ सत्यसंकल्प श्रीरामचन्द्र जीने उठके सब माताओंके चरणारविंद ग्रहणकिये १८ जब श्रीराम सबके चरण कमलों पै गिरे तो वे सब मातालोग अपने शुभकर कमलोंसे इनकी पीठकी धूलि झारने

पोंछनेलगीं १९ लक्ष्मणजीभी सब माताओंको देख अति दुःखितहो रामचन्द्रजी के पीछे पीछे धीरे धीरे सबको प्रणाम करनेलगे २० जैसे सब माताओंने प्रणाम करनेपर रामचन्द्रजीकी पीठकी धूलि झारी पोंछीथी व जिस भावसे उनको देखाथा उसीरीतिसे शुभ लक्षण युक्त लक्ष्मणजी के साथभी सब बर्त्ताव बर्त्ते क्योंकि येभीतो दशरथहीसे उत्पन्नथे फिर उन का स्नेह इनमेंभी क्यों न हो २१ जानकीजीभी अपनी सासुओंके चरण कमल पकड़ बहुत दुःखित हुईं व आगे बैठ रोदन करनेलगीं २२ तिनको लपटाय छातीमें लगाय जैसेमाता कन्याको लपटालेतीहै बनवासके दुःखोंसे अतिदीन जानकीसे कौशल्याजी बोलीं २३ हाय जनकपुरके महाराजकी कन्या महाराजाधिराज चक्रवर्ती दशरथजीकी पतोहू व श्री रामचन्द्रजीकी स्त्री हो बनमें तुमने कैसे कैसे दुःखपाये २४ हेवैदेहि घाम से सन्तप्त कमलके व मर्द्दित लाल कमलके व धूलि लगेहुये सुवर्णके व बादरोंसे घेरेहुये चन्द्रमाके समान २५ उदास तुम्हारा मुख देख दुःखरूप इंधनसे बढ़ीहुई शोककीआग हमारे मनको भस्म कियेदेतीहै २६ अति दुःखसे पीड़ित कौशल्याजी ऐसा कहतीहीथीं कि रामचन्द्रजीने वसिष्ठजीके चरणारविन्द छुये २७ अग्नि समान तेजस्वी पुरोहित वसिष्ठ जीके चरण कमलछू जैसे बृहस्पतिजी के चरण कमल देवोंके स्वामी इन्द्रजी छूते हैं श्रीरामचन्द्रजी तिन महातेजस्वी गुरूके सङ्ग आसन पै बैठगये २८ तिसके पीछे अपने मन्त्री पुरके मुखिया व सेनापतियोंकेसङ्ग रामचन्द्रजीके अतिही सन्निकट उनसे नीचे स्थानपै भरतजीभी बैठ गये २९ अति वीर्य्यवान् भरतजी श्रीरामचन्द्रजीके निकटबैठ तपस्वियों का वेप किये श्रीरघुनन्दनको देख हाथजोड़ लिये जैसे ब्रह्माजीको देख इन्द्र हाथ जोड़ते हैं ३० उस समय जितने वसिष्ठादि श्रेष्ठजनथे सबकेमनमें इसीबातके सुननेका कौतूहलथा कि देखें ये भरतजी रामचन्द्र जीके प्रणामकर व उनका सत्कार कर कौनबात उनसे कहेंगे ३१ ॥

दो० सत्य वचन रघुपति भरत धार्म्मिक लषण महान ॥
सुहृदन सँगसोहैं सभासद सँग अनल समान १ । ३२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे त्र्यधिकशततमस्सर्गः १०३ ॥

श्रीरामचन्द्रजीने जाना कि हमारे भाई भरत अपने बड़े लोगोंके बड़े भक्तहैं इसलिये सहितलक्ष्मण उनसेबोले १ हेभरत जिसलिये चीरजटा व मृगचर्म्म धारण किये तुम इसदेशको आयेहो वह हम तुम्हारे मुखसे सुनाचाहतेहैं २ जिसलिये मृगचर्म्मादि धारण किये राजकाज छोड़ बनको आयेहो सब हमसे कहौ ३ जब दोबार रामचन्द्रजीने पूंछा तथापि भरतजी नहीं बोले तो श्रीरामचन्द्र जीने हाथ पकड़के पूंछा कहौ कहते क्यों नहीं जब इसतरह महात्मा रघुनन्दन ने बारबार पूंछा तो हाथजोड़ भरतजी बोले ४ हे आर्य्य पिताजी हमारी माताके कहनेसे आपको बनवासदे अयोध्या छोड़ बड़ा दुष्कर्म्मकर मारे पुत्रशोकसे पीड़ितस्वर्ग कोचलेगये ५ कैकेयीने जो ऐसा किया तो हमारी स्त्री माण्डवीके कहने से किया तथापि महापाप उन्होंने किया जिससे उनका यशही नाशहोगया ६ उस हमारी माताको राज्यका फलतो कुछनहींमिला केवलबिधवापन मिला इसीसे मारे शोकके दुर्ब्बल होगईहै व यह फलभी मिला कि घोरनरक में पड़ेगी ७ अबजो हुआ सोहुआ दासभूत जो मैंहूँ मेरे ऊपर प्रसन्नहूजिये अपना अभिषेककर इन्द्रकेसमान राज्यसिंहासनपै बिराजमानहो राज्य कीजिये ८ ये प्रजालोग व मातालोगभी बिधवा होगई हैं आपके निकट आईहैं इनके ऊपरभी प्रसन्न हो राज्य ग्रहण कीजिये ९ जिससे कि ज्येष्ठ होने व अन्य सबगुणोंके होनेसे आपही राज्य के योग्य हैं इससे अपने योग्य इसराज्यको धर्म्मसे ग्रहणकीजिये व इष्टमित्र सुहृदजनोंको सकाम कीजिये १० आप ऐसे पतिको पाय यहसब पृथिवी सुभगाहो जैसे कि बिमलचन्द्रमाके उदयहोनेसे शरदऋतुकी रात्रि सुभगा होती है ११ इन मन्त्रियों के साथ मैं आपके चरणों पै शिर धरके इतना माँगताहूं मुझ अपने भाई शिष्य व दासके ऊपर प्रसन्न हूजिये १२ हे पुरुषव्याघ्र श्रीराम तिससे बहुतदिन से रहनेवाले पिताजीकेइनमन्त्री पुरोहितादिकों को जो सदा पूजनेके योग्यहैं उल्लङ्घन न कीजिये १३ यह कह कैकेयीकेपुत्र भरतजी नेत्रोंसे आँशुबहाते हुये रामचन्द्रजीके चरणों पै शिर धरदिया १४ मतवाले हाथीके समान ऊधीसाँस लेते भरत अपने भाईको उठाय छातीमें लगाय श्रीरामचन्द्रजी बोले १५ हे भरत हम अच्छीतरहसे जानतेहैं अच्छे कुलमें उत्पन्न सत्वगुण युक्त तेजस्वी व

वृत करनेवाले तुम्हारे समान जो अन्य लोगहैं वे राज्यके निमित्त कैसे पाप करेंगे कभी नहीं कर सक्ते १६ इससे हम इस विषयमें तुम्हारा थोड़ाभी दोषनहीं कहसक्ते व तुमभी लड़कपन से माताकी निन्दा न करो १७ हे महाप्राज्ञ पापरहित गुरूलोगोंको शास्त्रकी यही आज्ञाहै कि स्त्री पुत्रादि आत्मासे छोटेलोगोंको जैसे चाहें वैसी आज्ञादें १८ फिर जब उनको मनमानी आज्ञादेनेका अधिकारही ठहरा तो हम सबलोग जैसे कि राजाकी स्त्रियाँतुम हमभी तो आज्ञाके अनुवर्ती ठहरे १६ इससे हमको महाराज पिताजी चाहे चीर मृगचर्म्म धारण कराय बनवास देते चाहे राज्यपै स्थापित करते सबकुछ करनेको उनको अधिकार था २० हे धर्म्मज्ञ हे धर्म्म करनेवालोंमें श्रेष्ठ जबतक लोकके सत्कार कियेहुये पिता में गौरव टिकाहै तब तक मातामेंभी गौरवहै जैसे पिता तैसीमाता कुछ अन्तर नहीं २१ और धर्म्मशील इनहमारेपिता व माता कैकेयी दोनों जनोंने कहा कि राम तुम बनकोजाव इसलिये हम उसके बिपरीत कैसे करें २२ तुम लोक सत्कार युक्त अयोध्याका राज्य पावो व हमचीर बल्कल धारणकर बनमें बसें २३ इस तरह सबके सामने कह हमको तुमको हिस्सालगाय महाराजदशरथजी स्वर्गबासीहुये २४ इससे लोकके गुरू धर्म्मात्मा पिताजी जो कहगये उसीका प्रमाणहै तुमको राज्य देगयेहैं अपना राज्य भोगो २५ व महात्मा पिताजीने चौदह बर्षतक हमको दण्डकारण्यका बासही हिस्सा दियाहै इससे हम अपना वहीभोगेंगे २६॥

कुण्डलिका ॥

जोभाषा नर लोकसत कृत सुरराज समान ।
पिता हमारे हितस्वइ करबै वचन प्रमान ॥
करबै वचन प्रमान आननहिं राखब मनमें ।
जबतक यहि संसार प्राण राखब यातनमें ॥
आनन सारेलोक अक्षय चाहन अभिलाषा ।
आपन हित स्वइ गुनत पिता हमरे जो भाषा १ । २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेचतुरधिकशततमस्सर्गः १०४॥

रामचन्द्रजी के ऐसे वचनसुन भरतादि पुरुषसिंहोंकी वह रात्रिअपने

साथियों के संग रामचन्द्रजी के लौटनेका उपाय शोचतेशोचते बड़ेदुःखसे बीती १ जबरात्रि बीतगई बनाय प्रातःकाल हुआ तो सब भाई मन्दाकिनी में स्नानकर होम जपादि कर कराय रामचन्द्रजी के निकट आये २ व सबके सब चुपचाप बैठे रामचन्द्रजी के चुपरहने से कोई कुछभी नहीं बोलता था तब भरतजी सुहृदों के बीचमें बैठहुये ढिठाय के श्रीरामचन्द्रजी से बोले ३ हेरामचन्द्र आपने हमारी माताका सन्तोष किया व हमको राज्यदिया परन्तु अब हम आपहीको दिये डालते हैं यह अकण्टक राज्य भोगिये ४ क्योंकि जैसे कि बड़े बेग से जब पानी बहने लगता है व पुल टूट जाताहै तो किसीका आड़ा जलका बेगनहीं अड़ता इसीतरह आपके छोड़ेहुये इस राज्यखण्डका भार आपबिना हमलोगों का थाँभा नहीं थँभ सक्ता ५ हेराम जैसे अच्छे घोड़ेकी चाल गदहानहीं चलसक्ता गरुड़की चालको अन्य पक्षी नहीं पाय सक्ते इसी तरह आपकी सामर्थ्य को पहुँचनेकी शक्ति हममें नहींहै ६ हेराम जिस राजाकी सेवा अन्यलोग करते हैं उसका जीना अच्छा होताहै व जो राजा औरोंकीही सेवाकरके जीताहै उसका जीना दुःखके साथहै सुखके साथनहीं ७ जैसे किसी पुरुषने वृक्ष लगाया व वह बाढ़ा बड़ीबड़ी डारेंहुई तो छोटे डीलवाला पुरुष उसपै नहीं चढ़सक्ता ८ व फिर जब वह फुलानाभी औरफल न लगे तो जिसकेलिये लगायागया था उसकी प्रीतिको वह नहीं अनुभव करता ९ इससे इस उपमा को आप अपने राज्यके पानेके अर्थ समझिये जोआप श्रेष्ठहोके हम छोटे लोगों को नहीं ग्रहण करते तो किस कामकी आपकी वृद्धिहुई १० हेमहाराज ऐसा कीजिये जिसमें राज्य सिंहासनपै बैठहुये आपको सूर्य्यके समान तपतेहुये ये प्रजालोग देखें ११ आपके चलनेपर मतवाले हाथी अयोध्याजी में गर्जेंगे व जनानखाने में सब स्त्रियां एकत्र होके आनन्दित होंगी १२ रामचन्द्रजी से ऐसी प्रार्थना करते भरतजी के वचनसुन सब अयोध्याबासी बहुत प्रसन्नहुये व कहने लगे वाहवाह भरत अच्छा कहतेहैं १३ तिन यशस्वी भरतजी को ऐसेदुखी बिलाप करते देख श्रीरामचन्द्रजी समझाने लगे १४ हे भरत यहजीव स्वेच्छाचारी नहींहै किन्तु अपने मनकी बात करने में असमर्थ है क्योंकि इसको इसलोक से उसलोक में व उसलोक से इस

लोक में काल खींचाकरता है १५ जितनी चीजें संग्रहकी जाती हैं जब तक नाशनहीं होजातीं तभीतक रहती हैं जितनी ऊंची चीजें हैं जबतक नीचेनहीं गिरतीं तभीतक हैं लोगों का संय्योग तभीतक रहता जबतक वियोग नहीं होजाता इसीतरह जबतक मरना नहीं होता तभीतक जीनाहै १६ जैसे पकेहुये फलोंको गिरपड़ने के सिवाय और भयनहीं इसीतरह जिस मनुष्य का जन्महुआ उसको मरण के सिवाय और भयनहीं १७ जैसे बहुत मजबूत थून्ही थँाभ आदि लगाभी घर पुराना होजानेपर गिरजाता इसीतरह बड़े बलवान् सुन्दरभी पुरुष बुढ़ापा आने पै मरही जातेहैं १८ जोरात्रि बीत जातीहै फिर वह नहीं आती नदियों का जल समुद्रमें चलाजाता फिर लौटके नदियों में नहीं आता १६ ये जो रात्रि दिन बीता करतेहैं इन्हींसे सब प्राणियोंकी आयुष नाशहोती जातीहै जैसे सूर्य्यके किरणों से ग्रीष्म ऋतुमें जलनाश होजाता है २० जिनतुम सरीषे प्राकृती मनुष्योंकी आयुष इसलोकमें रहने व देवलोक को जानेमें भी कमही परा करती है तिनको तुम शोचकरो प्राकृत बिलक्षण हमको क्या शोचते हो २१ यह मृत्यु जीवके संगही आतीहै व उसके संगही सदाबनी रहती है जब प्राणी मरता है तबभी संगही चलीजाती है जबतक पुरुष गोलोककी बिरजानदी के पारतक नहीं पहुँचता पिछ्वाये जातीहैं जो वह प्राणी उसनदी के पारजाय अभय गोलोक में पहुँचगया तो लौटआतीहैं इससे सबको ऐसाही उपाय करना चाहिये जिसमें बिरजापार उतर जाय नहीं तो जीवन मरण से छुट्टी न मिलेगी २२ जबसब अङ्गोंकी खाल सिंकुरगई बार सब पकगये बुढ़ापा के मारे देह जर्ज्जर होगई तब फिर यह पुरुष क्या करसकेगा २३ मनुष्य लोग सूर्य्यके उदय व अस्त होने में आनन्दित होतेहैं यह नहीं जानते कि इसी उदयास्त होनेसे हमारी आयुष नष्ट होती जातीहैं २४ फिर जैसे जैसे बसन्तादि नये नये ऋतु मनुष्य देखते हैं वैसे वैसे हर्षित होते जातेहैं यह नहीं जानते कि इन्हीं ऋतुओंके आने जानेसे हमारी आयुष बीती जातीहै २५ जैसे समुद्र में दो काष्ठ एकही सङ्ग डारे जायँ कुछ समय तो एकही सङ्ग बहेंगे फिर कालान्तर पाय उनमें से कोई कहीं चला जायगा कोई कहीं फिर एकत्र होना कठिन है २६ इसीतरह

इस संसार में स्त्री पुत्र भाई बन्धु धन पशु आदि एकत्र होके जहाँ के तहाँ चलेजाते हमेशा इकट्ठा नहीं रहसक्ते निश्चय इनका नाशही होजाता है २७ इस संसार में जिस समय जो सुख दुःख होताहै उसको कोई प्राणी नहीं मिटासक्ता क्योंकि उसके मिटाने में पुरुष को असामर्थ्यहै जो उसके उल्लङ्घन करनेमें यत्न करताहै वह शोच करनेके योग्य है २८ जैसे कुछ बनियोंका झुण्ड चला जाताहो व कोईगलीमें बैठाहुआ मनुष्य कहै कि आपलोगों के पीछे पीछे हम भी आवेंगे २९ इसी तरह जिस गलीमें पिता पितामह प्रपितामहादि चलेगये उस मार्ग्गमें चलेजाने का कौन शोच क्योंकि उसमें तो एकदिन जानाही पड़ेगा फिर उसमें न जानेका उपाय व्यर्थहै ३० जैसे नदीआदि जलप्रवाहसे जो जलबहता बहताही चलाजाता लौटकर उस स्थानपै नहीं आता इसीतरह मनुष्य की अवस्था का हाल है कि बालपनसे मरण पर्य्यंत जो बीत जाती फिर लौटकर नहीं आती इससे राजाको चाहिये कि प्रजाको धर्म्मसिखावे जिसमें उनकी आयुषव्यर्थ न बीते यहाँ वहाँ सदा सुखकरें क्योंकि जिस राजाके राज्यमें प्रजा सुखित रहतीहैं उस राजाको सुख होता है ३१ और धर्म्मात्मा पिताजीको तो कभी न शोचना चाहिये क्योंकि लक्षोंरुपये दे दे क्या जाने कितने अच्छे२यज्ञ उन्होंने किये कराये अब स्वर्ग्गको भोगये तो वहाँ भी उनका सत्कारही होगा ३२ पिताजी जब तक रहे अपने नौकर चाकरोंका भरण पोषण करते रहे प्रजाओं का पालनभी भली भाँति करतेरहे जो दान दिया धर्म्म सहितही दिया इस रीतिसे यहाँ रह अबस्वर्ग्गको गये ३३ व मनुष्य का यह पुराना देह छो हमारे पिताजी ब्रह्मलोक में बिहार करनेवाली देवताओंकी देहको प्रा हुये ३४ इससे तुम्हारे हमारे समान ज्ञानवान् बुद्धिमान् वेदशास्त्र प लिखे पण्डित कोईभी तिन पिताजीको शोचने के योग्य नहीं ३५ फि ये विविध प्रकारके शोक विलाप व रोदन करना बुद्धिमान् व धीरपुरु को चाहिये कि सदा इनको न करै ३६ इससे शोक छोड़ स्वस्थचित्त जाय अयोध्यापुरी में बसो क्योंकि जितेन्द्रिय पिताजी ने तुमको व बसनेकी आज्ञादी है उनकीआज्ञाका उल्लङ्घन न करो ३७हमकोभी पि जीने जहाँ बसने की आज्ञा दीहै वहाँ बसके श्रेष्ठ अपने पिताकी आ

का पालन करेंगे ३८ न हमीं को उचितहै कि पिताकी आज्ञा न करें न तुम्हीं को उचित है क्योंकि हमारे तुम्हारे दोनों के पिता व गुरू वही ठहरे ३६ हे भरत इससे हमतो बनमें बसके अपने पिताके बचन का परिपालन करेंगे क्योंकि धर्म्मचारियों का यहीकाम है ४० जो परलोक जीतना चाहे तो धर्म्मात्मा सलज्ज मनुष्यको चाहिये कि अपनासे बड़े गुरू पिता माता आदिके बचनही के अनुसार काम करै ४१ व तुमभी पिताजी की सत्यप्रतिज्ञतादि शुभसमाचार सुनके अपना राज्य करो कोई शोचकी बात नहीं ४२॥

दो ० पितु निदेश पालन करनहितभरतहि समझाय।
मौनभये रघुबंश मणि परभरतहि न पोसाय १ । ४३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेपञ्चाधिकशततमस्सर्गः १०५॥

जब रामचन्द्रजी ऐसे सार्त्थक बचनकह चुपहोरहे तो मन्दाकिनीके तीरपै बैठे स्वभावही से परम कृपालु श्रीरामचन्द्रजीसे १ परम धार्म्मिक भरतजी धार्म्मिक बचन बोले हे रामचन्द्रजी जैसे आपहैं ऐसा इसलोक में कौनहोगा २ आपको दुःख न तो ब्यथित करता न प्रीति हर्षित करती जैसे वृद्धोंके बीचमेंभी आप प्रतिष्ठितहैं वैसेही ऐसी ऐसी बातें पूछतेहो ३ जिस आपकी बुद्धिऐसीहै कि जैसे मरा तैसे जिया जैसे पदार्त्थों के रहनेसे तैसे बिना रहनेसे फिर तिसको किसीबात का परिताप काहे को हो ४ हे राजन् जो आपही के समान इस लोक परलोक के समाचार जानै वही पुरुष दुःखको पाय विषाद न करै ५ हे राम आप देवताओं के समान पराक्रमी महात्मा सत्यसङ्कल्प सर्ब्बज्ञ सर्ब्बदर्शी व बुद्धिमान्हैं ६ आपके ये पूर्ब्बोक्त सबगुण विद्यमान हैं व सब संसार की प्रवृत्ति निवृत्ति का ज्ञान बिराजमान है इससे महादुःख भी आपको नहीं दबा सक्ता ७ महाराज जब हम ननिहारे में थे बिना हमारी इच्छाके हमारी ओछे स्वभावकी माताने हमारेही लिये जोपाप किया जिससे आप बन-बासी हुये उसको भुलाय हमारे ऊपर प्रसन्न हूजिये ८ व स्त्रीको मार न डारना चाहिये यह बचन जो धर्म्मशास्त्र में लिखा है उसी धर्म्मसे हम बँधे हैं इसीसे पापकारिणी दण्डपानेके योग्य इस अपनी माताको कठिन

दण्ड से नहीं मारडारते ९ सदा शुभकर्म्म करनेवाले राजा दशरथ से उत्पन्न धर्म्म को जान बूझ हम कैसे निन्दित अधर्म्म करें १० व सब यज्ञ क्रिया करनेवाले वृद्धावस्था को प्राप्त राजासाहब तो गुरू पिता देवता रूपहीथे फिर अबतो स्वर्गबासीभी होगये सभाके बीच में उनकी निन्दा तो हम न करेंगे ११ नहीं तो हे धर्म्मज्ञ भला स्त्री का प्यार करनेकी इच्छासे ऐसा कौन धर्म्मवान् पुरुष है जो धर्म्मअर्थ हीन इस तरह पाप कर्म्म करै कोई भी न करेगा १२ जो यह लोक में प्रसिद्ध श्रुतिहै कि मरण समय में सबकी बुद्धि मोहित होजाती है वह अब राजा के ऐसा काम करने से प्रत्यक्ष होगई कि-सत्य यदि मति मोहित न होजाती मरने पर न होते तो ऐसा काम कभी न करते १३ अबजो हुआसो हुआ पिता जी ने जो कैकेयी के कोप करनेके भयसे व चित्तके विक्षेप से वा अविचार से उसमेंही अपना कुछ प्रयोजन जान आपका अभिषेक नहीं होने दिया वह अपराध क्षमा कीजिये अपने मनमें न रखिये १४ क्योंकि पिता के अविचार पर जो पुत्र ध्यान नहीं देता बरन पिता टेढ़ी मेढ़ीभी बातकरै उसे सीधीही मानता संसार में पुत्र वही कहाता है जो इसके विपरीत करता वह पुत्र नहीं है १५ तिससे आप पुत्रहों पिताके अपराधकी ओर दृष्टि न दें लोकमें निन्दित जो कर्म्म पिताजीने कियाहै उस को आपको ढाँकना चाहिये और प्रकाश न करना चाहिये यदि आप राजगद्दी पै बैठते हैं तो ज़रूर ढँक जायगा १६ अब कैकेयी को हमको पिता जीको व सुहृद् बन्धुओं को व पुरवासी देशबासियों को सबको आप पालें १७॥

चौ० । कहँबन कहँ क्षत्रियके धर्म्मा । कहाँजटा कहँ पालन कर्म्मा॥ यासों ये बिरुद्ध सब कामा । आपन करिय रामगुण धामा १ । १८ यहै प्रथम क्षत्रिय कर धर्म्मा । जो करिकै अभिषेचनकर्म्मा ॥ पुत्र समान प्रजा परि पालै । तिन हित नित बैरिन कुल घालै २ । १९ को प्रत्यक्ष छोड़ि संशय कर । लक्षण रहितहि मानै मतिवर ॥ कोउन अनिश्चित करिहै काजू । यासों राम होहु महराजू ३ । २० देह क्लेश कर धर्म सुहावा । जो रघुबर तो बनहि बनावा ॥ चारि वर्ण पालहु युत धर्म्मा सहहु क्लेश करिकै यह कर्म्मा ४ । २१ चारिहु आश्रममें यह आश्रम

श्रेष्ठ गृहस्थम केर बिना भ्रम ॥ हे धर्म्मज्ञ रामसों त्यागा । चाहत आप यहै अनुरागा ५ । २२ ॥

आपसे हम अवस्था विद्या आदि सबमें छोटे हैं फिर आप बड़े विद्यमानही हैं हम कैसे भूमि का पालन कर सकेंगे २३ एक तो बुद्धि व गुणों से हीन दूसरे बालक इसीसे नीच स्थान पै बैठने के योग्य फिर तीसरे आपभी यहाँ न रहैंगे कि जो न बनेगा पूँछलेंगे इससे हम प्रजापालन नहीं करसक्ते २४ इसलिये इस पिताके उत्तम निष्कण्टक राज्य का धर्म्मपूर्व्वक हम लोग भाई बन्धुओं के साथ पालन कीजिये २५ यहीं वसिष्ठादि पुरोहित व ऋत्विज लोग जो कि सब शास्त्रों के जानने में चतुर हैं व सब मन्त्री दीवान् महाजन प्रजा आदिहैं आपका अभिषेक कर दें २६ जब अभिषेक होजाय तो हम लोगोंके साथ अयोध्या का पालन करने को चलिये जैसे सब लोकों को जीत देवताओं के साथ इन्द्रजी स्वर्ग का राज्य करते हैं २७ बस देवता पितर व ऋषि इनतीनों के जो ऋणहैं तिनको दूरकर शत्रुओंका नाश करतेहुये व सुहृदोंका पालन करते हमको सेवक बनाय राजकाज कीजिये २८ आपके अभिषेक से मित्रलोग आज आनन्दित हों व शत्रुलोग भयभीत हो भागके दशो दिशाओं को चलजायँ २९ हमारी माताकी जो लोक में आपको बनवास दिलाने से निन्दा होरही है उसे मिटाइयें व परमपूज्य पिताजी की भी पाप से रक्षा कीजिये ३० हम आपके चरणों पै शिर धरिके माँगतेहैं कि हमारे ऊपर दया कीजिये व अन्य सब भाई बन्धुओं के ऊपर भी कृपा कटाक्ष कीजिये जैसे सब प्राणियों के ऊपर महादेवजी दया करतेहैं ३१ जो आप हमारी इस प्रार्थना को बिना अंगीकार कियेही यहाँ से बनहीं को चले जायँगे तो आपके पीछे पीछे हम भी चलेंगे ३२ यद्यपि अतिदीन हो चरणों पै शिरधर भरतजीने रामचन्द्रजी को बहुत मनाया समझाया परन्तु वे उसी अपने पिताकेही बचन पै टिकेरहे अयोध्या जानेपर न प्रसन्नहुये ३३ रामचन्द्रजीके इस धैर्य्यको देख सब अयोध्यावासियोंको हर्ष शोक समान हुआ हर्षतो इससे हुआ कि रामचन्द्रजी बड़े स्थिरप्रतिज्ञ हैं व दुःख इससे कि अयोध्या जीको नहीं जाते ३४ वेदवादी ब्राह्मण लोग व मूर्च्छित आँशु ढारतीहुई माता लोग ऐसा कहतेहुये भरतजी की

प्रशंसा करने लगीं व भरत के साथ मिलके रामजीसे अयोध्या चलने व राज्य करने को कहने लगीं ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेषडधिकशततमस्सर्ग्गः १०६ ॥

ऐसा कहतेहुये भरतजीसे जातिवालों के बीचमें सत्कार पायेहुये श्री राम फिर बोले १ हे भरत जो तुम कहतेहो सब सत्य व उचित हैं तुमभी राजसत्तम महाराजदशरथ जीसे कैकेयीमें उत्पन्नहुयेहौ २ व हमारेतुम्हारे पिताजी जब तुम्हारी माताको ब्याहने गयेथे तो तुम्हारे नानासे यह कौल कर आयेथे कि इस तुम्हारी कन्यामें जो पुत्रहोगा उसीको हमराज्य देंगे३ इसके सिवाय देवासुर संग्राममें प्रसन्न हो महाराज दशरथजीने तुम्हारी माता को दो बरदान देने को कहाथा ४ अब जब हमको राजतिलक मिलने लगा तो तुम्हारी माताने राजा से कहा जो बरदान हमको देनेको कहाथा दो राजाने कहा बहुत अच्छा जो माँगो देंगे तब अति सुन्दर बोलनेवाली तुम्हारी माताने दोनों बर माँगे ५ एकतो तुमको राज्य पाना दूसरा हमको बनमें बसना राजाने दोनों बर उनको दिये ६ तिसीसे पिता जीने हमको चौदहवर्षकेलिये बनबासदिया व कहा कि जाय बनमें बसो ७ इसीसे हम पिताके वचन सत्यकरने के लिये लक्ष्मण जानकी सहित इस निर्जन बनमें आयेहैं किसी अन्यको अपने निकट नहीं रहने देते ८ अब तुम भी राजाभिषेक कराय राजगद्दी पै बैठ पिताजीको सत्यवादी करो ९ जो ऐसा न करोगे तो जो बरदान तुम्हारी माताको राजाने दिया उसके ऋणी बनेरहेंगे इस ऋणसे उनको छोड़ावो पिताकी रक्षा करो व माताको भी प्रसन्न करो क्योंकि बिनाअपना बर पाये वे भी प्रसन्न न होंगी १० हेप्रिय भरत बुद्धिमान् यजमान राजागयने गयातीर्थ में जाय पितरों से एक यशस्विनी श्रुति कहीहै वह अबतक भी सुनीजातीहै ११ वह यहहै कि जिससे पुत् नाम नरकसे सुत पिताको त्रायते कहे पालन करता है इसीसे उसका पुत्रनामहै तिससे पुत्र सदा पिताकी रक्षा कियाकरता है १२ इसीसे लिखाहै कि बहुतसे पढ़ैया लिखैया सत्कर्म्म करैया पुत्र उत्पन्न करने चाहिये जिसमें उनमेंसे कोई तो गयामें जाय श्राद्ध करेगा १३ इस बातपर बिश्वास करके सबराजालोगोंने बहुत पुत्र उत्पन्न किये हैं तिससे

हमलोगभी तो चारभाई हैं तुम नरकसे पिताकी रक्षाकरो १४ अब शत्रुघ्न वा सब प्रजा नौकर चाकरोंके सङ्ग अयोध्याको जाव प्रजापालन करोजाय १५ हमभी लक्ष्मण जानकी सहित जल्दीही दण्डकारण्य को जायँगे १६ हेभरत तुमतो जाय मनुष्योंके राजा होवो व हम भी जाय बनमें मृगोंके राजराज होतेहैं आज आनन्दित हो तुम तो अयोध्या को जावो व हमभी अत्यानन्दित हो बनको जायँगे १७ हेभरत तुम्हारी शीतल छाया सूर्य्यकी प्रभा करेगी व हमभी इन बनके वृक्षोंकी सघन छायामें बैठेंगे १८ शत्रुघ्नजी तुम्हारी सहायता करते रहेंगे व हमारी सहायता लक्ष्मण करेंगे हम चारो भाई राजाको सत्यमार्ग्ग पर स्थापित करें तुम अब विषाद न करो १९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेसप्ताधिकशततमस्सर्गः१०७॥

भरतजीको इसतरह समझातेहुये श्रीरामचन्द्रजीसे ब्राह्मणोंमें उत्तम जाबालिजी वेदोक्त धर्म्मरहित बचन बोले १ हेराम श्रेष्ठ बुद्धिवाले वा तपस्वी आपकी बुद्धि प्राकृती मनुष्योंकी सी निरर्थक न हो २ देखिये प्राणी एकहीतो उत्पन्न होता फिर अकेलेही चलाभी जाता किसने किसकी कौन बस्तु पाई जब यही नहीं तो कौन किसका सम्बन्धी ठहरा सब यह ब्यवहार निरर्थकहै ३ हेराम जिससे कि किसी का कोई सम्बन्धी नहीं है इससे यह हमारी माताहै यह हमारा पिताहै ऐसा मान जो इसमें आसक्त होताहै उसको उन्मत्तके समान समझना चाहिये ४ जैसेकोई मनुष्य कहींको चलताहै तो बीचमें किसी स्थानपै टिकरहता प्रातःकाल उस स्थानको छोड़ आगेको चलाजाताहै ५ इसीतरह मनुष्यों के पिता माता घर धन पशुआदि एकसङ्ग रहनेके लिये स्थानमात्र हैं कुछ सत्य सत्य नहीं इससे सज्जन लोग इनमें नहीं आसक्तहोते ६ इससे हेनरोत्तम पिताका राज्य छोड़ बहुत काँटायुक्त दुःखदायी विषम बनमें बसनेकेयोग्य आपनहींहैं ७ सब धन धान्य युक्त अयोध्यापुरीमें जाय अपना अभिषेक कराइये क्योंकि सब अयोध्यवासी नरनारि पशु पक्षी जिस स्त्रीका पति बिदेशको चलाजाताहै उसीके समान आपकी राह देखरहेहैं ८ इससे बहुत बहुत मोलके राजभोगों को भोगतेहुये आप अयोध्याजी में बिहरें

जैसे इन्द्रस्वर्गमें बिहार करतेहैं ९ दशरथ तुम्हारे कोईनहींहैं व न तुम कोई दशरथके हो राजा तो कोई औरहैं व तुमऔर तिससे जो हम कहते हैं वही करो १० जन्तु के उत्पन्न होनेके बिषयमें पिताबीजमात्रहै क्योंकि ऋतुमती माताका रक्त व पुरुषका कन्दर्प दोनों के मिलजाने से प्राणी का जन्म होताहै ११ जहाँका जानाथा राजा वहाँ चले गये यह तो प्राणियोंकी प्रवृत्तिहीहै किजिसको जितने दिनके पीछे जानाहै चलाही जाताहै आपतो नाहक इसमें मरते पचतेहैं १२ जोलोग अर्थ व धर्म्म के बटोरने में श्रम कररहे हैं हमतो उन्हींको शोचते हैं औरों को नहीं क्योंकि वे लोग धर्म्म करनेमें व द्रव्य एकत्र करनेमें यहाँ नानाप्रकारके कष्ट उठाते हैं उसे भोग भी नहीं करने पाते कि मृतक होजाते केवल परिश्रमंही उनको लाभ होता १३ व जो कि लोग यह समझके कि अष्टकादि श्राद्धके पितर देवता हैं इसलिये श्राद्ध अवश्य करना चाहिये वह तो अन्न खराब करना है नहीं तो मरजाने पै कौन खायगा १४ यदि और किसी के भोजन करने से दूसरे की देह को पहुंचता तो जो लोग बिदेश को जातेहैं वे खाने के लिये सीधा बाँध लेजाते हैं उसका कौन प्रयोजनथा यहाँ उसके नाम ब्राह्मणहीको न खिलादे कि उसको बिदेश में भोजनादि नबनाना पड़ता न लादना यह तो नहीं होसक्ता कि औरका किया भोजन मार्ग्गमें और को मिले १५ व जो ऐसे बचन लिखेहैं कि यज्ञकरो दान दो घरमें अन्नादि भरके सङ्कल्प करो सो ऐसे वचन युक्त ग्रन्थ तो बुद्धिमान् लोगोंने धन मिलनेके लिये बनालिये हैं १६ हे श्रीराम इस राज्य सुखसे अन्य कुछ नहींहै इसलिये प्रत्यक्ष में सुखदायक राज्यको ग्रहण करो व परोक्ष की बात जो पितादि के वचन के पालन से धर्म्म मिलेगा उसको पीछे करो १७ पण्डित लोगोंकी बुद्धि को आगे करो यह सब लोकों को यहीं बैठे बैठे देखा देती है अब भरत प्रार्थना करते हैं इनके कहने से आप राज्य को ग्रहण कीजिये १८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेऽष्टाधिकशततमस्सर्गः १०८ ॥

जाबालि जीके ऐसे वेद विरुद्ध वचन सुन अपनी सुन्दर अचल बुद्धिसे विचार वेद सम्मत वचन बोले १ कि हमारा प्यार करने के लिये जो

वचन आपने कहे वे सब करने के योग्य नहीं पर ऐसे बनाचुनाके कहे हैं
मानों करनेके योग्यहीहैं व हैं तो अहित पर अनारियों को सुनने में हितही
जान पड़तेहैं २ व जो पुरुष वेद मर्य्यादा रहित हैं वे पापाचारयुक्त होते
इसीसे वेदसे बाहर चलने के कारण सज्जनों की समाज में उनका मान
नहीं होता फिर आपके भी वचन वेद विरुद्धही ठहरे इससे सज्जन लोग
निरादर करते हैं ३ कुलीन अकुलीन बीर वा डरपोक पवित्र वा अपवित्र
पुरुष अपने आचरणही से जानपड़ता है जो वेदके अनुसार काम करता
वह कुलीन जानाजाता जो वेदविरुद्ध आपके वचनके अनुसार चालचलन
रखता वह अकुलीन इसीतरह बीर डरपोक पवित्र अपवित्रमेंभी जानों ४
जब वेदके अनुसार चलनेका ठीक न रहेगा तो अनारी मनुष्य अच्छे मनुष्य
बाजने लगेंगे जो शौच नहीं करते वही पवित्र कहावेंगे जो लक्षणहीन हैं
वे लक्षणवाले कहानेलगेंगे व दुश्शील शीलवान् कहावेंगे ५ यदि शुभ
क्रियाको छोड़ वेदवर्जित क्रिया हम करें तो धर्म्मके वेषसे लोकसङ्करकारक
अधर्म्म करें ६ फिर जब हम लोक में दूषित दुराचार करेंगे तो कार्य्य
अकार्य्य जानने में चतुर कौन पुरुष हमको बहुत मानेगा ७ यदि हम
इस प्रतिज्ञाहीन वृत्तिमें बर्त्तमान हुये तो किससे अपना समाचार कहेंगे
व स्वर्ग्गको कैसेजायँगे ८ जो हमीं वेदविरुद्ध अपने मनमाना काम करें तो
हमारी देखीदेखा यहलोक भर अपने मनमाना करने लगै क्योंकि
जैसा आचरण राजा का होता है उसी तरह का उसकी प्रजाका भी
होजाता है ९ सत्यही क्रूरनहीं कहाता व सत्यही सनातन राज्यहै व
सत्यही परलोक टिकाहै १० ऋषिलोग व देवता लोग भी सत्यही को
मानते चले आयेहैं व सत्यवादीही पुरुष अक्षय स्वर्ग्ग लोकको जाताहै
११व झुट्ठे मनुष्य से लोग सर्प्प के समान डरते हैं जो सब संसार का
मूल धर्म्महै वह सत्य परहीहै १२ लोकमें सत्यही ईश्वरहै व सत्यही में
सदा धर्म्म रहताहै सत्यही सबकी जड़है सत्यसे पर और कुछ नहीं
है १३ दान इष्ट होम तपस्या व वेद सब सत्यही में टिकतेहैं इससे जो
अपना कल्याण चाहता हो तो सत्यही कहै करै १४ कोई लोग तो
ऐसेहैं कि लोकभरकी पालना करते कोई अपने कुलकी कोई कोई नरकमें
बूड़ते उतराते हैं कोई स्वर्ग्गमें पूजित होते १५ फिर हम पिताकी आज्ञाको

कैसे न पालनकरें क्योंकि राजा सत्यप्रतिज्ञथे अपना सत्यही पालन करने केलिये उन्होंने हमको बनकोपठाया अन्य कुछ प्रयोजन न था १६ हम न लोभसे न मोहसे न अज्ञानसे व क्रोधसे सत्यकासेतुतोड़ेंगे क्योंकि हमभी सत्यप्रतिज्ञ हैं जिसबात की प्रतिज्ञा की उसकी की १७ फिर हम लोगों ने सुनरक्खा है कि जो असत्य बोलता चलायमान स्थिरचित्त जिसका है उसका दिया अन्नपानी रुपया पैसा देवता व पितर नहीं ग्रहण करते १८ सत्य रूप इस धर्म्म को हम सब प्रकार से निश्चित जानते हैं व जो जटा का भार अपने ऊपर लादे हैं इसको भी पुराना ब्रत समझते व इससे आनन्दित होते हैं १९ हम अधर्म्मरूप देखने सुनने में मानों धर्म्महो है क्षत्रियों के ऐसे धर्म्म को त्यागते हैं क्योंकि ऐसे धर्म्मकी सेवा नीच निर्ल्लज्ज लोभी व पापी लोग करते हैं २० तीन तरहका पाप होता है कर चरण लिङ्गादि अङ्गोंसेजो किया जाता वह कायिक कहाता मनमें पहिले धारण किया जाता कि हम यह काम करेंगे वह मानस कहाता व जीभसे झूठ कहने से जो पाप होता वह बाचिक है २१ जो लोग सत्य बोलते हैं उनकी प्रार्त्थना भूमि कीर्त्ति यश लक्ष्मी आदि उत्तम उत्तम पदार्त्थ करते हैं इसीसे अगिले लोग सत्यही बोलते थे अब भी जो भूम्यादि की इच्छा करै वह सत्यही बोलै २२ जो अपने सयुक्तिक बातें बनाय बनाय हमसे कहीं कि कल्याण दायक यह राज्य करो इसका करनाही श्रेष्ठ है वह महा अनारियों कासा वचन है श्रेष्ठ तो नहींहै २३ क्योंकि पिता जीके आगे हम प्रतिज्ञा करचुके कि तुम्हारी आज्ञा से बनको जायँगे फिर पिताके वचनों को छोड़ भरत का वचन कैसे करें २४ जब हमने पिता जीके आगे स्थिरप्रतिज्ञा की थी तब कैकेयी जीभी बहुत हर्षित हुईथीं २५ इससे बनमें बस पवित्रचित्त रह नियत समय पर मूल पुष्प फलादि भोजन करते देवता व पितरों का तर्प्पण करते २६ पाँचों इन्द्रियों को सन्तुष्ट रख कपटता रहित गुरु वचन में श्रद्धा करते कार्य्य अकार्य्य में चतुरहो स्वजनों की मर्य्यादा का पालन करेंगे २७ क्योंकि यह भरतखण्ड कर्म्म भूमि है इसे पाय शुभही कर्म्म करना चाहिये क्योंकि कर्म्मों के फलके भागी अग्नि वायु चन्द्रमा हैं २८ देखो १०० अश्वमेध यज्ञ करने से इन्द्र स्वर्ग के राजा

हुये व अति कठोर तपस्या करके ऋषिलोग स्वर्ग को गये २९ इतना कह नास्तिक वचन कहनेवाले जावालिजी की बातोंकी निन्दा करतेहुये महातेजस्वी राजकुमार श्रीरामचन्द्र मुनिके धर्म्म विरुद्धवचन न सहके फिर बोले ३० कि सत्य धर्म्म पराक्रम प्राणियों के ऊपर दया प्रिय वचन बोलना व ब्राह्मण देवता अतिथिकी पूजा करना पण्डितलोग इन्हीं पदार्त्थों को स्वर्ग का मार्ग कहते हैं ३१ इसीसे ब्राह्मण लोग यथावत् अर्त्थ को जान धर्म्महीको कर नानाप्रकार के लोकों की कांक्षा करतेहैं व चले भी जाते हैं ३२ हम अपने पिता दशरथजीके ऐसेकर्म्म की निन्दा करतेहैं जिन्होंने वेद बिरुद्ध बुद्धिवाले इसकर्म्म निवारण करने वाली बुद्धिको धारणकर कुमार्ग्ग में चलने वाले महानास्तिक धर्म्म-मार्ग्गसे रहित तुमको अपने यज्ञमें बुलाया ऐसे नास्तिक का मुखदेखना भी उचित नहींथा ३३ क्योंकि जैसे चोरको दण्डदिया जाता वैसेही बुद्धि को दण्ड देनाचाहिये तथा गतलोकको बहँकानेवाले चार्ब्वाकों को भी चोरके समानही दण्डदेना चाहिये जो प्रजाओं के मध्यमें दण्ड दान देनेमें अति समर्त्थहो वही नास्तिक बुद्धहै वह नास्तिकही मार्ग्ग में चलता है यही कहा करता कि देवता पितर कहीं नहींहैं इससे जो इन दुष्टनास्तिकों को दण्ड न देसके वह इन दुष्टोंसे दूरही रहे तभी भलाहै ३४ जावालिजी तुमसे प्रथम जितने ब्राह्मण हुये सबोंने वेद के अनुसार बहुत शुभ कर्म्म किये इसीसे तुम को छोड़ अबभी जो ब्राह्मण विद्यमानहैं यह लोकपरलोकसब छोड़कल्याण कारक यज्ञकरते व सत्य बोलतेहैं तुम्हारी तरह झुंठाई नहींकरते ३५ व धर्म्ममें रत सज्जनों केसाथ तेजस्वीदानदेने व सब शुभगुणोंमें प्रधान जीवहिंसारहित निर्म्मलचित्त ऐसे वसिष्ठादि मुनिलोकमें पूज्यहैं ३६ जब महात्मा दीनता रहित श्री-रामचन्द्रजी ने कोपकर ऐसे दोष सहित वचन जावालिजी को कहे तो हित आस्तिक सत्य नम्रता सहित वचन ब्राह्मण देव बोले ३७ हे राम न तो हम नास्तिकों के वचन कभीकहें व न हम नास्तिकहैं व न यहीहै कि कुछ परलोकादि नहींहै हम समय देखके आस्तिक होजातेहैं व कोई समय देखके नास्तिक होतेहैं ३८ इस समय उसी तरहका समय आय गयाथा कि हमको नास्तिकों केही वचन कहने पड़े धर्म्मकी निन्दा

पिता माता आदिको न मानना इत्यादि नास्तिकों के वचन जो हमने कहेथे वे आपके लौट जानेके लिये व प्रसन्न होनेके लिये कहेथे ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेनवाधिकशततमस्सर्गः १०६ ॥

नास्तिक वचन सुनने से रामचन्द्रजीको क्रोधितजान वसिष्ठजी बोले हेराम जावालिभी लोककी गति जानते हैं नास्तिक नहींहैं १ आपको लौटाने की इच्छासे ऐसे वचन इन्होंने कहेहैं अब लोककी उत्पत्ति जैसी है हमसे सुनिये २ प्रथम सबसे जल बनायागया तिसपै पृथिवी बनाई गई तब देवताओं के संग ब्रह्माजी हुये ३ ब्रह्माजीकी नासिका से बराह जीका अवतारहोके भगवान्‌विष्णु जलके बीचसे पृथ्वीलाये फिर ब्रह्मा जीने अपने पुत्रोंकेसंग सब संसार बनाया ४ ब्रह्मा निरन्तर रहते इनकी उत्पत्ति आकाशसेहै ब्रह्माजीके पुत्र मरीचिहुये मरीचिके कश्यप ५ कश्यप के विवस्वान् विवस्वान अर्थात् सूर्यसे वैवस्वतमनु उनके सबसे ज्येष्ठपुत्र इक्ष्वाकुनाम हुये ६ इन इक्ष्वाकुजीको राजामनुने सब पृथ्वीदेदी इसीसे ये इक्ष्वाकु अयोध्यापुरीके पहिले राजाहुये ७ इक्ष्वाकुके कुक्षिनाम महा-तेजस्वी पुत्रहुये तिनके विकुक्षि ८ तिनके महाप्रतापी बाणनाम हुये बाणके अनरण्य ६ इनकी राज्यमें बड़ी वृष्टि होतीरही इससे अकाल कभी नहीं पड़ा व इन महाराज के राज्यमें चोरका कहीं नामही नहीं सुनाई देताथा १० अनरण्यके पृथुराजाहुये तिनके त्रिशंकु ११ येराजा अपने वचन के पालन करने के लिये सहित शरीर स्वर्गको चले इनके धुन्धुमारनाम राजाहुये १२ तिनके महातेजस्वी युवनाश्व हुये तिनके मान्धाताहुये १३ मान्धाताके महातेजस्वी सुसंधिहुये सुसंधिके ध्रुवसंधि व प्रसेनजित् दोपुत्रहुये १४ ध्रुवसंधि के भरतहुये भरतके असित १५ जिनके हैहय तालजंघ भूर व शशविन्दु ये चार जातोंके राजाबैरी हुये १६ तिन सब राजाओं को युद्धमें राजाने घेराभी पर वे बहुत थे इससे इनके पिताने कहा तुम बनको भागजाव तब ये बनमेंजाय भगवान्‌का मनन करने लगे १७ इनके दोस्त्रियाँथीं दोनों गर्भिणीहुईं एकने च्यवनमुनि के प्रणामकर १८ उनसे अपने गर्भस्थ पुत्रकी रक्षाचाही दूसरीसौतने उसके पुत्रके मरने के लिये उसको गर कहे बिप पिलादिया १६ एक

दिन च्यवनमुनि फिरवहां आये जहाँ राजारानी तपस्या करते थे तिस मुनिके प्रणामकर कालिन्दी बोली २० मुनिने जाना कि इसके उत्तम पुत्रकी इच्छाहै इसलिये कहा कि हेदेवि तेरे बड़ा महात्मा लोकभरमें विख्यात पुत्रहोगा २१ धार्मिक भयानक व वंशकर्त्ता भी होगा यहसुन मुनिके प्रदक्षिणाकर रानीने बड़ा मानकिया २२ फिर उस रानीने गृह में कमलदल समाननेत्र व ब्रह्माजीके समान पुत्र उत्पन्नकिया २३ उस केगर्भके मारने के लिये सौतने जो गर कहे विषदिया था वह बालक सहित गर उत्पन्नहुआ इससे उसका सगरनाम हुआ २४ इन राजा सगरजीने अपने यज्ञका घोड़ा ढूंढ़ने के लिये समुद्र खोदवाया २५ इन सगरजीके असमंजसनाम पुत्रहुये ये परम भागवतथे चाहतेथे कि यदि हम घरसे निकालदिये जाते तो अच्छा था इसलिये अयोध्यावासियों के लड़के सरयू में बोर डालते इससे पिता ने घरसे निकाल दिया २६ इन असमंजस के अंशुमान् हुये तिनके दिलीप दिलीप के भगीरथ २७ भगीरथ के ककुत्स्थ हुये इन्हींके नामसे सूर्य्यवंशी राजा काकुत्स्थ कहाने लगे काकुत्स्थ के रघुहुये जिनके नामके सम्बन्ध से इस वंशवाले राघव कहाने लगे २८ रघुके पुत्र प्रवृद्ध पुरुषादन कल्माषपाद सौदास ये चार नाम हुये २९ कल्माषपाद के शङ्खण हुये ये शङ्खण गुरू वसिष्ठजीके शापसे सहित सैन्य नाश होगये ३० शङ्खणके महा शूरवीर सुदर्शन हुये सुदर्शनके अग्निवर्ण तिनके शीघ्रग ३१ तिनके मरु मरुके प्रशुश्रव तिनके महाबुद्धिमत्तर अम्बरीषजी हुये ३२ तिनके नहुष तिनके नाभाग ३३ तिनके अज व सुव्रत दो पुत्र हुये अज के महाराज दशरथजी हुये ३४ हे राम तिनके ज्येष्ठपुत्र आपहैं इससे अपना अभिषेक कराय राज्य ग्रहण कीजिये ३५ क्यों कि इक्ष्वाकुवंशियों में ज्येष्ठही पुत्र राजा होता चला आया है फिर ज्येष्ठ आप विद्यमानही हैं तो कैसे छोटा पुत्र राजसिंहासनपै बैठे ३६ इससे आप रघुवंशियों के सनातन धर्म्मके नाश करनेके योग्य नहीं रत्नादि संयुक्त इस पृथिवी को भोगिये हमारा कहा मान लीजिये ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेदशाधिकशततमस्सर्गः ११० ॥

राजाके पुरोहित वसिष्ठजी रामचन्द्रजी से ऐसाकह फिर और वचन

बोले १ हे राम पुरुष का जब जन्म हुआ तो उसके माता पिता व आचार्य्य ये तीन गुरू होतेहैं २ उनमें माता पिता तो उसे उत्पन्न करते हैं व आचार्य्य आज्ञा देता है इसीसे ये गुरू कहातेहैं ३ हम तुम्हारे पिताके आचार्य्य हैं इससे तुम्हारे भीहैं हमारे वचन करनेसे तुम सज्जनोंके मार्ग्गका उल्लङ्घन न करोगे ४ देखिये ये तुम्हारी प्रजाहैं ये भाई बंधु ये सब छोटे२ राजा इनका पालनकरो इसका भी उल्लङ्घन न करो ५ व इन अपनी वृद्ध माताका अनादर न करो इनके वचन तुमको उल्लङ्घन करना न चाहिये ६ हे सत्यधर्म्म पराक्रम श्रीराम ये भरत प्रार्त्थना कररहेहैं इनकी बात भी माननी चाहिये ७ जब गुरूजीने ऐसे मधुर वचन कहे तो उनसे श्रीरामचन्द्रजी बोले ८ कि माता पिता पुत्र जो सेवा करते हैं उसके बदले में जो पुत्र कुछ किया चाहेतो नहीं करसक्ता ९ क्योंकि वे अपनी शक्तिसे अधिक जिस किसी रीतिसे पाते हैं पुत्रको उत्तम उत्तम भोजन वस्त्रादि देते प्रथम बहुत छोटे पर सोवाते करवट लेवाते तेल उबटन आदि लगाते सदा प्यारे वचन कह कह दुलराते उसके बढ़ने व जीनेकी अनेक तरह की उपाय करते १० फिर वही राजा दशरथ जी हमारे पिता हैं जो कुछ हमें आज्ञा देगये हैं वह किसी तरह मिथ्या नहीं हो सक्ती ११ जब रामचन्द्रजीने ऐसा कहा तो बहुत उदास हो भरतजी सुमन्त्रजीसे बोले १२ हे सारथे इस स्थानपै भूमिमें कुश बिछाओ जब तक बड़े भाई प्रसन्न न होंगे तबतक इनके ऊपर धन्न करके १३ निराहार बिनादिया आदिसे उजाला किये अँधेरे में बैठ धनहीन ब्राह्मण के समान जब तक ये अयोध्या को न जायँगे तबतक इसी शालाके पास पड़े रहेंगे १४ भरत जीने देखा कि कुश बिछाने के लिये सुमन्त्रजी रामचन्द्रजी की आज्ञा चाहतेहैं बिना उसके पाये न बिछावेंगे इसलिये उदासहो अपने आप भूमिमें कुशबिछाय बैठे १५ तब राजर्षियों में श्रेष्ठ श्रीराम भरत जीसे बोले हेतात हमने तुम्हारा कौन अपकार किया जो हमारे ऊपर धन्ना देतेहो १६ इस धन्ना देनेका अधिकार ब्राह्मणही को है कि वह एक करवट निराहार होकर परारह अपने अपकारी को रोंकसके जिसमें वह अपकार न करसके क्षत्रियों को अधिकार नहीं कि किसीके ऊपर उपास करके धन्नादें ऐसा अनुचितकर्म्म करने से तुमको पापहोगा १७

हेभरत इसदारुण ब्रतको छोड़ उठो सब पुरियोंमें श्रेष्ठअयोध्याको जावो १८ यहसुन भरतजी पुरवासी व देशवासी लोगोंकी ओरदेख वहीं बैठेही बैठेबोले कि आपलोग भाईको क्योंनहीं समझाते १६ यहसुन सब पुरवासी व देशवासी लोग भरतसे बोले कि हमलोग जानते हैं कि आप अच्छा कहते हो २० तथापि जो हम रामचन्द्रजी को लौटा नहीं सक्ते उसका यह कारण है कि ये भी तो अपने पिताजी के वचनों पर टिकेहैं इसीसे नहीं लौटासक्ते २१ तिनलोगोंके ऐसे वचनसुन श्रीरामजी भरत जीसे बोले कि भाई इन इष्टमित्रों के बचन सुनो कैसे विचार के साथ कहतेहैं २२ इन लोगोंका कहा व हमाराकहा दोनोंसुनके विचार पूर्ब्बक देखो व उठो यहजो अनुचित धन्ना तुमने दिया उसका प्रायश्चित्तकरने के लिये हमको छुवो क्योंकि तुम्हारे बड़ेहैं व जल छुवो २३ यह सुन उठके जल छूकर भरतजी बोले कि प्रजा मन्त्री व अन्य नौकर चाकर सबलोग सुनो २४ नतो हम पिताका राज्य मांगते हैं न माताको जाय कुछ सिखावेंगे न धर्म्मज्ञ श्रीरामको बनसे लौटारते हैं २५ पर हां जो इनको पिताका वचन अवश्यही करनाहै कि जिससे बनही में बसेंगे तो चौदह वर्ष तक हमभी बनमें बसेंगे २६ धर्म्मात्मा श्रीराम भाई के ऐसे सत्य वचन सुन विस्मित हुये व सब पुरबासी देश बासियों की ओर देख बोले २७ कि अपने जीते जी पिता जीने जो वस्तु बेंचडाली वा किसी के यहाँ धरोहर धरी व अपने यहां किसी की धरोहर रक्खी वा कुछ वस्तु मोलली है तो हम व भरत दोनों को चाहिये कि उसके बिपरीतन करें इसी तरह उन्होंने जिसको जो आज्ञादीहै वही करें २८ कैकेयीने हमको बनके योग्यही समझ के बनवास दिलाया व पिताजीने भी इसीसे अङ्गीकार करलिया कि ये बनमें अच्छा काम करेंगे इसलिये हम बनको आप जायँगे अपनी बदली पर भरतको न भेजेंगे २६ हां राज्य करने केलिये तो भरतको भेजते हैं क्योंकि हम इनको जानते हैं कि ये बड़े क्षमाशील व बड़े सत्कार करनेवाले हैं इन सत्यसन्ध में सब कल्याणही की बातें हैं इससे ये राज्यही के योग्यहैं न कि बनके ३० क्या कहीं ब्रह्मा के दिन हैं चौदह वर्ष के पीछे बनसे लौट इन्हीं अपने भाई के साथ पृथिवी के उत्तम पति होंगे ३१ भाई कैकेयी ने राजा से

माँगा कि रामचन्द्रको चौदह वर्षके लिये बनहो व भरत को राज्य इस-लिये हमने तो राजाको झुंठाईसे छुड़ाया बनको आये अब भरतसे राज्य कराय पिताको झुंठाईसे छुड़ावो नहीं तो अधछुटे रह जायँगे ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेएकादशाधिकश-ततमस्सर्ग्गः १११ ॥

महातेजस्वी दोनों भाइयों का रोमहर्षण संगम देख बड़े बड़े ऋषि लोग आय विस्मित हुये १ उनमें मुनिगण तो छिपके व महर्षि लोग प्रत्यक्ष में बड़े भाग्यवाले तिन दोनों भाइयों की प्रशंसा करने लगे २ कि भाई ये दोनों राज्यपुत्र अति श्रेष्ठ धर्म्मज्ञ व धर्म्म बिक्रम हैं इनकी बतकही सुन हम लोग ललचाते हैं ३ इसके पीछे रावण के मारजाने की इच्छा किये हुये मुनिलोग राजशार्दूल भरतजीसे बोले ४ हे महा कुलीन महाप्राज्ञ महा वृत्तान्त युक्त व महायशस्वी भरतजी जो पिता का सुख चाहतेहो तो रामचन्द्र जीके वचन ग्रहण करो ५ कि इनरामचन्द्रजी को हमलोग पितासे सदा उऋण समझतेहैं क्योंकि कैकेयी से उऋणही होनेके कारण दशरथजी स्वर्ग्ग को गये ६ ऐसे व-चन कह गन्धर्व्व व महर्षि लोग तथा राजर्षिलोग सबअपनी२ राह चल दिये ७ सुन्दररूप श्रीराम भूप ऐसे वचन सुन अत्यानन्दित हो तिन ऋषियोंकी प्रशंसा करनेलगे ८ व भरतजी सुनके थरथराय उठे अति गद्गद वाणीसे हाथ जोड़ श्रीरामचन्द्रजी से बोले ९ हेराम कुल धर्म्म के अनुसार इस राज्य पालन रूप धर्म्मका बिचार कर आपराज्य करने के योग्य हैं व कौशल्यादि हमारी माताओं की प्रार्थना भी अङ्गीकार करके राज कीजिये १० जो कहियेकि राजकरने केलिये तो तुम नियुक्त हो हम काहेको करेंतोहम अकेले इतने बड़े भारी राज्य की रक्षा नहीं कर सक्ते व न इन पुरवासी देशवासियों का पालन नही अनुराग सहित करसक्तेहैं ११ ये सब जाति बिरादरीके लोग योधा व मित्र सुहृद सब आ-पकी राह देखतेहैं जैसे किसान लोग बादरकीराह देखाकरते हैं १२ हे राम चलके इसराज्यमें हमको स्थापित करके पालन कराइये क्योंकि आप सब लोकोंकी राज्य कर करासक्तेहैं वहाँ तक चलिये फिरचाहे बनहीको

चले आइयेगा १३ ऐसाकह भरतजी अपने भाई के चरणों पै गिरपड़े व राघव रामादि प्रिय वचनकह कह प्रार्थना करने लगे १४ तबश्याम कमलदलनयन भरतजी को उठाय कोरामें बैठाय मतवाले हँसके शब्द के समान वचन श्रीरामजी बोले १५ हेतात तुमको यह विनय करनेवाली बुद्धि अपनेही से आयगईहै तुमतो पृथिवी की रक्षा अपनी इस बुद्धि से करसक्तेहो १५ कुछबातनहींहै नौकर चाकर सुहृदलोग व औरबुद्धिमान् लोग व मन्त्री लोगोंसे सम्मतिले बड़ेबड़े भी सबकाज करायलेना १७॥

दो० राकाशशि शोभा रहित हिमगिरि वरु हिमहीन ।
मर्य्यादा अल निधि तजैहम पितु वचन तजीन १ । १८
कामहिसों वा लोभ सों तव हित माता कीन ।
तात न मनमहं धरेहु सो जननिहि भज्यहु प्रवीन २ । १९

जब श्रीरामजी ने ऐसा कहा तो तेज से सूर्य समान व द्वितीया के चन्द्रमा के समान दर्शनीय कौशल्यानन्दनसे भरतजी बोले २० हे आर्य्य आप इन खराउओं पै दोनों चरण धरिये इससे इनके इतनी शक्ति होजायगी कि सब लोक का योग क्षेम करसकेंगे २१ यह सुन श्रीरामचन्द्र जीने खराउओं पै चरण कमलधरे व फिर टार लिये फिर उठाय महात्मा भरतजीका देदिये २२ उन खराउओंके प्रणामकर भरतजी श्रीरामचन्द्र जीसे बोले कि चौदहवर्ष तक जटा चीर धारणकिये २३ फलमूल खाते तुम्हारे आगमन की राह देखते नगरके बाहर कहीं बैठ २४ तुम्हारी पादुकाओं पैराज्य भार धरजिसदिन चौदहवाँ वर्षपूर्णहोगा २५ उस दिन आपको न देखेंग तो अग्निबार उसमें पैठ जर मरेंगे रामचन्द्रजी ने कहा बहुत अच्छा हम उसदिन आजायँगे फिर भरतको भेंट २६ फिर शत्रुघ्न जीको छाती में लगाय श्रीरामजी बोले हे शत्रुघ्न कैकेयीकी रक्षा किये रहना उनसे कभी रिसाना नहीं २७ हम अपनी व सीताकी तुमको सौगन्द धराये देतेहैं ऐसाकह आँशु भर भाइयोंको बिदाकिया २८ धर्म्म धारी भरतजीने भाईके खराऊँ ग्रहण कर श्रीरामजी के प्रणाम किया व उन खराउओंको बड़े सजेसजाये हाथीकेऊपर धर दिया २९ तबहिम पहाड़ के समान अचल श्रीरामजी क्रमसे गुरू मन्त्री व प्रजाओं को बिदा

किया३०उस समय मारे दुःख के सब माताओंको रामचन्द्रजी गरे लगाय सबको बिदाकर अपने कुटीमें बैठगये ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीयेऽयोध्याकाण्डेद्वादशाधिकशततमस्सर्गः ११२॥

तिसके पीछे भरतजी शत्रुंजय नाम हाथी केऊपर से श्रीरामचन्द्रजीके खराऊँ उतार अपने शिरपै धर शत्रुघ्नजीके साथ रथपै चढ़े१बसिष्ठ बामदेव जाबालि आदि दृढ़व्रतधारी मुनिलोग व मन्त्री लोग मन्त्रोंसे पूजितहो आगे आगे चले२ वे सब भरतादिक लोग मन्दाकिनी नदी व महा पर्ब्बत चित्रकूटकी प्रदक्षिणा करतेहुये चले ३ उसी चित्रकूटही के किनारे किनारे अनेकप्रकार के धातु देखतेहुये सहित सैन्य भरतचले ४ भरतजी का रथ ऐसा ऊंचाथा कि चित्रकूटहीके लगसे महामुनि भरद्वाजजीका आश्रमदेख लिया ५ आते आते जैसेही मुनिके आश्रमपै पहुँचे हैं कि रथसे उतर भरद्वाजजीके चरणारविन्दों की बन्दनाकी ६ तब हर्षितहो भरद्वाजजी भरतजीसे बोले हेतात जिसके लिये रामचन्द्रजी के निकट गयेथे वह काम हुआ रामचन्द्रजी आये ७ जब बुद्धिमान् भरद्वाजजीने ऐसा पूछा तो धर्म्मवत्सल भरतजी उनसे बोले ८ कि हमने गुरू व वसिष्ठजीने बहुत तरह से कहा सुना तो अति प्रसन्नहो श्रीरामचन्द्र गुरू वसिष्ठजीसे बोले९ कि जो प्रतिज्ञा हमारे चौदहबर्ष बनमें रहने के लिये पिताजीनेकीहै हम उसीका प्रतिपालन करेंगे चौदहबर्ष तक बनही में बसेंगे १० इस बातको सुन महाकुशल सब तरहकी बातें जाननेवाले वसिष्ठजी फिर रामचन्द्रजीसे बोले ११ कि अच्छा जो नहीं चलते तो सुवर्ण लगेहुये ये अपने खराऊंही दीजिये व अयोध्या भरका योग क्षेम कीजिये १२ जब वसिष्ठजीने ऐसाकहा तो श्रीरामचन्द्रजी ने पूर्ब्बदिशा की ओर मुखकर राज्य करने के लिये हमको अपनी पादुकादीं १३ तब हम महात्मा रामचन्द्रजीकी आज्ञासे लौट आये अब पादुकालिये अयोध्याजीको जाते हैं १४ भरतजीके ऐसे वचनसुन भरद्वाज मुनिराज बोले १५ शीलवृत्त जाननेवालोंमें श्रेष्ठ पुरुषसिंह तुममें यह आश्चर्य की बातनहीं जो ऐसी श्रेष्ठता तुममें टिकी क्योंकि जहाँ खाली स्थान होता वहाँ जलतो टिक-ताहीहै १६ जिस महाबाहु दशरथजीके धर्म्मात्मा धर्म्मवत्सल तुम्हारे

समान पुत्रहैं भाई वे देवता पितृ ऋषि सबके ऋणसे उऋण होगये १७ जब महापंडित भरद्वाज ऋषिने ऐसाकहा तो भरतजी विदामाँगने के लिये हाथजोड़ चरणारविन्द ग्रहणकर बोले १८ व भरद्वाजजीके बार बार प्रदक्षिणा व प्रणामकर भरतजी अपने मंत्रियों के साथ अयोध्या जीको चले १९ तिसके पीछे पीछे हाथी घोड़े रथ आदि बाहन सहित भरतजीकी सेनाभी चली २० प्रथम परम दिव्य व बड़ी बड़ी लहरीयुक्त यमुनानदी को सेना उतरी फिर अति निर्म्मल व कल्याणरूप जलयुक्त गङ्गानदी को उतरी २१ सेना सहित भरतजी गङ्गाजीको उतर अति रमणीय शृङ्गबेर पुरमें आन पहुँचे २२ शृंगबेरपुरसे फिरआय अयोध्या पुरीको देखा तो वह पुरी भाई व पितासे हीनथी २३ ऐसी पुरीको देख भरतजी अति दुःखितहो सुमंत्रजी से बोले सुमन्त्र देखिये यह सूनी अयोध्या नहीं अच्छी लगती २४ क्योंकि इसका आकारही बदल गयाहै सब आनन्द की बातही जातीरही इसीसे बहुत दुःखित जान पड़ती है सुनों तो किसीका बोलभी नहीं सुनाईदेता जानोंकोई बसाही नहींहै २५॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डेत्रयो
दशाधिकशततमस्सर्ग्गः ॥ ११३ ॥

स्नेहकारी व गम्भीर शब्द युक्त रथपै चढ़े महायशस्वी भरतजी अयोध्या पुरी में पैठे १ उससमय वह पुरी बिलार खूसट आदिजीवोंसे पूर्ण व द्वारपालादि रहितथी जैसे कि अँधियारी रात्रि तिमिर से युक्त होने के कारण काली होतीहै इसी तरह उसमें भी कहीं प्रकाशादि नहीं था २ व जैसे चन्द्रमाकी स्त्री रोहिणी ग्रहणकी रात्रिमें राहुसे ग्रस्तपति के पीड़ित होने से शोभाहीन होजाती है वैसीही पुरीथी ३ व जैसेमारे घाम के जल गरम होजाने से सन्तप्त मछली आदि जन्तु युक्त पहाड़ी नदी ब्याकुल होजाती वही दशापुरीकी थी ४ व जैसे पहिले बिनाधुआँ का अग्नि सोनेके समान देदीप्यमान हो पीछेसे देवताओंके लिये पाय-सादिकी आहुति देनेसे उसकी ज्वाला मूंदजाने से न अच्छी लगे यही दशा पुरीकी थी ५ व जैसे बड़ेभारी संग्राम में वीरोंके कवच बखतर आदि टूटने व हाथी घोड़े रथादिकों के अङ्ग भङ्ग होजाने व वीरोंके मार

जामेंसे सेना उदासीन होजाती है वैसीही अयोध्या थी ५ व जैसे पहिले सहित फेना व सहितशब्द समुद्रकी लहरी हो पीछेसे धीर पवन चलने के कारण शब्द रहित होजाय यहीदशापुरीकीथी ७ व जैसे यज्ञहोजाने के पीछे यज्ञ कराने करनेवाले लोगों के चले जानेपै व यज्ञके श्रुवादि आयुधों के न रहने से शब्द रहित यज्ञवेदी नहीं शोभित होती उसी तरह पुरीथी ८ व जैसे चरवाहकी खेदी गाय कहीं गोंठमें बन्दकी गईहो इससे न कुछ खाती पीतीहो केवल बाहर जानेही को मन करतीहो जो दशा उसकी उस समय होती वही पुरीकी थी ९ व जैसे अति देदीप्यमान पद्मरागादि उत्तम मणियोंसे हीन अकेली गजमुक्ता नहीं शोभित होती ऐसी दशापुरीकी थी १० व जैसे पुण्यक्षीण होजाने पै अपने स्थान से एकाएकी चलायमान हो आकाशसे पृथिवी में गिरने से तारा की दीप्ति जातीरहती वैसीही दशा पुरीकीभी थी ११ व जैसे बसन्त ऋतुके पीछे नानाप्रकार के पुष्पों से शोभित कि जिसपै मतवाले भ्रमर रस पीरहेहों उसी समय दावानल के लगने से जलजाय ऐसी लताके समान पुरीथी १२ व जिस पुरीमें बनियाँलोग उदासीन जहाँ के तहाँ बैठेथे बाज़ार में बिकनेवाली चीजें जहाँकी तहाँ परीथीं जैसे बादर से घिरीहुई नक्षत्र चन्द्ररहित रात्रि शोभित नहीं होती वैसेही पुरीथी १३ मदिरा पीनेवाले पात्र ठौरठौर टूटफूटे पड़ेथे मानों मदिरा पीनेवालेलोग कोई रहे नहीं गयेथे उसकी दूकानें भी उजर गईथी १४ पुरीकी भूमि खाली ऊंची होगईथी पात्र सब कहीं टूटे फूटे पड़े थे ऐसी देख पड़ती थी मानों मारे पिआस के व्याकुल जनों समेत पौशाला है १५ फिर ऐसी बिदित होतीथी मानों बीरलोगों के बाणोंसे कटीहुई धनुष से अलग परी प्रत्यञ्चा है १६ व मानों परमयुद्ध विशारद सवार की घोड़ीहै कि जिसको बैरीकी सेनाने मारडाला है १७ ऐसी पुरीमें भरतजी पैठे व रथपै चढ़ेही चढ़े रथके घोड़े हाँकतेहुये मन्त्री सुमन्त्रजी से बोले १८ कि आज जैसे आगे अयोध्या में गाने बजाने का शब्द सुनाई देताथा वह नहीं सुनाई देता १९ व मदिरा फूल चन्दन अगरआदि सुगन्धित बस्तुओं की महकभी नहीं आती २० रथआदि सवारियों का शब्द व घोड़ों का हिनहिनाना मदान्ध हाथियों का चिघड़नाभी नहीं सुनाई देता २१

हाय रामचन्द्रजी के बनजाने के कारण चन्दन अगर तगर व फूलोंकी मालाओं की महकभी नहीं जानपड़ती २२ रामचन्द्रजी के चलेजाने से ज्वाने ज्वाने पुरुष फूलोंकी माला आदि शृङ्गारकी चीजें नहीं भोगते न चित्र बिचित्र माला पहिन के अपने घरसे बाहरही निकलते हैं २३ रामचन्द्रजी के शोकसे पीड़ित इसपुरी में कोईभी उत्सव नहीं देखाई देते हमजानते हैं किबिना हमारे भाईके इसपुरीकी दीप्तिही जातीरही २४ महावृष्टि युक्त शुक्लपक्षकी रात्रिके समान यह अयोध्यापुरी नहीं सुहावनी लगती नहीं जानते कि कब हमारे भाई महाउत्सव के समान आय २५ अयोध्या में हर्ष उत्पन्न करेंगे जैसे आषाढ़में बादर आय सबको वृष्टिसे सुखी करते हैं हाय बिना श्रीराम ऊंची ऊंची सवारियों पै चढ़े नाना-प्रकार के भूषण वस्त्र धारण किये युवा मनुष्यों से २६ अयोध्या में बड़ी बड़ी सड़कें नहीं शोभित होतीं सारथी से ऐसा कहते भरतजी अति दुःखित २७ अयोध्यामें पैठ अपने पिताके मन्दिर में गये बिना महाराज दशरथ के सिंहहीन कन्दरा के समान राजमन्द्रिर लगताभा २८ ॥

दो० प्रभा रहित रनिवास महँ भरत गये सबिलाप ।
बिनरबि दिनमहँ अमर जिमि रोये रहित प्रताप १ । २९

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकांडेचतुर्दशाधिकशततमस्सर्गः ११४

अयोध्याजीमें जाय माताओंको अपने अपने स्थानमें टिकाय मारेशोक के जले हुये भरतजी वसिष्ठादि गुरू लोगों से बोले १ कि हम इस विषय में आप लोगों से सलाह पूछतेहैं हमारे मनमें आताहै किभदरसा में जाय रहें बिना भाई श्रीरामचन्द्रजीके वहीं यह दुःख सहें २ क्योंकि पिताजीतो स्वर्ग्ग को चलेगये व हमारे परम गुरू व राजा श्रीरामचन्द्र जी बनमें बिराजमान हैं इससे हम वहाँ बस राज्य करनें केलिये राम-चन्द्रही की राहदेखें क्योंकि वही महायशस्वी श्रीराम हमारे राजाहैं ३ महात्मा भरतजी के ऐसे वचनसुन सब मन्त्री व पुरोहित व वसिष्ठजी बोले ४ हे भरतजो तुमने कहा बहुतही अच्छाकहा भाई के परमप्यारे होके क्यों न ऐसा कहो तुमको ऐसाही कहना उचित है ५ भला ऐसा कौन पुरुष है जो नित्यही भाई के लालची व भाईही की मिताई में टिके

व परम श्रेष्ठ कार्य्य करने में लगेहुये तुम्हारे वचन न मानै ६ मन्त्रियों के ऐसे प्रिय व अपना को बांछित वचन सुन भरतजी सारथी से बोले कि हमारा रथ चलनेके लिये तैयार करो ७ यह कह प्रसन्न मुख हो सब माताओं से बिदाहो शत्रुघ्न सहित रथपै चढ़े ८ शत्रुघ्न व भरत दोनों भाई रथपै चढ़ प्रसन्न हो मन्त्री व पुरोहितों के साथ चले ९ आगे आगे तो वसिष्ठादि ब्राह्मण गुरू लोग पूर्ब्ब दक्षिण के कोने को चले जिधर कि नन्दिग्राम अर्थात् भदरसा था १० यद्यपि भरतजीने सेना को नहीं बुलाया था कि आवो तथापि जितनी सेनाथी हाथी घोड़े रथ सहित भरतके पीछे पीछेचली सब अयोध्या बासी भी वहीं चलेगये११ धर्म्मात्मा व भाई के बड़े भक्त व प्रिय भरतजी अपने शिरपै श्रीरामचन्द्र जीके खराऊं धरके भदरसा को गये १२ वहाँ बड़ी शीघ्रता के साथ पहुंच रथसे उतर गुरू लोगों से बोले १३ कि भाई साहबने यह अपना राज्य हमको धरोहर के समान सौंपा है व इसकी रक्षा करने के लिये अपने खराऊं भी दिये हैं १४ यह कह खराऊं शिरमें बार बार लगाय अति दुखीहो सब प्रजा मन्त्री आदिसे बोले १५ सब लोग इन खराउ-ओंके ऊपरछत्र धरो क्योंकि इनको भाई साहबके चरणारबिन्दही सम-झने चाहिये ये पादुका जो राज्यमें हैं तो जानों इस राज्यमें सब धर्म्म टिका है क्योंकि हमारे परमगुरुकी पादुका हैं १६ भाई साहब ने सौहृदराखने केलिये थाती रूप ये खराऊं हमको दिये हैं इससे जब तक श्रीरामचन्द्रजी नहीं आते तब तक हम इस थाती का पालन करेंगे १७ जब रामचन्द्र आवेंगे तैसेही ये खराऊं जाय उनके आगे धरदेंगे जब वे इन पै अपने चरणारविन्द धरेंगे तो पादुका सहित भाई के चरण कमल देख सुखी होंगे १८ व राज्य काज सब उनको सौंप बिना भार के हो अपने गुरू श्रीरामकी सेवा करने लगेंगे १९ बस तभी धरोहर रूप ये खराऊं राज्य व अयोध्यापुरी रामचन्द्रजी को दे पाप रहित होजायँगे २० यहकह चीर वल्कल व जटा धारणकर सहित सेना भरतजी भदरसा में बसे २१ चमर व छत्र पादुकाओं के ऊपर अपने हाथ से धर जो कुछ काम करना हो पादुकाओं से कहकर कि फलाँ काम किया जाताहै ऐसा करतेहुये भरतजी उनकी आज्ञासेही वहाँ रहे २२ भरतजीने वहीं राज्य

सिंहासन मँगाय उसी पै धर उन खराउओं का अभिषेक भी कराया व तिन्हीं के अधीन हो आप सब काम करते रहे २३ ॥

कुण्डलिका ॥

जो कारज होवत तहाँ अरु जो पूजन भार ।
नजर भेंट आवत जवन जहँ तहँ बहुत प्रकार ॥
जहँ तहँ बहुत प्रकार तौन अर्प्पण करि तेही ।
लै आज्ञा पुनि करत काज गुनि राम बिदेही ॥
इमि किय भरत महान सकल पूजत पद आरज ।
सिद्ध भये सब तहाँ कीन उन जो जो कारज १ । २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकांडेपञ्चदशाधिकशततमस्सर्ग्गः११५

जब भरत जी बिदा हो अयोध्याजी को समाज सहित चलेगये तो उस बनमें बसते श्रीरामचन्द्रजी ने देखा कि ये तपस्वी लोग कुछ घबड़ाये से जान पड़तेहैं १ जितने उस चित्रकूट पर्ब्बत के निकट तपस्वी लोग रहतेथे सबके सब श्रीरामचन्द्रजीको देख कुछ कहने को मन करतेथे २ परन्तु रामचन्द्रजी को देख देख शंकित होतेथे कुछ कह नहीं सक्ते केवल आपस में धीरे धीरे बतलातेथे ३ उन लोगोंको रामचन्द्रजी ने जाना कि हमसे कुछ डरतेहैं इसलिये हाथजोड़ उन सबोंके मालिक वाल्मीकिजी सेबोले ४ हे भगवन् हममें कोई ऐसा खराब कर्म्म पूर्ब्बकाल का भी नहीं देखपड़ता कि जिससे ये तपस्वीलोग हमसे डरें ५ फिर महात्मा हमारे छोटे भाई लक्ष्मण मेंभी कोई ऐसा दुराचार नहीं कि जिसे देख ऋषिलोग डरें ६ जानकी भी आप लोगों की सदा सेवाही किया करती हैं व जो उत्तम स्त्रियों के स्वभाव होतेहैं वही उनमें हैं इससे वे भी कुछ मुनियों को अनुचित वचन नहीं कहसक्तीं ७ फिर ये लोग क्यों डरतेहैं यहसुन बड़े वृद्ध ऋषिराज वाल्मीकिजी परम दयालु श्रीरामचन्द्रजी से बोले ८ कि भला अति कल्याण रूप स्वभाव युक्त व कल्याणही में प्रीति करनेवाली जानकीजी कैसे तपस्वियों के संग कोई अपकार करेंगी वेतो किसीके भी संग अपकार नहीं करतीं ९ और जो ऋषिलोग आपकी ओर निहार निहार आपस में बार्त्ता करतेहैं

उसका यह कारणहै कि ये लोग राक्षसों के मारे बहुत व्याकुलहैं इसीसे आपकी ओर देख बतलातेहैं पर कुछ कह नहीं सक्ते १० यहाँ रावणका छोटाभाई एक खरनाम राक्षस रहता है वह जन स्थानके रहनेवाले सब तपस्वियों को पीड़ा देताहै ११ वह दुष्ट बड़ाही ढीठाहै काशीपुरी भी उसने जीतली है बड़ा निर्लज्जभी है पुरुषों को भी खाया करता बड़ा अहंकारी भीहै आपका यहाँ रहना भी नहीं सहसक्ता हमलोगों को भी आपके अनुयायी जान कष्ट देताहै १२ हेतात जबसे तुम यहाँ आयेहो तबसे और भी राक्षसलोग तपस्वियों को दुःख देतेहैं १३ नाना प्रकार के भयानक क्रूर रूप देखाय देखाय मुनियों को भयभीत करतेहैं जिससे वे लोग बड़े बड़े दुःख पातेहैं १४ तपस्वियों के आगे बड़े बड़े खराब व अपवित्र काम करके उनको मारतेहैं बड़े अनारीहैं १५ तिनतिन आश्रमों पर आय आय छिप छिपकर दुष्ट राक्षस उन बेचारे अनारी ऋषियों के संग घूमते व उनको मारभी डालते हैं १६ जब ऋषिलोग होम करने लगते तो वे दुष्ट राक्षस स्रुव यज्ञके पात्रादि अलग फेंक देते व अग्नि में पानी डाल देते कलश उठाय उठाय फोड़ डालते १७ तिन दुष्टात्मा राक्षसों से पीड़ित आश्रमों के छोड़ने की इच्छा से यहाँसे दूसरे देशमें चलने के लिये ऋषिलोग हमसे कहते हैं १८ क्योंकि बहुत दिनों से ये दुष्ट राक्षस ऋषियोंको मारते पीटते चलेआतेहैं इससे अबइस आश्रम को हम छोड़देंगे १९ व यहांसे थोड़ीही दूरपै अश्वनाम ऋषिका आश्रम है उसमें कंदमूल फलादि भी बहुतहैं व राक्षसभी मुनिके भयसे वहां नहींजाते इससे वहीं परिवार सहित चले जांयगे २० हेराम हम लोग तो जातेहैं जो विचार में आवे तो तुमभी चलेचलो क्योंकि वह खरनाम राक्षस तुम्हारे साथभी अयोग्यही कर्म करेगा २१ फिर आप अकेलेही होते तो इतना संदेहभी न था स्त्रीसंगलिये यद्यपि आप समर्थ व तेजस्वी प्रतापीहैं तथापि यहांके रहने में संदेहही है २२ जब मुनिराज ने ऐसा कहा तो रामचन्द्रजी ऐसे वचन न कहसके कि जिससे मुनियों का वहांसे जाना न होता २३ इससे रामचन्द्रजीकी प्रशंसाकर व समझायके अपने चित्त में उनकी मूर्ति स्थापितकर उस आश्रमको छोड़ अपने संगियों को संगले मुनिराज चलेगये २४ व रामचन्द्रजीभी उन मुनिलोगोंसे साथे

न जानेके लिये आज्ञाले व वाल्मीकिजी के प्रणामकर अपनी पर्णकुटी में चलेगये २५ जबसेऋषिलोग उसआश्रमपरसे चलेगये तबसेश्रीरामचन्द्रजी क्षणमात्रको भी वहाँसे टलते नहींथे उस स्थानके निकटवाले स्थानोंके तपस्वीलोग आया जाया करतेथे २६ ॥

इत्यार्षेश्रीमद्वाल्मीकीयरामायणेऽयोध्याकांडे षोडशाधिकशततमस्सर्गः ॥ ११६ ॥

जबसब मुनिलोगवहाँसे चलेगये तो बहुतकारणोंसेरामचन्द्रजीनेभी वहाँका रहना न प्रसन्नकिया १ लक्ष्मण व जानकीजीसे कहनेभीलगेकि इस स्थानपै हमने भरतको व सब माताओं को तथा अयोध्याबासियों कोभी देखा इससे उनलोगोंका स्मरण स्थान देखदेख बार आताहै जिससे शोकही शोकहोता २ इसके सिवाय महात्मा भरतजीकी सेना जो इस स्थानपै टिकीथी उससे घोड़े हाथियोंकी लीदके मारे दुर्गन्धि आतीहै ३ तिससे अब यहाँसे अलगही चलेचलना ठीकहै यहविचार जानकीजी व लक्ष्मणजीको सङ्गले वहाँसे चलदिये ४ व जाय अत्रिजीके आश्रमपै पहुंचे उन मुनिके प्रणामकिया अत्रिजीनेभी रामचन्द्रको पुत्रही के समान समझा ५ जोकुछ अर्घ्य पाद्याचमनीय उचितथा सब रामचन्द्र जीको दिया देवाया तिसके पीछे जानकी व लक्ष्मणजीकीभी कुशलक्षेम पूंछी व उनकोभी यथोचित पाद्यादि पहुंचाया ६ तिसके पीछे अपनी अति वृद्धास्त्री अनसूयाजीको बुलाया व बड़े सत्कारसे बैठाया व समझाया ७ कि महा भाग्यवती परमतपस्विनी धर्म्मचारिणी अनसूयाजी जानकीजीका आगत स्वागतकरो ८ उनसे ऐसाकहरामचन्द्रजीसे अत्रिजी बोले कि तुम इन परम तपस्विनी धर्म्मचारिणी अनसूयाजीको जानतेहो आगे एकसमय दशबर्ष तक पानी नहीं बरसा था इससे यहभूतल जला जाताथा ९ तब इन्होंने सबके ऊपर दयाकर कन्दमूल फल उत्पन्न किये व अपनी उग्र तपस्या नियम संयमोंसे मुनियोंके स्नान पानकरने केलिये गङ्गाजीको अपने निकट बुलालिया १० तपस्याभी इन्होंने दश हजार बर्षतक बड़े ज़ोरशोर सेकीहै तभी इनका अनसूया यहनामभी देवताओंने धरायाथा ११ व एक समय इनकी एक सखीको माण्डव्य ऋषिने शाप दिया कि दशरात्रियोंके बीचमें किसी न किसीप्रातःकालमें तु

विधवा होजायगी तब अपनी सखीको विधवा न होनेकेलिये इन्होंने कहा जाव प्रातःकालही अब न होगा हमारी सखी काहेको विधवा होगीइस तरहसे दश दिनतक वराबर रात्रिही बनीरही तिससे ब्याकुल हो देवताओंनेइनकी बड़ीस्तुतिकी तो फिरदिन होनेपाया व इनकी सखी सुभगा भी बनीरही क्योंकि मुनिका शाप दशही रात्रियोंके बीचके किसी प्रातःकालमें उसके पतिके मरनेकोथा इससे हे राम ये अनसूयाजी तुम्हारी माताहीके समानहैं १२ तिससे सब प्राणियोंके नमस्कार करने के योग्य परम तपस्विनी व बूढ़ी क्रोध रहित इनके जानकी भी प्रणाम करें १३ ऋषिके ऐसे बचन सुन रामचन्द्रजी बहुत अच्छाकह धर्म्म जाननेवाली सीताजीसे बोले १४ हेराजपुत्रि इनमुनिके वचन तो हम लोगोंने सुना अब अपने कल्याणके लिये बहुत जल्द इन तपस्विनी अनसूयाजीकी सेवाकरो १५ जिन्होंने अपने शुभकर्म्मों से अनसूया यह नाम पाया है तिनइन तपस्विनीकी जरूर सेवाकरो व धर्म्म कर्म्मकी बातेंभीं पूंछो १६ परम यशस्विनी सीताजी ने श्रीरामचन्द्रजी के वचनसुन धर्म्मके जाननेवाली अत्रिकी स्त्री अनसूयाजी के प्रदक्षिणाकी १७ अनसूया जीं बनाय शिथिलहोगईथीं सबअङ्गोंकी खाल सिकुड़गईथी वृद्धातो थीहीं मारेबुढ़ापे के बाल बनाय पीले से होगयेथे पवन चलने में केलाके समान काँपरही थीं १८ ऐसी महाभाग्यवती व पतिव्रता अनसूयाजीके निकट जायअपना नामकह सीताजीने प्रणामकिया १९ व तिन दयावती तपस्विनी से हाथ जोड़ जानकीजी कुशलप्रश्न करनेलगीं २० तिनधर्म्मचारिणीमहाभाग्यवती सीताजी को देख बहुत समझाती हुई महा वृद्धा अनसूया जी भी बोलीं कि हे जानकि बड़ेभाग्यकी बातहै कि तुम पतिसेवा रूपधर्म्मकरती हो २१ क्योंकि सब भाई बन्धु सासु ससुर मानबड़ाई व ऋद्धि सिद्धियों को छोड़ बनबासी रामचन्द्रजीके पीछे पीछे फिरतीहोक्योंन फिरो २२ ॥

चौ० ॥ नगर निवासी वा बनबासी। शुभ वा अशुभ अगुण गुणरासी॥ जिन नारिनकहँ प्रिय निजस्वामी। तिन्हें महोदय लोकसुनामी १। २३ कामी क्रोधी निर्द्धन कूरा। परम दुशील अगुणसों पूरा॥ आर्य्य स्वभाव नारि गणकेरा। ऐसहुपति देवहि समहेरा २। २४॥

हे जानकि हमने जो बिचारकिया तो पतिसे अधिक कोईभी बन्धु स्त्रियों

को नहींहै क्योंकि और भाई बन्धु सर्व्वत्र सुख नहीं देसक्ते यह शक्ति पतिही कोहै कि यहाँ वहाँ सबकहीं सुखदे जैसे कि तपस्या यहाँ वहाँ सब कहीं सुखही देती २५ जो स्त्रियाँ कामही के बशीभूत हैं व अपने पतियोंकी आप मालिक बनीहैं उन दुष्टस्त्रियों को गुण दोषनहीं जान- पड़ते कि हमको क्या करना चाहिये २६ जो स्त्रियाँ केवल कामही के बशीभूतहैं इससे पतिको अपनाही तावेदार समझतीहैं अपना को पतिके अधीन नहीं समझतीं उनका यहाँ तो अयश होता व धर्म्मतो जानोंजाता- ही रहता जिसके कारण नरक को जातीहैं २७ व जो तुम्हारे समान पातिब्रत गुणोंसे भरी पुरी इस उस लोककी गति जानने वालीहैं वे स्वर्ग्ग में जाय बसती हैं जैसे पुण्यवान् लोग स्वर्ग्गमें बसते हैं २८ ॥

कुण्डलिका ॥

पतिसेवा साधनकरम मानत अहो प्रधान ।
समय समान सदाकरत पतिपूजादि महान ॥
पतिपूजादि महान धर्म्म पातिब्रत येहू ।
सकल भाँति छलरहित करै त्यहि चरणसनेहू ॥
सो तुममहँ बैदेहि धर्म्मचारिणि पतिदेवा ।
यश अरु धर्म्म अपार लहहु करिकै पतिसेवा १ । २६ ॥

इत्यार्षश्रीमद्वाल्मीकीयरामायणेऽयोध्याकाण्डे
सप्तदशाधिकशततमस्सर्ग्गः ॥ ११७ ॥

जब निन्दारहित जनककुमारीजी से अनसूयाजीने ऐसाकहा तो उन के वचन की बड़ाई कर जानकीजी बोलीं १ कि जो बात तुमने हमसे कही वह परमश्रेष्ठ तुम्हें कुछ आश्चर्य्य नहीं हम भी जानती हैं कि स्त्री का पतिही गुरू है २ इससे चाहे अनारी जीविकाहीन भी पतिहो पर स्त्री को उसकी सेवा में दुबिधा न मानना चाहिये क्योंकि स्त्रियों का धर्म्मही यही है कि पतिकी सेवा करें ३ फिर जिसका पति उत्तम गुणधारी सर्व्वांग सुन्दर दयावान् जितेन्द्रिय दृढ़ानुरागी धर्म्मात्मा माता पिताके समान प्रिय करनेवाला होतो उसको क्या करना उसकी सेवा तो करनीही है ४ देखिये हमारे स्वामी श्रीरामचन्द्रजीको कि जो भाव अपनी माता कौशल्याजी में रखते हैं वही राजा की और स्त्रियोंमें

भी रखते ५ जिसको भोग करने की दृष्टि से महाराज दशरथजीने एक बार भी देखलिया है मान को छोड़ परमधर्म्मज्ञ व राजामें अति प्रेम करनेवाले हमारे स्वामी उस स्त्रीमें माताही कासा बर्त्ताव बर्त्तते हैं ६ जब हम इस निर्ज्जन भयानक बनको आने लगीं थीं तब हमारी सासु जीने जो पतिसेवा के धर्म्म हमको सिखाये थे वे सब हमारे हृदमें टिके हैं ७ व बिवाह के समय में अग्निके निकट बैठ हमारी माता ने भी जो धर्म्म पति सेवा के बताये वे भी हृदय में धरेहैं ८ वे सब सासु व माता के वचन तुम्हारे वचनों से नये होगये हैं धर्म्मचारिणि हो स्त्री को पति की सेवा से और कोई जपतप नहीं है ९ क्योंकि देखिये सत्यवान् की स्त्री सावित्री पतिकी सेवाकर जाय स्वर्गलोक में पूजीजाती हैं व सावित्रीही की तरह तुम भी पतिकी सेवाकर सब सिद्धियों को प्राप्त हुई हो १० व पतिही की सेवा करतीहुई चन्द्रमाकी स्त्री रोहिणी सबपतिव्रता स्त्रियों में श्रेष्ठहो स्वर्ग में देवता रूप बिराजमान हैं क्षणभर भी बिना अपने पति चन्द्रमा के आकाश में नहीं देख पड़तीं ११ इस तरही की बहुत सी पतिव्रता स्त्रियां अपने अपने पतियोंमें दृढ़ भक्तिकर अपनीही पुण्य व कर्म्मसे देवलोक में पूजित होतीं हैं १२ श्रीजानकी जी के ऐसे वचन सुन अति प्रसन्न हो अनसूयाजी उनका शिर सूंघ सीता जीको हर्षित कराती बोलीं १३ हे जानकि हमने बहुत तरह के यम नियमादि कर तप पाया है वह सब तपोबल हममें विद्यमान है उसी के बलसे तुमसे कहती हैं कि जो चाहो बरमाँगो १४ हे मैथिलि तुम्हारे वचन बहुत योग्य हैं हमने अच्छी तरहसे सुना तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं कहो तुम्हारा कौनसा प्रिय काम करें १५ अनसूयाजीके ऐसे वचन सुन तिनके ऐश्वर्य्यके विषयमें बिस्मय रहित हो कुछ मुसुकाय जानकी जी बोलींकि तुम्हारे अनुग्रहहीसे सब कुछ पटाहै किसी चीजकीकमती नहीं १६ जब इस तरह जानकीजीने कहा तो धर्म्म जानने वाली अनसूयाजी प्रसन्न होके बोलीं हेसीताजी तुम्हारी इस अलोभता को हम सफल करती हैं १७ हेबैदेहि यद्यपि तुमको किसी बातकी इच्छा नहीं तथापि यहदिव्य व श्रेष्ठ मालावस्त्र भूषणकेसर मिश्रित चन्दन व कपूर मिलाय चन्दन १८ हमारा दियाहुआ सब तुम्हारेही अंगोंके योग्यहै इसमें कुछ

सन्देह नहीं इससे नित्य तुम्हारे अंगोंमें लगारहै १९ हे जनककुमारि यह जो कपूर केसर आदि मिलाया चन्दन है इसको जब अंगोंमें लगाओगी तोपति को भी शोभित कराओगी जैसे लक्ष्मीजी विष्णुजी को शोभित कराती हैं २० यहसुन प्रसन्नता से दियेहुये वस्त्र भूषण अंगरागाद्यनुलेपन जानकीजी ने ग्रहणकिये २१ तिनसब चीजों को ग्रहणकर परम यशस्विनी जानकीजी तपस्याही को धन समझने वाली अनसूयाजीकी उपासना करने लगीं २२ जब जानकीजी अपूर्ब्बरीति सेसेवा करनेलगीं तो दृढ़व्रत धारण करनेवाली अनसूयाजी कुछ प्रियकथा उनसे पूछने लगीं २३ हेजानकि हमने सुनाहै किइन परम यशस्वी श्रीरामचन्द्रजी ने तुमको स्वयम्बर में पायाहै २४ इसकथा को हम विस्तार सहित सुना चाहती हैं जिसतरह से स्वयम्बर हुआहो सबतुम अपने मुखसे कहो २५ यहसुन तिन तपस्विनी व धर्म्मचारिणी अनसूयाजी से जानकीजी वहकथा कहने लगीं की २६ सुनो जनक पुरीके एकबड़े धार्म्मिक राजा जनक हैं जोकि क्षत्रियों के कर्म्म में बड़े निपुण हैं न्यायशास्त्र के अनुसारही पृथिवी का पालन करतेहैं २७ वे एकसमय सुवर्ण का हलले यज्ञकरने के लिये पृथिवी जोतने लगे तोभूमि फोरकर उसीहल के आगेसे हम निकल आईं व राजाकी कन्या होगईं २८ राजाबीज बोतेथे हमको धूरिलगी देख बड़े बिस्मित हुये २९ राजाके कन्यापुत्र कोईभी सन्तान न था इससे मारे स्नेहके हमको कोरामें बैठाय कहा यह हमारी कन्याहै इतना कह हममें बड़ाही स्नेहकिया ३० तबउसी बीचमें आकाशवाणीहुई किराजन् हां यहबात ऐसीहीहै धर्म्मसे यह तुम्हारीही कन्या है ३१ यहसुन हमारे पिता जनक पुरीके राजाहम को पाय बड़ी ऋद्धि सिद्धि समझ बड़े हर्षित हुये ३२ व हमको लेजाय अपनी बड़ीरानी को दिया उन्होंने माताही के स्नेहसे हमारा पालन पोषण किया ३३ होते होते जबहमारी अवस्था पतिके संय्योगके योग्यहुई तोपिताजी देख बड़ी चिन्ताको प्राप्तहुयेजैसे द्रव्यनाशहोजानेपैनिर्द्धन पुरुषचिन्ताकरताहै ३४ चिन्ताका कारण यहहै कि कन्याका पिता चाहे इन्द्रकेभी समानहो और अपने तुल्यही कुलीन ऐश्वर्य्यवान् के लड़के के साथ कन्या का बिवाह करे तोभी बरके पितादि व मामा आदिकी ओरसेउसका अनादरही होताहै

अर्थात् उन लोगोंसे नीचहीं बनना पड़ताहै ३५ राजाने जाना कि अबबहुतही जल्द वह वरके पिता मामा आदिकोंका किया निरादर हमको हुआ ही चाहताहै इसलिये चिन्तारूप समुद्र के पार न जायसके जैसे कि बिना जहाजवाला पुरुष सागर पर नहीं जाता ३६ इसी शोच में रात्रि दिन पड़े रहते थे कि हमको तो अयोनि से उत्पन्न व स्वरूपवती जानतेथे फिर अयोनिज जातिरूप गुणादिमें हमारे तुल्य पतिकी चिन्तना किया करतेथे परपिताजी के बिचारमें कोई वैसा न मिला ३७ यही शोचते शोचते पिताजीके मनमें यह आई कि हम अपनी कन्याका स्वयम्बर करेंगे उसमें जो पुरुष इसके योग्य होगा उसेदेंगे ३८ उसके लिये यह उपाय बिचारा कि निमिके ज्येष्ठपुत्र देवराजजी को महा यज्ञमें देवों के कहने से शिवजीने जो धनुष व दो अक्षयबाण भरे तरकस दियेथे ३९ उनमें जो धनुषथा उसको मनुष्य देवता दैत्यादि किसी तरह से स्वप्न मेंभी नहीं चलासक्तेथे इसतरह का वह गरूथा ४० उस धनुषको पाय हमारे पिताजीने सब राजाओंको न्योता देकर बुलाया व उनकी समाजमें खड़े होकर कहा ४१ कि जो पुरुष इस धनुष को उठाय प्रत्यञ्चा चढ़ा देगा हमारी कन्या उसीकी स्त्रीहोगी इसमें कुछ सन्देह नहींहै ४२ राजालोग मारे गरोईके उसधनुष को उठायही न सके फिर चढ़ाय कैसे सकें इसलिये उसके प्रणाम करके अपने अपने देशको चलेगये ४३ फिर बहुत कालके पीछे ये महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी यज्ञ देखनेके लिये बिश्वामित्रजीके साथ वहाँ आये ४४ इनके साथ उनके भाई लक्ष्मणजी भीथे हमारे पिताने इनदोनों भाइयोंकी व बिश्वामित्रजीकी बड़ीपूजाकी ४५ तब धर्म्मात्मा बिश्वामित्रजी हमारे पितासे बोले कि राजा दशरथजीके पुत्र ये दोनोंभाई रामलक्ष्मण आपका धनुष देखा चाहते हैं ४६ इससे राजकुमार श्रीरामचन्द्रजी को धनुष देखादीजिये जब बिश्वामित्र जीने ऐसाकहातो पिताजीने जायइनको धनुषदेखादिया ४७इन महापराक्रमी श्रीरामचन्द्रजीने देखतेहीदेखते एकनिमिष मात्रहीमें धनुषपे रोदाचढ़ाय उसको जोरसे टङ्कोर दिया ४८ उसका ऐसा शब्द हुआ कि पृथिवी आकाशादि सबमें छायगया व उसीके साथही टूटकर उसके दो टुकड़े भी होगये उस टूटनेका ऐसा शब्दहुआ जैसे बज्र गिरनेपै होताहै ४९ तब सत्यप्रतिज्ञ

हमारे पिताजी जलपात्रमँगाय सङ्कल्पकर रामचन्द्रजीको हमें देनेलगे ५० तब रामचन्द्रजीने न ग्रहण किया कहा कि जब हमारे पिता अयोध्याधिपति श्रीदशरथजी की आज्ञाहोगी तभी हम ग्रहण करेंगे ५१ तब हमारे पिताजीने हमारे श्वशुर राजा दशरथजी को बुलाय महात्मा श्रीरामचन्द्रजीको हमें देदिया ५२ व हमारी एक छोटी बहिन ऊर्मिला नामहै उसे लक्ष्मणजीको स्त्री बनाने के लिये देदिया ५३ इस तरह स्वयम्वर में हमारे पिताजीने हमें रामचन्द्रजीको दिया हम अब पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र अपने पतिकी सेवा में लगीहैं ५४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकांडेऽष्टादशाधिकशततमस्सर्गः ११८

अनसूयाजीने यह बड़ी भारी कथा सुन जानकीजीको दोनों हाथोंसे पकड़ छातीमें लिपटालिया व शिर सूंघलिया १ व कहा कि जो हमने स्वयम्बर का वृत्तांत तुमसे पूंछा तुमने अति मधुर बाणीसे साफ साफ कहा कि हमने अच्छी तरह से सुना २ हेमधुरभाषिणि तुम्हारी इस कथामें हमारा चित्त बहुत रमित होताहै परंतु अब श्रीसूर्य भगवान् अस्त हुये बनाय रात्रिहुआ चाहतीहै ३ क्योंकि दिन होनेपै जोपक्षी लोगचारा चुगने के लिये इधर उधर गयेथे वे अब सन्ध्याकालमें अपने २ बसेरेमें आगये उनका शब्द सुनाई देताहै ४ व येमुनिलोग स्नानकिये कलश लिये ओदे चीर बल्कल धारणकिये चले आते हैं ५ व ऋषिलोगों के अग्निहोत्र करनेसे कबूतर के गर्दनके रोमोंके समान अरुणरंग काधूम निकल रहाहै६ अब बनाय अँधेरा होताचला आताहै क्योंकि जिन वृक्षोंमें थोड़ेभी पल्लव हैं वे अंधियारे के मारे घने जान पड़ते हैं साफ देखनहीं पड़ते दिशानहीं प्रकाशित होतीं ७ देखो चारोओर निशाचर घूमते हैं ये तपोबनके मृग पवित्र वेदियों पर शयन करनेलगे ८ हेजानकि अब नक्षत्र संयुक्त रात्रि अच्छी तरह होआई आकाशमें चन्द्रमा उदयहै चटकीली चांदनी पसरी है ९ अच्छा अब जाव रामचन्द्रकी सेवाकरो अपने मधुरवचनों से हमको तुमने बहुत संतुष्ट किया १० हे मैथिलि जोवस्त्र भूषणादि हमने दियेहैं वे हमारेही सामने धारणकरो जिसमें हम भी देखें ११ जानकीजी यहसुन सब वस्त्र भूषणादि पहिन ओढ़ देवरूपिणी

हो अनसूयाजी के प्रणामकर श्रीरामचन्द्रजी के निकट आई १२ तिस तरह के भूषण वस्त्र पहिने ओढ़े जानकीजीको देख तपस्विनी के प्रसाद से पायेजान श्रीरामचन्द्रजी बहुत प्रसन्नहुये १३ श्रीसीताजीने तपस्विनी अनसूयाजीने जो प्रीतिपूर्व्बक वस्त्र भूषण व पुष्पमालादि दिये थे उनका हाल सब रामचन्द्रजीसे कहा १४ मनुष्यों कोदुर्ल्लभ सत्क्रिया जानकी जीको देख श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी बहुत प्रसन्न हुये १५ व सबतप-स्वियोंसे पूजित श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण जानकी सहित पूर्णचन्द्र सहितरात्रि में वहां सोये १६ जब वह रात्रि बीतगई प्रातःकाल हुआतो राम लक्ष्मण दोनों भाई स्नानकर बनवासी तपस्वियों से दूसरे बनको जाने के लिये आज्ञा माँगनेलगे १७ तब वे सब धर्म्मचारी तपस्वी दोनों भाइयों से बोले कि इस बनमें राक्षस तपस्वियों को बहुत दिक्क करतेहैं १८ ॥

चौ० ॥ पुरुष भक्षि नाना तनु धारी। राक्षस बहुत यहां असुरारी व्याघ्र सिंह अरु सर्प्प अनेका। यहि बन बसत बिहीन बिवेका १। १९ अशुचि प्रमत्त ब्रह्मचारी गन। यहि बन बसत राम जो ऋषिजन॥ तिन्हैं खात राक्षस बरजोरी। करिय निवारण करत निहोरी २। २० बनमहँ फलहारी ऋषि लोगन। है यह मग सुनु शोच बिमोचन॥ यहि मगह्वै जाइय बन दुर्ग्गम। रघुनायक नहिं अहै कछू भ्रम ३। २१ ॥

कुण्डलिका ॥

द्विजगन करजोरी कह्यो इमि पुनि बिप्रन कीन।
स्वस्ति पुण्य वाचन सकल सबबिधि युत परवीन॥
सबबिधि युत परवीन शत्रु तापन भगवाना।
राघव लक्ष्मण जनकसुता युत कीन पयाना॥
बन महँ पैठे जाय यथा रबि निबिशत हैं घन।
तिमि रघुनन्दनगयहु सकललहि अनुमतिद्विजगन ४। २२॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेऽयोध्याकाण्डे एकोनविंशाधिकशततमस्सर्ग्गः॥ ११९ ॥

समाप्तोऽयमयोध्याकाण्डः॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	**राग**	गोपीचंद भरतरी	स्वयम्बोध
योगवाशिष्ठ	रागप्रकाश	कथाश्रीगंगाजी	ज्ञानचालीसी
आनंदाऽमृतवर्षिणी	लावनी	अवधयात्रा	दोहावली
सांख्यतत्वकौमुदी	**क़िस्सा वग़ैरह**	भरतरी गीत	बालाबोध
काव्य	नानार्थनौसंग्रहावली	दानलीला व नामलीला	विद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
सूरसागर	ब्रह्मसार	दोहावली रत्नावली	किताबजंत्री
कृष्णसागर	शिवसिंहसरोज	गोकर्णमहात्म्य	गणितकामधेनु
विश्रामसागर	भक्तमाल	श्रीगोपालसहस्रनाम	लीलावती
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायणास-	पटवारियोंकीपुस्तकछभा०
ब्रजविलास बड़ा व छो०	विक्रमविलास	हनूनाटक	**वैद्यकभाषा**
कृष्णप्रिया	बैतालपच्चीसी	हनुमानबाहुक	निघण्ट
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी	अमरविनोद
अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	हरिहरसगुणनिर्गुण-	वैद्यजीवन
छन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	पद्मावली	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
रसराज	बकावली सुमन	बनयात्रा	अमृतसागरछोटावबड़ा
सतसई मूल व सटीक	चहारदरवेश	कायस्थवर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव
सभाविलास	क़िस्साहातिमताई	विहारवृन्दाबन	रसायनप्रकाश
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	अपूर्व्वकथा	समरविहार वृन्दाबन	मूलाजुल गुर्व्वी
भजनावली	क़िस्सागुलसनोवर	कल्पभाष्य	दिललगन
प्रेम रत्न	सहस्ररजनीचरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	**ज्योतिषभाषा**
युगुलविलास	राबिन्सन का इतिहास	उपदेशचन्द्रिका	जातकचन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	सीताहरण	मंगलबिनोद	जातकालंकार
बारहमासा बलदेवप्र-	सतीविलास	विजयचन्द्रिका	दैवज्ञाभरण
मनोहरलहरी	क़िस्सामर्दऔरत	सिद्धान्तसंग्रह	ज्ञानस्वरोदय
गंगालहरी	संगीतप्रह्लाद	नवीनसंग्रह	रमलसार
जमुनालहरी	**मुतफ़र्क़ात**	रामविनयशतक	रमलनौरत्न
जगद्विनोद	शनिश्चरकीकथा	**दरसी**	इन्द्रजाल
शृंगारबत्तीसी	ज्ञानमाला	अक्षरावली	लीलावती

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दू कैथी महाजनी	ऐक्ट चौपायों का मदा-
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकट के लाइसन्स का	खलत बेजा १ सन्
सिद्धान्तचन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऐक्ट २ सन् १८७४ ई०	१८७७ ई०
भाषातत्वप्रकाश	महिम्नस्तोत्र	नागरी	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबि-
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐक्ट लगान मग़रबी	ता फ़ौजदारी १० सन्
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्यस्मृति	व शिमाली १० सन्	१८७२ ई०
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषा टीका	१८५९ ई०	ऐक्ट मालगुज़ारी मग़-
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष तीनोंकाण्ड	इंडियन पिनलकोर्ट	रबी व शिमाली १९
भगवद्गीतापंचरत्न	याज्ञवल्क्यस्मृति	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-	सन् १८७३ ई०
दुर्गापाठमूलसटीक	सन्ध्यापद्धति	जदारी ऐक्ट २५ सन्	तरमीम मजमूआ
विष्णुभागवत	व्रतार्क	१८६१ ई०	ज़ाबिता फ़ौजदारी
कथा यमद्वितीया	भगवद्गीताटीका ह·	ऐक्ट रजिस्टरी २०	११ सन् १८७४ ई०
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीताटीका आ·	सन् १८६६ ई०	तक़ावी के क़ायदे
कायस्थकुलभास्कर	गीतगोविंद	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	सवाल व जवाब पु-
कायस्थधर्म्मनिरूपण	कथा सत्यनारायण	१८६२ ई०	लिस
तथा छोटा	परमार्थसार	ऐक्ट स्टाम्प अदालत	अवध रुहेलखण्ड
मथुरासभा	शार्ङ्गधरसंहिता	२६ सन् १८६७ ई०	रेलवे का दस्तूरुल्
ज्योतिष	पाराशरी सटीक	मजमूआ ऐक्ट अवध	अमल
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोध सटीक	लगान १९ सन् १८६८	ताज़ीरात हिन्द
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	लघुजातक	ईसवी	किताबें जो छप रही
मुहूर्त्तचिन्तामणि स-	षट्पंचाशिका	पुख्तादारी २६ सन्	हैं उन के नाम नीचे
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	१८६६ ई० वग़ैरह	लिखे हैं
बृहज्जातक सटीक	गरुड़पुराण	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावे-	मदन पारिजात
जातकालंकार	रामविवाहोत्सव	ज़ात १८ सन् १८६९ ई०	मार्कण्डेय पुराण
जातकाभरण	अपरोक्षानुभव	ऐक्ट ताल्लुक़दारान् म-	उर्दू टीका सहित
होरामकरन्द	क़ानूनकैथी	क़रूज़ अवध २४ सन्	इति
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	पटवारियों के क़ायदे	१८७० ई०	
मुहूर्त्तगणपति			